Saurashtra University

Re – Accredited Grade 'B' by NAAC
(CGPA 2.93)

Kantaria, Niranjan J., 2008, "*मध्यकालीन हिन्दी-गुजराती रामकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन*", thesis PhD, Saurashtra University

http://etheses.saurashtrauniversity.edu/id/eprint/687

Copyright and moral rights for this thesis are retained by the author

A copy can be downloaded for personal non-commercial research or study, without prior permission or charge.

This thesis cannot be reproduced or quoted extensively from without first obtaining permission in writing from the Author.

The content must not be changed in any way or sold commercially in any format or medium without the formal permission of the Author

When referring to this work, full bibliographic details including the author, title, awarding institution and date of the thesis must be given.

Saurashtra University Theses Service
http://etheses.saurashtrauniversity.edu
repository@sauuni.ernet.in

© The Author

मध्यकालीन हिन्दी–गुजराती रामकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन

(A COMPARATIVE STUDY OF MEDIEVAL HINDI-GUJARATI RAMKAVYA)

✰✰✰

सौराष्ट्र विश्वविद्यालय की पीएच.डी. (हिन्दी) की उपाधि के लिए प्रस्तुत

शोध–प्रबंध

✰✰✰

✰ *प्रस्तुतकर्ता* ✰
प्रा. निरंजनभाई जे. कंटारीया
अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
भारतीय विद्याभवन्स ए. के. दोशी महिला महाविद्यालय
जामनगर – 361008

✰✰✰

✰ *निर्देशक* ✰
डॉ. बी. के. कलासवा
अध्यक्ष,
हिन्दी भवन,
सौराष्ट्र विश्वविद्यालय,
राजकोट – 360005 (गुजरात)

वर्ष **2008**

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **प्रा. निरंजनभाई जे. कंटारीया** द्वारा सौराष्ट्र विश्वविद्यालय – राजकोट की पीएच.डी. उपाधि हेतु – **''मध्यकालीन हिन्दी–गुजराती रामकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन''** विषय पर प्रस्तुत शोध–प्रबंध मेरे निर्देशन एवं निरीक्षण में तैयार किया गया है । इस शोध–प्रबंध में इन्होंने उक्त विषय का यथाशक्ति अध्ययन, अनुशीलन एवं शोधपरक विश्लेषण–विवेचन करके वैज्ञानिक ढंग से मौलिक निरूपण किया है ।

साथ ही, यह शोध–प्रबंध अथवा इसका कोई अंश न तो प्रकाशित हुआ है और न ही इसका कोई अन्य उपयोग हुआ है ।

राजकोट
दिनांक :

निर्देशक

डॉ. बी. के. कलासवा
अध्यक्ष,
हिन्दी भवन,
सौराष्ट्र विश्वविद्यालय,
राजकोट

पुरोवाक्

राम हमारे जीवन जगत् के कण–कण में समाविष्ट हैं । मिलने पर लोग 'राम–राम' करते हैं, कष्ट में 'हे राम ! कहते हैं । घृणा आदि की व्यंजना में 'हाय–राम' ! कहते हैं । 'रामनाम सत्य है' अथवा 'राम बोलो भाई राम' से कौन अनभिज्ञ हैं ? अतः ऐसे सर्वव्यापी कण–कण में व्याप्त राम पर लिखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ । मैंने रामचरितमानस की कथा शैशवावस्था में सुनी थी । समय–समय पर राम के गुण गान मानस पट पर चिर प्रभाव अंकित करते रहे । शोध प्रबंध आलेखन सरल नहीं है । रामचरितमानस के बालकाण्ड में पार्वती प्रश्न पूछती है, जिसके उतर में महादेव शंकर कहते हैं कि –

बोले बिहँसि महेश तब, ज्ञानी मूढ़ न कोई ।
जेहि जस रघुपति करहिं जब, सो तस तोहि क्षन होई ।।

1/124क/83

अर्थात् तब महादेव जी मुस्कुराकर कहने लगे कि न कोई ज्ञानी है और न मूर्ख । जिसको जब रामचंद्र जी जैसा करना चाहें वह उस समय वैसा ही हो जाता है ।

विश्व में भक्ति धाराएँ अनेक हैं, परंतु रामभक्ति और कृष्ण भक्ति ने मानव सभ्यता को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास किया है । सभ्यता, संस्कृति, संस्कार, मानवता, प्रेम, सहिष्णुता, श्रद्धा, आस्था, विश्वास, आराधना, वंदना भक्ति आदि का मूलाधार हमारे धार्मिक ग्रंथ ही हैं ।

अध्ययन – अध्यापन के समय राम भक्ति के प्रति मैं आकृष्ट हुआ । विषय चयन से लेकर शोध प्रबंध की पूर्णता तक मैं अनेक लोगों का ऋणी रहा हूँ । मैं यहाँ नामोल्लेख करने बैठूं तो यह आशंका होती है कि क्या

सबके नाम अंकित कर पाऊँगा ? किसी महानुभाव का नाम रह जाएगा तो दोषी नहीं बनूंगा ? अगर नामोल्लेख नहीं किया तो भी ऋण से कैसे उऋण होउँगा ?

अतः सर्वप्रथम मैं डॉ. प्रेमस्वरूप गुप्त, डॉ. सुरेशचंद्र त्रिवेदी, डॉ. श्री राम नागर, डॉ. रमणभाई पटेल आदि का आभार मानता हूँ । डॉ. अंबाशंकर नागर, के. का. शास्त्री, डॉ. नरेश पंडया, श्रीमती निरंजनाबहन पारेख, डॉ. भारती बहन खीरा, डॉ. बिपीन आशर, डॉ. नीतिन वडगामा, डॉ. रोहडिया, डॉ. राजेन्द्र पाण्डे, डॉ. एस. पी. शर्मा, डॉ. दीपक पटेल आदि महानुभावों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ ।

मैंने अपने शोध प्रबंध में जिन लेखकों की रचनाओं का आधार लिया है उन सबका आभार व्यक्त करता हूँ ।

मेरे मार्गदर्शक जो अत्यंत व्यस्त रहते हैं ऐसे सरल हदयी डॉ. बी. के. कलासवा (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय) साहब का मैं अंतःकरण से आभार व्यक्त करता हूँ कि जिन्होंने शोध प्रबंध का कार्य सरल कर दिया ।

डॉ. गिरीशचंद्र त्रिवेदी मेरे शोधकार्य के पंजीकरण से लेकर पूर्ण होने तक साथ साथ चलते रहें । इनके मार्गदर्शन का प्रसाद शोध प्रबंध है ।

मेरे शोध प्रबंध का विषय 'मध्यकालीन हिन्दी गुजराती रामकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन' है जो अपने आपमें विस्तृत है । प्रथम अध्याय 'संस्कृत में लिखित राम काव्य, द्वितीय अध्याय हिन्दी में लिखित रामकाव्य, तृतीय अध्याय में 'गुजराती में लिखित राम काव्य' और चतुर्थ अध्याय में हिन्दी और गुजराती राम काव्यों की तुलना की गई है ।

मैंने भाई काका ग्रंथालय, वल्लभ विद्यानगर, सयाजीराव गायकवाड विश्वविद्यालय ग्रंथालय, बडौदा, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय ग्रंथालय राजकोट, जिल्ला ग्रंथालय राजकोट, ए. के. दोशी महिला महाविद्यालय, जामनगर, डी.के.वी.

कॉलेज ग्रंथालय – जामनगर के अलावा अन्य ग्रंथालयों की सहायता ली है । अतः यहाँ सबका आभार प्रकट करता हूँ ।

मेरी माताजी के आशीर्वाद स्वरूप यह कार्य सम्पन्न हुआ है ऐसा मैं मानता हूँ । मेरी धर्मपत्नी श्रीमती शोभनादेवी ने मुजे प्रेरित किया और सहायता की । अतः मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ । मेरे जयेष्ठ पुत्र डॉ. रमेश कंटारीया ने बलात् मुजे शोध कार्य करने के लिए आग्रह किया अतः मैं यहाँ इनके और श्वेता के प्रति आशिष प्रकट करता हूँ । छोटे पुत्र कल्पेश को भी साधुवाद देता हूँ ।

पुनः राम के लिए राम के प्रति मेरे श्रद्धा सुमन अर्पित करने में जो मेरे लिए सहायक हुए हैं सब का आभार प्रकट करता हूँ ।

– प्रा. निरंजनभाई जे. कंटारीया

भूमिका

काव्य जीवन की व्याख्या है । कवि अपने विचार एवं आचार से जीवन को मूल्यवान बना सकता है । कवि को समाज का शिल्पी माना गया है । वह समष्टि रूप में समाज की नीति–रीति का गढ़वैया होता है । वह समाज की अखंड़ प्रतिभा को आकार देने के लिए विशेष को आलंबन रूप में अपनाता है । उसे फिर सामान्य रूप में चित्रित करता है । कवि मानव भावनाओं को व्यक्तिगत की ओर से समष्टि की ओर मोड़ता है, जिसमें समग्र मानव जाति का हित हो । सच्चे अर्थों में यही विद्या है । कहा गया है कि –

सा विद्या या मदं हन्ति सा श्री यार्थिषु वर्षिति ।
धर्मानुसारिणी या च सा बुद्धिरभिधीयते ।। दर्पदलनम् 3/3

अर्थात् वही विद्या है जो अभिमान को दूर करे, वही लक्ष्मी है जो याचकजनों पर बरसती हों, वही बुद्धि है जो, धर्म का अनुगमन करती रहे । मानव भरसक प्रयासों के बाद भी जब हार जाता है तो धर्म का अनुसरण करता है ।

धर्म के पालन से मानव को नीति, दया, सहिष्णुता, क्षमा, अहिंसा, उपकार, त्याग आदि उच्च संस्कारों की पहचान होती है । पूरे विश्व में भारत धर्मावलम्बी होने के कारण ही आदर का पात्र है । वाल्मीकि धर्म को जगत् का सार मानते हुए कहते हैं कि –

धर्मादर्थः प्रभवति, धर्मात्प्रभवेत् सुखम् ।
धर्मेण लभते सर्वं धर्म सारमिदं जगत् ।। (वा. रा. 3/9/30)

अर्थात् धर्म से अर्थ उत्पन्न होता है । धर्म से सुख उपजता है । धर्म से मनुष्य सब कुछ पाता है । धर्म जगत् का सार है ।

श्रीमद् भागवत, महाभारत, वाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस आदि धार्मिक ग्रथों ने समय–समय पर मानव जीवन से जुड़ी हुई प्रत्येक समस्याओं का समाधान करके समाज और राष्ट्र को चिन्तामुक्त करके अपनी महत्ता सिद्ध की है । ये धार्मिक ग्रन्थ भारतीय जन मानस के कंठ हार हैं । धार्मिक ग्रन्थों में चित्रित पात्रों ने मानव धरातल पर आकर अपनी कार्य शैली के द्वारा एक आदर्श स्थापित करने का प्रयास किया है । कवि कुलगुरु, भक्त चूडामणि, संतप्रवर, गोस्वामी तुलसीदासजी की अमरकृति 'श्री रामचरितमानस' समग्र भारतीय साहित्य की सर्वोच्च अमूल्य निधि है । पाश्चात्य चिंतक विन्सेंट स्मिथ ने 'श्री रामचरितमानस' को "ध टोलेस्ट ट्री ईन दी मैजिक गार्डन ओफ मिडीवियल पोएट्री" अर्थात् मध्यकाल के आश्चर्यजनक काव्योद्यान का सबसे ऊँचा वृक्ष कहा है । जी. ए. ग्रियर्सन ने 'श्री रामचरितमानस' को "दी बाईबल ओफ़ ध हिन्दुज़" अर्थात् 'हिन्दुओंका बाईबल' कहा है । रामचरितमानस में तुलसीदासजी ने रामगाथा के साथ–साथ अनेकानेक आदर्श स्थापित करने का प्रयास किया है । आदर्शपुत्र, आदर्शपति, आदर्शपिता, आदर्शमित्र, आदर्शराजा, आदर्शशत्रु आदि का सोदाहरण चित्रण करके आदर्श समाज की नींव रखी है । सम्मिलित परिवार का ऐसा अनूठा चित्रण अन्यत्र दुर्लभ है । रामचरितमानस जनजीवन की आचार संहिता अथवा नीति विषयक, सामाजिक, पारिवारिक ग्रन्थ है । किसी भी मनुष्य को अपने जीवन की किसी भी समस्या का समाधान रामचरितमानस से प्राप्त हो सकता है । रामचरितमानस की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसका प्रचार सभी वर्गों के बीच है । इस में कोई भी जातिगत या सम्प्रदायगत भेदभाव नहीं है । सामान्य शिक्षित या विद्वान सभी मानस का मनन करते हैं । रामचरितमानस सरल होते हुए भी गूढ़ है, जीवनोपयोगी होते हुए भी दार्शनिक तथ्यों से पूर्ण है, उपदेशात्मक होते हुए भी कवित्वपूर्ण है । रामचरितमानस विश्व–साहित्य में दुर्लभ है । रामचरितमानस और वाल्मीकि रामायण को दृष्टि समक्ष रखकर अनेकानेक भाषाओं में रामकथा का सृजन

हुआ है । विश्व का शायद ही कोई देश या भाषा हो, जिसमें रामकथा का अंकन न हुआ हो । पाश्चात्य विद्वान फादर कामित बुल्के ने 'रामकथा उत्पत्ति और विकास' में विश्व की अनेकानेक भाषाओं में प्रकाशित रामकथा का उल्लेख किया है । हिन्दी एक समृद्ध भाषा है । रामचरितमानस की तुलना में हिन्दी में कोई ऐसी रचना नहीं मिलती । बचपन से ही मेरे दिमाग पर राम–कथा का प्रभाव रहा है । माताजी के साथ श्री राममंदिर में अनेकोंबार मैं अखंड़ 'रामचरितमानस' का पाठ करने गया हूँ । अध्ययन और अध्यापन के दौरान मध्यकालीन साहित्य मेरा रुचि का क्षेत्र रहा, इस में भी विशेषतः रामकाव्य धारा । एक बात जातिगत भी है कि मैं रघुवंशी हूँ । गुजराती भाषा में गिरधरकृत रामायण का विशेष महत्त्व है । यह आख्यान–शैली का एक महाकाव्य है । उतर गुजरात में गिरधरकृत रामायण का नित्य पारायण (पाठ) होता है । हिन्दी भाषा के समान गुजराती भाषा में भी अनेक रामकाव्यों की रचना हुई है । अतः मैंने 'मध्यकालीन हिन्दी–गुजराती रामकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन' इस विषय पर काम करने के लिए निश्चय किया ।

(2) शोधकार्य का उद्देश्य :

शोधकार्य की सीमा अनंत है । अतः मैंने 'मध्यकालीन हिन्दी–गुजराती रामकाव्यों की तुलना' करने के लिए निश्चय किया । वास्तव में देखा जाय तो 'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता' है । अतः निश्चित कालावधि में निर्मित राम काव्यों को यदि चुने जाएँ तो विशेष रूप से प्रकाश डाल सकते हैं । इसी आधार पर रामचरितमानस और गिरधर कृत रामायण की तुलना कर सकते हैं । तुलसीदास कृत रामचरितमानस और गिरधर कृत रामायण दोनों ग्रन्थ विशाल हैं । दोनों रचयिताओं ने परिवार और समाज जीवन की अनेकानेक घटनाओं का अंकन किया है । मेरे शोध कार्य का यही उद्देश्य है कि काव्य के तत्त्वों के आधार पर दोनों की तुलना की जाए । कथा, पात्र के अलावा भावपक्ष और कला पक्ष का भी विशेष रूप से उल्लेख किया जाए । दोनों

रचनाओं में चित्रित सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, पारिवारिक आदि पहलूओं का उल्लेख करके तुलना करनी चाहिए, जिससे तद्‌युगीन समाज संस्कृति की वास्तविक तस्वीर सामने आ जाए ।

मैंने दोनों रचनाओं से सम्बन्धित चरित्रों को दृष्टि समक्ष रखकर एक–एक पहलू की समीक्षा की है ।

(3) शोध विषय की उपादेयता :

सांप्रत युग में तुलनात्मक अध्ययन का विशेष महत्त्व है । एक ही विषय से सम्बन्धित दो भाषाओं की रचनाओं का सम्यक् अध्ययन करना अपने आप में विशिष्ट है । इसमें उत्तम व सार्वभौम साहित्य की संकल्पना साकारित होती है । दोनों भाषाओं की कृति में आलेखित समाज जीवन, आर्थिक, धार्मिक, राजकीय आदि पहलूओं का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष परिचय प्राप्त होता है । राम भारत में ही नहीं, विश्व के प्रत्येक कोने में श्रद्धा के पात्र हैं । किसी भी राष्ट्र या किसी भी धर्म के लिए राम विशेष आदर सूचक हैं । शीध्रातिशीध्र विकसित गतिशील जीवन में तुलनात्मक अध्ययन आज के युग की मांग है । दो भाषाओं के साहित्य की तुलना में एकता और अखंड़ितता का भाव निहित है । प्रत्येक रचनाकार अपने प्रांत के रीति रिवाज़, खान–पान, सामाजिक स्थिति एवं मानव जीवन से सम्बन्धित प्रत्येक व्यवहारों से परिचित होता है । अतः रचनाकार तद्‌युगीन परिस्थितियों का यथा संभव चित्रण कर ही देता है, जिससे अन्य भाषा–भाषी पाठक या श्रोता कृति में निर्दिष्ट प्रसंग और घटनाओं से परिचित हो जाता है । 'रामकथा उत्पति और विकास' में डॉ. फादर कामिल बुल्के ने तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, सिंहली, कश्मीरी, असयिा, बंगाली, उड़िया, मराठी, हिन्दी, गुजराती, उर्दू–फारसी आदि भाषाओं की रामायणों का उल्लेख किया है । इसके अलावा तिब्बत, खोतान, हिंदेशिया, स्याम, बर्मा आदि देशों की रामकथा का विस्तार से उल्लेख करके अनेकानेक अनूठी बातों का चित्रण किया है, जिससे विविधता में एकता का भाव अनुस्यूत है ।

एक ही विषय की अन्य से तुलना करना मानवसहज वृत्ति है । सचराचर संसार के प्रांगण में जब से मानव ने आँखें खोली हैं तब से वह किसी न किसी रूप में किसी न किसी कारण तुलना करता रहा है । तुलना करना मानव सहज स्वभाव है । इसी सहज वृत्ति ने मानव को सीमाबद्धता और संकुचितता के सीमित कटधरे से बाहर निकालकर विशिष्ट सिद्ध कर दिया है । मैंने हिन्दी – गुजराती रामकाव्यों की अनेक दृष्टिकोणों से तुलना की है । वर्तमान युग में तुलनात्मक अध्ययन की विशेष उपादेयता है । इसी आधार पर मैंने अपना शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । आशा है कि वर्तमान युग में एवं भविष्य के ज्ञान पिपासुओं के लिए मेरा यह कार्य ज्ञानवर्धक एवं न्यून विषयों के लिए प्रेरणास्रोत बनकर रह जाएगा ।

(4) सामग्री संकलन की दिशा :

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का विषय 'मध्यकालीन हिन्दी–गुजराती रामकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन' है । शोध कार्य एवं तत्सम्बन्धी आधार संकलित करना सहज नहीं है । गद्य सम्बन्धी आलोचना में प्रेमचंद जी स्वाभाविक रूप से प्राप्य होते हैं, उसी प्रकार पद्य में तुलसीदास जी । मैंने सर्वप्रथम फादर कामिल बुल्के का शोध प्रबन्ध 'रामकथा उत्पत्ति और विकास' पढ़ा । इसमें उल्लेखित अनेकानेक कृतिओं के संदर्भ देखे । तुलसीदासजी की रामचरितमानस से सम्बन्धित समीक्षात्मक अनेक कृतियाँ पायी जाती हैं । मेरे शोध प्रबन्ध के विषय से सम्बन्धित मुझे जो समीक्षात्मक ग्रन्थ प्राप्त हुए, उनमें तुलसीदास और उनका युग : राजपति दीक्षित, तुलसी की काव्य मीमांसा, डॉ. उदयभानुसिंह, पदमावत और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. रामाश्रय शर्मा, राम कथा के नारीपात्र, डॉ. श्रीमती आशा भारती, रामचरितमानस का काव्य शास्त्रीय अनुशीलन, डॉ. राजकुमार पाण्डेय, रामचरितमानस और कौशिक रामायण का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. मुकुन्द प्रभु, रामचरितमानस और रामचन्द्रिका का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. जगदीश नारायण अग्रवाल, वाल्मीकि रामायण एवं

रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. विद्या मिश्र, इसके अलावा संस्कृत भाषा एवं गुजराती भाषा से रामकाव्य और काव्य शास्त्रीय समीक्षा के अनेकानेक ग्रन्थ मुख्य हैं । महाराजा सयाजीराव गायकवाड वड़ोदरा विश्वविद्यालय से गुजराती भाषा में गिरधर कवि से सम्बन्धित 'कवि गिरधर जीवन अने कवनः (डॉ. देवदत्त जोशी) नामक ग्रन्थ प्राप्त हुआ । इसके अलावा विभिन्न ग्रन्थालयों से राम–काव्य सम्बन्धी अनेकानेक संस्कृत, हिन्दी और गुजराती के ग्रन्थ प्राप्त हुए । इन ग्रन्थों की सहायता से ही मैं अपने शोधकार्य को विशाल फलक प्रदान करके अपने परिश्रम को विशिष्ट बनाने का प्रयास कर सका हूँ । यहाँ यह कहना समुचित होगा कि हिन्दी भाषा की तुलना में गुजराती भाषा में रामकाव्य सम्बन्धी समीक्षाएँ अल्प मात्रा में हैं । तुलसीदास विरचित रामचरितमानस समकक्ष गुजराती भाषा में गिरधर कृत रामायण ही है । अतः इसी आधार पर मैंने दोनों कृतिओं की तुलना करनेका प्रयास किया है । दोनों भाषाओं की कृतिओं की तुलना विविध दृष्टिकोणों से की है, जिसमें कथावस्तु, पात्र, चरित्र–चित्रण, कथोपकथन, भाषा–शैली, देशकाल, वातावरण, शीर्षक, उपशीर्षक एवं उद्देश्य आदि पर विचार किया है । काव्यजनित समीक्षा के आधार स्तंभ भावपक्ष और कलापक्ष आदि का भी आधार लेकर तुलना की है । इसके साथ ही भाषा से सम्बन्धित कहावतें, मुहावरे, सुक्तियाँ, आदि की भी तुलना की है । काव्य रूप अनुसार छंद और अलंकारों का विस्तार से उल्लेख करके तुलना की है । यहाँ यह भी कहना चाहिए कि दोनों भाषाओं की कृतिओं के पत्रों की तुलना के साथ–साथ कथावस्तु में साम्य–वैषम्य का भी विस्तार से उल्लेख किया है । गिरधर कृत रामायण में कविने कहीं भी तुलसीदास एवं रामचरितमानस का उल्लेख नहीं किया फिर भी अनेक स्थलों पर भावानुवाद पाया जाता है । इसका उदाहरण देखें – रामचरित के किष्किंधाकांड में वर्षाऋतु का वर्णन इस प्रकार है –

घन घमंड नभ गरजत घोरा । प्रिया हीन डरपत मन मोरा ।।

दामिनि दमक रह न घन माहीं । खल के प्रीति जथा थिर नाहीं ।।
बरषहिं जलद भूमि निअराएँ । जथा नवहिं बुध बिद्या पाएँ।।
बूँद अधात सहहिं गिरि कैसें । खल के बचन संत सह जैसें ।।
छुद्र नदी भरि चली चोराई । जस थोरेहुँ धन–खल इतराई ।।
भूमि परत भा डाबर पानी । जनु जीवहि माया लपटानी ।।
समिटि समिटि जल भरहिं तलावा । जिमि सद्गुन सज्जन पहिं आवा ।।
सरिता जल जल निधि महुँजाई । कोई अचल जिमि जिवहरि पाई ।।
(रा. मा. कि. 14.402)

कवि गिरधर ने अपनी रामायण के किष्किंधाकांड में वर्षा का वर्णन इस प्रकार किया है –

घनमांहे दमके दामनी ज्यम, खळ प्रीत स्थिर नव रहे ज्यम रे ।।
घन वरसे नीचो उतरी, ज्यम विद्या पामी बुध नमे रे ।।
अघात बुंद गिरि सहे, खळ वचन साधु जेम रे ।।
लपटायो कर्दम भूमि पर, जीवने माया तेम रे ।।
नदी क्षुद्र भरी उभराई चाली, जळ दशो दिश जाय रे ।।
ज्यम सूक्ष्म धन पामीने खळ, अभिमान करी इतराय रे ।।
सर्व सरिता जळ मळीने, जळ निधिमां जाय रे ।।
ज्यम जीव पामीने हरिपदने, अचल निरभे थाय रे ।।

इसी तरह तुलसीदास जी सुन्दरकाण्ड में कहते हैं कि –

ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी । सकल ताड़ना के अधिकारी
(5/59/6/444)

गिरधर कवि ने ऐसा ही उल्लेख किया है जैसे –

ढोल मूरखने पशु वळी, दुर्मुखीजे नार ।
ए दंड विण माने नहि, एने मारनो अधिकार ।।
(6/10/12/388)

कितना भाव साम्य है ! तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' जिस प्रकार जन जन में व्याप्त है, उसी प्रकार गुजरात प्रांत में गिरधर कृत 'रामायण' लोकप्रिय है ।

(5) शोध की संभावनाएँ :

आधुनिक युग विज्ञान और तकनिक का है । उपग्रहों की सहायता से हम घर बैठे अनेकानेक तथ्यों का रसास्वाद कर सकते हैं । ज्ञान और जिज्ञासा कभी तृप्त नहीं होने वाला तत्त्व है । इसके लिए रस, रुचि और समय चाहिए । राम का चरित्र विशाल फलक पर व्याप्त है । अतः भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने अनेक ग्रन्थों के द्वारा अपनी विद्वता प्रदर्शित करने का प्रयास किया है । पाश्चात्य विद्वानों में विल्सन, गार्सा–द–तासी, ग्राउज, ग्रियर्सन, टेसीटोरी, कामिल बुल्के एवं प्रो. वारिन्नकोव आदि के नाम उल्लेखनीय हैं । हिन्दी के विद्वानों में डॉ. श्याम सुन्दरदास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ. बलदेवप्रसाद मिश्र, डॉ. माताप्रसाद गुप्त, डॉ. राजपति दीक्षित, डॉ. चन्द्रबली पाण्डेय, डॉ. उदयभानुसिंह, डॉ. विमलकुमार जैन, डॉ. रामचन्द्र मिश्र, डॉ. रामदत्त भारद्वाज, डॉ. रामरतन भटनागर, डॉ. रांगेय राघव, डॉ. आनन्द प्रकाश दीक्षित, डॉ. बचनदेव कुमार पाण्डेय, डॉ. जगदीश प्रसाद शर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं । हिन्दी समीक्षा में तुलसी के साहित्य पर संभवतः सर्वाधिक समीक्षात्मक साहित्य उपलब्ध है । अतः विश्वविद्यालयों में विभिन्न कोणों से तुलसी साहित्य पर शोध प्रबन्ध लिखे जा रहे हैं, जिनमें तुलसी की कारयित्री प्रतिभा के अलावा रचना–शिल्प काव्यकला, अलंकार योजना, जीवनी और विचारधारा, समाज दर्शन, धर्म दर्शन, शिक्षा दर्शन, भक्तिपरक गीत, पद परम्परा, भारतीय संस्कृति एवं तुलसी आदि विषयों में से प्रत्येक पर शोध प्रबन्ध लिखा जा सकता है । रामचरितमानस की अन्य भक्ति ग्रन्थ से तुलना भी की जा सकती है । रामचरितमानस की अन्य भाषाओं के रामकाव्य से तुलना भी की जा सकती है । अतः यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि यदि दृष्टि हो तो

विषय तो अनेक हैं । अतः रामकाव्य और तुलसी साहित्य अनेक विषयों का भण्डार है ।

अनुक्रमणिका

पृष्ठ क्रमाक

अध्याय – **1** 1-54

मध्यकालीन हिन्दी गुजराती रामकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन

1. संस्कृत में लिखित रामकथा और उसका महत्त्व 3

1.1 वाल्मीकि रामायण 10

1.2 महाभारत 20

1.3 बौद्ध साहित्य में रामकथा 25

1.3.1 दशरथजातकम् 25

1.3.2 अनामकजातकम् 25

1.3.3 दशरथ कथानम् 26

1.4 जैन रामकथा 26

1.5 कालिदास का रघुवंश 27

1.6 कवि कुमारदास विरचित जानकी हरण 30

1.7 भट्टिकाव्य अथवा रावण वध 31

1.8 धनंजयकृत – राघव पांडवीय 32

1.9 रामभद्राम्बा कृत रघुनाथाभ्युदय 33

1.10 महाकवि भास विरचित नाटक अभिषेक 33

1.11 प्रतिमा नाटक 34

1.12 दिङ्नागकृत कुन्दमाला 34

1.13 भवभूतिकृत महावीर चरित 35

1.14	*भवभूति कृत उत्तररामचरित*	36
1.15	*शक्तिभद्र कृत आश्चर्य चूडामणि*	40
1.16	*मुरारि कृत अनर्घ राघव*	40
1.17	*राजशेखर कृत बालरामायण*	40
1.18	*रामदेवकृत रामाभ्युदय*	41
1.19	*सोमेश्वर कृत उल्लास राघव*	41
1.20	*हस्तमल कृत मैथिली रामायण*	41
1.21	*जयदेव कृत प्रसन्न राघव*	42
1.22	*भास्कर कृत उन्मत्त राघव*	42
1.23	*महादेव कृत अद्भुत दर्पण*	42
1.24	*दामोदर मिश्र, मधुसूदन कृत हनुमन्नाटक*	43
1.25	*जैन साहित्य में रामकथा*	45

अध्याय – **2** 55-114

हिन्दी साहित्य में राम कथा

2.	हिन्दी साहित्य में रामकथा का प्रारंभ	61
2.1	*रामलला नहछू*	67
2.2	*रामाज्ञा प्रश्न*	67
2.3	*रामचरितमानस*	68
2.4	*बरवै रामयण*	71
2.5	*जानकी मंगल*	72
2.6	*पार्वती मंगल*	73
2.7	*दोहावली*	73
2.8	*कवितावली*	73

2.9 गीतावली 74
2.10 वैराग्य संदीपनी 76
2.11 श्रीकृष्ण गीतावली 77
2.12 विनयपत्रिका 77
2.13 सूर साहित्य में रामकथा 78
2.14 अन्य कवियों द्वारा राम कथा वर्णन 80
2.15 निम्बार्क संप्रदाय में रामकथा 80
2.16 केशवदास की रामचंद्रिका 81
2.17 सेनापतिकृत कवित्त रत्नाकर 83
2.18 प्राणचन्द्र चौहाण कृत – रामायण महानाटक 83
2.19 माधवदास चारण कृत – राम रासो एवं अध्यात्मरामायण 83
2.20 हृदयराम – हनुमन्नाटक 83
2.21 नरहरिबारहट – पौरुषेय रामायण 84
2.22 लालदास – अवध विलास 84
2.23 कपूरचन्द त्रिखा – रामायण 85
2.24 कबीरदास – कबीर की बानी 86
2.25 लालदास – लालदास चेतावनी 88
2.26 मलूकदास – रामावतारलीला 88
2.27 रीतिकाल के रामकाव्य – रामानंद जी 89
2.28 गुरुगोविंदसिंह – रामावतार गोविंदरामायण 89
2.29 जानकी शरण – अवध सागर 90
2.30 भगवन्तराय खीची – हनुमत्पच्चीसी 91
2.31 जनकराज किशोरीशरण – सीताराम सिद्धांत मुक्तावली एवं रघुबर करुणाभरण 91

2.32 नवलसिंह – रामचंद्र विलास 91
2.33 विश्वनाथसिंह – रामायण 91
2.34 रामप्रियाशरण – सीतायन 92
2.35 रसिक अली – मिथिलाविहार 92
2.36 सरजुराम पंडित – जैमिनी पुराण भाषा 92
2.37 कृपा निवास – भावना पच्चीसी 93
2.38 मधुसूदनदास – रामाश्वमेघ 93
2.39 जानकीशरण – सियाराम रसमंजरी 93
2.40 गोकुलनाथ – सीतारामगुणार्णव 93
2.41 मनियारसिंह – हनुमत छब्बीस 94
2.42 ललकदास – सत्योपाख्यान 94
2.43 गणेश – वाल्मीकि रामायण श्लोकार्थ प्रकाश – हनुमंत पच्चीसी 94
2.44 प्रेम सखी – श्रीराम तथा सीता जी का शिखनख 94
2.45 महात्माबालअली – नेहप्रकाश, सिद्धांत तत्त्व दीपिका 95
2.46 रामप्रियाशरण – प्रेमकली, सीतायन 95
2.47 रामसखे – जानकी नौ रत्न माणिक्य 95
2.48 प्रेमसखी – होली – श्री सीताराम नखशिक्षा 95
2.49 कृपानिवास – गुरुमहिमा प्रार्थना शतक 95
2.50 रामचरणदास – करुणासिन्धु विवेकशतक 96
2.51 रामगुलामविद्रोही – कवित्त प्रबंघ रामगीतावली 96
2.52 महाराज विश्वनाथसिंह – रामगीता टीका–रामरहस्य टीका 96
2.53 जीवाराम – जुगलप्रिया युगलप्रिया पदावली 96

2.54 स्वामी जनकराज किशोरीशरण : 97
अमर रामायण, जानकी करुणाकरण
2.55 प्रतापकुँवरि बाई – रामचन्द्रमहिमा, 97
रामगुणसागर
2.56 काष्ट जिह्वा स्वामीदेव – रामायण परिचय, 97
विनयामृत पदावली
2.57 युगलानन्यशरण हेमलता – श्रीजानकी स्नेह, 97
संत सुख प्रकाशिका पदावली
2.58 महाराजा रघुराजसिंह – रघुराजविलास – 98
रास रसिकावली
2.59 बैजनाथ कुरमी – रामचरितमानस की टीका 98
– रामसतसैया
2.60 जानकी प्रसाद – रामरसायन – रामायण 98
2.61 रघुनाथदास रामसनेही – विश्राम सागर 98
2.62 बनादास – प्रबोधक रामायण 98
2.63 शीलमणि – कनक भवन महात्म्य 98
श्री अवधप्रकाश
2.64 रसरंगमणि – श्री सीताराम झूलाविलास – 99
श्री रामरूप पथविलास
2.65 सीताराम शरण शुभशीला – युगलोत्कंठ प्रकाशिका 99

2.66 सियाराम शरण प्रेमलता – सीताराम रहस्य, सीताराम नामरूप वर्णन 99

2.67 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – रामसीता संवाद – रामलीला 100

2.68 श्री बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन' – रामागमन 101

2.69 लाला सीताराम – रघुवंश का पद्यानुवाद 101

2.70 श्री जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' – नवपंचामृत रामायण 101

2.71 श्री राधाकृष्णदास – रामचरितमानस 101

2.72 श्री बालमुकुन्द गुप्त – रामरक्षा स्त्रोत 101

2.73 आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी – रघुवंश का गद्यानुवाद 102

2.74 लाला भगवानदीन – रामगिर्याश्रम, श्रृंगारशतक 102

2.75 रामदेवी प्रसाद पूर्ण – रामरावण विरोध, रामधनुर्विधाशिक्षण 102

2.76 मिश्रबन्धु – लवकुशचरित 102

2.77 श्री गयाप्रसाद शुक्ल सनेही – रामवनगमन, लक्ष्मण मूर्छा 102

2.78 मन्नन द्विवेदी – गजपुरी की धनुषभंग, लक्ष्मणकुमार 102

2.79 अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' – बीरवर सौमित्र, सुतवती सीता 103

2.80 मैणिलीशरण गुप्त – उर्मिला 103

2.81 पं. रामचरित उपाध्याय – 'रामचरित चंद्रिका' रामचरित चिंतामणि 103

2.82 रामस्वरूप टंडन – सीतापरित्याग 104

2.83 विष्णु – सुलोचनासती 104

2.84 मैथिलीशरण गुप्त – पंचवटी, लीला, साकेत 105
2.85 बलदेवप्रसाद मिश्र – मैथिली परिणय 105
2.86 अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' – वैदेही वनवास 105
2.87 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' – राम की शक्तिपूजा 106
2.88 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' – उर्मिला 107
2.89 सुमित्रानंदन पंत – अशोकवन 107
2.90 केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' – कैकेयी 108
2.91 गोकुलचंद्र शर्मा – अशोकवन 108
2.92 श्रीमती शकुन्तला कुमारी रेणु – सती सीता 109
2.93 हरदयालसिंह – रावण महाकाव्य 109
2.94 पोदार रामावतार 'अरुण' – विदेह 109
2.95 चन्द्रप्रकाश शर्मा – सीता 110
2.96 सरयूप्रसाद त्रिपाठी 'मधुकर' – सीतान्वेषक 110
2.97 आचार्य तुलसी – अग्नि परीक्षा 110
2.98 गोविन्ददास विनीत – प्रिया या प्रजा 110
2.99 गयाप्रसाद द्विवेदी – नन्दीग्राम 111

अध्याय – **3** 115-194
मध्यकालीन गुजराती साहित्य में रामकथा
3. मध्यकालीन गुजराती साहित्य में रामकथा 117
3.1 कर्मण मंत्री – सीता हरण 119
3.2 भालण – रामायण, सीताविवाह 121
3.3 मांडण बंधारो – प्रबोधबत्रीसी, रामायण 123

3.4 भीम – प्रबोध प्रकाश, हरि लीला षोडशकला 124
3.5 कीकु वसही – अंगद विष्टि 124
3.6 श्रीधर कवि – रावण मंदोदरी संवाद 125
3.7 कवि नाकर – रामायण – लवकुशाख्यान 127
3.8 सूरदास – रामायण 129
3.9 उद्धव – रामायण 130
3.10 विष्णुदास – रामायण 131
3.11 वजियो – सीतावेल – सीता संदेश 133
3.12 काशीसुत शेधजी बंधारो – हनुमान चरित 135
3.13 हरिराम – सीता स्वयंवर 138
3.14 हरिदास – सीताविरहनी चातुरीओ 142
3.15 प्रेमानंद – रणयज्ञ – ऋष्यशृंग 144
3.16 भवान – रावण मंदोदरी संवाद 149
3.17 वल्लभ भट्ट – रामविवाह, लंका नाशलोका 150
3.18 गोविंद – रघुनाथ जी नो विवाह, राम वनवासनी साखीओ 152
3.19 द्वारकादास – सीता विरहना बारहमास 153
3.20 शामलभट्ट – अंगद विष्टि – रावण मंदोदरी संवाद 155
3.21 कालिदास – सीता स्वयंवर 160
3.22 पूरीबाई – सीता मंगल 163
3.23 कृष्णाबाई – सीता जी नी कांचळी 164
3.24 राजाराम – रामकथा 166
3.25 रणछोड – रावण मंदोदरी संवाद 167
3.26 रामैयो – सीताजी ना बार मास 168
3.27 दयाराम – हनुमान गरुड संवाद 169

3.28 प्रीतम – अध्यात्म रामायण 170

3.29 जगजीवन – रामकथा 170

3.30 धीरो – रणयज्ञ 170

3.31 रणछोडजी दीवान – रामायणना राम वाकां 171

3.32 रघुराम – लवकुशाख्यान 171

3.33 शंभुराम – लवकुशाख्यान 172

3.34 गिरधर – रामायण 172

अध्याय – **4** 195-396

हिन्दी गुजराती रामायणों का तुलनात्मक अध्ययन

4.1 तुलनात्मक साहित्य 201

4.2 'रामचरितमानस' और 'रामायण' के प्रेरणा स्त्रोत 203

4.3 'रामचरितमानस' में निरुपित राम कथा 209

4.4 'रामायण' में निरुपित रामकथा 222

4.5 'रामचरितमानस' और 'रामायण' के कथा निरूपण में साम्य वैषम्य 236

4.5.1 साम्य 238

4.5.2 वैषम्य 252

4.6 'रामचरितमानस' ओर 'रामायण' : चरित्र सृष्टि 263

4.6.1.1 'रामचरितमानस' में राम का चरित्र 263

4.6.1.2 गिरकृत 'रामायण' में राम का चरित्र 270

4.6.2.1 'रामचरितमानस' के लक्ष्मण 276

4.6.2.2 'रामायण' में लक्ष्मण का चरित्र 279

4.6.3.1 'रामचरितमानस' के भरत 281

4.6.3.2	‘रामायण’ के भरत	284
4.6.4.1	तुलसीदास रचित ‘रामचरितमानस’ का रावण	287
4.6.4.2	गिरधर कृत ‘रामायण’ का रावण	289
4.6.5.1	‘रामचरितमानस’ के हनुमान	292
4.6.5.2	गिरधर कृत ‘रामायण’ के हनुमान	295
4.6.6	‘रामचरितमानस’ और ‘रामाणय’ में सीता का चरित्र चित्रण	299
4.6.6.1	‘रामचरितमानस’ में सीता का चरित्र चित्रण	299
4.6.6.2	गिरधरकृत ‘रामायण’ में सीता का चरित्र	303
4.7.1	‘रामचरितमानस’ की भाषा	307
4.7.2	गिरधर कृत ‘रामायण’ की भाषा	317
4.8	‘रामचरितमानस’ और ‘रामायण’ की दार्शनिकता	320
4.8.1	‘रामचरितमानस’ में दार्शनिकता	321
4.8.2	गिरधर कृत रामायण में दार्शनिकता	325
4.9	‘रामचरितमानस’ में रसाभिव्यक्ति	328
4.9.1	श्रृंगार रस	329
4.9.1.अ	संयोग श्रृंगार	329
4.9.1.ब	वियोग श्रृंगार	330
4.9.1.2	करुण रस	330
4.9.1.3	वीर रस	331
4.9.1.4	हास्य रस	331
4.9.1.5	रौद्र रस	332
4.9.1.6	भयानक रस	333
4.9.1.7	बीभत्स रस	333
4.9.1.8	अदभूत रस	334

4.9.1.9	शांत रस	335
4.9.1.10	वात्सल्य रस	335
4.9.2. ‘रामायण’ में रस निरूपण		337
4.9.2.1	करुण रस	338
4.9.2.2	श्रृंगार रस	339
4.9.2.3	वीर रस	341
4.9.2.4	वात्सल्य रस	342
4.9.2.5	शांत रस	343
4.9.2.6	बीभत्स रस	344
4.9.2.7	भयानक रस	345
4.9.2.8	हास्य रस	346
4.9.2.9	अद्भूत रस	347
4.10 ‘रामचरितमानस’ और ‘रामायण’ में छंद योजना		349
4.10.1 ‘रामचरितमानस’ में छंद योजना		349
4.10.1.1	चौपाई	349
4.10.1.2	दोहा	350
4.10.1.3	सोरठा	350
4.10.1.4	हरिगीतिका	351
4.10.1.5	त्रिभंगी	351
4.10.1.6	तोमर	352
4.10.1.7	चोपैया	352
4.10.1.8	अरिल्ल	352
4.10.1.2.1	अनुष्टुप	353
4.10.1.2.2	इन्द्रवज्रा	353
4.10.1.2.3	त्रोटक	353

4.10.1.2.4 भुजंग प्रयात वृत्त 354

4.10.1.2.5 मालिनी वृत्त 354

4.10.1.2.6 रथोद्धता वृत्त 354

4.10.1.2.7 वसंतकलका वृत्त 355

4.10.1.2.8 वंशस्थविलयवृत्त 355

4.10.1.2.9 शार्दूलविक्रीडित वृत 355

4.10.1.2.10 स्त्रग्धरा वृत 356

4.10.1.2.11 नागस्वरुपिणी वृत 356

4.10.2. गिरधर कृत 'रामायण' में छंद योजना 357

4.10.2.1 चौपाई छंद 358

4.10.2.2 दोहा छंद 358

4.10.2.3 सोरठा छंद 359

4.10.2.4 छप्पय 359

4.10.2.5 हरिगीतिका छंद 360

4.10.2.6 कवित सवैया 360

4.10.2.7 त्रोटक छंद 361

4.11 'रामचरितमानस' और 'रामायण' में अलंकार योजना 362

4.11.1.'रामचरितमानस' में अलंकार योजना 362

4.11.1.1 अनुप्रास 363

4.11.1.2 यमक अलंकार 364

4.11.1.3 श्लेष अलंकार 364

4.11.1.4 वक्रोक्ति अलंकार 364

4.11.1.5 वीप्सा अलंकार 365

4.11.1.6 उपमा अलंकार 365

4.11.1.7 रूपक अलंकार 366

4.11.1.8	परिणाम अलंकार	366
4.11.1.9	संदेह अलंकार	367
4.11.1.10	भ्रांतिमान अलंकार	367
4.11.1.11	उल्लेख अलंकार	368
4.11.1.12	अपन्हुति अलंकार	368
4.11.1.13	उत्प्रेक्षा अलंकार	369
4.11.1.14	अतिशयोक्ति अलंकार	369
4.11.1.15	दीपक अलंकार	370
4.11.1.16	दृष्टांत अलंकार	370
4.11.1.17	निर्दशना अलंकार	371
4.11.1.18	व्यतिरेक अलंकार	371
4.11.1.19	अर्थान्तरन्यास अलंकार	371
4.11.1.20	विभावना अलंकार	372
4.11.1.21	प्रतीप अलंकार	373
4.11.2	गिरधर कृत रामायण में अलंकार योजना	374
4.11.2.1	अनुप्रास अलंकार	375
4.11.2.2	यमक अलंकार	375
4.11.2.3	वर्णानुप्रास अलंकार	375
4.11.2.4	उपमा अलंकार	376
4.11.2.5	रूपक अलंकार	376
4.11.2.6	उत्प्रेक्षा अलंकार	377
4.11.2.7	दृष्टांत अलंकार	377
4.11.2.8	स्वभावोक्ति अलंकार	377
4.11.2.9	अतिशयोक्ति अलंकार	378
4.11.2.10	अन्योक्ति अलंकार	378

4.11.2.11 निदर्शना अलंकार 378

4.11.2.12 अनन्वय अलंकार 379

4.11.2.13 अर्थान्तरन्यास अलंकार 379

उपसंहार 397--411

परिशिष्ट : वर्णानुक्रमिक ग्रंथानुक्रमणिका 412-432

❖❖❖

अध्याय – 1
मध्यकालीन हिन्दी गुजराती रामकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन

1. संस्कृत में लिखित रामकथा और उसका महत्त्व

1.1 *वाल्मीकि रामायण*

1.2 *महाभारत*

1.3 *बौद्ध साहित्य में रामकथा*

1.3.1 *दशरथजातकम्*

1.3.2 *अनामकजातकम्*

1.3.3 *दशरथ कथानम्*

1.4 *जैन रामकथा*

1.5 *कालिदास का रघुवंश*

1.6 *कवि कुमारदास विरचित जानकी हरण*

1.7 *भट्टिकाव्य अथवा रावण वध*

1.8 *धनंजयकृत – राघव पांडवीय*

1.9 *रामभद्राम्बा कृत रघुनाथाभ्युदय*

1.10 *महाकवि भास विरचित नाटक अभिषेक*

1.11 *प्रतिमा नाटक*

1.12 दिङ्नागकृत कुन्दमाला

1.13 भवभूतिकृत महावीर चरित

1.14 भवभूति कृत उत्तररामचरित

1.15 शक्तिभद्र कृत आश्चर्य चूडामणि

1.16 मुरारि कृत अनर्घ राघव

1.17 राजशेखर कृत बालरामायण

1.18 रामदेवकृत रामाभ्युदय

1.19 सोमेश्वर कृत उल्लास राघव

1.20 हस्तमल कृत मैथिली रामायण

1.21 जयदेव कृत प्रसन्न राघव

1.22 भास्कर कृत उन्मत्त राघव

1.23 महादेव कृत अद्भुत दर्पण

1.24 दामोदर मिश्र, मधुसूदन कृत हनुमन्नाटक

1.25 जैन साहित्य में रामकथा

अध्याय – 1
मध्यकालीन हिन्दी गुजराती रामकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन

1. संस्कृत में लिखित रामकथा और उसका महत्त्व

राम भारतीय जन जीवन के लिए श्रद्धा का आधार हैं । जीवन के प्रत्येक कार्यों के लिए प्रेरणा का मूल स्रोत हैं । वे भारतीय जन के आराध्य देव हैं । उनके प्रति जनता की अटूट भक्ति है । राम के विरुद्ध कथन पाप समझा जाता है । राम के चरित्र की आलोचना करनेवाले को नास्तिक एवं अधर्मी माना जाता है । सामान्य जन में ही नहीं मगर यह मान्यता विद्वानों में भी है । यद्यपि भारतीय समाज में कहीं–कहीं राम को मानवीय स्तर पर भी रखा जाता है । उनके कार्यों की आलोचना प्रत्यालोचना भी होती है, फिर भी इस प्रकार का व्यवहार परंपरा के प्रतिकूल माना जाता है । इसका मूल कारण यह है कि राम नाम का उनके हृदय पर ऐसा अक्षुण्ण प्रभाव है कि वे दृढ़ रूप से मानते हैं कि ऐसा करना संस्कृति एवं समाज के विरुद्ध है । भारतीय संस्कृति में राम नाम का व्यापक प्रचार एवं प्रसार है । लोग मानते हैं कि राम नाम से ही भवसागर को पार किया जा सकता है । रामलीला एवं नाटकों में राम के रूप में अभिनय करनेवाले व्यक्ति को देखकर लोग श्रद्धा से मस्तक झुका देते हैं । जीवन में जब प्रतिकूल परिस्थिति उपस्थित होती है या होने वाली होती है तब 'राम – भरोसा' कहकर निश्चिंत हो जाते हैं । एक दूसरे को मिलने के वक्त भी 'राम–राम' शब्द का प्रयोग करते हैं । स्मशान यात्रा में 'राम नाम सत्य है' या 'राम बोलो राम' का उच्चारण करने के पीछे जीवन को कृतार्थ करने की भावना ही है । कहीं दुर्घटना घटित होती है, किसी का अहित होता है तो 'जैसी रामजी की मरजी' ऐसा कहकर

आश्वासन देने का प्रयास किया जाता है । पहले की सोच और आज की सोच के बीच जमीं–आसमान का अंतर आ गया है । सोचने का ढंग ही बदल गया सा लगता है । पहले के लोग रामचरित या राम कथा पर आलोचना करना ठीक मानते नहीं थे, मगर आज का समाज तर्क प्रधान है । राम के चरित्र एवं स्वरूप के बारे में प्रायः सभी भाषाओं में विश्लेषण हो रहा है । जिस राम को भगवान या पुरुषोतम के रूप में पहचानते हैं, उन्हीं राम को काव्य, नाटक या आख्यान के नायक के रूप में विश्लेषित कर रहे हैं । नायक में कौन–कौन से गुण अपेक्षित हैं, उन्हीं गुणों के आधार पर राम के चरित्र को मूल्यांकित करने का प्रयास कर रहे हैं । राम के चरित्र का विश्लेषण एवं तात्त्विक विवेचन राम कथा के आधार पर ही करना संभव है ।

राम कथा का उद्‌गम स्थान एक चर्चा का विषय है । राम कथा सहस्रों वर्षों से भारतीय जनता के हृदय में स्थित है, जो अमिट है । प्राचीन काल से भारतीय साहित्य में इस कथा का विविध रूपों में चित्रण होता रहा है । भारत की आदि भाषा एवं मूल भाषा संस्कृत है । संस्कृत भाषा में रामकथा का उल्लेख मिलता है इतना ही नहीं रामकथा का मूल आधार संस्कृत वाङ्मय ही है । संस्कृत साहित्य के साथ–साथ पालि प्राकृत आदि साहित्य में भी राम कथा का भिन्न–भिन्न रूपों में वर्णन मिलता है । कालान्तर में विकसित होनेवाली प्रादेशिक भाषाओं में भी रामकथा का प्रचार एवं प्रसार मिलता है । रामकथा के किसी एक प्रसंग से प्रभावित होकर साहित्यकार अपने विचार प्रस्तुत करने लगे और उनकी कृति समाज में उनको प्रतिष्ठा प्रदान करती रही । एक बात अवश्य है कि मूल कथा और अन्य राम कथाओं में कुछ न कुछ असमानताएँ अवश्य हैं । असमानता होते हुए भी राम के प्रति लोगों के विचारों में परिवर्तन नहीं आया अपितु राम का चरित्र ज्यादा प्रशंसनीय और पूजनीय बन पाया है । राम शब्द की महानता अकथ्य है । राम शब्द के बारे

में 'रमन्ते योगिनोयस्मिन्निति'[1] ऐसा उल्लेख मिलता है, अर्थात् जिसमें योगी रमण करते हैं । राम को परमात्मा एवं परब्रह्म के रूप में देखा गया है जैसे –

रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदत्मनि ।

इति राम पदे नासौ परं ब्रह्माभिधीयते ।।[2]

शब्दकोश के अंतर्गत राम नाम का अर्थ परशुराम, दाशरथिराम एवं बलराम भी बताया गया है ।[3] संस्कृत वाङ्मय के अंतर्गत वाल्मीकि रामायण के पूर्व रामकथा संबंधी आख्यान प्रचलित थे । इसका आभास महाभारत के द्रोणपर्व और शांतिपर्व के संक्षिप्त रामचरित से मिलता है । कुछ विद्वानों के मतानुसार रामकथा के बीज वैदिक साहित्य में उपलब्ध होते हैं । एक मत यह भी है कि यह कथा बौद्ध साहित्य तथा होमर काव्य के आधार पर विकसित हुई है । कुछ विद्वानों का यह मत है कि यह कथा तत्कालीन प्रचलित आख्यानों एवं पुरावृतों पर आधारित है और इस कथा के प्रचारक एवं प्रसारक भट्ट तथा कुशलीव रहे हैं ।

पाश्चात्य विद्वान डॉ. वेबर रामकथा के मूलस्रोत को प्रस्तुत करने के लिए अनेक तथ्य प्रस्तुत करते हैं, मगर ये तथ्य सर्वमान्य एवं प्रामाणिक होने में संदेह है । अतः किसी निष्कर्ष पर पहुँचना कठिन लगता है । उनके मतानुसार रामकथा के नायक राम कृष्ण के भाई राम बलभद्र (हलभ्रत, बलराम आदि) का रूप है, जिन्हें ब्राह्मण ग्रंथों में कृषि का देव कहा गया है । रामकथा की नायिका सीता का पृथ्वी से उत्पन्न होना और अंत में धरती में समा जाना उसे वैदिक साहित्य में वर्णित सीता (कृषि की अधिष्ठात्री) के बहुत पास ला देता है । रामायण में अनसूया द्वारा सीता को दिये गये अङ्गराग का जो वर्णन उपलब्ध होता है वह तैतिरीय ब्राह्मण (2–3–10) में वर्णित सीता सावित्री तथा राजा सोम की कथा का अनुकरण मात्र है ।[4] डॉ. याकोबी नामक पाश्चात्य विद्वान डॉ. वेबर के इस मत से सहमत हैं कि वैदिक साहित्य में वर्णित राम कथा की सीता एक है, परंतु वे राम की एकरूपता राम बलभद्र से

स्वीकार नहीं करते । अङ्गांराग के प्रसंग पर वे मौन हैं ।[5] डॉ. वेबर राम के वनवास पर्यंत की कथा का आधार बौद्ध साहित्य धम्मपद टीका, सुत्त निपातटीका तथा दशरथ जातक मानते हैं । वे सीताहरण एवं लंका युद्ध के वर्णन में होमर काव्य का प्रभाव स्वीकार करते हैं ।[6] डॉ. याकोबी[7], एम. विन्टर नित्ज़[8], चिन्तामणि विनायक वैद्य[9] तथा के. टी. तेलंग[10] ने अपने तर्को के द्वारा डॉ. वेबर के इस मत का यथा संभव खंडन किया है । सभी विद्वान इस तथ्य पर एक मत हैं कि दशरथ जातक में राम कथा का विकृत रूप है और होमर काव्य का रामकथा पर तनिक भी प्रभाव नहीं है । प्रो. लेसन ने भी वेबर के इस मत का पूर्णरूपेण खंडन किया है ।[11] पाश्चात्य विद्वान विन्टर नित्ज़ ने कहा है कि बौद्ध धर्म का रामायण पर प्रभाव तो स्पष्ट नहीं दिखाई देता किन्तु राम के चरित्र पर बौद्ध प्रभाव ढूँढा जा सकता है ।[12] अन्य स्थान पर आर्थर लिल्ली नामक विद्वान कहते हैं कि होमर वाल्मीकि का ऋणी है, वाल्मीकि होमर का नहीं । होमर ने अपनी तीनों कथाएँ रामायण से ली हैं ।[13] जे. टी. ह्विलर ने रामायण में वर्णित लंका–युद्ध को एक नया रूप दिया है । उनके मतानुसार राम का लंका प्रस्थान ब्राह्मणों का बौद्धों पर अपने धर्म को लागू करने का संघर्ष है ।[14] डॉ. याकोबी ने जे. टी. ह्विलर के मत का प्रमाणों के आधार पर खंडन किया है जो तर्क सम्मत है ।[15] वस्तुतः लंकाधिपति रावण पर भी किसी प्रकार का बौद्ध प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता है । यह ठीक है कि राक्षस लोग ऋषि मुनिओं के यज्ञों का विध्वंस करते दिखाये गये हैं, किन्तु रावण एवं उसका पुत्र इन्द्रजित स्वयं यज्ञ, पूजा, जप इत्यादि करते दिखायी देता हैं, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वे बौद्ध प्रभाव से बहुत दूर हैं ।

डॉ. याकोबी रामकथा के दो भाग स्वीकार करते हैं । प्रथम भाग में अयोध्या प्रदेश की घटनाएँ हैं । इस भाग को ये ऐतिहासिक मानते हैं । द्वितीय भाग में दण्डकारण्य और लंकायुद्ध का वृत्तांत है । इन घटनाओं के

आधार पर ये वैदिक साहित्य मानते हैं । डॉ. याकोबी भी वैदिक साहित्य की सीता (कृषि की अधिष्ठात्री) तथा रामायण की सीता को एक ही मानते हैं ।[16] उनके मतानुसार गृह्य सूत्रों में पर्जन्य पत्नी एवं इन्द्र पत्नी के रूप में वर्णित सीता की रामायण की सीता से अभिन्नता है । राम इन्द्र अथवा पर्जन्य का रूप है । वैदिक साहित्य में उल्लिखित इन्द्र और वृतासुर के युद्ध को उन्होंने राम और रावण का युद्ध माना है । इसी प्रकार डॉ. याकोबी ने अन्य वैदिक उपख्यानों में भी राम कथा के संकेत ढूँढने का प्रयास किया है जैसे देवशुनी सरमा के कार्यों की तुलना हनुमान के पराक्रमों के साथ की गई है ।[17] यह सही है कि राम कथा में आनेवाले अनेक चरित्रों के नाम वैदिक साहित्य में भी उपलब्ध होते हैं किन्तु प्रश्न यह है कि ये चरित्र रामकथा से संबंधित है या नहीं ?

प्रचलित रामकथा इक्ष्वाकुवंश से सम्बद्ध है और ऋग्वेद[18] तथा अथर्ववेद[19] में भी इक्ष्वाकु शब्द मिलता है । इसी प्रकार दशरथ शब्द का प्रयोग भी ऋग्वेद में पाया जाता है ।[20] राम का नाम भी वैदिक साहित्य में कई स्थलों पर पाया जाता है जैसे ऋग्वेद[21], ऐतरेय ब्राह्मण[22], शतपथ ब्राह्मण[23], तैतिरीयारण्यक[24] तथा जैमिनीयोपनिषद ब्राह्मण[25] आदि ।

वैदिक साहित्य में जनक के नाम का भी उल्लेख है । कृष्ण यजुर्वेदीय तैतिरीय ब्राह्मण में जनक देवताओं से मिलते हैं ।[26] शतपथ ब्राह्मण में अनेक प्रसंगों में जनक का नाम आया है ।[27] जैमिनीय ब्राह्मण[28] तथा बृहदारण्यक उपनिषद्[29] में भी जनक का उल्लेख पाया जाता है । इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण[30] एवं छान्दोग्य–उपनिषद्[31] में अश्वपति कैकेय का वर्णन है । वैदिक साहित्य में सर्वाधिक उल्लेख सीता का मिलता है । डॉ. कामिल बुल्के ने इसका विशद विवेचन प्रस्तुत किया है ।[32]

वैदिक साहित्य में अंकित इन नामों का परस्पर कोई संबंध दृष्टिगोचर नहीं होता । कहीं भी राम को दशरथ का पुत्र तथा सीता को जनक की पुत्री

के रूप में नहीं बताया गया । वहाँ सभी का अपना–अपना अलग अस्तित्व है । इसके अतिरिक्त निरुक्त के अनुयायियों की यह धारणा है कि सभी शब्द यौगिक हैं ।[33] नैरुक्तों की यह धारणा वैदिक शब्दों – विशेषकर संहिता भाग के शब्दों पर लागू होती है । अतः इन शब्दों के आधार पर रामकथा का स्रोत वैदिक साहित्य में ढूँढना युक्ति–संगत प्रतीत नहीं होता ।

मैकडानल[34] तथा विन्टर नित्ज़[35] जैसे विद्वान यह मानते हैं कि रामकथा आरंभ में कुशीलवों द्वारा मौखिक रूप में गायी जाती थी । उनका कथन है कि रामकथा में जो अंतर उपलब्ध होते हैं उनका कारण यही है कि विभिन्न प्रदेशों में कुशीलवजन अपने अपने ढँग से इसका गान करते थे ।

विभिन्न तर्कों एवं आलोचना के बाद भी निश्चित रूप से विद्वानों में मतैक्य नहीं है कि रामकथा का मूल स्रोत क्या रहा होगा ? रामकथा अपने बिखरे रूप में लोक जीवन में विद्यमान थी पर उसे संग्रथित अभिव्यक्ति देने का कार्य वैदिक काल में किसी ने नहीं किया । सांगोपांग कथा प्राप्त नहीं हो सकने के कारण तथ्य एवं कल्पनाओं के सहारे विद्वत्जन अपना मत प्रस्तुत कर देते हैं । विभिन्न ग्रंथों के आधार पर नाम उल्लेख मात्र से भी राम कथा का उक्त ग्रंथ के साथ नाम जोड़ देते हैं । ऋग्वेद में इक्ष्वाकु, दशरथ और राम इन तीनों का एक–एक बार उल्लेख हुआ है । वे प्रभावशाली ऐतिहासिक राजा थे । इतना ही परिचय ग्रंथों में पाया गया है । आगे वैदिक साहित्य में कहीं उल्लेख प्राप्त नहीं होता । ऋग्वेद में सीता का भी एक स्थान पर उल्लेख मिलता है, लेकिन इस सीता का रामकथा के अन्य चरित्रों के साथ संबंध नहीं है । सीता का व्यक्तित्व ऐतिहासिक न होकर लांगल पद्धति के मानवीकरण का परिणाम है । इस सीता का उल्लेख वैदिक काल के प्रारंभ से लेकर अंत तक बराबर होता रहा है । एक तथ्य यह भी है कि ब्राह्मणों में राम मार्गवेय, राम औपतस्विनी तथा राम क्रातुजातेय इन तीनों का परिचय मिलता है । इनके ऐतिहासिक होने में संदेह नहीं किया जा सकता लेकिन उनका रामकथा या

रामायण से कोई भी संबंध संभव प्रतीत नहीं होता । अतः वैदिक काल में रामायण की रचना हुई थी अथवा रामकथा संबंधी गाथाएँ प्रसिद्ध हो चुकी थीं इसका निर्देश समस्त वैदिक साहित्य में कहीं भी नहीं पाया जाता । अनेक ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम रामायण के चरित्रों के नामों में मिलते हैं, इससे इतना ही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ये नाम प्राचीन काल में भी प्रचलित थे । बौद्ध साहित्य में भी रामकथा का उल्लेख हुआ है ऐसा आलोचकों का मत है मगर बौद्ध काल का समय निश्चित नहीं इसलिए यह कहना तर्क संगत नहीं होगा कि उक्त समय में रामकथा व्याप्त थी । ऐसा भी माना जाता है कि बौद्ध साहित्य में रामकथा का जो उल्लेख है वह मूल कथा से भिन्न है अथवा बौद्ध कथा को परिवर्तित करके रामकथा प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । इसका कोई ठोस प्रमाण या आधार नहीं मिलता । यदि राम को विष्णु का एक रूप मानकर चलें तो पूराणों में जो कथा है सब रामकथा ही मानी जाएगी । डॉ. भण्डारकर पुराण का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'इस बात की पूर्ण संभावना है कि राम के विष्णु होने का विश्वास ईसवीय काल के प्रारंभिक शतकों में विद्यमान था ।'[36] अतः हम कह सकते हैं कि रामकथा का सुगठित एवं पूर्ण विकसित रूप प्रस्तुत करने का श्रेय आदि कवि वाल्मीकि को ही प्राप्त होता है । वाल्मीकि ने लोकजीवन में रामकथा संबंधी जो धाराएँ प्रचलित थीं उनको एक सूत्रात्मक ढंग से पिरोकर प्रस्तुत करके भारतीय संस्कृति एवं साहित्य पर बड़ा उपकार किया है । वैसे वाल्मीकि रामायण के पूर्व महाभारत के द्रोण पर्व और शांति पर्व में रामकथा संबंधी निर्देश प्राप्त होते हैं लेकिन परवर्ती साहित्यकारों ने द्रोण पर्व एवं अन्य आख्यानों का आश्रय न लेकर वाल्मीकि कृत रामायण को ही अपना आधार ग्रंथ बनाकर अपनी कृति प्रस्तुत की है । यह निर्विवाद है कि वाल्मीकि रामायण परवर्ती राम–काव्य–परंपरा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रेरणास्रोत है और इस दिशा में वाल्मीकि रामायण को प्रस्थान बिन्दु कहना अधिक तर्क संगत

लगता है । ईसवी पूर्व रची गई वाल्मीकि रामायण को कृष्णामाचारियर आदि काव्य प्रथम कविता कहते हुए लिखते है कि 'बाद में अधिकांश महाकाव्य इसीके अनुकरण पर रचे गए ।'[37] वाल्मीकि रामायण की कथा पुरातन इतिहास तथा आख्यानों पर आधारित है । रामायण के ही कुछ स्थल स्वतः इसकी पुष्टि करते हैं । एक स्थान पर रामायण को इतिहास कहा गया है ।[38] अन्य स्थल पर इसका आधार 'पुरावृत तथा आख्यान माना गया है ।'[39] वाल्मीकि, नारद जी से प्रश्न पूछते हैं । प्रश्न के उत्तर में नारद जी कहते हैं कि 'इक्ष्वाकुवंश में उत्पन्न हुए एक ऐसे पुरुष हैं जो लोगों में राम नाम से विख्यात हैं ।'[40] भारतीय साहित्य एवं भारतीय परंपरा भी इसी तथ्य की पुष्टि करते हैं कि राजाओं की प्रशस्ति हेतु भट्ट एवं कुशलीव उनके समक्ष अथवा अन्य स्थलों पर उनका यशोगान उनके कृत्यों एवं पराक्रमों का गुणगान करते थे । वाल्मीकि की इस रचना से पूर्व भी राम का जीवन वृत लोगों में प्रचलित रहा होगा । उसी के आधार पर कवि ने रामकथा का वर्णन किया है । यह भी सत्य है कि कालान्तर में राम कथा में कुछ परिवर्तन और परिवर्धन भी होते रहे हैं । इस प्रकार यह स्पष्ट है कि आदि कवि किसी साहित्य के ॠणी नहीं है, अपितु उन्होंने अपने काव्य में तत्कालीन प्रचलित पुरावृतों एवं आख्यानों को ही गूंफित किया है । वाल्मीकि रामायण आज भी अजर अमर है ।

1.1 वाल्मीकि रामायण :

वाल्मीकि रामायण लोकिक संस्कृत के आदि ग्रंथ के रूप में विद्वानों द्वारा स्वीकृत है । भारत में रामकथा को धर्म का प्रश्रय प्राप्त है । राम के चरित्र को देव के रूप में स्वीकारा है । राम का चरित्र व्यापक है, केवल भारत में ही नहीं अपितु जहाँ–जहाँ भी भारतीय संस्कृति का प्रवेश हुआ है वहाँ राम की कथा भी किसी न किसी रूप में प्रचलित रही है । फादर कामिल बुल्के ने तिब्बत, खेतान, हिन्देशिया, श्याम, ब्रह्मदेश आदि में इसके चिन्ह पाये हैं ।

बौद्धों, जैनियों आदि ने भी आंशिक रूप से रामकथा का उपयोग किया और जातकों में भी इसकी कथाएँ मिलती हैं ।[41] भास कालिदास जैसे संस्कृत के अनेक साहित्यकारों की रचनाएँ इसी रामायण पर आधारित हैं । यहाँ तक कि बौद्ध कवि अश्वघोष ने भी निःसंकोच वाल्मीकि रामायण से कुछ अंश ग्रहण किये हैं । जैन साधु विमलसूरि (ई. की पहली शताब्दी) का ग्रंथ भी इसी के आधार पर लिखा गया है । बौद्ध ग्रंथों के तिब्बती तथा चीनी अनुवादों में (ई. की तीसरी शताब्दी) राम के कार्यों की कथाएँ या उनकी ओर संकेत प्राप्त होता है ।[42] वाल्मीकि एवं रामायण उत्पत्ति काल संबंधी तथ्यों को लेकर आज भी आलोचकों में मतैक्य नहीं हैं । विद्वानों ने परिणाम ढूँढने के अथक प्रयत्न किए मगर निश्चित समय तय नहीं कर पाये । अतः आज भी विवाद पूर्ववत है कि रामायण की रचना कब हई ? वाल्मीकि का प्रामाणिक समय क्या रहा होगा ? कई लोग ऐसा भी कहते हैं कि वाल्मीकि ने राम के जन्म के पूर्व ही रामायण की रचना की थी और राम उसी कथा के अनुसार चलते रहे । यह बात तर्क संगत एवं ठोस नहीं मानी जाती क्योंकि वैज्ञानिक युग में रहनेवाले, जीनेवाले लोग सहज रूप में स्वीकार नहीं कर सकते । रामायण के बालकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि वाल्मीकि राम के समकालीन रहे होंगे । राम द्वारा जब सीता का त्याग किया जाता है और सीता वाल्मीकि के आश्रम में लव–कुश के साथ निवास करती है, इससे ऐसा मानने में कोई संदेह नहीं कि राम और वाल्मीकि समकालीन नहीं थे । इससे राम और वाल्मीकि का समय निश्चित नहीं होता । यह भी सत्य है कि आदि कवि वाल्मीकि कृत रामायण का एक ही पाठ नहीं है । विद्वानों ने हस्तलिखित प्रतों एवं प्रकाशित ग्रंथों के आधार पर अपने अपने तर्क प्रस्तुत किए हैं । फादर कामिल बुल्के ने अपने शोध प्रबंध में वाल्मीकि कृत रामायण के तीन पाठों का उल्लेख किया है[43] – जिसमें (1) दाक्षिणात्य पाठ : गुजराती प्रिन्टींग प्रेस (बम्बई), निर्णय सागर प्रेस (बम्बई) तथा दक्षिण के संस्करण । यह पाठ

अपेक्षाकृत अधिक प्रचलित और व्यापक है । (2) गौड़ीय पाठ : गोरे सियो (पैरिस) तथा कलकत्ता संस्कृत सिरीज़ के संस्करण । (3) पश्चिमोत्तरीय पाठ : दयानंद महाविद्यालय (लाहौर) का संस्करण जो आजकल साधुआश्रम होशिआरपुर (पंजाब) से प्राप्य है । प्रत्येक पाठ में बहुत से श्लोक ऐसे मिलते हैं, जो अन्य पाठों में नहीं पाये जाते । दाक्षिणात्य तथा गौड़ीय पाठों की तुलना करने पर देखा जाता है कि प्रत्येक पाठ में श्लोकों की एक तिहाई संख्या केवल एक ही पाठ में मिलती है । इसके अतिरिक्त जो श्लोक तीनों पाठों में पाए जाते हैं उनका पाठ भी एक नहीं है और इनका क्रम भी बहुत स्थलों पर भिन्न है ।[44] इन पाठान्तरों का कारण यह है कि वाल्मीकि कृत रामायण प्रारंभ में मौखिक रूप से प्रचलित था और बहुत काल के बाद भिन्न–भिन्न परंपराओं के आधार पर स्थायी लिखित रूप धारण कर सका । फिर भी कथानक के दृष्टिकोण से तीनों पाठों की तुलना करने पर सिद्ध होता है कि कथावस्तु में जो अंतर पाए जाते हैं वे गौण हैं । मैंने इस दृष्टिकोण से तीनों पाठों की तुलना की है ।[45] इससे यह साबित हो जाता है कि उत्तरकाण्ड की रचना बहुत बाद में हुई थी । केवल दाक्षिणात्य पाठ में सीता त्याग का कारण बताया जाता है कि भृगु ने अपनी पत्नी की हत्या के कारण विष्णु को शाप दिया था । यदि उत्तरकाण्ड प्रारंभ से रामायण का एक अंग होता तो अन्य काण्डो की तरह इस काण्ड के तीन पाठों में भी अंतर पाये जाते । उपर्युक्त तीन पाठ की प्राचीनतम हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर बड़ौदा विश्वविद्यालय के ओरियेंटल इन्स्टिट्यूट द्वारा रामायण का एक वैज्ञानिक संस्करण सन् 1960 ई. से प्रकाशित हो रहा है । वह अब तक समाप्त नहीं है ।[46] एक शताब्दी के पूर्व रामायण पहले पहल पश्चिम में प्रस्तुत हुआ होगा । उस समय अनेक विद्वानों का मत था कि इसकी रचना अत्यंत प्राचीन काल में हुई थी । ए. श्लेगेल के अनुसार 11वीं श. ई. पूर्व तथा जी. गोरिसियो के अनुसार लगभग 12वीं श. ई. पूर्व हुई ।[47] इस मत के पश्चात् जी. टी. व्हीलर तथा डॉ.

वेबर ने रामायण पर यूनानी तथा बौद्ध प्रभाव मानकर उसकी रचना अपेक्षाकृत अर्वाचीन समझी है ।[48] यह भी सत्य है कि आजतक कोई ऐसा सर्वमान्य समय निर्धारित नहीं हो पाया । वैसे रामायण के भिन्न–भिन्न पाठों को देखने पर यह मालूम होता है कि बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड मूल वाल्मीकि कृत रामायण में विद्यमान नहीं था । बाद में प्रक्षेप के रूप में यह जोड़ा गया है । वाल्मीकि रामायण का वर्तमान रूप कम से कम दूसरी शताब्दी ई. का है, यह बहु–संख्यक विद्वानों का मत है, जैसे एम. विंटरनित्स इस प्रश्न का विस्तृत विश्लेषण करने के बाद एच. याकोबी के परिणाम पर पहुँचते हैं । एच. याकोबी पहली अथवा दूसरी शताब्दी ई. को प्रचलित रामायण का काल मानते हैं । एम. विंटरनित्स दूसरी शताब्दी ई. को अधिक समीचीन समझते हैं ।[49] श्री सी. वी. वैद्य इसका काल दूसरी शताब्दी के पूर्व तथा दूसरी शताब्दी ई. के बीच में मानते हैं ।[50] यद्यपि ये पहली शताब्दी ई. पूर्व अधिक समझते हैं । एक बात यह भी है कि महाभारत के आरण्यक पर्व के रचनाकाल में बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड की कुछ सामग्री प्रचलित हो गई थी । अतः अधिक संभव है कि प्रचलित रामायण का रूप दूसरी शताब्दी ई. के बाद का नहीं है ।[51] आदि रामायण प्रचलित रामायण से इतना भिन्न है कि इस महत्त्वपूर्ण विकास के लिए कई शताब्दियों की आवश्यकता प्रतीत होती है अतः वाल्मीकि कृत रचना कम से कम तीसरी शताब्दी ई. पूर्व की होगी । कई विद्वान वाल्मीकि का काल और प्राचीन मानते हैं । प्रामाणिक वाल्मीकि कृत रामायण में बौद्ध धर्म की ओर निर्देश नहीं मिलता । अतः इसकी रचना बुद्ध के पूर्व ही अथवा पाँचवी शताब्दी ई. पूर्व में हुई होगी । यह एम. मोनियेर विलियम्स तथा सी.पी. वैद्य का प्रधान तर्क प्रतीत होता है ।[52] डॉ. याकोबी रामायण का रचनाकाल पाँचवी शताब्दी ई. से पूर्व छठ़ी और आठवीं शताब्दी ई. पूर्व के बीच मानते हैं ।[53] एम. मैकडोनेल ने अपने संस्कृत साहित्य के इतिहास में याकोबी के तर्क स्वीकार कर रामायण को बुद्ध के पूर्व का माना था ।[54] बाद

में उन्होंने छन्दशास्त्र की दृष्टि से पाली गाथाओं तथा रामायण के श्लोंको की तुलना के आधार पर माना है । 'वाल्मीकि रामायण की रचना चौथी शताब्दी ई. पूर्व के मध्य में हुई थी । उनके अनुसार रामायण दूसरी शताब्दी ई. के अंत तक अपना वर्तमान रूप धारण कर चुका था ।[55] ए. बी. कीथ डॉ. याकोबी के ग्रंथ के बीस वर्ष बाद उनके तर्कों का विस्तृत विश्लेषण तथा खंडन करके आदि रामायण की रचना चौथी शताब्दी ई. पूर्व में रखते हैं ।[56] एम. विंटरनित्स प्रायः ए. बी. कीथ से सहमत हैं लेकिन वे वाल्मीकि को तीसरी शताब्दी ई. स. पूर्व का मानते हैं ।[57] अतः अधिक संभव प्रतीत होता है कि वाल्मीकि ने लगभग 300 ई. पूर्व अपनी अमर रचना की सृष्टि की है । इस निर्णय की पुष्टि इससे भी होती है कि पाणिनि में रामायण वाल्मीकि अथवा रामायण के प्रमुख चरित्रों का उल्लेख नहीं होता, लेकिन उनके समय में राम कथा प्रचलित हुई होगी क्योंकि सूत्रो में कैकेयी (7.3.2), कौशल्या (5.1.55) तथा शूर्पणखा (6.2.122) की ओर संकेत मिलते हैं ।

डॉ. सत्यव्रत रामायण का रचना काल व्याकरणाचार्य पाणिनि के बाद का मानते हैं । उन्होंने इसके लिए आधार प्रस्तुत किया है । पाणिनि के रामायण में आनेवाले अनेक चरित्रों का उल्लेख किया है । यदि रामायण का अस्तित्व उससे पूर्व होता तो रामायण में प्रयुक्त उन आर्ष प्रयोगों को जो व्याकरण नियम सम्मत नहीं है, कैसे छोड़ सकते थे ।[58] इस विषय पर डॉ. याकोबी का मत प्रस्तुत करना अनुपयुक्त नहीं होगा । उनका मत है कि पाणिनि रामायण के चरित्रों से परिचित था वह रामायण से भी परिचित होगा । उसने रामायण का उल्लेख क्यों नहीं किया है ? संभव है कि उस समय रामायण के गायकों का स्तर निम्न रहा हो और उनकी भाषा को शुद्ध एवं प्रामाणिक न माना जाता हो । भाष्यकार पंतजलि ने भी कहा है कि उस समय आर्यावर्त में शिष्ट भाषा को ही स्वीकारा जाता था ।[59] श्री कृष्णकुमार ओझा[60] तथा डॉ. रामाश्रय शर्मा[61] ने अनेक आधार पर रामायण का रचनाकाल बुद्ध से पूर्व सिद्ध किया

है । इस प्रकार आलोचकों ने वाल्मीकि रामायण का काल निर्धारित करने का प्रयत्न किया है । अथक प्रयत्नों के बाद भी सर्वसम्मत मत स्थापित नही हो पाया । इसका कारण यह है कि रामायण पहले मौखिक रूप में प्रचलित रही है, जिसके फलस्वरूप उसमें प्रक्षेपण जुड़ते गए । अतः पाठों में अंतर मिलता है, जिसका उल्लेख फादर कामिल बुल्के ने किया है ।[62] जिस प्रकार समय निर्धारित नहीं हो पाया उसी प्रकार रामायण का मूलरूप भी निर्धारित नहीं हो पाया । विद्वान आलोचक वाल्मीकि रामायण को बुद्ध एवं महावीर से पूर्ववर्ती भी सिद्ध करते हैं ।[63] वाल्मीकि रामायण की अपनी एक निजी विशेषता है । वाल्मीकि के राम अन्य रामकथा या रामायणों से भिन्न हैं । वैसे वाल्मीकि आदर्शवादी होते हुए भी राम के सर्वगुण संपन्न चरित्र को मानवीय भूमि पर उतारते हैं । प्रकृति के व्यापक परिवेश में उन्हें प्रतिष्ठित करते हैं । राम का यह मानवीय व्यक्तित्व कालान्तर में भारतीय रचनाकारों का प्रेरणास्रोत बना । अरण्यकाण्ड के 57वें सर्ग में अपशुकन देखकर राम चिन्तित होते हैं – 'तस्य संत्वरमाणस्य द्रष्टुकामस्य मैथिलीम्' : सीता को देखने के लिए तेजी से कदम बढ़ाते हैं । 58वें सर्ग के प्रथम श्लोक में ही राम लक्ष्मण से पूछते हैं कि मेरे दुःख की सहभागिनी, वह क्षीणकटि सीता कहाँ है ? राम उसे 'प्राण सहाया', 'सुर सुतोपमा', 'प्राण सहचरी', 'देव कन्या' कहकर संबोधित करते हैं । इतना ही नहीं छट्ठे श्लोक में उनकी शंका बढ़ती है : प्राणो से भी प्रिय वैदेही क्या जीवित होगी ? आगे वे कहते हैं कि 'यदि सीता समाप्त हो गई होगी तो मैं भी प्राण त्याग दूँगा ।' सर्ग के अंत में कविने रामकी पीड़ा का हृदयस्पर्शी चित्रण प्रस्तुत किया है । 59वें सर्ग से लेकर 67 वें सर्ग तक राम का विलाप महाकाव्य पर छाया रहता है । यहाँ वाल्मीकि ने राम को सहज करुणातुर मानवीय भूमि पर उतारा है – प्रिया के लिए विलाप करता हुआ सामान्य मनुष्य ! वे प्रकृति से पूछते हैं – कदम्ब, मेरी प्रिया तुम्हारे पुष्पों को बहुत चाहती थी बताओ वह 'शुभानना' कहाँ है ? संपूर्ण वनस्पति राशि से वे अपनी

प्रिया के विषय में पूछते हैं : अर्जुन ककुभ, अशोक, तालवृक्ष, जाम्बूनद, कनेर, आम, कदम्ब, शाल, कटहल, कुरन धक अनार आदि वृक्ष और बकुल, पुन्नाग, चन्दन, केवड़ा आदि के फूलों को सीता के विषय में पूछते हैं । (वा. रा. 3/60) वाल्मीकि ने राम में सामान्य मानव का रूप अंकित करने का प्रयास किया है । राम को सीता के साथ व्यतीत किया हुआ समय एवं सीता के सौंदर्य का स्मरण बारबार आता है । वे बीती बातें याद करके गहरे विषाद में डूब जाते हैं । वे लक्ष्मण से कहते हैं कि 'गोदावरी से मैं सीता के बारे में पूछता हूँ तो उत्तर क्यों नहीं देती' ? (वा.रा. सर्ग 3–64) वे पर्वतराज पर क्रोधित होते हैं कि सीता के दर्शन क्यों नहीं कराते ? आगे कवि ने राम का एक निम्न मानवीय रूप भी अंकित किया है । राम लक्ष्मण से कहते हैं कि लगता है सृष्टि के जन्मदाता पालक संहारक और करुणावान शंकर भी चुप्पी साधे बैठे हैं । मैं सदैव लोकहित में लगा रहा, सदय रहा, क्या इसलिए इन्द्र आदि देवेश्वरों ने मुझे निर्वीय समझ लिया ? (18 वा. रा. 64–54–55) क्या मेरे गुण (मानवीय मूल्य) ही मेरे दोष हो गए हैं ? तो फिर मेरे व्यक्तित्व की दूसरी दिशा का भी उदय होगा । मेरे गुण (उच्च मानवीय मूल्य) ही मेरे दोष बन गए हैं, देखो तो लक्ष्मण राक्षसों के संहार के लिए कोमल संवेदनों का एक नया रूपांतरण होगा – पौरुषवान, तेजोमय (वा.रा. 64–56–57) आगे वे कहते हैं : यक्ष गंधर्व, पिशाच, राक्षस, किन्नर यहाँ तक कि मनुष्य भी अब सुख से न रह सकेंगे । (वा.रा. 64–58) राम का मानवीय रूप अंकित करने के पीछे वाल्मीकि का अपना एक दृष्टिकोण है, निजी मौलिकता है । इस प्रकार राम का मानवीय अंश प्रबल है । राम को सीता प्राण से भी प्रिय होने पर जनमत को अग्रसर एवं स्वीकृत करके राम सीता का त्याग करते हैं, जबकि राम ने सीता की अग्निपरीक्षा भी की थी । राम सामान्यजन के मत की भी अवहेलना नहीं करते । वाल्मीकि रामायण छंदो बद्ध, सर्गबद्ध, सौंदर्य–युक्त, मनोहर भाषाशैली वाला श्रेष्ठ महाकाव्य है, जिसके अंतर्गत उतम महाकाव्य के सभी

लक्षण मौजूद हैं । वाल्मीकि ने इस बात का संपूर्णतः ध्यान रखा है कि इनके महाकाव्य के राम एक देवता एवं पुराण पुरुषोत्तम नहीं है । राम सामान्य पुरुष है इसीलिए दुःख और विपत्ति का सामना करना पड़ता है । राम अपने पुरुषार्थ त्याग एवं कर्तव्य–निष्ठा से दुःख में रास्ता निकालते हैं । यदि राम देवता के रूप में बताये जाते तो रामकाव्य या वाल्मीकि रामायण महाकाव्य के रूप में न पहचाना जाता मगर 'लीला काव्य' के रूप में ही प्रचलित होता ।

वाल्मीकि रामायण का कथा फलक चौबीस हजार श्लोकों एवं सात काण्डों में विभक्त है । यहाँ विस्तृत उल्लेख अपेक्षित नहीं है अतः मुख्य कथा संकेत ही पर्याप्त है । यथा –

काण्ड – 1 (बालकाण्ड) इसमें राम के नवयौवन, विश्वामित्र के साथ जाना, उनके यज्ञ की रक्षा करना, राक्षसों को मारना तथा सीता के साथ विवाह आदि का वर्णन है ।

काण्ड – 2 (अयोध्याकाण्ड) इसमें राम के राजतिलक की तैयारी, कैकेयी द्वारा राज्याभिषेक का विरोध, राम का वनगमन, राम के वियोग में दशरथ की मृत्यु, राम को अयोध्या वापस लाने के लिए भरत का परिवार और सेना सहित चित्रकूट जाने का वर्णन है ।

काण्ड – 3 (अरण्यकाण्ड) इसमें राम के दण्डकवन में रहने, विराध आदि राक्षसों को मारने, पंचवटी में रहने, राम के पास शूर्पणखा के आने चौदह हजार निशाचरों के साथ खरको मारने, रावण द्वारा सीता के चुरायेजाने और सीता के वियोग में राम के रोते हुए फिरने का वर्णन है ।

काण्ड – 4 (किष्किन्धा काण्ड) इसमें राम का सुग्रीव को अपने साथ मिलाने, वाली को मारने और बंदरों को साथ लेकर हनुमान का सीता की खोज में जाने का वर्णन है ।

काण्ड – 5 (सुन्दर काण्ड) इसमें लंका के सुंदर द्वीप, रावण के विशाल महल, हनुमान का सीता को धीरज बँधाने और सीता का पता लेकर हनुमान के वापस लौट ने का वर्णन है ।

काण्ड – 6 (युद्धकाण्ड) यह सबसे बड़ा काण्ड है । इसमें रावण पर राम की विजय का वर्णन है ।

काण्ड – 7 (उत्तरकाण्ड) इसमें अयोध्या में व्यतीत होनेवाले राम के शेष जीवन, सीता के विषय में लोकापवाद, सीता निर्वासन, सीता शोक, वाल्मीकि के आश्रम में कुश–लव के जन्म और अंत तक की सारी कथा का वर्णन है ।[64]

वाल्मीकि रामायण की कथावस्तु से आलोचक परिचित ही है मगर संकेत देने के पीछे यहाँ यह प्रयोजन है कि मूल कथा से परिवर्तित रूप भी विद्यमान है । अतः वाल्मीकि रामायण की मूल कथा का संकेत देना अति आवश्यक है । वाल्मीकि रामायण विशेषताओं का समूह है तथा रामकालीन शासन–व्यवस्था, अर्थ–व्यवस्था, समाज–व्यवस्था, कुटुम्ब–व्यवस्था एवं शिक्षण–व्यवस्था का उल्लेख कर सकते हैं ।[65]

वाल्मीकि के परवर्ती साहित्य में रामकथा :

वाल्मीकि का रामायण रामकथा तक ही सीमित नहीं रहा मगर धार्मिक एवं ललित साहित्य आदि में भी इसका उतरोतर विकास होता रहा है । भारत ही नहीं मगर जहाँ–जहाँ मनुष्यों का निवास स्थान है वहाँ वहाँ रामकथा पहुँची है । विश्व के प्रायः हर एक देशं में रामायण का प्रचार एवं प्रसार हुआ है । आलोचक यह भी कहते हैं कि बालकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड क्षेपक हैं । मूल रचना के बाद जोड़े गए हैं । इनके अलावा जो उपाख्यान प्राप्त हुए हैं उनमें भी क्षेपक का भाव निहित है । जैसे श्लोक पादुर्भाव : (1–2) एक दिन जंगल में धुमते हुए वाल्मीकि ने एक क्रौन्च युग्म को देखा । दोनों अपनी

प्रणय क्रीडा में लीन थे । उसी समय किसी एक व्याध्र ने कहीं से तीर चला कर नर क्रौन्च को मार डाला । यह देखकर वाल्मीकि का हृदय द्रवित हो उठा । वाल्मीकि ने व्याध्र को शाप दे डाला । वाल्मीकि के मुँह से अचानक श्लोक निकल पड़ा । तब ब्रह्मा ने उनसे छंद में राम का यशोगान करने के लिए कहा । इस उपाख्यान की ही बात नहीं अपितु आनंद रामायण एवं अदभूत रामायण के रचयिता के रूप में वाल्मीकि को ही मानते हैं । जैसे ''रामायण जो आज वाल्मीकि का बनाया हुआ ग्रंथ मिलता है उससे पहले भी राम की कथा काव्यबद्ध लिखी मिलती है । महर्षि ने अपने महाभारत में उससे कुछ श्लोक उदधृत किये हैं । संभवतः वह रामायणच्यवन ऋषि ने लिखा था, परंतु प्रसिद्ध वह रामायण हुआ जिसे उसी कुल के वाल्मीकि ने बाद में लिखा । वह इतना सुंदर और प्रसिद्ध हुआ कि च्यवनवाली कथा उससे दब गई और वाल्मीकि को 'आदि कवि' भी कहा जाने लगा जिससे उनका रामायण भी आदि काव्य कहलाता है । वह रामायण 24000 श्लोकों में लिखा है ।[66] अदभूत रामायण के अनुसार पृथ्वी पर पच्चीस हजार रामायण प्रवर्तमान हैं – जैसे

श्रूयते ब्राह्मणैर्नित्यमूषिभिः पितृभिः सूरैः ।
पंचविंशतिसहस्त्रं रामायणमिदंभुविः ।।

अर्थात् 'जिसको ब्राह्मण पितरदेवता नित्यश्रवण करते हैं जिसमें से पृथ्वी में 25 सहस्त्र रामायण हैं ।[67]

अदभूत रामायण में कई बातें अदभूत बताई गई है जैसे अष्टम सर्ग के श्लोक 41 में सीता को मंदोदरी की पुत्री बताया गया है । साथ-साथ सीता द्वारा सहस्रमुखी रावण का वध भी बताया गया है । (सर्ग 23) जैसे पुष्पक से शीघ्रता से उतरकर खडग खर्परधारण किये वाजिनी के समान रावण के रथ पर टूट पड़ी । एक निमिष मात्र में ही लीला से रावण के सहस्रशिर खडग से काट डाले ।

अवस्कंध स्थात्तर्ण खडग खर्पर धारिणी ।
श्येनीव रावण रथे पपात् निमिषान्तरे ।।
शिरांसि रावण स्याशु निमेषान्तर मात्रः ।
खडगेन तस्य विच्छेद सहस्राणीह लीलया ।। (23–12–13)

सर्ग 25 में राम को जानकी की सहस्र नाम से स्तुति भी करते दिखाये गए हैं । आनंद रामायण के उल्लेख में यह कहा गया है कि इसके रचयिता भी वाल्मीकि हैं । आनंद रामायण की भूमिका (परिचय) में अनुवादकों ने लिखा है कि सत्य युगमां प्रचेता पुत्र आदि कवि श्री वाल्मीकि मुनिए ब्रह्मा जी नां प्रोत्साहनथी त्रेतायुगमां थनार श्री रामचरित नवलाख काण्ड, नेवुं लाख सर्ग अने शतकोटि (अबज) श्लोक बद्ध रच्युं हतुं ।[68] आनंद रामायण में नौ काण्ड प्राप्त होते हैं । जिसमें (1) सारकाण्ड, (2) यात्रा काण्ड, (3) याग काण्ड, (4) विलास काण्ड, (5) जन्म काण्ड, (6) विवाह काण्ड, (7) राज्य काण्ड, (8) मनोहर काण्ड, (9) पूर्ण काण्ड । आनंद रामायण में आदि रामायण से कई भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं । उसका उल्लेख करना यहाँ इसलिए आवश्यक नहीं है क्योंकि यह रचना वाल्मीकि की प्रामाणिक रचना नहीं हो सकती ।

1.2 महाभारत :

संस्कृत साहित्य में रामायण के पश्चात् दूसरा स्थान महाभारत का माना जाता है । विश्वसाहित्य में महाभारत सबसे लंबा महाकाव्य है ।[69] रामायण में महाभारत के वीरों का निर्देश नहीं मिलता । दूसरी ओर महाभारत में न केवल रामकथा का वरन् वाल्मीकि कृत रामायण का भी उल्लेख पाया जाता है । इससे स्पष्ट है कि रामायण की रचना के पश्चात् ही महाभारत को अपना वर्तमान रूप मिला है । फिर भी संभव है कि भारत (अर्थात् महाभारत का प्राचीनतम रूप) रामायण के पूर्व उत्पन्न हुआ था । चतुर्विंशतिसाहस्री भारत संहिता (1-1-61) तथा शतसहस्रम् (1,56,13,32) महाभारतम् इन दो सोपानों

का महाभारत में ही उल्लेख मिलता है । प्रायः सभी विद्वानों की सम्मति से रामायण का रचनाकाल भारत तथा महाभारत के बीच में माना जाता है ।[70] महाभारत को केवल एक ग्रंथ या महाकाव्य कहने मात्र से इसके प्रति अन्याय होगा । सुप्रसिद्ध जर्मन विद्वान विंटरनित्ज़ का कथन है, 'महाभारत अपने आप में संपूर्ण एक समग्र साहित्य (Whole literature) है । महाभारत शब्द का अर्थ महायुद्ध है, क्योंकि पाणिनि (4–2–56) के मत से 'भारत' का अर्थ संग्राम ही होता है, पर जान पड़ता है, 'भारत' शब्द का संबंध भरत वंश से है, क्योंकि स्वयं महाभारत में ही इस कथा को 'महाभारत युद्ध (14-81-8) और महाभारताख्यान' (1-62-39) कहा गया है । संभवतः 'महाभारत' शब्द इन्हीं शब्दों का संक्षिप्त रूप हो, इसलिए पंडितों ने महाभारत का अर्थ किया हैं, भरतवंशवालों के युद्ध की कथा । स्वयं महाभारत में इस नामकरण का एक मजेदार कारण दिया हुआ है । एक बार देवताओं ने स–रहस्य चारों वेदों को तराजु के एक पलड़े पर और महाभारत को दूसरे पलड़े पर रखकर तोला । महाभारत भारी निकाला । इसीलिए 'महान' और 'भारवान' (भारी) होने के कारण यह महाभारत कहा जाने लगा । (1-1-269-71)[71] महाभारत केवल युद्ध का ही आख्यान नहीं है । महाभारत के बहुत से अंश ऐसे हैं, जिनमें युद्ध का कहीं उल्लेख ही नहीं । वास्तव में महाभारत उस युग का दर्पण मात्र है, जिसमें ऐतिहासिक, नैतिक, पौराणिक, उपदेश–मूलक और तत्त्ववाद संबंधी कथाओं का विशाल विश्वकोश है । भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार महाभारत को पाँचवाँ वेद कहा गया है, जो बिलकुल सही है । आज तक किसी आलोचक ने महाभारत की प्रामाणिकता पर संदेह प्रकट नहीं किया । कम से कम दो हजार वर्ष से यह भारतीय जनता के मनोविनोद, ज्ञानार्जन, चरित्र निर्माण और प्रेरणा प्राप्ति का साधन रहा है । महाभारत स्वयं अपने विषय में स्पष्टता करता है कि – ''जैसे दहीं में मक्खन, मनुष्यों में ब्राह्मण, वेदों में आरण्यक, औषधों में

अमृत, जलाशयों में समुद्र और चतुष्पादों में गौ श्रेष्ठ है, उसी प्रकार समस्त इतिहास में यह 'भारत' श्रेष्ठ है । (1-1-261-3)

महाभारत के समय के विषय में आलोचकों ने अपने अपने साक्ष्यों के आधार पर मत प्रस्थापित किये हैं, जैसे 'इस बात का निश्चित प्रमाण पाया गया है कि सन ईसवी की पाँचवीं शताब्दी में 'महाभारत' अपने वर्तमान रूप को धारण कर चुका था । सन् 463 ई. (या अधिक से अधिक 532 ई.) का एक दान पत्र पाया गया है, जिसमें स्पष्ट लिखा है कि वेद व्यास ने महाभारत में एक लाख श्लोक लिखे थे ।'[72] 'संस्कृत साहित्य के इतिहास' में भी इसी समय का उल्लेख किया गया है ।[73] अतः अन्य साक्ष्यों या प्रमाणों की क्या आवश्यकता है ? यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं कि महाभारत का समय ई. सन की पाँचवीं शताब्दी रहा होगा । महाभारत के रचयिता व्यास देव अथवा वेदव्यास ही हैं । व्यास देव ने वैशम्यापन नामक अपने शिष्य को कथा सुनाई । इन्हीं वैशम्पायन ने नागयज्ञ के अवसर पर यह कथा दूसरी बार सुनाई । तीसरी बार सूत–पुत्र शौनक ने ऋषियों को सुनाई । सारा महाभारत वैशम्पायन और जनमेजय के संवाद के रूप में कहा गया है । इस प्रकार तीन प्रकार के वक्ताओं ने तीन प्रकार के श्रोताओं को सुनाया, जिससे महाभारत के मूल रूप में परिवर्तन और वृद्धि हो वह सहज स्वाभाविक है, जैसे आदि पर्व में बताया गया है कि उपाख्यानों को छोड़कर 24000 श्लोकों की संहिता उन्होंने (वेद व्यास ने) लिखी है । फिर उसी अध्याय में यह भी कहा गया है कि व्यास देव ने 60 लाख श्लोकों का काव्य लिखा था जिसमें 30 लाख देवों के लिए 15 पितरों के लिए 14 लाख गंधर्वों के लिए और 1 लाख मनुष्यों के लिए लिखे थे । (1–1–101) इन्हीं एक लाख श्लोकों का यह विशाल काव्य आज का महाभारत है, इसलिए इसे 'शत साहस्री' संहिता 'सौ हजार श्लोकों का संग्रह' ग्रंथ कहा जाता है । महाभारत में रामकथा का चार स्थलों पर उल्लेख मिलता है, जिसमें रामोपाख्यान, आरण्यक पर्व, द्रोण पर्व, तथा शांति पर्व

है । आरण्यक पर्व में रामकथा का दो बार उल्लेख मिलता है । रामोपाख्यान आरण्यक पर्व का एक महत्त्वपूर्ण अंश है, जिसमें राम कथा विस्तारपूर्वक वर्णित है । इसके अतिरिक्त एक ओर स्थान पर भीम – हनुमान संवाद में हनुमान ग्यारह श्लोकों में राम के जन्म से राज्य–प्राप्ति तक की कथा अत्यंत संक्षेप में भीम को सुनाते हैं ।[74] दूसरा प्रसंग द्रौपदी के हरण तथा उसको पुनः प्राप्त करने के पश्चात् युधिष्ठिर अपने दुर्भाग्य पर शोक प्रकट करते हुए कहते हैं कि 'अस्ति नूनं मया कश्चिदल्प भाग्यतरो नरः क्या मुझसे भी कोई अधिक अभागा है ? (3, 257, 10) इस पर मार्कण्डेय राम का उदाहरण देकर युधिष्ठिर को धैर्य बँधाने का प्रयत्न करते हैं । युधिष्ठिर के रामचरित सुनने की इच्छा प्रकट करने पर मार्कण्डेय रामोपाख्यान सुनाते हैं । पूना के प्रामाणिक संस्करण में इस रामचरित का विस्तार 704 श्लोकों का है । जिसमें पूरे 200 श्लोक युद्ध के वर्णन के लिए प्रयुक्त हुए हैं ।[75] इस विस्तृत रामोपाख्यान और आदि रामायण के संबंध में डॉ. वेबर ने अपने चार मत प्रस्तुत किए हैं ।

(1) रामोपाख्यान रामायण का आधार है ।

(2) रामोपाख्यान एक ऐसे रामायण पर निर्भर है जो प्रचलित रामायण का पूर्व रूप है ।

(3) रामोपाख्यान वाल्मीकि रामायण का स्वतंत्र संक्षिप्त रूप है ।

(4) रामोपाख्यान तथा रामायण दोनों किसी एक सामान्य मूल स्त्रोत के स्वतंत्र विकास माने जाते हैं ।[76] पाश्चात्य अन्य विद्वान इस मत से सम्मत नहीं है । 'इहाप्किन्स तथा ए. लुडविग का मत है कि रामोपाख्यान रामकथा का एक स्वतंत्र रूप है, जो रामायण को छोड़कर किसी अन्य प्राचीन राम–चरित पर निर्भर है ।[77] इन सब आलोचकों के मतों को ध्यान में रखते हुए डॉ. याकोबी कहते हैं कि रामोपाख्यान के रचयिता ने रामायण की किसी हस्तलिपि का सहारा नहीं लिया है, लेकिन अपने प्रदेश में

प्रचलित रामायण उसे कंठस्थ रही होगी । इसी कारण इस कथा का संक्षिप्त वर्णन करने में छोटा–मोटा अंतर सहज ही आ गया होगा । अतः रामोपाख्यान वाल्मीकि कृत रामायण के किसी प्राचीन रूप का संक्षेप मात्र है । अधिकांश विद्वानों ने यही मत तर्क संगत माना है ।[78]

द्रोण पर्व की रामकथा :

यह कथा षोडश राजोपाख्यान के अंतर्गत मिलती है । द्रोण पर्व में अभिमन्यु वध के कारण शोक संतप्त युधिष्ठिर को धैर्य देने के लिए वेद व्यास उनको षोडशराजोपाख्यान सुनाते हें । ये राजा महान होते हुए भी अपने अपने समय पर सबके सब मर गये थे । इन सोलह राजाओं में से एक राम भी थे । नारद राम की महिमा का वर्णन करते हुए अयोध्या काण्ड से लेकर युद्धकाण्ड के अंत तक राम कथा की रूपरेखा खींचते हैं । प्रसंग के अनुसार रामकथा की अपेक्षा रामराज्य की समृद्धि तथा राम की महिमा को अधिक महत्त्व दिया गया है । वनवास से लेकर अयोध्या के प्रत्यागमन तक सारी कथा का वर्णन 10 श्लोकों में समाप्त किया जाता है । इसके अनंतर राम का अभिषेक, राम के गुणों की उत्कृष्टता, राम राज्य में दुष्टों का अभाव, राम का 11000 वर्षों का शासन काल तथा उनकी मृत्यु (स चेन्ममार सृंजय) इन सबका वर्णन 21 श्लोकों में दिया जाता है ।[79]

शांति–पर्व की राम कथा :

शांति–पर्व की राम कथा का प्रसंग द्रोण पर्व के समान है । यहाँ जब युधिष्ठिर पुत्र शोक से शांत और स्थिर नहीं होते तो श्री कृष्ण उनको षोडशराजोपाख्यान सुनाते हैं ।[80] इसमें केवल रामराज्य तथा राम की महिमा का वर्णन किया गया है । इसमें राम के चौदह वर्ष के वनवास का भी उल्लेख मिलता है, जिससे स्पष्ट है कि लेखक रामकथा से अनभिज्ञ नहीं था । राम ने

दश अश्वमेघ यज्ञ तथा 10000 वर्ष तक राज्य किया था । इसका उल्लेख स्पष्ट है :

दशाश्वमेघाञ्जारुथ्यानाजहार निर्गलान ।। 53 ।।

दश वर्ष सहस्राणि रामो राज्यमकारयत् ।। 54 ।।

1.3 बौद्ध साहित्य में रामकथा :

आदि रामायण का विश्व में इतना अधिक प्रचार एवं प्रसार हुआ है कि प्रायः हर एक देश के हर एक धर्मवाले ने प्रायः कुछ न कुछ रामायण से अवश्य ग्रहण किया है । रामकथा से कुछ ग्रहण करने के बाद अपने आराध्य देवता के साथ तुलना की है अथवा अपने आराध्य देव को ही राम के स्वरूप में देखने का प्रयत्न किया है । उन्हीं की आराधना करते हुए अपने जीवन को कृतार्थ बनाने का यथेष्ठ प्रयत्न किया है, जिसमें एक बौद्ध धर्म है । बौद्ध धर्म ने रामकथा को अपने जातक – साहित्य में स–सम्मान अंकित किया है । राम–कथा संबंधी तीन जातक प्राप्त होते हैं, जिनमें दशरथजातक, अनामक जातकम् और दशरथ कथानम् है । तीनों जातक में दशरथ जातक अधिक प्रसिद्ध है ।

1.3.1 दशरथ जातकम् :

अधिकतर विद्वान मानते हैं कि इसमें रामकथा का मूलरूप सुरक्षित है । यह जातक जातकट्ठवण्णना में पाया जाता है । वह ई. की पाँचवीं शताब्दी की एक सिंहली पुस्तक का पाली अनुवाद है ।

1.3.2 अनामकजातकम्

इसका मूल भारतीय पाठ अप्राप्य है । ई. की तीसरी शताब्दी में कांग–सेंग हुई नामक चीनी भाषा के विद्वान ने लियेऊ तू त्सी किंग नामक पुस्तक में अनुवाद किया था । इस जातक में किसी भी चरित्र के नाम का

उल्लेख नहीं हुआ है, लेकिन राम और सीता का वनवास, सीता–हरण, जटायु का वृतांत, वालि और सुग्रीव का युद्ध, सेतुबंध, सीता की अग्नि परीक्षा आदि के संकेत मिलते हैं । इसमें महत्त्वपूर्ण अंतर यह है कि राम की विमाता के कारण पिता द्वारा वनवास नहीं दिया जाता । वे अपने मामा के आक्रमण की तैयारियाँ सुनकर स्वेच्छा से अपना राज्य छोड़ देते हैं । वालिवध का वृतांत भी बदल गया है । राम के धनुषसंधान को देखते ही वालि भयभीत होकर भागता है और उसका आगे का वृतांत नहीं है । यह परिवर्तन स्वाभाविक है । राम ने अर्थात् बोधिसत्व ने वालि का वध किया है इसकी कल्पना बौद्धों के लिए असह्य हुई होगी । अनामक जातकम् में कथा इस प्रकार है ।[81]

1.3.3 दशरथ कथानम्

इसका मूल रूप भी अप्राप्य है । इसकी रचना ई. की दूसरी शताब्दी के बाद हुई थी । इसमें सीता या अन्य राजकुमारी का कोई भी उल्लेख नहीं है ।

1.4 जैन रामकथा

बौद्ध साहित्य की अपेक्षा जैन साहित्य में राम कथा का विस्तार पाया जाता है । बौद्धधर्मियों ने जिस प्रकार गौतम बुद्ध को राम का ही एक अवतार माना था उसी प्रकार जैन धर्मवाले भी महावीर स्वामी को राम का ही एक अंश मानते हैं । इसमें रामायण के चरित्र ‘राम, लक्ष्मण तथा रावण की त्रिषष्टि महापुरुषों में स्थान दिया है ।’[82] जैन साहित्य में रामकथा को स्थान देनेवाले विमल सूरि माने जाते हैं । उन्होंने पउमचरियं[83] की रचना करके रामका को जैन धर्म के ढाँचे में ढालने का सुप्रयत्न किया है । पउमचरियं महाराष्ट्री प्राकृत में निबद्ध पाँच पर्वों का महाकाव्य है । इस साहित्य की दूसरी रचना गुणभद्रकृत उतर पुराण है । इस काव्य की कथा वाल्मीकि रामायण तथा विमलसूरि कृत पउमचरियं से बहुत भिन्न है । इन दोनों ग्रंथों के आधार पर

जैन साहित्य में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तथा कन्नड आदि भाषाओं में अनेक रचनाएँ हुई हैं ।[84]

1.5 कालिदास का रघुवंश

राम काव्य का विस्तार प्रायः विश्व के सभी देशों में हुआ है । प्रायः सभी विद्वान एक मत हैं कि वाल्मीकि रामायण ही आदि राम काव्य है । वाल्मीकि रामायण के बाद रघुवंश का नाम आदर से लिया जाता है । रघुवंश वाल्मीकि रामायण की गरिमा के समकक्ष नहीं हो पाया मगर संस्कृत साहित्य में एक अनूठा स्थान रघुवंश को प्राप्त है । रघुवंश को पढ़ने से ऐसा लगता है कि कालिदास ने रघुवंश में मुख्य आधार के लिए वाल्मीकि रामायण को दृष्टि समक्ष रखा है । महाकाव्य के लिए जो लक्षण अपेक्षित हैं, उन सब का रूप रघुवंश में देखने को मिलता है । रघुवंश में छंद–वैविध्य, अलंकार समृद्धि एवं ललित पदावली का प्रयोग हुआ है । रघुवंश में रसनिष्पति के प्रति नाटककार सजग रहे हैं । रघुवंश की रचना उन्नीस सर्गों में हुई है । वाल्मीकि रामायण के अलावा अन्य पुराणों का आधार भी ग्रहण किया है । रघुवंश में एक से अधिक राजाओं का उल्लेख आलोच्य कृति में देखने को मिलता है । रचनाकार ने दिलीप से लेकर रघु राजा तक का वर्णन किया है । वास्तव में रचनाकार के लिए सब राजाओं का उल्लेख अपेक्षित नहीं था । नवम् सर्ग में दशरथ की कथा का प्रारंभ होता है । कालिदास शुरुआत में दशरथ के विशिष्ट गुणों का वर्णन प्रस्तुत करते हैं : जितेन्द्रिय, कार्तिकेय के समान वीर्यवान, इन्द्र जैसे पालक आदि आदि । दसवें सर्ग में राम का जन्म होता है । राम की कथा पंद्रहवें सर्ग तक चलती है । रचनाकार ने रामकथा त्वरित गति से एवं संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत की है । पंद्रहवें सर्ग के 103 वें श्लोक में विष्णु (राम) ने रावण का वध करके देवताओं का कार्य सम्पन्न किया । आगे उत्तरगिरि हिमालय पर पवनसुत हनुमान को तथा दक्षिणगिरि त्रिकूट पर लंकानाथ विभीषण

को अपने दो कीर्ति स्तंभों के रूप में स्थापित कर, तीनों लोकों के प्रतिष्ठापक अपने ही विराट शरीर में लीन हो गए । सोलहवें सर्ग के प्रथम श्लोक में लव आदि सात रघुवंशी ज्येष्ठ भाई कुशको नेतृत्व देते हैं । कालिदास ने रघुवंश में रघुवंशी परंपरा को दृष्टि समक्ष रखा है । कालिदास ने दशरथ में वीरता और श्रृंगार दोनों रसों का परिपाक किया है । कालिदास दशरथ में विष्णु समान वीर्यवान, वसंत जैसे प्रसन्न कामदेव की तरह सुन्दर आदि गुणों की स्थापना करते हैं (9–48) कालिदास ने राम को एक सामान्य मानव के रूप में भी अंकित किया है । तेरहवें सर्ग में पुष्पक विमान से अयोध्या लौटते हुए राम आम आदमी–से नज़र आते हैं । पंचवटी के पास से गुजरते हुए वे बीते दिनों को याद करते हुए सीता से कहते हैं कि ‘‘मैं पर्णकुटी के एकान्त में तुम्हारी गोद में सो जाया करता था ।’’ (13/35) ऐसे वृतांत को ही दृष्टि समक्ष रखकर महर्षि अरविंद ने कहा है कि ‘‘भारतीय संस्कृतिनो बौद्धिक पक्ष (इंटेलेक्च्युअल मूड) अथवा एनो बौद्धिक उत्कर्ष महाभारतमां प्रगट थयो छे. नैतिक पक्ष (मोरल एटिट्यूड) वाल्मीकि रामायणमां पोताना पूर्ण उत्कर्ष साथे जोवा मळे छे अने पार्थिक अथवा भोगात्मक पक्ष (मटीरीयल आस्पेक्ट) कालिदासनां काव्यमां उल्लसित थतो जोवा मळे छे ।’’[85] महर्षि अरबिंद के विधान की प्रथम दो बातों से हम सहमत हो सकते हैं मगर अंतिम बात के साथ सहमत नहीं हो सकते, कारण यह है कि यदि कालिदास सिर्फ जीवन के भोगात्मक पक्ष के ही कवि हैं तो आज इतनी शताब्दियों के बाद भी चिरंजीव न होते । कालिदास ने निश्चित रूप से जीवन के भोगात्मक पहलूओं का चित्रण किया है मगर तप और त्याग से संयमित उपभोग को ही आवश्यक माना है । कवि को राम के अलावा अन्य राजाओं का वर्णन करना अपेक्षित था अतः अपनी लेखनी को संक्षिप्तता के दायरे में रखा है, जैसे हनुमान जब सीता की खोज के लिए जाते हैं तब एक ही श्लोक में वर्णन है कि (सीता को) ‘‘खोजते हुए हनुमान ने विष लताओं से घिरी महौषधि के समान राक्षसियों से घिरी सीता

को लंका में देखा ।"[86] अन्य कृतिओं में यही वर्णन अनेक सर्गों में है । कालिदास के श्रृंगार पक्ष का महर्षि अरविंद के अलावा कई आलोचकों ने विरोध किया है । कवि ने श्रृंगार रस का खुलकर प्रयोग किया है । उदाहरण के लिए रघुवंश के सर्ग 14 का 24वां श्लोक ले सकते हैं,[87] जिसमें कहा गया है कि 'वह (राम) यथा समय राज कार्य देखकर उस (सीता) के सुन्दर शरीर का भोग करने के लिए उत्सुक लक्ष्मी के समान सीता के साथ उपस्थित होकर रमण करते थे ।' यह विदित ही है कि रघुवंश का कथा फलक अत्यंत विस्तृत है । पूरे 'रघुवंश' का वर्णन होने के कारण राम–सीता की कथा को स्थान कम मिल पाया है । कवि की समास शैली और छोटे छंदों के प्रयोग के कारण घटनाएँ अति संक्षेण में हैं । इसका अर्थ यह भी नहीं है कि रघुवंश की रामकथा में राम का संपूर्ण और स्पष्ट चित्र प्राप्त नहीं होता । कवि ने आदि रामायण से भिन्न कई प्रसंगों का आयोजन किया है मगर आदि रामायण के मूल रूप को क्षति नहीं पहुँचती । रामकथा रघुवंश का एक मात्र खंड है पूर्ण ध्येय नहीं कि राम का ही चरित्र प्रस्तुत किया जाये । रघुवंश में कुल मिलाकर उन्तीस राजाओं का वर्णन किया गया है । 'रघुवंश' के द्वारा कालिदास यह कहना चाहते हैं कि तप त्याग एवं संयम के बिना जीवन का उत्कर्ष हो ही नहीं सकता । तप, त्याग एवं संयम के बिना जीवन व्यतीत करनेवाले विनाश पंथ की ओर ही जाते हैं । अपने मत की पुष्टि हेतु उन्होंने अग्निवर्ण का उदाहरण प्रस्तुत किया है । रघु का वंश स्वयं ही महान है । वाल्मीकि ने राम का जो गान प्रस्तुत किया है, वहाँ तक पहुँचना कालिदास को संभव नहीं लगता अतः उनका कथन है कि –

"कण सूर्यप्रभवो वंशः क्व च अल्पविषयामतिः ।
तितीर्षुदुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम् ।।"[88]

अर्थात् 'सूर्यवंश महान है, जिसमें रघु और राम हुए हैं, जिनके सामने समस्त जगत् नत मस्तक होता है, इस वंश के कुल का यशोगान अल्पमतिवाला

कैसे प्रस्तुत कर सकता है ? राम चरित्र की महत्ता इतनी उत्कृष्ट है कि कवि कुलगुरु कालिदास को पुनः यह कहना पड़ता है कि –

''मंदः कवि यशः प्रार्थी ममिष्याभ्युपहास्यताम् ।
प्रांशुलभ्ये फले लोभादुहाहुरिव वामनः ।।''[89]

यहाँ कहना होगा कि राम साहित्य का इतिहास रघुवंश के बिना अपूर्ण ही नहीं अपितु दरिद्र लगता है । रघुवंश में वर्णित 'अज विलाप' को आज तक के साहित्य की अमूल्य सिद्धि के रूप में आलोचकों ने स्वीकार किया है । इस प्रकार रघुवंश को राम साहित्य में अनूठा एवं अनुपम स्थान प्राप्त है ।

1.6 कवि कुमारदास विरचित जानकी हरण

राम साहित्य की महाकाव्य की जो परंपरा है उसमें ऐतिहासिक दृष्टि से रघुवंश के बाद 'जानकी हरण' का नाम सगर्व लिया जाता है । कुमारदास ने अपनी इस कृति में पूर्णतः कालिदास का ही अनुकरण किया है । इसीके आधार पर कई आलोचक कुमारदास को कालिदास के समकालीन के रूप में मानते हैं । एक स्थान पर कुमारदास अपने आपको कालिदास का प्रतिस्पर्धा बताकर इस प्रकार कहते हैं कि –

''जानकी हरणं कर्तृं, रघुवंशे स्थित सति ।
कवि कुमारदासश्च, रावणश्च यदि क्षमः ।।''[90]

'जानकी हरण' एक दृष्टि से कालिदास की कृति सदृश प्रतीत होती है । कुमारदास ने अत्यंत विस्तृत एवं अलंकृत भाषा शैली में महाकाव्य की रचना की है । प्रासादिकता का गुण यत्र–तत्र दिखाई देता है । अयोध्या का वर्णन, मिथिला का वर्णन और पाँचवे सर्ग में राम का असुरों के साथ युद्ध वर्णन आदि में कुमारदास की लेखनी का चमत्कार देखने को मिलता है । इस महाकाव्य का संपूर्ण रूप लभ्य नहीं है लेकिन सिंहाली साहित्य में एक 'सन्न :' शब्दशः वृत्ति में से प्राप्त है । उसमें राम के राज्याभिषेक तक की कथा प्राप्त

होती है । सीता को जब जनक राजा ससुरगृह के लिए बिदा करते हैं, उस वक्त की सीख में उच्चतम समाज का दर्शन होता है । 'जानकी हरण' में ऐसा प्रतीत होता है कि कृतिकार का लक्ष्य पांडित्यप्रदर्शन नहीं मगर प्रासादिकता है । इसके अलावा राम के बाल रूप का एवं श्रृंगार वर्णन भी अनूठा है ।[91] संस्कृत के अलंकारों की बहूलता वाले काव्यों से आलोच्य कृति भिन्न ही प्रतीत होती है । जानकी हरण का संस्कृत साहित्य में एक अलग स्थान है ।

1.7 भट्टिकाव्य अथवा रावण वध

संस्कृत साहित्य में भट्टि कवि के नाम से प्रख्यात कवि की कृति को रावण वध या भट्टि काव्य कहते हैं । मूल आधार वाल्मीकि कृत रामायण ही है । कवि ने अपने ढंग से थोड़े परिवर्तन भी किए हैं । 'रावण वध' 22 सर्गों में अंकित है । राम के लंका से लौटने से लेकर अभिषेक तक की संपूर्ण कथा का वर्णन रावण वध में वर्णित है । ऐसा प्रतीत होता है कि आलोच्य कृति में रचनाकार का लक्ष्य व्याकरण की सघनता ही प्रस्तुत करना है । ऐसा लगता है कि कृतिकार व्याकरण के विस्तृत वर्णन में महाकाव्यत्व की विशेषताओं को भूल गये हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि कृतिकार को भी अपने दोष का करीब–करीब पता लग गया है । अतः स्वयं स्वीकार करते हुए गर्वपूर्वक कहते हैं कि,

व्याख्यागम्यमिद काव्यमुत्सवः सुधियामलम् ।
हतो दुर्मेध सश्चास्मिन् विद्धत्प्रियतया मया ।।

यह काव्य केवल व्याख्या द्वारा ही समझा जा सकता है । बुद्धिमानों के लिए तो यह अत्यधिक उत्सव का विषय है, पर मेरी विद्वत्प्रियता के कारण मूर्खोंका तो इस काव्य में प्रवेश ही नहीं हो सकता । आलोच्य कृतिकार ने आदि रामायण से भिन्न प्रसंगों की अवतारणा की है – जिस में लक्ष्मण का सीता को शाप देना, (सर्ग 5–60) राम एवं तीनों भाइयों के ब्याह वर्णन के

स्थान पर केवल राम के विवाह का वर्णन (सर्ग 2–43) फिर भी भट्टी कवि की प्रशंसा किए बिना नहीं रहा जाता । यदि पाठक व्याकरण के लिए अनिच्छुक भी हो, उसको भी व्याकरण प्रकट करने के लिए मजबूर कर देते हैं । कवि ने एक स्थान पर रावण का वर्णन इस प्रकार अंकित किया है – "एक विद्युत मेघ के समान चमकते रत्नों से किरणों को प्रकाशित और उसी के समान अपने चारों ओर एक गहन मंद ध्वनि करते हुए, वह महान शक्तिशाली राजा अनेक रत्नों से देदीप्यमान उच्च स्वर्ण सिंहासन पर उसी प्रकार सुशोभित हो रहा था जैसे सुमेरु पर्वत के शिखर पर मेघ लटका हो ।"[92] आलोच्य कृति की कई आलोचनात्मक टीकाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं । अतः संस्कृत साहित्य में ही नहीं मगर अन्य भाषा–भाषी राम काव्यों में रावण वध का अपना अलग स्थान है ।

1.8 धनंजयकृत – राघव पांडवीय

राघव पांड्वीय भट्टी काव्य की परंपरा से एक कदम आगे है । आलोच्य कृति में धनंजय ने अपनी सारी विशेषताओं को ऊँडेल दिया है । कृति में छंद–वैविध्य एवं अलंकार–समृद्धि के वर्णन में पांडित्य प्रदर्शन पाया जाता है । कवि की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि प्रत्येक श्लोक में श्लेष का दर्शन होता है, जिसमें राम कथा के साथ साथ पांडवों की कथा भी देखने को मिलती है । आलोच्य कृति में प्रायः परंपरित वर्णन ही प्राप्त होता है । जिस युग की यह कृति है, उस युग के अनुसार महाकाव्य के शिल्प पर अधिक ध्यान दिया गया है । कवि का ध्येय पांडित्य प्रदर्शन होने से मौलिक विचारों का सर्वथा अभाव दिखाई देता है, जो स्वाभाविक ही है । अतः आलोच्य कृति का राम–कथा साहित्य में ऐतिहासिक ही महत्त्व है, और कुछ नहीं ।

1.9 रामभद्राम्बा कृत रघुनाथाभ्युदय

संस्कृत साहित्य में स्त्री साहित्यकारों का नाम बहुत कम पाया गया है। रामभद्राम्बा कृत रघुनाथाभ्युदय महाकाव्य बारह सर्गों में आलेखित है। कवयित्री का ध्येय पांडित्य प्रदर्शन नहीं मगर संवेदना है। भावोर्मियों को कवियत्री ने अपने महाकाव्य में सर्वथा स्थान दिया है। तद्‌युगीन समाज में नारी का अपेक्षाकृत स्थान नहीं होने से कृति एक विशिष्ट कृति नहीं बन पाई।

रामकथा संबंधी उल्लेखनीय रामकाव्यों की चर्चा हमने प्रस्तुत की है। इसके अलावा कई रामकथा संबंधी महाकाव्य प्राप्त होते हैं मगर प्रामाणिक कृति एवं रचयिता के विषय में मतैक्य नहीं होने से हमने उल्लेख नहीं किया।

1.10 महाकवि भास विरचित नाटक अभिषेक

महाकवि भास विरचित 'अभिषेक' नाटक को रामकथाश्रयी साहित्य में शीर्ष स्थान प्राप्त है। 'अभिषेक' नाटक में छः अंक पाये जाते हैं। भास का उद्‌देश्य एवं अंतिम ध्येय राम को सीता और राज्य दोनों की प्राप्ति ही है, अभिषेक का आधार वाल्मीकि रामायण ही है। भास ने वाल्मीकि रामायण से भी आगे जाकर एक उल्लेखनीय कथा प्रस्तुत की है, जिसमें वाल्मीकि रामायण में रावण सीता को वश में करने के लिए राम का कटा हुआ सिर दिखाता है, जिससे वह मानता है कि सीता के साथ मनमानी कर सकेगा मगर भास ने सीता को राम का ही नहीं लक्ष्मण का कटा हुआ सिर भी दिखाया है। यहाँ रावण की कामांधता प्रकट होती है। दोनों के कृत्रिम मस्तक दिखाकर रावण सीता से प्रश्न पूछता है 'अब तुम्हें कौन बचा सकता है ? मगर नेपथ्य से 'राम–राम' ऐसे शब्द सुनाई पड़ते हैं। अभिषेक शीर्षक सार्थक है। आलोच्य नाटक में तीन बार अभिषेक (राज्याभिषेक) होता है। वाली वध के बाद किष्किंधा में सुग्रीव का अभिषेक होता है। रावण वध के बाद लंका में

विभीषण का अभिषेक होता है । छठे अंक में राम का अयोध्या में अभिषेक होता है । राम के राज्याभिषेक बाद नाटक पूर्ण हो जाता है ।

1.11 प्रतिमा नाटक

भास का रामकथाश्रयी नाटक सात अंकों में विभाजित है । मुख्य आधार वाल्मीकि रामायण ही है । प्रस्तुत नाटक में अभिषेक नाटक की पुनरावृत्ति हुई है, मगर नाटककार की कुशलता से पुनरावर्तन का दोष स्पष्ट दिखाई नहीं देता । प्रतिमा नाटक में नाटककार की निजी उद्भावनाओं के दर्शन होते हैं । 'प्रतिमा' नाटक की भाषा सरल सुबोध तथा हृदयग्राही है । प्रतिमा नाटक में एक बात की ओर दृष्टि बरबस चली जाती है । छठे अंक में भरत जी को सुमंत से पता चलता है कि सीता का रावण के द्वारा हरण हो गया है । इससे क्रोधित होकर भरत कैकेयी को भला–बुरा कहते हैं । कैकेयी तब स्वरक्षण हेतु कहती है कि मैंने राम को वन में भेजा उसमें मेरा कोई दोष नहीं है । ऋषि शाप के फलस्वरूप पुत्र वियोग के कारण दशरथ का मरण अनिवार्य था । शाप की रक्षा हेतु और राम को किसी ओर विकट विपत्ति से बचाने के लिए वसिष्ठ, वामदेव आदि से परामर्श करने के बाद ही मैंने राम को वन में भेजा था । यह सुनकर भरत उनसे यह पूछते हैं कि 14 साल के ही लिए क्यों ? इस पर कैकेयी उत्तर देती है कि भूल से 14 दिन के स्थान पर 14 वर्ष मुँह से निकल गया । अभिषेक नाटक से प्रतिमा नाटक में कलात्मकता का पुट देखने को मिलता है ।

1.12 दिङ्नागकृत कुन्दमाला

कई आलोचक कुन्दमाला के रचयिता के रूप में वीरनाग या धीर नाग का नाम बताते हैं । कुन्दमाला के समय के विषय में भी मतैक्य नहीं है । कई आलोचक पाँचवीं शताब्दी का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं । कई सातवीं या ग्यारहवीं शताब्दी का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं । हम समय के विवाद में फँसना

नहीं चाहिते । जो कृति है उसके बारे में ही अपने विचार प्रस्तुत करेंगे । कुन्दमाला छः अंकों का नाटक है । कुन्दमाला भवभूति कृत उत्तर रामचरित से बहुत साम्यवाली कृति है । कुन्दमाला का मूल आधार वाल्मीकि रामायण होते हुए भी रचयिता ने निजी उद्भावनाओं का आयोजन करके अपनी मौलिकता प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । कुन्दमाला की भाषा सरल एवं सुबोध है । कुन्दमाला में राम को दया ममता तथा धैर्य से ओतप्रोत मानव रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । राम को विष्णु का अवतार भी कहा गया है । कुन्दमाला वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड को आधार बनाकर लिखा गया नाटक है । प्रथम अंक के प्रारंभ में राम की आज्ञा से सीता को गंगा स्नान के लिए लक्ष्मण ले जाते हैं । वहाँ सीता को पता चलता है कि राम ने उसका त्याग किया है । इसी प्रकार कथा आगे चलती है, षष्ठ अंक के अंत में रचनाकार की मौलिकता के दर्शन होते हैं । लव–कुश आकर राम एवं लक्ष्मण को राम जन्म से लेकर सीता निर्वासन तक की कथा गाकर सुनाते हैं । कण्व ऋषि लव तथा कुश को राम के पुत्र के रूप में बतलाते हैं, इससे राम मूर्छित हो जाते हैं । इतने में वाल्मीकि के साथ सीता वहाँ आती है । सीता के प्रति किए गए निर्मम व्यवहार के लिए वाल्मीकि राम को उलाहना देते हैं । वहाँ पृथ्वी प्रकट होकर सीता की शुद्धि का साक्ष्य प्रस्तुत करती है । इससे राम सीता को ग्रहण करते हैं । बाद में लव–कुश का राज्याभिषेक होता है ।

1.13 भवभूतिकृत महावीर चरित

यह सात अंकों में प्रकाशित नाटक है । शीर्षक पर से ऐसा लगता है कि यह रामकथा संबंधी हो ही नहीं सकता । कथा का आधार आदि रामायण है । राम सीता के विवाह से लेकर राम के राज्याभिषेक की घटनाओं का वर्णन मिलता है । आदि रामायण से कई बातों में महावीर चरित भिन्न है,

जैसे अंक 1 में विश्वामित्र के आश्रम में राम सीता और लक्ष्मण उर्मिला के मिलन का प्रसंग है । यहीं पर रावण के दूत का आगमन भी बताया गया है । अंक 2 में परशुराम राम विवाह के पश्चात् मिथिला में आते हैं । अंक 4 में शूर्पणखा मंथरा का रूप धारण करके मिथिला पहुँचती है । वहाँ जाकर कैकेयी का जाली पत्र दिखाती है, जिसमें राम को वन में जाने की बात लिखी होती है । राम वहीं (मिथिला में ही) भरत को चरण पादुका दे देते हैं और वन में चले जाते हैं ।

भवभूति ने अपनी कुशलता अनुसार परिवर्तन किए हैं, जिनमें रावण सीता को कामवश नहीं उठा जाता मगर रावण के दूत का अपमान हुआ था इसलिए अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए ही रावण ने सीता का हरण किया । भवभूति का यह नाटक राम–कथा संबंधी नाटकों में उत्तम कोटि का नहीं माना जाता, मगर अपना एक विशिष्ट स्थान अवश्य रखता है ।

1.14 भवभूति कृत उत्तररामचरित

'उत्तर रामचरित' सात अंकों का नाटक है । मूल आधार वाल्मीकि रामायण होते हुए भी भिन्नता के दर्शन अवश्य होते हैं । उत्तरकाण्ड की कथावस्तु को भवभूति ने अपने ढंग से प्रस्तुत की है । उत्तर रामचरित में काव्यात्मक संवेदनशीलता तथा नाटकीय शक्ति दोनों का परिपक्व सम्मिश्रण देखने को मिलता है । सीता वनवास से लेकर राम तथा सीता के पुनर्मिलन तक की घटनाएँ अंकित की गई हैं । उत्तर रामचरित रामकथा संबंधी नाटकों में ही नहीं मगर समग्र रामकथा संबंधी साहित्य में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है । इस कृति के फलस्वरूप ही कृति के कर्ता भवभूति को भारतीय परंपरा के अनुसार कालिदास के ठीक बाद का आसन प्रदान किया गया है । कई आलोचक भवभूति को कालिदास के समकक्ष मानते हैं । उत्तर रामचरित '

कुन्दमाला' नाटक के साथ बहुत कुछ साम्य रखता है । प्रथम अंक का प्रथम श्लोक इस प्रकार है –

"इदं कविभ्यः पूर्वेभ्योः नमोवाकं प्रशास्महे ।
विन्देम देवताः वाचममृतात्मनः कलाम् ।।"

भवभूति कविता को आत्मा की अमृत कला के रूप में स्वीकार करते हैं । गुजराती भाषा के कवि एवं आलोचक श्री उमाशंकर जोशी कहते हैं कि – "एवा हासने (दुःखने) अतिक्रमी ने अंते एनी उपर विजयी नीवडनारो आत्मानी अमृतकला (अंश) रूप आश्वासन प्रेम पण मानव जीवनमां पडेलो छे । ए अनुभूतिनो करुण रस रूपे संस्पर्श करावती भवभूतिनी आत्मानी अमृत (अमृतभरी तेमज अमर) कला समी कविता वाणी उत्तर रामचरितमां रेलाई छे ।"[93]

उत्तर रामचरित वैसे दाम्पत्य जीवन संबंधी नाटक है, फिर भी भवभूतिने प्रसन्नता एवं विप्रलंभ श्रृंगार के स्थान पर करुण रस को प्राधान्य दिया है । आरंभिक दृश्य में नट सूत्रधार से कहता है कि उन्हें शब्दों के प्रयोग में अत्यंत सतर्क रहना होगा क्योंकि राम प्रसन्न मुद्रा में नहीं हैं अतः नाटक में शीघ्र दोष निकाल सकते हैं । भवभूति ने "एको रसः करुण एव" का स्वीकार तो किया है मगर प्राधान्य तो विप्रलंभ श्रृंगार को ही दिया है । नाटक के प्रारंभ से लेकर अंत तक कथा तो वही चलती है मगर भारतीय काव्यशास्त्रानुसार नाटक का अंत सुखद ही होना चाहिए । इसी आधार पर अंत में राम और सीता एवं लव–कुश का मिलन आयास आयोजित है । संपूर्ण नाटक में करुण रस के साथ साथ विप्रलंभ श्रृंगार अभिन्न रूप से जुड़ा दिखाई देता है – यथा, लक्ष्मण वनवास काल के कुछ चित्रों को लेकर प्रवेश करते हैं तब राम पूछते हैं कि चित्रकार ने हमारे वनवास की किस घटना तक का चित्रण पूर्ण कर लिया है ? लक्ष्मण उत्तर में कहते हैं कि "अगिनपरीक्षा की घटना तक" । राम उस घटना को याद करते हुए कहते हैं कि "जो जन्म से ही पवित्र है, उस

मेरी सीता को कौन पवित्र कर सकता है ? अग्नि और तीर्थ जल की पवित्रता की आवश्यकता नहीं ।" बाद में लक्ष्मण बाहर चले जाते हैं । सीता थकी हुई है । आराम करना चाहती है । अतः राम की भुजा को तकिया बनाकर सोती है । उस वक्त राम अपनी थकी और सो रही पत्नी का ध्यान करते हुए दाम्पत्य मंगल की बातें इस प्रकार व्यक्त करते हैं ।

इयं गेहलक्ष्मीरिय मृत वर्तर्नयनो रसावस्याः ।
स्पर्शो वपुषि बहुलश्च्द्रन रसः ।।
अयं कंठे बाहुः शिशिर मसृणो मौक्तिक सरः ।
किमस्या न प्रेयो यदि परम सहयस्तु विरहः ।।[94]

राम कहते हैं कि "मैं सुखी हूँ । हम लोगों जैसा प्रेम अत्यंत दुर्लभ और केवल भाग्यशाली व्यक्ति को ही प्राप्त होता है ।" आगे कहते हैं कि "सीता का यह स्पर्श मेरे शरीर में प्रचुर चन्दन के रस के समान सुगंधपूर्ण है, मेरे गले में पड़ा इनका यह हाथ मोतियों की माला के समान शीतल और कोमल है । इनकी कौन सी वस्तु प्रियतर नहीं है ? परंतु इनका विरह तो अत्यंत असहनीय है ।" इस स्वगत कथन का अंतिम शब्द 'विरह" है । जिस राम को सीता से बेहद प्रेम है वही राम विरह शब्द से काँप उठते हैं । इसका यह भी कारण है कि भवभूति के राम भगवान श्री राम नहीं है । राजा राम है और राजा राम से भी आगे जाकर व्यक्ति राम की भूमि पर स्थित है । जैसे सीता की अपवित्रता के विषय में दुर्मुख शंका करता है और लोकापवाद होता है उसी समय गुप्तचर भर्त्सना भी करता है "हमारी महारानी ने अग्नि परीक्षा देकर अपनी पवित्रता सिद्ध कर दी है । वह अपने गर्भ में एक पवित्र संतान धारण किए हुए हैं । मेरे स्वामी आपको दुष्टों के इस प्रकार के दुर्वचनों को गंभीरता पूर्वक ग्रहण नहीं करना चाहिए ।" ऐसी विलक्षण स्थिति में राजा राम व्यक्ति राम के रूप में आ जाते हैं । अपने लिए दयाशून्य हो जाते हैं । ऐसी निष्पक्षता ग्रहण करते हुए प्रजा की दृष्टि को ही

आत्मसात् करते हुए कहते हैं कि 'पाप शान्त हो । क्या मेरे प्रजाजन दुष्ट हैं ? वे उस अग्नि परीक्षा में कैसे विश्वास कर सकते हैं जो सुदूर लंका में हुई थी ।"

नाटक के अंत में भवभूति ने आदि कवि वाल्मीकि रामायण से अलग अंत प्रस्तुत किया है । राम के द्वारा सीता का परित्याग किया जाता है इससे सीता को बहुत दुःख होता है । अतः सीता भागीरथी में कूद जाती है किन्तु पृथ्वी तथा गंगा अपने अपने साथ एक–एक नवजात शिशु तथा सीता को लेकर बाहर निकलती है । पृथ्वी राम पर क्रुद्ध है किन्तु गंगा राम का समर्थन करती है । दोनों ही सीता से उस समय तक शिशुओं का पालन पोषण करने के लिए कहती हैं जब तक वे इतने बड़े नहीं हो जाते कि उन्हें वाल्मीकि को समर्पित किया जा सके । नाटक के अंत में दोनों देवियाँ सीता को लेकर अंतर्ध्यान हो जाती हैं तब राम मूर्छित हो जाते हैं । उसी समय अरुन्धती वास्तविक सीता को लेकर वहाँ आती है और सीता राम की चेतना लौटाती है । यह अंतिम अंश मौलिक परिवर्तन है । वाल्मीकि रामायण एक उत्कृष्ट महाकाव्य है और इसके नायक राम स्वयं शक्तिशाली एवं प्रतापी पुरुष के रूप में स्थित है । सीता के स्त्रीत्व की चरम सीमा की झाँकी प्रस्तुत होती है । भवभूति ने इससे आगे जाकर दोनों चरित्रों में करुणता का रस उँडेलकर संवेदनायुक्त चरित्रों का निर्माण किया है । यहाँ यह भी कहना होगा कि 'उत्तर रामचरित' की देह नाटक की है मगर उसकी आत्मा काव्य की है । आलोच्य कृति में उच्चतर कोटि का कवित्व निरंतर पाया जाता है । यदि भवभूति ने उत्तर रामचरित को महाकाव्य के रूप में प्रकट किया होता तो कालिदास के रघुवंश से भी प्रशंसनीय आलोच्य ग्रंथ हो जाता । वैसे भवभूति ने कालिदास के समान जीवन दर्शन एवं व्यापक सामाजिक जीवन के बारे में विस्तृत विचार प्रस्तुत नहीं किये फिर भी कालिदास के 'रघुवंश' के समान भवभूति के उत्तर रामचरित को सम्मान मिला है । संस्कृत में रामकथा संबंधी

साहित्य में उत्तर रामचरित एक उल्लेखनीय कृति है । अगर हम यह कहे कि रामकथा साहित्य में उत्तर रामचरित एक यशवर्धक मुकुट के समान कीर्ति पताका है तो अनुचित नहीं होगा ।

1.15 शक्तिभद्र कृत आश्चर्य चूडामणि

शक्ति भद्र नामक नाटककार का यह सात अंक का नाटक है । शीर्षक को छोड़कर अन्य कोई विशेषता आलोच्य नाटक में उल्लेखनीय नहीं है । शक्तिभद्र स्पष्टतः भवभूति से प्रभावित हुए हैं । मौलिक योगदान दृष्टिगोचर नहीं होता ।

1.16 मुरारि कृत अनर्घ राघव

प्रस्तुत नाटक के रचयिता मुरारि ने सात अंक के इस नाटक में समग्र रामकथा को स्थान देने का प्रयत्न किया है । मुरारि ने अपनी मौलिक प्रतिभानुसार परिवर्तन करने का प्रयास किया है । सब परिवर्तन महावीर चरित पर आधारित है । उदा. के लिए देखें तो शूर्पणखा का मंथरा के भेष में कैकेयी के एक जाली पत्र के बल पर राम का निर्वासन माँगना (अंक 4) परशुराम का मिथिला में ही आगमन (अंक 4) इत्यादि परिचर्तित अंश दिखाई देते हैं । कथावस्तु विस्तृत है । विश्वामित्र के आगमन से लेकर राम के राज्याभिषेक तक का वृतांत है । नाटक का स्वरूप सामान्य रूप से उल्लेखनीय है ।

1.17 राजशेखर कृत बालरामायण

रामकथा संबंधी नाटकों में आलोच्य नाटक सबसे विस्तृत माना जाता है । राजशेखर के बाल रामायण में भवभूति और मुरारि दोनों का अनुकरण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है । वैसे शीर्षक से ही पता चल जाता है कि यह नाटक राम के बाल जीवन संबंधी ही होगा । दस अंक के इस नाटक में

सीता स्वयंवर से लेकर राम के राज्याभिषेक तक की कथा है ।[95] राजशेखर ने कई स्थान पर मौलिकता का भी परिचय दिया है – जैसे त्रिजटा सीता के साथ अयोध्या जाती है । (अंक 10) रावण प्रहस्त के साथ सीता स्वयंवर में आता है । धनुष परीक्षा को रावण अवैधानिक मानते हुए और राम (सीता के पति) को अपना दुश्मन घोषित करते हुए लंका लौट जाता है । (अंक 1) राजशेखर ने रावण की मनोदशा को तादृश रूप से प्रकट कने का प्रयत्न किया है जो प्रशंसनीय है । (अंक 5)

1.18 रामदेवकृत रामाभ्युदय

यह रामदेव व्यास कृत त्रिअंकी नाटक है । इस नाटक का स्वरूप सामान्य रूपक के अनुसार है । इसमें ध्यानाकर्षक विशेषता नहीं पाई जाती । राम का अभ्युदय ही इसकी विशेषता है ।

1.19 सोमेश्वर कृत उल्लास राघव

सोमेश्वर का यह नाटक आठ अंकों में प्राप्त होता है । नाटक में मौलिकता के स्थान पर मुरारि के 'अनर्ध राघव' और 'अभिज्ञान शाकुंतल' (कालिदास) की छाया स्पष्टतः दिखाई देती है । कृति का रूप नाटकीय है मगर कवित्व की झलक एवं काव्यमय स्वरूप स्पष्टतः देखने को मिलता है ।

1.20 हस्तमल कृत मैथिली रामायण

नाटककार हस्तमल द्वारा लिखित यह नाटक पाँच अंकों में विभाजित है । अब तक के नाटकों में मैथिली कल्याण नितांत भिन्न है । किसी भी रामकथा संबंधी साहित्यकार ने जो प्रस्तुत नहीं किया वह वृतांत हस्तमल ने प्रस्तुत किया है । राम सीता के विवाह के पूर्व का प्रणय नाटककार ने प्रस्तुत किया है । राम के लिए सीता की तड़प दर्शनीय है । सीता को जब राम की

प्राप्ति हो जाती है वहीं नाटक पूर्ण हो जाता है । आलोच्य नाटक में राम सीता के पूर्वजन्मों का अनुराग विशेष रूप से दर्शनीय है ।

1.21 जयदेव कृत प्रसन्न राघव

जयदेव नामक नाटककार का रामकथा संबंधी सात अंकों का यह नाटक है । नाटककार ने आदि रामायण की संपूर्ण कथावस्तु को अपनी आलोच्य कृति में समाविष्ट करने का प्रयत्न किया है । नाटक में अनेक विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किए गए हैं जिससे नाटक में नीरसता आ जाती है ।

1.22 भास्कर कृत उन्मत्त राघव

भास्कर भट्ट का यह नाटक अन्य नाटकों से नितांत भिन्न है । यह नाटक एक अंक का ही है । कथावस्तु शीर्षक अनुसार है । राम–लक्ष्मण मृगया के लिए गए हुए हैं । सीता राम की देव–पूजा के लिए पुष्प चयन करती है । वह उसी उद्यान में लुप्त हो जाती है । राम तथा लक्ष्मण जब मृगया से लौटते हैं तब सीता की सखी मधुरिका से सीता के विषय में सुनकर अन्यंत दुःखी होते हैं । सीता विरह में राम अत्यंत उन्मत एवं व्यग्र हो जाते है । इतने में अगस्त्य ऋषि सीता को लेकर आते हैं । वे कहते हैं कि सीता दुर्वासा द्वारा शापित प्रदेश में प्रवेश करने से मृगी बन गयी थी । राम सीता को पाकर प्रसन्न होते हैं । प्रस्तुत नाटक में 'विक्रमोर्वशीय' और भवभूति के 'मालती माधव' नाटक का अनुकरण दिखाई देता है ।

1.23 महादेव कृत अद्‍भुत दर्पण

दक्षिण निवासी महादेव ने 'अद्‍भुत दर्पण' नामक दस अंकों का नाटक लिखा है ।[96] आलोच्य नाटक में महादेव ने कई मौलिक उद्‍भावनाओं का परिचय दिया है । इसमें अनेक अद्‍भुत घटनाओं का अंकन हैं । इसमें राम का चरित्र एक ऐसे साधारण मानव के रूप में अंकित है जो प्रत्येक व्यक्ति पर

विश्वास कर लेते हैं । माया से ये इतने आच्छादित रहते हैं कि अयथार्थ को यथार्थवत् समझते हैं । इसमें राम को विष्णु का अवतार भी माना गया है । नाटक की भाषा क्लिष्ट है । नाटक के शीर्षक अनुसार नाटक स्वयं अद्भुत है । राम के पास एक ऐसा दर्पण है जिसमें लंका की घटनाएँ दिखाई देती है । आज के युग में जिसे दूर–दर्शन कहते हैं, वैसी ही वस्तु राम के पास है । वास्तव में यह दर्पण रावण का था मगर संयोग वश अब राम के पास है । इसमें राम को मायावी या कृत्रिम राम के रूप में भी बताया गया है जिसके द्वारा सीता का तिरस्कार या त्याग किया जाता है । इसके द्वारा नाटककार ने राम के चरित्र को गरिमा प्रदान करने का प्रयास किया है ।

1.24 दामोदरमिश्र, मधुसूदन कृत हनुमन्नाटक

इस 'महानाटक के प्रथम रूप की रचना संभवतः दसवीं शताब्दी में हुई है ।'[97] यह भी सही है कि चौदहवीं शताब्दी तक प्रक्षेप जोड़े गए हैं, जिसके फलस्वरूप आजकल दो बहुत भिन्न पाठ प्रचलित है (1) दामोदर मिश्र द्वारा (2) मधुसूदन द्वारा । दामोदर मिश्र द्वारा संकलित हनुमन्नाटक जिसके चौदह अंक हैं । मधुसूदन द्वारा संकलित हनुमन्नाटक के नौ अंक हैं । इस आलोच्य कृति में कोई विशिष्ट लक्षण नहीं पाये जाते । इसमें जो उपकथाएँ एवं वर्णन हैं, सब महाकाव्योचित ही हैं । ऐसा लगता है कि जिस प्रकार रामलीला का आयोजन होता है उसी प्रकार महानाटक प्रदर्शित करते होंगे । इसमें श्लोकों की संख्या अधिक है । दामोदर मिश्र द्वारा संकलित 14 अंकवाले महानाटक में 579 श्लोक पाये जाते हैं । मधुसूदन द्वारा संकलित 9 अंकवाले महानाटक में 791 श्लोक मिलते हैं । दोनों संस्करण नूतन शैली के लगते हैं जिससे मूल कर्ता के बारे में प्रामाणिक मत नहीं मिलते ।

रामकथा संबंधी इतने उल्लेखनीय नाटक हैं । इसके अलावा यहाँ चम्पू स्वरूपवाली कृतियों का नाम निर्देश आवश्यक है ।

क्षीर स्वामी कृत 'अभिनव राघव' चम्पू स्वरूप का है जिसका उल्लेख 'नाटय दर्पण' में मिलता है । राम भट्ट कृत 'जानकी परिणय' दश अंकों में विभाजित चम्पू है जिसमें 288 श्लोक हैं । भोजकृत 'रामायण चम्पू' भी उल्लेखनीय कृति है ।

वाल्मीकि रामायण की रामकथा के साथ जिसका संबंध नहीं है वैसे महाकाव्य, नाटक, चम्पू एवं अन्य साहित्य रूप का हमने उल्लेख नहीं किया है ।

इसके अलावा रामकथा के साथ जिसका सीधा संबंध है वैसी कृतिओं में आनंद रामायण, अदभूत रामायण अध्यात्म रामायण, योगवासिष्ठ रामायण या महारामायण और तत्त्व सार रामायण (राम गीता जिसका एक अंश है) का संबंध तत्त्वज्ञान के साथ विशेष है । अध्यात्म संबंधी प्रश्नों का उत्तर उपर्युक्त रामायणों में देखने को मिलता है । इन रचनाओं का सिर्फ ऐतिहासिक ही मूल्य है । प्रांतीय भाषा के रामकथा संबंधी साहित्य रूपों पर इनका व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है । अध्यात्म रामायण का अपना विशिष्ट स्थान है । वाल्मीकि रामायण, रघुवंश और उत्तर रामचरित को दृष्टि समक्ष रखकर अनेक साहित्यकारों ने अपनी लेखनी चलायी है, मगर उत्तर रामचरित एवं रघुवंश के समान बहुत कम कृतियाँ बन पायी हैं । संस्कृत साहित्य ने अन्य रामकथा को विकास एवं विस्तार प्रदान किया है जिसके लिए समग्र भाषा साहित्य एवं समग्र राम साहित्य ऋ्रणी रहेगा । संक्षेप में वाल्मीकि रामायण की कथा का प्रवाह गंगा के समान रहा है, जिस प्रकार गंगा का प्रवाह कहीं आहिस्ता कहीं वेगवान, कहीं संकीर्ण कहीं विस्तृत, उसी के अनुसार रामकथा का प्रवाह रहा है ।

रामकथा संबंधी अन्य उल्लेखों में 'सेतूबंध' नामक कृति मिलती है जो प्रवरसेन ने प्राकृत में लिखी है । इस कृति ने संस्कृत के विद्वानों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है । बौद्ध त्रिपिटक के समय में रामकथा का

प्रचलन था । वैसे त्रिपिटक में रामकथा की एक–सूत्रता नज़र नहीं आती । 'दशरथ जातक' में दशरथ की मृत्यु का समाचार भरत, राम, लक्ष्मण और सीता को सुनाता है । पालि भाषा का 'साम–जातक' श्रवणाख्यान के रूपांतर जैसा ही लगता है । बौद्ध विद्वान (ई. स. की दूसरी शताब्दी) कुमारलाल ने धर्मकथा संग्रह 'कल्पना मंडिटिका' में ऐसा निर्देश किया है कि उन दिनों चौराहे पर रामगान अथवा रामायण गान का व्यापक प्रचार प्रसार था । पालिभाषा में प्राप्त बौद्ध साहित्य की रामकथा की यह विशेषता है कि बौद्ध धर्म के लाभ हेतु रामकथा का प्रचार प्रसार किया जाता था इसका कारण स्पष्ट था कि राम को प्रायः बुद्ध के अवतार के रूप में माना गया है ।

1.25 जैन साहित्य में रामकथा

जैन साहित्य में सर्व प्रथम रामकथा का उल्लेख श्री विमलसूरि ने प्राकृत में किया है । ग्रंथ का नाम 'पउम चरिय' है । जैन रामायण के संदर्भ में पुरात्ववेता श्री भोगीलाल सांडेसरा कहते हैं कि "राम ने जैन साहित्यमां पदम नाम पण आवेलुं छे । एमनुं चरित्र वर्णवतुं आशरे 9000 श्लोक प्रमाणनुं 118 सर्गनुं आ विस्तृत काव्य एमांना उल्लेख मुजब वीर निर्वाण पछी 530 वर्ष एटले ईसवीसननी पहेली सदीना उत्तरार्द्धमां रचायेलुं छे । पण एनी भाषानां स्वरूप तथा बीजां पुरावाओनां आधारे केटलाक एने त्रीजी सदीमां अथवा एनीय पछी मूके छे. ।[98] पउम चरिय की कथावस्तु प्रचलित रामकथा से कई बातों में भिन्न है । पउमचरिय में पद्म (राम) जनक राजा को अर्ध बर्बरों से युद्ध में सहयोग देते हैं जिसके फलस्वरूप जनक राजा सीता का संबंध राम के साथ कर देते हैं । यहाँ सीता पृथ्वी की पुत्री नहीं है, मगर जनक की रानी विदेहा की आत्मजा (पुत्री) है । स्वयंवर में राम ने जो धनुष्य चढ़ाया था वह विद्याधर का था । विद्याधर बंदर थे । रावण को एक ही मस्तक था । रचनाकार को जहाँ उचित लगा है वहाँ कथा में परिवर्तन किया है । अंत में सब

मुख्य चरित्र जैन धर्म का स्वीकार करते हैं इस बात की ओर संकेत किया गया है ।

जैन साहित्य की प्रथम जैन रामायण ‘पउमचरिय’ के बाद श्वेतांबर एवं दिगम्बर भक्त साहित्यकारों ने प्राकृत एवं अपभ्रंश में अनगिनत मात्रा में रामायणों की रचना की है । जिसमें रवि सेणा का ‘पद्‌म चरित’ एवं स्वयंभू कृत ‘पद्‌मचरित’ यहाँ उल्लेखनीय हैं । यह पूर्णतः जैन रामायण है । इसके अलावा हेमचंद्र की ‘त्रिशष्टि शलाका’, ‘पुरुष चरित्र’, गुणभट्ट की ‘उत्तर पुराण’, पुष्पदंत की ‘महापुराण’ नामक कृतिओं में रामायण की प्रसंग कथाओं को स्थान दिया गया है । इन कृतियों के रचयिताओं ने सीता को जनक या विदेह की पुत्री न कहकर रावण की पुत्री के रूप में बताया है । वसुदेव हिंडी की ‘मदन वेगालंभक’ नामक कृति में भी ऐसा ही उल्लेख मिलता है । बौद्ध और जैन साहित्य में राम कथा का प्रचार एवं प्रसार इसलिए पाया जाता है कि राम कथा के साथ साथ अपने धर्म का प्रचार किया जा सके ।

रामकथा का विस्तार व्यापक है । भारत के प्रत्येक गाँव में अथवा भारत की प्रत्येक प्रांतीय भाषा में राम कथा का उल्लेख मिलता ही है ।

राम संबंधी प्राचीन साहित्य के इस विवेचन से विदित होता है कि विस्तृत राम कथा को सूत्र–बद्ध करने के लिए आदि कवि वाल्मीकि रचित रामायण को ही सभी ने दृष्टि समक्ष रखा है । अपनी प्रतिभानुसार विकास एवं परिवर्तन प्रस्तुत करने के बाद मौलिक उद्‌भावनाओं को यथा स्थान प्रस्तुत करके कृतिकारों ने साहित्य जगत में अपना स्थान निश्चित करने का प्रयास किया है । किसी ने सात अंकों में, किसी ने दस अंकों में तो किसी ने चौदह अंकों में राम कथा को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । किसी ने सिर्फ एक ही अंक में अपनी बात कह दी है । इसके अलावा राम कथा साहित्य विपुल मात्रा में अप्रकाशित होने से आलोचकों एवं जिज्ञासुओं के लिए निराशाद्योतक बात है । साहित्यकारों ने राम के चरित्र की रक्षा हेतु वाल्मीकि रामायण की

अनेक घटनाओं में परिवर्तन किए हैं – जैसे ताड़का वध, वालि वध इत्यादि । इसके अलावा अन्य साहित्यकारों ने राम को विष्णु एवं सीता को लक्ष्मी के रूप में मानकर पूर्वानुराग प्रसंगों का भी आलेखन किया है । ऐसे वृतांत हस्तमल्ल के समय में अधिक प्रचलित रहा था । समग्र राम कथा साहित्य पर एक दृष्टि डालें तो ऐसा प्रतीत होता है कि इनके जीवन में (राम के) इन्होंने कुछ ऐसे भी कार्य किए हैं जो इनको लोक स्तर से लोकोत्तर स्तर पर ले जाते हैं । स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाते हुए यह विचार करना भी अनिवार्य हो जाता है कि राम नर थे या नारायण ! राम को जीवन पर्यंत अनेक शत्रुओं का सामना करना पड़ा है । कई स्थलों पर उनकी शत्रुता अन्य व्यक्तियों के हित हेतु हुई है । कई स्थलों पर वे विपत्तिग्रस्त हुए हैं । उनका युद्ध–कौशल अद्वितीय है । उनके चरित्र की यह विशेषता रही है कि वे प्रथमतः विरोधी को दुष्कृत्यों से रोकने का प्रयास करते हैं । राम शीघ्र ही शत्रु का विनाश नहीं करते बल्कि शत्रु के क्रियाकलाप समाज के लोगों के लिए असहय हो जाते हैं तभी शत्रु का विनाश करते हैं, अन्यथा नहीं । राम की यह प्रवृत्ति सर्वत्र दिखाई देती है । राम के जीवन में ऐसे भी प्रसंग आये हुए हैं जहाँ अन्य को अपनी शक्ति से अवगत करने के लिए शस्त्र उठाना पड़ा हो । धनुर्भंग प्रसंग और सप्त साल बंधन आदि प्रसंग में राम ने अपनी सामर्थ्य को प्रकट करने का प्रयास किया है । राम का जन्म पुत्रेष्टि यज्ञ से प्राप्त पायस से हुआ है । जिस से राम में दिव्यता का पुंज दिखाई देता है । इससे हम राम को नारायण स्वरूप मानले तो अतिशयोक्ति नहीं होगी । रामने शापग्रस्त अहल्या, विराध और कबन्ध को मुक्ति प्रदान की । यही राम के चरित्र की पहचान है । राम अलौकिक शक्तियों से सम्पन्न दिव्य पुरुष हैं ।

संदर्भ सूची :

1	सिद्धांत कौमुदी – सूत्र 187 (तत्त्व बोधिनी)
2	सिद्धांत कौमुदी – बालमनोरमा सूत्र – 187
3	हलायुध कोश – वाचस्पत्यम् कोश
4	A Webber : ON THE RAMAYANA, INDIAN ANTIQUAIRY. VOL. 1, 1982, P. 171
5	Dr. Jacobi : DAS RAMAYANA (Trs. S. N. Ghosal), P. 101-103
6	A Webber : ON THE RAMAYANA INDIAN ANTIQUAIRY, Vol. 1, 1982, P. 172
7	Dr. Jacobi : DAS RAMAYANA (Trs. S. N. Ghosal), P. 64-65
8	एम. विन्टर नित्ज़ – प्राचीन भारतीय साहित्य, प्रथम भाग, द्वितीय खंड, पृ. 178
9	C. V. VAIDYA : THE RIDDLE OF THE RAMAYANA, P. 56-61
10	K. T. Telang : Was RAMAYANA Copied from Homer P. 48
11	Prof. Lessen On Webber's Dissertation on the RAMAYANA, JOURNAL OF ORIENTAL RESEARCH MADRAS, VOL. III, 1874
12	एम. विन्टर नित्ज़ – प्राचीन भारतीय साहित्य, प्रथम भाग, द्वितीय खंड, पृ. 178
13	Arthur Lillie : RAMA AND HOMER, P. 3
14	J. Tolboys wheeler : The History of India, Vol. II, P. 75
15	Dr. Jacobi : DAS RAMAYANA, P. 68
16	Dr. Jacobi : DAS RAMAYANA, P. 84
17	Dr. Jacobi : DAS RAMAYANA, P. 95-104

18	यस्येक्ष्वाकुरूपप्रते रेवान् मराव्येधते । ऋृगवेद 10/4/60/4
19	यंत्वा वेद पूर्व इश्वाको यं । अथर्ववेद 19/39/9
20	चत्वारिशदद्शरथस्यशोणाः सहस्रस्याग्रेश्रेणिंनयन्ति । ऋृगवेद 1/18/126/4
21	तद्दुःशीमे पृथवाने वेने प्र रामे वोचम सुरे मधवस्तु । ऋृगवेद 10/8/93/94
22	ऐतरेय ब्राह्मण 7/26/34
23	शतपथब्राह्मण 4/06/17
24	संवत्सरं न मांसमश्नीयात् । न रामामुपेयात् । नमृन्मथने पिबेत । नास्यराम उच्छिष्टे पिबेत् । तेज एव तत्संश्यति । तैतिरीयारण्यक 5/8/13
25	जैमिनीयोपनिषद् – ब्राह्मण – 3/7/4/1, 49/1/7
26	कृष्ण यजुर्वेदीय तैतिरीय ब्राह्मण 3/10/9
27	शतपथ ब्राह्मण 11/3/1, 2–4, 11/4/3/20, 11/6/2/1–10
28	जैमिनीब्राह्मण 2/76
29	बृहदारण्यक उपनिषद् 3/1/1–2
30	शतपथब्राह्मण 10/6/7/2
31	छान्दोग्य उपनिषद 5/11/4
32	डॉ. फादर कामिल बुल्के : रामकथा उत्पत्ति और विकास, पृ. 22
33	यास्कः निरुक्त 1/4
34	A MACDONELL : A HISTORY OF SANSKRIT LITERATURE, P. 257
35	विन्टर नित्ज़; प्राचीन भारतीय साहित्य (हिन्दी अनुवाद) प्रथम भाग द्वितीय खंड, पृ. 168
36	आर. जी. भण्डारकर : कलेक्टेड वर्क्स, खंड–4, पृ. 66
37	एच. कृष्णमाचारियर : क्लासिकल संस्कृत लिटरेचर, पृ. 42

38	पूंडयंश्च पढंश्चैनमितिहासं पुरातनम्। वा. रा. यु. 128/114
39	एवमेतत् पुरावृत्ताख्यानं भद्मस्तुवः वा.रा.यु. 128/118 महदुत्पन्नमाख्यानं रामायणमितिश्रुतम वा.रा.बा. 5/3
40	इक्ष्वाकुवंश प्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः वा.रा.बा. 18
41	रामकथा उत्पत्ति और विकास, फादर कामिल बुल्के, पृ. 256
42	संस्कृत साहित्य का इतिहास – प्रो. हंसराज अग्रवाल चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी, अध्याय–1, पृ. 25
43	फादर कामिल बुल्के रामकथा उत्पत्ति और विकास अध्याय–2, पृ. 25
44	एच. याकोबी : डस रामायण पृ. 3
45	सी. बुल्के दि जनेसिस ओव दि वाल्मीकि रामायण रिसेन्शन्स ज. ऑ. इ. भाग–5, पृ. 66–94
46	फादर कामिल बुल्के : रामकथा उत्पति और विकास अध्याय–2, पृ. 26
47	ए. डब्लू. श्लेगेल : जर्मन ओरियन्टल जर्नल भाग–3, पृ. 379, जी. गोरेसियो : रामायण भाग–10, भूमिका
48	जी. टी. व्हीलर : हिस्ट्री ओव इंडिया भाग–2 (लन्दन 1869), ए. वेबर ओन दि रामायण (बम्बई 1863)
49	एच. याकोबी : डस रामायण, पृ. 100, एम. विंटरनित्स : हि. इ. लि. भाग–1, पृ. 517
50	सी. वी. वैद्य : दि रिडिल ऑव दि रामायण, पृ. 20 औरडा
51	डब्लू किर्फल : रामायण बालकाण्ड एण्ड पुराण डाई वेल्ट डेस ओरिएन्टस 1947, पृ. 113–128
52	एम. एम. विलियम्स : इन्डियन एपिट पोएट्री (लन्दन), 1863, पृ. 3
53	एच. याकोबी डस रामायण, पृ. 101 आदि
54	एम. ए. मैकडोनेल संस्कृत साहित्य का इतिहास लंदन, 1863, पृ. 3

55	फादर कामिल बुल्के : रामकथा उत्पति और विकास अध्याय–2, पृ. 31–32
56	ज. रा. ए. सो 1915, 318–28, दि एज ओब दि रामायण – 32
57	हि.इ. लि. भाग–1, पृ. 516
58	Dr. SATYAVART : THE RAMAYANA ALIGUISTIC STUDY, MUNSHI RAM MANOHARLAL, 1967, P. 176
59	Dr. JACOBI : DAS RAMAYANA (Trs. S. N. GHOSAL) P. 85
60	वाल्मीकि की ऐतिहासिकता : नागरी प्रचारिणी, सं. 2026, वर्ष 74, अंक–3, पृ. 14–15
61	RAMASHRAYA SHARMA : SOCIO POLITICAL STUDY OF THE RAMAYANA MOTILAL BANARSIDAS DELHI 1971, P. 4
62	रामकथा उत्पति और विकास : फादर कामिल बुल्के अध्याय–2, पृ. 25
63	मंजुला सहदेव : वाल्मीकि रामायण एवं संस्कृत नाटकों में राम, पृ. 11
64	प्रो. हंसराज अग्रवाल : संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी–1, 1965, पृ. 28–29
65	पू. पांडुरंग शास्त्री, श्री वाल्मीकि – रामायण दर्शन, श्रीमद भगवदगीता पाठशाला माधवबाग मुंबई, 4, संवत 2011 सन 1955
66	भगवतशरण उपाध्याय, सांस्कृतिक भारत, प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली 6, प्रथम आवृत्ति 1955, पृ. 68
67	टीकाकार – ज्वालप्रसाद मिश्र, अद्भुत रामायण, प्र. खेमराज श्री कृष्णदास श्री वेंकटेश्वरस्टीम प्रेस, मुंबई 4, सन् 1958, प्रथम सर्ग श्लोक–4, पृ. 1

68	आनंद रामायण : अनु : इन्दिरा बहन श्रीधर काणे, लक्ष्मीशंकर भट्ट, भावनगर ई.स. 1965
69	V. S. SUKTHANKAR, S. K. BELVALKAR & OTHERS (BHANAKAR ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE POONA 1925 ON WARDS) Eng. Tr. By PRATAP CHANRA RAY, CALCUTTA 1890
70	पी. वी. काणे ऐनल्स ओव दि भण्डारकर ओरियेंटल रिसर्च इन्स्ट्यूट भाग–47, पृ. 20 और 29
71	हिन्दी साहित्य की भूमिका : डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकार बम्बई, 4 आवृत्ति, 6, 1959, पृ. 182
72	हिन्दी साहित्य की भूमिका : डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी – महाभारत क्या है ?, पृ. 187–188
73	प्रो. हंसराज अग्रवाल, संस्कृत साहित्य का इतिहास, महाभारत 43–44
74	डॉ. सुधा गुप्ता – विभिन्न युगों में सीता का चरित्र चित्रण – प्रज्ञा प्रकाशन, नई दिल्ली, 235
75	फादर कामिल बुल्के : रामकथा उत्पति और विकास, प्राचीन रामकथा साहित्य, महाभारत की रामकथा, पृ. 51
76	ए. वेबर : ओन दि रामायण, पृ. 65
77	इ. डबल्यु हाप्किंस : दि ग्रेट एपिक, पृ. 63 ए. लुडविग ऊबर डस रामायण, पृ. 30
78	एच. याकोबी : डस रामायण, पृ. 72 एम. विंटरनित्स : हिस्टी ओव इंडियन लिटरेचर भाग–1, पृ. 384, एच. ओल्डेनवेर्ग : डस महाभारत पृ. 84 बी. एस. सुकठणकर : रामोपाख्यान अेंड महाभारत, काणे, कामे मोरेशन वाल्यूम, पृ. 472–88

79	महाभारत द्रोण पर्व, अध्याय – 29
80	महाभारत शांति पर्व, अध्याय 51
81	अंग्रेजी अनुवाद : चीन रामायण : सरस्वती विहार, ग्रंथमाला 8, (ई. 1938) फेंच अनुवाद : बुलेटिन एकाल क्रासेस एक्सप्रेस ओरियन : भाग–4, (1904), पृ. 698–701
82	त्रिषष्टि का अर्थ है 63 । जैन धर्मानुसार महापुरुषों में 24 तीर्थंकर (जैन धर्मोपदेशक) 12 चक्रवर्ती 9, बलदेव 9 वासुदेव 9, प्रतिवासुदेव इनमें राम बलभद्र लक्ष्मण नारायण तथा रावण प्रति नारायण कहे गये हैं । पद्मपुराण के 20 वें सर्ग में उतरपुराण पर्व है जिसमें 67 वें पर्व में इसका उल्लेख है ।
83	'पउम चरियं' भवनगर 1914, एच. याकोबी का संस्करण
84	रामकथा उत्पति और विकास : फादर कामिल बुल्के, पृ. 67–77
85	इन्डीयन इन्हेरीटेन्स खंड–1, साहित्यदर्शन अने धर्म, भारतीय विद्या भवन, मुंबइ 1955, पृ. 110
86	दृष्टा विचिन्वता तेन लंकाया राक्षसीवृता । जानकी विष वल्लीभिः परीतेव महौषधिः ।। रघुवंश सर्ग 12/61
87	स पौर कार्यणि समीक्ष्य काले रेमे विदेहाधिपतेर्दुहित्रा उपस्थितश्चारु वपुस्तदीयं कृत्वोवभोगोत्सुकयेवलक्ष्म्या ।। रघुवंश 14/24
88	रघुवंशम् : मल्लिनाथ संजीवनी समेतम् सप्तम् संसकरण 1916, प्रथम सर्ग श्लोक 2, पृ. 2
89	आगे के संदर्भ अनुसार टिप्पणी 1, पृ 2
90	प्रशिष्ट संस्कृत साहित्यनो इतिहास : प्रो. अमृत उपाध्याय, प्रकरण–6, पृ. 177

91	संस्कृत साहित्य का इतिहासः अनुवादक डॉ. मंगल देव शास्त्री मोतीलाल बनारसीदास पटना, दिल्ली वाराणसी, पृ. 146–150
92	मू. ले. कृष्णचैतन्य, अनु. विनयकुमार राय : संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास चौखंबा विद्याभवन वाराणसी–1, 1965, अध्याय–1, पृ. 294
93	अनु. उमाशंकर जोशी :महाकवि भवभूति विरचित उतररामचरित प्रथम अंक प्रथम श्लोक पृ. 4
94	उतररामचरित : भवभूति अनु. उमाशंकर जोशी, अंक–1, श्लोक–38
95	राजशेखर : बाल रामायण (संपादित गोविंद शास्त्री) मेडिकल प्रेस, वाराणसी – 1869
96	अद्‍भुत दर्पण : महादेव : काव्यमाला 55, निर्णयसागर प्रेस, मुंबइ, 1938
97	एस. के. दे. दि. प्रोब्लेम ओव दि महानाटक इंडियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली ।
98	संशोधननी केडी : भोगीलाल सांडेसरा, पृ. 128

❖❖❖

अध्याय - 2
हिन्दी साहित्य में राम कथा और उसका महत्त्व

2. हिन्दी साहित्य में रामकथा का प्रारंभ

2.1 रामलला नहछू

2.2 रामाज्ञा प्रश्न

2.3 रामचरितमानस

2.4 बरवै रामयण

2.5 जानकी मंगल

2.6 पार्वती मंगल

2.7 दोहावली

2.8 कवितावली

2.9 गीतावली

2.10 वैराग्य संदीपनी

2.11 श्रीकृष्ण गीतावली

2.12 विनयपत्रिका

2.13 सूर साहित्य में रामकथा

2.14 विद्यापति - मीराबाई नंददास आदि द्वारा राम कथा

2.15 निम्बार्क संप्रदाय में रामकथा

2.16 केशवदास की रामचंद्रिका

2.17 सेनापतिकृत कवित्त रत्नाकर

2.18 प्राणचन्द्र चौहाण कृत – रामायण महानाटक

2.19 माधवदास चारण कृत – राम रासो एवं अध्यात्मरामायण

2.20 हृदयराम – हनुमन्नाटक

2.21 नरहरिबारहट – पौरुषेय रामायण

2.22 लालदास – अवध विलास

2.23 कपूरचन्द त्रिखा – रामायण

2.24 कबीरदास – कबीर की बानी

2.25 लालदास – लालदास चेतावनी

2.26 मलूकदास – रामावतारलीला

2.27 रीतिकाल के रामकाव्य – रामानद जी

2.28 गुरुगोविंदसिंह – रामावतार गोविंदरामायण

2.29 जानकी शरण – अवध सागर

2.30 भगवन्तराय खीची – हनुमत्पच्चीसी

2.31 जनकराज किशोरीशरण – सीताराम सिद्धांत मुक्तावली एवं रघुबर करुणाभरण

2.32 नवलसिंह – रामचंद्र विलास

2.33 विश्वनाथसिंह – रामायण

2.34 रामप्रियाशरण – सीतायन

2.35 रसिक अली – मिथिलाविहार

2.36 सरजुराम पंडित – जैमिनी पुराण भाषा

2.37 कृपा निवास – भावना पच्चीसी

2.38 मधुसूदनदास – रामाश्वमेघ

2.39 जानकीशरण – सियाराम रसमंजरी

2.40 गोकुलनाथ – सीतारामगुणार्णव

2.41 मनियारसिंह – हनुमत छब्बीस

2.42 ललकदास – सत्योपाख्यान

2.43 गणेश – वाल्मीकि रामायण श्लोकार्थ प्रकाश – हनुमंत पच्चीसी

2.44 प्रेम सखी – श्रीराम तथा सीता जी का शिखनख

2.45 महात्माबालअली – नेहप्रकाश, सिद्धांत तत्त्व दीपिको

2.46 रामप्रियाशरण – प्रेमकली, सीतायन

2.47 रामसखे – जानकी नौ रत्न माणिक्य

2.48 प्रेमसखी – होली – श्री सीताराम नखशिक्षा

2.49 कृपानिवास – गुरुमहिमा प्रार्थना शतक

2.50 रामचरणदास – करुणासिन्धु विवेकशतक

2.51 रामगुलामविद्रोही – कवित्त प्रबंध रामगीतावली

2.52 महाराज विश्वनाथसिंह – रामगीता टीका–रामरहस्य टीका

2.53 जीवाराम – जुगलप्रिया युगलप्रिया पदावली

2.54 स्वामी जनकराज किशोरीशरण : अमर रामायण, जानकी करुणाकरण

2.55 प्रतापकुँवरि बाई – रामचन्द्रमहिमा, रामगुणसागर

2.56 काष्ट जिह्वा स्वामीदेव – रामायण परिचय, विनयामृत पदावली

2.57 युगलानन्येशरण हेमलता – श्रीजानकी स्नेह, संत सुख प्रकाशिका पदावली

2.58 महाराजा रघुराजसिंह – रघुराजविलास – रास रसिकावली

2.59 बैजनाथ कुरमी – रामचरितमानस की टीका – रामसतसैया

2.60 जानकी प्रसाद – रामरसायन – रामायण

2.61 रघुनाथदास रामसनेही – विश्राम सागर

2.62 बनादास – प्रबोधक रामायण

2.63 शीलमणि – कनक भवन महात्म्य श्री अवधप्रकाश

2.64 रसरंगमणि – श्री सीताराम झूलाविलास – श्री रामरूप पथविलास

2.65 सीताराम शरण शुभशीला – युगलोत्कंठ प्रकाशिका

2.66 सियाराम शरण प्रेमलता – सीताराम रहस्य, सीताराम नामरूप वर्णन

2.67 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – रामसीता संवाद – रामलीला

2.68 श्री बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन' – रामागमन

2.69 लाला सीताराम – रघुवंश का पद्यानुवाद

2.70 श्री जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' – नवपंचामृत रामायण

2.71 श्री राधाकृष्णदास – रामचरितमानस

2.72 श्री बालमुकुन्द गुप्त – रामरक्षा स्त्रोत
2.73 आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी – रघुवंश का गद्यानुवाद
2.74 लाला भगवानदीन – रामगिर्याश्रम, श्रृंगारशतक
2.75 रामदेवी प्रसाद पूर्ण – रामरावण विरोध, रामधनुर्विधाशिक्षण
2.76 मिश्रबन्धु – लवकुशचरित
2.77 श्री गयाप्रसाद शुक्ल सनेही – रामवनगमन, लक्ष्मण मूर्छा
2.78 मन्नन द्विवेदी – गजपुरी की धनुषभंग, लक्ष्मणकुमार
2.79 अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' – बीरवर सौमित्र, सुतवती सीता
2.80 मैणिलीशरण गुप्त – उर्मिला
2.81 पं. रामचरित उपाध्याय – 'रामचरित चंद्रिका' रामचरित चिंतामणि
2.82 रामस्वरूप टंडन – सीतापरित्याग
2.83 विष्णु – सुलोचनासती
2.84 मैथिलीशरण गुप्त – पंचवटी, लीला, साकेत
2.85 बलदेवप्रसाद मिश्र – मैथिली परिणय
2.86 अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' – वैदेही वनवास

2.87 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' – राम की शक्तिपूजा

2.88 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' – उर्मिला

2.89 सुमित्रानंदन पंत – अशोकवन

2.90 केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' – कैकेयी

2.91 गोकुलचंद्र शर्मा – अशोकवन

2.92 श्रीमती शकुन्तल कुमारी रेणु – सती सीता

2.93 हरदयालसिंह – रावण महाकाव्य

2.94 पोदार रामावतार 'अरुण' – विदेह

2.95 चन्द्रप्रकाश शर्मा – सीता

2.96 सरयूप्रसाद त्रिपाठी 'मधुकर' – सीतान्वेषक

2.97 आचार्य तुलसी – अग्नि परीक्षा

2.98 गोविन्ददास विनीत – प्रिया या प्रजा

2.99 गयाप्रसाद द्विवेदी – नन्दीग्राम

अध्याय – 2
हिन्दी साहित्य में रामकथा

2. हिन्दी साहित्य में रामकथा का प्रारंभ

भारतीय जीवन में राम और कृष्ण के चरित्र ने जन मानस को सर्वाधिक आंदोलित किया है । राम और कृष्ण के जीवन की कथाएँ किसी न किसी रूप में प्रत्येक वर्ग के मनुष्य के हृदय में विराजमान होती रही हैं । राम और कृष्ण की कथा की व्यापकता के लिए जितना भी कहा जाए कम ही है । भारतीय संस्कृति के समष्टि रूप के दर्शन हमें मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र में होते हैं । राम का चरित्र इतना लोकप्रिय है कि भारतीय भाषाओं में ही नहीं अपितु पडोसी देशों की जन भाषाओं में भी उनका वैशिष्ट्य पाया जाता है । राम कथा का प्रारंभ कब हुआ ? प्रथम रामकथा लिखने का श्रेय किसको है ? यह सब विवाद के प्रश्न हैं । संस्कृत साहित्य में राम कथा का प्रारंभिक रूप पाया गया है । कालांतर में रामकथा में परिवर्तन होते गये हैं । वाल्मीकि रामायण रामकथा का आदि ग्रंथ माना जाता है । वाल्मीकि रामायण से पहले के आख्यानों एवं जातक कथाओं में राम और दशरथ का उल्लेख मिला है । कहीं कहीं सीता का भी उल्लेख मिलता है । अंततोगत्वा वाल्मीकि रामायण को सर्वांगीण श्रेय प्राप्त है । वाल्मीकि को ही प्रारंभिक राम कवि के रूप में आलोचकों ने स्वीकार किया है । संस्कृत के राम–काव्य परंपरा में जो स्थान वाल्मीकि का है, वही स्थान हिन्दी भाषा में तुलसीदस जी का है । तुलसीदास जी की अवर्णनीय, अमूल्य कृति रामचरितमानस को दृष्टि समक्ष रखकर ही समकालीन एवं परवर्ती कवियों ने रामकाव्य का सृजन किया है ।

हिन्दी साहित्य में रामकथा का प्रसार एवं प्रचार अपने आप में एक जटिल प्रश्न है । हिन्दी साहित्य वैसे तो संस्कृत साहित्य का ऋृणी है । काल

क्रमानुसार यदि हम देखें तो हिन्दी का आदि काल सब दृष्टियों से रामकाव्य के सृजन के लिए उपयुक्त है । इस युग के कवि यदि राम के शील और सौंदर्य को दृष्टि समक्ष रखकर बाहय आक्रमणों के विरुद्ध राष्ट्रीय चेतना को जगाते तो आज राम काव्य का जो स्वरूप पाया जाता है, उससे भिन्न ही होता । कवियों ने राम के चरित्र की तुलनामें कृष्ण के चरित्र का गुणगान विस्तृत मात्रा में गाया है । अतः कृष्ण काव्य का जितना विस्तृत प्रचार है उतना रामकथा का नहीं, जो निःसंदेह और सर्व स्वीकृत है । आदिकाल के कवि आश्रय दाताओं की प्रशंसा से ऊपर ही नहीं उठ पाते थे । यदि वे आश्रयदाताओं के गुनगान को छोड़कर राम के पावनकारी एवं मर्यादा पुरुषोत्तम रूप का चरित्रांकन करते तो भी लोगों की राष्ट्रीय भावना जाग्रत होती । आदिकाल में स्पष्ट रूप से राम कथा का रूप नहीं पाया जाता । राम पर ही केन्द्रित स्वतंत्र रचना का अभाव है । अर्थात् ऐसी कोई कृति नहीं मिलती । अन्य विषयक कृतियों के प्रारंभ में या मंगलाचरण में राम की स्तुति अथवा वंदना पायी जाती है । आलोच्य युग में चंदवरदायी कृत पृथ्वीराज रासो नामक उल्लेखनीय कृति पायी जाती है । रासो की प्रामाणिकता के संबंध में विद्वानों में मतभेद है, किन्तु इसकी साहित्यिक गरिमा को सभीने मुक्त कष्ठ से स्वीकार किया है । रासो को चाहे एक सफल महाकाव्य कहा जाये अथवा विशाल काव्य कहा जाये इन दोनों रूपों में उसका साहित्यिक सौष्ठव अक्षुण्ण है । रासो में दशावतार वर्णन के रूप में राम के चरित्र का उल्लेख है, जो मंगलाचरण ही माना जायेगा । चंदबरदायी ने राम को परब्रह्म के रूप में, मुक्तिदाता के रूप में अंकित किया है । उन्होंने रामावतार से संबंधित अड़तीस छंदो में अपने श्रद्धा–सुमन–अर्पित किए हैं जिनमें परशुराम द्वारा क्षत्रियों का संहार, राजा दशरथ के घर राम–लक्ष्मण भरत और शत्रुध्न का जन्म, राम–वनगमन, राम–रावण–युद्ध, सीता उद्धार आदि रामकथा के प्रमुख प्रसंग वर्णित हैं ।[1]

फादर कामिल बुल्के के अनुसार पृथ्वीराज रासो की दशावतार कथान्तर्गत राम कथा संबंधी 100 छंद मिलते हैं ।[2] रासो में लंका युद्ध के वर्णन को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है । उसमें समसामयिक प्रवृत्ति का सहज रूप पाया जाता है । हनुमान, मेघनाद और लक्ष्मण के शौर्य का वर्णन करके लोक चेतना को जागृत करने का प्रयास किया गया है ।

रामकथा का विशद प्रचार मध्ययुग में ही पाया जाता है । पूर्व मध्यकाल के भक्ति काल के अंतर्गत ही रामकथा का सुष्ठु एवं निखरा हुआ रूप प्राप्त होता है । रीतिकालीन कवियों का ध्येय आश्रयदाताओं की प्रशंसा करना था । जिन कवियों ने आश्रय दाताओं की प्रशंसा नहीं की उन्होंने ऐश्वर्य युक्त रसिक कृष्ण चरित्र का गुणगान गाया है । भक्तिकाल का राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण राम के आदर्श चरित्र के लिए अर्थात्+राम के चरित्र को जीवन ध्येय बनाने के लिए पूर्णतः अनुकूल था । राम का लोक संरक्षक रूप, आदर्शपुत्र, पति, राजा एवं आदर्श भ्रातृ के रूप में अनुकरणीय था । भक्तिकाल के समय में विदेशी शासकों की हकूमत से लोग पीड़ित थे । हिन्दु धर्म में मत मतांतर प्रवर्तमान थे । वैर, द्वेष एवं कलह के बीज पाये जाते थे । मुसलमानों की क्रूरता से आक्रान्त, शांति एवं व्यवस्था के अभाव से विपन्न तथा न्याय धर्म से वंचित धर्म–प्रवण भारत के उत्तराखंड में जो धार्मिक आंदोलन चला उसमें आचार्य रामानुज की शिष्य परंपरा के स्वामी रामानंद महात्मा राघवाचार्य के शिष्य थे जिनका बड़ा योगदान है । राघवाचार्य ने दक्षिण से उतर में आकर काशी में स्थायी रूप से निवास किया । इन्हें राममंत्र का प्रचारक कहा जाता है । स्वामी रामानंद ने अपने ग्रंथ 'रामार्चन पद्धति' में गुरु परंपरा दी है । राम काव्य परंपरा के अंतर्गत 'रामरक्षा स्तोत्र' उनकी प्रसिद्ध रचना है । रामानंद के शिष्यों ने राम के सगुण और निर्गुण दोनों रूपों का प्रचार किया । कबीर की एक पंक्ति दृष्टव्य है –

“दशरथ सुत तिहुं लोक बखाना,

रामनाम का मरम न आना ।”

इसमें कबीर की निर्गुण विचार धारा के दर्शन होते हैं । तुलसीदास जी ने अपने मत सगुण साकार की पुष्टि हेतु कहा है –

“जेहि इमि गावहिं वेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान ।

सोइ दशरथ सुत भगतहित, कोसल पति भगवान ।।

रामकथा के इतिहास में रामानन्द जी का स्थान विशेष उल्लेखनीय है । रामकथा को नया और संगठित रूप प्रदान करने का यश इन्हीं को है । इस मत की पुष्टि हेतु कहा जायेगा कि इसके पूर्व श्रीराम की प्रतिष्ठा होते हुए भी प्रधानता लक्ष्मी नारायण को दी जाती थी । रामानंद जी ने राम सीता को प्रधानता देने का सुप्रयास किया । उन्होंने विशिष्टा द्वैत और प्रपत्ति सिद्धांत का आधार लिया । रामानंद जी ने कुछ नये सिद्धांत भी रखे, जो समसामयिक युग में लोकोपयोगी एवं आवश्यक थे । उन्होंने वैष्णवों के नारायण मंत्र के स्थान पर रामतारक अथवा षड्अक्षर राम मंत्र को दीक्षा का बीज मंत्र माना । (श्री रामायनमः) उन्होंने बाह्याचरण के स्थान पर आंतरिक शुद्धता पर बल दिया । उन्होंने जाति–पाँति स्पृश्य–अस्पृश्य, ऊँच–नीच के वैषम्य को मिटाया एवं वैष्णव मात्र में समता का मत स्थापित किया । शैव तथा शाक्त पंथियों में अपने धर्म को महान और दूसरों के धर्म के प्रति हीनता की जो दृष्टि थी जिसको मिटाने के लिए उन्होंने राम रक्षा की रचना की । उन्होंने लोगों को राम रक्षा की शक्ति से अवगत कराया ।

रामानन्द जी के बाद राम भक्त कवियों में विष्णुदास का नाम उल्लेखनीय है । नागरी प्रचारिणी सभा की विभिन्न खोज रिपोर्टों में विष्णुदास द्वारा रचित चार ग्रंथों का उल्लेख मिलता है जिनमें महाभारत कथा, रुक्मिणी मंगल, स्वर्गारोहण पर्व ओर स्नेह लीला । नागरी प्रचारिणी सभा के विवरण में वाल्मीकि रामायण के हिन्दी रूपान्तर कर्ता के रूप में भी विष्णुदास का उल्लेख

मिलता है । सागर विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग के अंतर्गत बुन्देली अध्ययन पीठ द्वारा भक्त कवि विष्णुदास द्वारा रचित तथा पण्डित लोकनाथ द्विवेदी, 'सिलकारी' द्वारा संपादित 'रामायण कथा' प्राप्त होती है । इस कृति को हिन्दी रामकथाश्रित प्रबंध काव्यों में प्रथम होने का गौरव प्राप्त है । किन्तु खेद की बात है कि दीर्घकाल तक यह कृति अज्ञात ही रही । इस कृति का संपूर्ण कथानक तीन काण्डों में (बालकाण्ड, सुन्दरकाण्ड और उत्तरकाण्ड) विभक्त है । सर्ग विभाजन विभिन्न प्रसंगों के आधार पर किया गया है । विष्णुदास ने राम को अवतार स्वीकारते हुए इस रचना का प्रणयन किया है । अतः चमत्कारिक पौराणिक अंतर्कथाएँ यहाँ स्वीकृत हैं । इस दृष्टि से मानस की भाँति सुस्पष्ट दार्शनिक विवेचन का अभाव होते हुए भी कवि की भक्ति भावना ही मुखर हुई है । अंतर यही है कि यह भावना सामान्य जन की दृढ़ आस्था है, जो ज्ञान और तर्क नहीं केवल हृदयगत विश्वास की दृढ़ता की देन है ।

रामभक्ति परंपरा में ईश्वरदास कृत 'भरत मिलाप' तथा 'अंगद पैज' विशेष उल्लेखनीय है । उन्होंने 'भरत मिलाप' में भरत के आदर्श रूप को अंकित करने का प्रयास किया है तथा अयोध्या काण्ड की कथावस्तु को दोहा चौपाई में छन्दो बद्ध किया है । 'अंगद पैज' के साथ उनकी एक और कृति 'राम जन्म' भी प्राप्त होती है । तीनों को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि वे एक ही ग्रंथ के अलग अलग प्रकरण हैं और कालांतर में मुख्य कृति से अलग होकर स्वतंत्र रूप से छपे हों ।

तुलसीदास जी के समकालीन कवियों में एवं राम साहित्य की दृष्टि से अग्रदास तथा नाभादास मुख्य हैं । अग्रदास रामानन्द की शिष्य परंपरा में ही हुए । अग्रदास के विषय में यह माना जाता है कि वे अपने आपको जानकी जी की सहेली मानकर ही अग्रअली के नाम से काव्य रचना करते थे । राम भक्ति परंपरा में रसिक भावना का श्री गणेश करने का श्रेय इन्हीं को है । इन्होंने ही रसिक भावना का प्रचार–प्रसार किया है । नाभादास ने राम–सीता

के चरित को लेकर अष्टयाम की रचना की है। 'ध्यान मंजरी', 'रामभजन मंजरी', 'उपासनाबावनी', 'पदावली' और रामाष्टयाम इनके मुख्य ग्रंथ हैं। रामकाव्य परंपरा में लोकप्रियता की दृष्टि से तुलसीदास जी अग्रणी हैं। हिन्दी में तुलसी नामधारी कई कवि हुए तथा उनकी कृतियाँ प्रसिद्ध तुलसीदास कृत मानी गयी हैं। इस घटाटोप में से तुलसीदास जी रचित कृतियों को पृथक करना आवश्यक है। पूर्ववर्ती खोजों तथा शोधों के अनुसार तुलसी नाम धारी पाँच कवियों का उल्लेख है :

(1) मानसकार गोस्वामी तुलसीदास जी
(2) 'जानकी' तथा गंगावतरण कथा के रचयिता तुलसी।
(3) छप्पय रामायण, कुण्डलिया – रामायण, छंदावली रामायण, करखा रामायण के रचयिता तुलसी।
(4) 'घट रामायण' के रचयिता हाथरसवाले संत तुलसी।
(5) पं. सुधाकर द्वारा वर्णित तुलसी सतसई के रचयिता गाजीपुर निवासी तुलसी।

उपर्युक्त तुलसी नामधारी कवियों में शोध–विषयक 'तुलसीदास जी' वही है जिनका उल्लेख हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकालीन राम मार्गी शाखा के अंतर्गत संत तुलसीदास तथा उनके द्वारा रचित 'राम चरितमानस' सहित 12 (बारह) प्रामाणिक कृतियाँ मानी गई हैं।[4] वैसे तो तुलसीदास जी की कृतियों के विषय में मतैक्य नहीं है, बाबा वेणी माधव, शिवसिंह सेंगर, सर ज्योर्ज ग्रियर्सन, बंगवासी श्री शिव बिहारी लाल, मिश्रबन्धु, पं. रामगुलाम द्विवेदी आदि विद्वानों ने अपने मत की पुष्टि हेतु तुलसीदास जी की रचनाओं का उल्लेख किया है। विषय विस्तार दोष के कारण एवं हमारे प्रतिपाद्य तुलसीदास जी की रचनाओं का उल्लेख करना ही उद्देश्य होने से अप्रमाणिक रचनाओं का विवरण प्रस्तुत नहीं करेंगे। काशी नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित तुलसी ग्रंथावली

खण्ड–1 तथा खण्ड–2 संवत 1687 के अनुसार तुलसीदास जी के ग्रंथ निम्नलिखित हैं :

2.1 रामलला नहछू

काव्य रूप और शैली की दृष्टि से तुलसी की यह प्रारंभिक रचना है । यह रचना केवल बीस सोहर छंदों में रचित लघुकाव्य है । 'नहछू' नख+क्षुर से निर्मित है, जिसका अर्थ है – नाखून काटना । यज्ञोपवित या विवाह संस्कार समय नाखूनों का काटना एक विधि मानी जाती है । अपने मत की पुष्टि हेतु नहछू का एक उदा. देखें –

'कौसल्या की जेठी दीन्ह अनुसासन हो ।
नहछू जाइ करावह बैठि सिंहासन हो ।।'[5]

नहछू का प्रसंग अवध पुरी में ही सम्पन्न हुआ था । दूसरी बात यह भी है कि राम के विवाह के अवसर पर कौसल्या माता तो थी ही नहीं । अतः स्पष्ट रूप से स्वीकृत किया जाएगा कि रामलला नहछू रामचंद्र जी के यज्ञोपवित के अवसर पर लिखा गया एक लघु काव्य है । आलोच्य कृति में राजा दशरथ को चंचल नायक के रूप में अंकित करने का प्रयास किया गया है । विषय शैली तथा वर्णन संबंधी अनेक दोष प्राप्त होने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह कृति तुलसी की प्रारंभिक रचना है । पं. रामचंद्र शुक्ल, डॉ. श्याम सुन्दरदास आदि विद्वानों ने अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में इस ग्रंथ को तुलसीकृत ही माना है ।[6]

2.2 रामाज्ञा प्रश्न

यह रचना प्रारंभिक है । ज्योतिष संबंधी इस ग्रंथ का सर्जन तुलसीदास ने अपने मित्र गंगाराम ज्योतिषी के आग्रह पर किया था । गंगाराम काशी नरेश के ज्योतिषी थे जिनको नरेशने अपने पुत्र के कुशल समाचार का दायित्व सुपुर्द किया था । गंगाराम के अनुरोध पर तुलसीदास ने केवल छः घण्टों में 243

दोहों की एक पुस्तक लिख डाली जिसमें राम शकुनावली अथवा ध्रुव प्रश्नावली है । आलोच्य कृति में साहित्यिक गुणों का अभाव है । इसमें सात सर्ग हैं, जो क्रमानुसार नहीं है । प्रथम सर्ग में बालकाण्ड, द्वितीय सर्ग में अयोध्या काण्ड और अरण्य काण्ड, तृतीय सर्ग में अरण्य काण्ड और किष्किंधा काण्ड, चतुर्थ सर्ग में फिर बालकाण्ड, पंचम सर्ग में सुन्दरकाण्ड और लंका काण्ड एवं षष्ठ सर्ग में उतर काण्ड की घटनायें हैं । सातवाँ सर्ग संपूर्ण राम विषयक भक्ति एवं राम नाम महिमा जैसे विषयों से परिपूर्ण हैं । रामाज्ञा प्रश्न दोहों में लिखित है । इसमें सात सर्ग हैं । प्रत्येक सर्ग में सप्त सप्तक तथा प्रत्येक सप्तक में सात दोहे हैं । इस ग्रंथ में काव्य तत्त्व तथा प्रबंधात्मकता का अभाव है । इसमें अवधी तथा ब्रजभाषा का मिश्रित रूप है । कृति में घटना पक्ष प्रमुख है, कला पक्ष गौण । इस पर मानस की अपेक्षा वाल्मीकि रामायण का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है ।

2.3 रामचरितमानस

समग्र राष्ट्र में हिन्दी बोलनेवाला और समझनेवाला कोई व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जो रामचरितमानस से अनभिज्ञ हो । राम चरितमानस भारतीय जनजीवन का एक सामान्य अंग बन गया है । तुलसीदास जी ने मानस के कथा प्रवाह में कोई नवीन उद्‌भावना नहीं की है । कथा का रूप अध्यात्म रामायण और वाल्मीकि रामायण से ग्रहण किया है । उसकी रूपरेखा का अनुगमन करते हुए तुलसी बहुत कम हटते हैं ।[7] इसके अतिरिक्त 'प्रसन्न राघव' और " एनुमान्नाटक' से भी सामग्री ग्रहण की है । 'मैथिली कल्याण' का प्रभाव पुष्पवाटिका प्रसंग में है किन्तु तुलसीदास जी ने अपनी कला कौशलता के कारण नवीनतम एवं रोचक बना दिया है । रामनरेश त्रिपाठी रामचरितमानस की कथा के चयन के विषय में कहते हैं कि 'रामचरितमानस' में तुलसीदास रूपा मधुप ने संस्कृत के अनेक रामायण पुराण, काव्य, इतिहास,

नाटक, स्मृति, उपनिषद् और संहिता रूपी अत्यंत सुंदर फूलों का मधुर रस एकत्र करके 'रामचरितमानस' रूपी जो मधु तैयार किया था, वह आज तक हिन्दुओं के घर–घर में विद्यमान है और जितना ही वह पुराना होता जाता है उतना ही उसका स्वाद अधिक मधुर होता जाता है ।[8] मानस में सभी घटनाओं की योजना इस प्रकार व्यक्त हुई है जिससे यह फलित होता है कि राम सामान्य मानव नहीं है मगर ईश्वरत्व का एक अंश एवं ब्रह्म का स्वरूप है । मानस का संपूर्ण कथानक चार वक्ताओं तथा चार श्रोताओं से चतुर्दिक अनुबंधित है जिसमें काक भुशुण्डि ने गरुड को, शिव ने उमा को, मुनि याज्ञल्क्य ने भारद्वाज ऋषि को तथा तुलसीदास जी ने सकल मानव जाति को या सकल सज्जन समुदाय को संबोधित करके मानस की कथा कही है । मानस ऐतिहासिक काव्य नहीं अपितु भक्ति ग्रंथ है । तुलसी के समकालीन कवि रसखान ने मानस को 'हिन्दुवान को वेद सम यवनहि प्रगट कुरान' कहा है । सारा मानस भक्ति भाव से पूर्ण है । पूरे ग्रंथ को पढ़ने के पश्चात् फलित होता है कि तुलसीदास जी का उद्देश्य समन्वय भावना ही है । मानस में सात सोपान है । बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंका काण्ड तथा उत्तरकाण्ड जिनमें रामकथा का क्रमानुसार विवरण प्रस्तुत है । तुलसीदास जी सामान्य कवि नहीं थे । उनका अध्ययन गहन और विशाल था । उन्होंने वेद–उपनिषद् पुराण एवं अन्य ग्रंथ पढ़े थे । तुलसीदास जी ने अपने आराध्य देव राम जी के प्रति श्रद्धा सुमन तो अर्पित किए ही हैं, परंतु उनको जो अभीष्ट नहीं था उन कथाओं का उल्लेख मात्र भी नहीं किया है, जैसे सीता के चरित्र पर शंका करना तथा राम का परलोक गमन आदि । मानस पर विमलसूरि के 'पउम चरिउ' का भी प्रभाव है । विमल सूरि ने रचना का उद्देश्य स्वान्तः सुखाय कहा है जबकि तुलसीदास जी ने भी 'स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा' कहा है । विमलसूरि एवं तुलसीदास जी ने प्रबुद्धजनों से प्रार्थना की है, साथ–साथ काव्यशास्त्र के प्रति अपनी

अनभिज्ञता प्रकट की है । विमलसूरि ने अपने काव्यारंभ में नदी का रूपक यों प्रकट किया है, वर्धमान के मुखरूपी पर्वत से निकली हुई यह क्रमागत राम कथा नदी रूप है जिसमें अक्षरों का समुदाय जल है, सुन्दर अलंकार एवं छंद मत्स्य समूह, दीर्घ समास वक्र प्रवाह संस्कृत तथा प्राकृत अलंकार पुलिन हैं देशी भाषा दोनों उज्जवल तट हैं, कवियों के दुष्कर एवं सघन शब्द शिला तल हैं, अर्थ 'बहुलता तरंगे' हैं । सर्ग तीर्थ हैं । यह राम कथा सरिता इस प्रकार शोभायमान है ।"[9]

तुलसीदास जी ने इसी प्रकार मानस सरोवर के रूपक की व्यंजना की है । यह सांगरूपक अत्यंत सुंदर और साभिप्राय है जैसे :

"सुकृत पुंज मंजुल अलि माला । ग्यान बिराग विचारमराला ।।
धुनि अवरेख कबित गुज जाती । मीन मनोहर ते बहु भाँती ।।
अरथ धरम कामादिक चारी । कहब ग्यान बिम्यान बिचारी ।।
नव रस जप तप जोग बिरागा । ते सब जल चर चारु तड़ागा ।।[10]

बालकाण्ड में दोहा संख्या 36 से लेकर दोहा संख्या 43 तक के वर्णन में साँग रूपक का अविरत रूप पाया जाता है । संक्षेप में मानस में सर्वश्रेष्ठ विशेषताओं का रूप निहित है । लोक मानस का उन्हें यथार्थ ज्ञान है तथा उसको प्रेरित प्रभावित और भावमग्न करने की उन्हें सिद्धि है । तुलसीदास जी ने जीवन के किसी एक अंग विशेष का चित्रण ही नहीं किया वरन उसका संपूर्णता के साथ दिग्दर्शन कराया है । विन्सेंट स्मिथ महोदय ने मानस की प्रशंसा करते हुए इसे "दी तलेस्ट ट्री इन दी मैजिक गार्डन ओफ मिडीवियल पोइट्री' अर्थात् मध्यकाल के आश्चर्य काव्योद्यान का सबसे ऊँचा वृक्ष कहा है । ग्रियर्सन ने इसे' दी बाइबल ओफ हिन्दूज अर्थात् हिन्दुओं का बाईबल कहा है ।[11]

2.4 बरवै रामयण

यह कृति समय समय पर लिखे गये छंदों का संकलन है । इसे तुलसीदास जी की रचना मानने के संबंध में विद्वानों में मतभेद है । इसकी रचना का प्रेरणा स्त्रोत रहिम कृत बरवै नायिका भेद है । तुलसीदास जी की यह एक श्रृंगारपरक रचना है । डॉ. श्यामसुन्दरदास ने अपने ग्रंथ 'गोस्वामी तुलसीदास' में तथा डॉ. रसाल ने भी बरवै रामायण को प्रामाणिक कृति के रूप में स्वीकार किया है । प्रस्तुत काव्य में रीति पद्धति के दर्शन तो होते ही हैं, साथ साथ नख–शिख वर्णन, ऐन्द्रिय विलास, ऊहात्मक कल्पना, परंपरागत उपमान आदि बातें भी सहज रूप से प्राप्त हैं । तुलसी रचित यह पुस्तक सात काण्डों में 69 छंदों में लिखा गया एक अनुपम काव्य ग्रंथ है । इसके अंतर्गत सीता सौंदर्य, रामका चरित्र, शील, स्वभाव, सीता विरह वर्णन, सेना वर्णन, वैराग्य, दैन्य शांत आदि भावों के साथ भक्ति का भी परिपाक पाया जाता है । बरवै रामायण का मुख्य विषय रामनाम की महिमा का वर्णन ही है । उत्तरकाण्ड का अधिकांश भाग राम महिमा से ही सम्बद्ध है । कवि ने मानस के बालकाण्ड में जो कहा है वही यहाँ फिर से कहा है –

रामनाम की महिमाजान महेस ।
देत परम पद कासी कार उपदेश ।।[12]

बरवै रामायण के विषय में एक उल्लेखनीय बात यह है कि तुलसी ने उत्तरकाण्ड में शान्त रस की विशेष रूप से अभिव्यक्ति की है । यदि शान्त रस का परिपाक न पाया जाता तो लोग बरवै रामायण को भक्ति की जगह रीति की रचना कह देते । प्रस्तुत कृति में भाव पक्ष की अपेक्षा कलापक्ष का पुट अधिक है ।

2.5 जानकी मंगल

यह काव्य कृति राम–सीता के विवाह के वर्णन से संबंधित है । इसमें सीता के कटाक्ष बाणों का विशेष रूप से वर्णन है ।

स्वयंवर सभा में सीता और राम के प्रथम दर्शन का प्रभाव दर्शनीय है । जिसमें रोचकता प्राप्त होती है । इस कृति को प्रायः सभी विद्वतजनों ने तुलसीदास जी की प्रामाणिक कृति के रूप में स्वीकृत किया है । मिश्र बंधुओं का कहना है कि जानकी मंगल में 13 पृष्ठ और 216 छन्द हैं । इस ग्रंथ की शैली मानस से मिलती जुलती है । इसमें 24 हरिगीति का तथा शेष अरुण छंद हैं । तुलसीदास जी ने 'बरवै रामायण' के समान इसमें राम का मनोहर रूप ही उभारा है । यहाँ राम का चरित्र वीर पुरुष के रूप में विशेष रूप से पाया जाता है । विश्वामित्र जब राम के हृष्टपुष्ट शरीर को देखते हैं तो ऐसी भावना होती है ।

''रामहिं माइन्ह सहित जबहि मुनिजोहेउ ।
नैन नीर तन पुलक रूप मन मोहेउ ।।[13]

मिथिला में भी प्रजाजन राम को देखते हैं तब उनके शरीर पुलकित हो जाते हैं, तुलसीदास जी कहते हैं कि

''राम लखन छवि देख मगन भए पुरजन ।
उर आनद जल लोचन प्रेम पुलक तन ।।''[14]

आलोच्य कृति में श्रृंगारिकता का पुट भी पाया जाता है । यह वर्णनात्मक शैली में लिखित है । इसकी कथा अवधी भाषा में है । वैसे तो इसमें मानस से भिन्न कथा है मगर वाल्मीकि रामायण की कथा से साम्य है ।

2.6 पार्वती मंगल

पार्वती मंगल की शैली जानकी मंगल के समान है । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एवं मिश्र बंधुओं ने इस कृति को तुलसीकृत ही माना है । कृति के प्रारंभ से ही रचनाकाल संबंधित दोहा पाया जाता है ।

2.7 दोहावली

दोहावली के अधिकांश दोहे मानस तथा वैराग्य संदीपनी में प्राप्त होते हैं । डॉ. माताप्रसाद गुप्त का कहना है कि 'इस रचना में प्रक्षिप्त अंश के बावजूद भी शेष अंश प्रामाणिक हैं । इसमें नीति, भक्ति, नाम माहात्म्य और राम महिमा विषयक 573 दोहे हैं ।

2.8 कवितावली

यह एक सरस मुक्तक काव्य है । इसमें विभिन्न काल तथा स्थानों पर लिखे गये कवित तथा सवैयों का काण्ड क्रमानुसार सुन्दर आयोजन किया गया है । इसका प्रत्येक छन्द स्वतंत्र होते हुए भी कथा की एक सूत्रता बनी रहती है । कवितावली में तुलसीदास जी के जीवन चरित्र के विषय में जानकारी प्राप्त होती है । इस रचना की प्रामाणिकता पर विद्वतजनों ने संदेह किया है क्योंकि कुछ छंद भृंग कवि रचित मालूम होते हैं । इस कृति के अधिकांश छंद विनय पत्रिका के समान प्रतीत होते हैं । कवितावली में मार्मिक स्थलों का सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है । इसका उत्तरकाण्ड संपूर्ण कृति के आधे अंश से भी अधिक है । प्रस्तुत काव्य का कथा फलक विस्तृत है, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि आलोच्य कृति में दश से पंद्रह वर्षो के दरम्यान रचित कवितों का संग्रह है । कवितावली की रचना में तुलसीदास जी के चार उद्देश्य प्रतीत होते हैं : (1) रामजन्मोत्सव एवं बाल लीलाओं का वर्णन (2) सीता और राम के प्रेम तथा विरह का वर्णन (3) हनुमान के वीर रूप का चित्रण (4) कलिकाल एवं आत्मचरित का वर्णन ।[15] इसके अरण्यकाण्ड तथा किष्किंधाकाण्ड में केवल एक

ही छंद है । इस रचना में राज जन्म की कथा नहीं है मगर राम की बाललीलाओं से ही कथा का आरंभ होता है । कृति में काशी की महामारी, रुद्रबीसी, मीनकी सनीचरी तथा अतिम महाप्रयाण का भी विवरण हउ । उत्तरकाण्ड में नीति परक एवं राम की स्तुतियाँ और आत्मपरक निवेदन विशेष रूप से दृष्टव्य है ।

2.9 गीतावली

तुलसीदास जी की प्रस्तुत रचना के प्रेरणा स्रोत सूर सागर के पद हैं । गीतावली एक गीति काव्य है जो मुक्तक छंद में रची गई है । इसके वर्ण्य प्रसंगों का चयन कवि की रुचि पर निर्भर है । राम जन्म आनंद, बधाई, जातकर्म, नामकरण दुलार, बालक्रीडाओं, रूप सौंदर्य आदि सब कुछ कवि की मौलिकता का ही परिचायक है । सूर का प्रभाव तुलसीदास जी पर कभी कभी तो इतना अधिक लक्षित होता है कि जैसे तुलसीदास जी ने कृष्ण के स्थान पर राम का नाम रखकर सूर पदावली को ही ग्रहण कर लिया है । डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा तुलसी पर सूर के प्रभाव के संबंध में कहते हैं कि 'तुलसीदास जी अत्यंत जागरुक, बहुश्रुत और नाना स्रोतों से भाव, विचार और मर्मोक्तियों की मुक्तावली सींचित करनेवाले राजहंस थे । अपने युग के महान कवि, रस के सागर, सूर से वे भला क्यों न लाभान्वित होते ? तुलसीदास जी ने राम के बाल रूप का विशद वर्णन किया है ।[16] यहाँ यह कहना समुचित है कि सूर की तुलना में तुलसीदास जी में वर्णनात्मकता का आधिक्य है, लेकिन राम के मनोवेगों का मनोवैज्ञानिक चित्रण नहीं है । तुलसीदास जी का वर्णन राम के सौंदर्य मुग्ध दूर स्थित दर्शक का है परंतु सूर कृण की मानसिक स्थितियों के कुशल चित्रकार हैं । गीतावली और मानस की कथावस्तु में पर्याप्त अंतर पाया जाता है । यथा गीतावली में लक्ष्मण परशुराम संवाद, वनयात्रा के समय गंगावतरण करने के पूर्व राम और केवट का वार्तालाप, भरत द्वारा राम के

अनिष्ट की कल्पना में श्रृंगवेरपुर के निषादमंडल द्वारा मोर्चा लेने की तैयारी, चित्रकूट निवास के समय जनक का आगमन, प्राणांत करने के लिए त्रिजटा से सीता की अग्नि याचना, सेतुबंध के अवसर पर राम द्वारा शिवलिंग की स्थापना आदि प्रसंगों का वर्णन गीतावली में नहीं है, जबकि रामचरितमानस में उक्त प्रसंगों का कलात्मक ढंग से निरूपण किया गया है । विश्वामित्र के साथ राम लक्ष्मण के चले जाने पर माताओं की चिंता, वनयात्रा के प्रारंभ में सीता का श्रम, चित्रकूट में युगल मूर्ति का माधुरी विलास, वनवास की अवधि में कौशल्या का विरह, सीता हरण के कारण राम को व्यथित देख देवों की चिन्ता, सीता–मुद्रिका–संवाद, अयोध्या में हनुमान द्वारा लक्ष्मण–शक्ति का समाचार सुन कर सुमित्रा का शत्रुध्न को निश्चित समय में आने का आदेश, राज्याभिषेक के अनंतर दीपमालिकोत्सव, वसंतोत्सव, सीता निर्वासन, लवकुश जन्म का प्रसंग आदि का विस्तार किया गया है जो रामचरितमानस में नहीं है । कुछ प्रसंग रामचरितमानस से भिन्न रूप में वर्णित हैं – यथा दशरथ के पास विवाह का निमंत्रण शतानन्द द्वारा भेजा जाना, बारात की वापसी के समय परशुराम और राम की भेंट होना, रावण से अपमानित होने के कारण विभीषण का माता से संमति माँगना और कुबेर से परामर्श, लक्ष्मण का उस शक्ति से मूर्छित होना जिसे रावण विभीषण की ओर फेंकता है । ऐसे वर्णन अध्यात्म रामायण में वर्णित है ।[17] सारतः कहना चाहिए कि गीतावली में कवितावली की अपेक्षा तारतम्यपूर्ण घटनाओं का संगठन अधिक है । प्रबंध धारा की गति मंद होते हुए भी इसमें भावों की गंभीरता है । गीतावली की सबसे बड़ी विशेषता सीता त्याग के प्रसंग में है । मानस में तो सीता त्याग का वर्णन ही नहीं । गीतावली में तुलसीदास जी ने न्यून कल्पना की है । दशरथ की असामयिक मृत्यु हो जाने के कारण राम उनकी अवशेष आयु उपभोग कर रहे थे । अतः सीता के साथ ग्राहस्थ्य धर्म का पालन नहीं कर सकते थे । सीता का त्याग आवश्यक था । दूत से लोकापवाद सुनकर ऐसी सीता को त्यागने में उन्हें कष्ट

होता है । वाल्मीकि के समान तुलसीदास जी के राम यहाँ सीता को छल से वन नहीं भेजते बल्कि वह लक्ष्मण को वाल्मीकि के तपोवन तक सादर सीता को पहुँचाने के लिए आदेश देते हैं । गीतावली का प्रमुख आकर्षण उसका कथानक नहीं बल्कि उसकी भाव संपत्ति है । धनुष यज्ञ की चहल पहल राम के प्रति वनवासियों के कोमल भाव, सीताहरण, राम के प्रति वनवासियों के कोमल भाव, सीताहरण पर पंचवटी की स्थिति, भरत के चित्रकूट आने पर शुकसारिका संवाद, अशोक वन में सीता की विरह दशा का चित्र इत्यादि अत्यंत मार्मिक है । गीतावली के राम मानस के राम से नितांत भिन्न हैं । गीतावली में राम की अलौकिकता के दर्शन नहीं होते जो मानस में है । गीतावली के राम अवतारी ब्रह्म नहीं बल्कि वैभव सम्पन्न नरेश हैं । इसमें लंका दहन का वर्णन केवल एक पंक्ति में कर दिया गया है । राम द्वारा रावण का वध गीतावली में नहीं है । इसके विपरीत फाग, चाँचरि, हिंडोले आदि का विस्तृत वर्णन प्राप्य है ।

2.10 वैराग्य संदीपनी

यह दोहा चौपाई में गुंफित छोटी सी रचना है । इसमें तीन प्रकाशों में संत स्वभाव संत महिमा तथा शांति का वर्णन किया गया है । इसमें कुल 62 छंद है । प्रारंभ के 7 छंदों में मंगलाचरण, भगवान श्री राम की वंदना, उनके स्वरूप का निरूपण और ग्रंथ की प्रशंसा की गई है । प्रथम प्रकाश में संत स्वभाव वर्णन रूप 26 छंदों में है । दूसरा प्रकाश संत महिमा वर्णन 9 छंदों में है । तीसरा प्रकाश शांति वर्णन 20 छंदों का है । ग्रंथ छोटा है फिर भी बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है । वैराग्य संदीपनी में नीति संबंधी एवं संत के संत स्वभाव के विषय में विशद वर्णन पाया जाता है । तुलसीदास ने वैराग्य संदीपनी के विषय में लिखा है कि :

यह बिराग संदीपनी सुजन सुचित सुनिलेहु ।
अनुचित वचन विचारिकै जस सुधारि तस लेहु ।।[18]

अर्थात् सज्जनों ! इस वैराग्य संदीपनी को सावधान एवं स्थिर चित्त से सुनो और विचार कर अनुचित वचनों को जहाँ जैसा उचित हो सुधार दो ।

2.11 श्रीकृष्ण गीतावली

इस रचना में श्री कृष्ण के चरित्र का 61 पदों में वर्णन है । कहीं कहीं ऐसा प्रतीत होता है कि ये पद सूरदास जी के हैं और नाम बदलकर इस कृति में आ गये हैं । अलग अलग समय पर लिख गये ये पद हैं । श्री कृष्ण की लीलाओं का सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है । इसमें गोपिओं की विरह व्यथा अंकित है । इस रचना में गोपी उद्धव संवाद, भ्रमरगीत प्रसंग एवं द्रोपदी के वस्त्र बढ़ाने की कथा का वर्णन है । यह अनेक राग–रागिनियों से सज्जित कृति है ।

2.12 विनयपत्रिका

यह गोस्वामी जी की अंतिम और श्रेष्ठ रचना है । इसमें तुलसीदास जी ने अपना विनय तो प्रकट किया ही है साथ साथ भक्ति के जो नौ प्रकार हैं उनमें विशेष करके आत्मनिवेदन, पाद सेवनम् तथा दास्य भाव संबंधित अपना दैन्य प्रस्तुत किया है । इस कृति की रचना के समय तुलसीदास जी शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थ थे । आयु प्रौढ़ावस्था के पार थी । भाषा का गांभीर्य, भाव की तरलता पांडित्य युक्त शब्दकोश, अनुभूति का प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति करण, दार्शनिक विवेचन आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । हनुमान, भरत लक्ष्मण और सीता से प्रार्थना की गई है । कवि अनेक देवी–देवताओं की स्तुति करता हुआ राम तक पहुँचता है । विनय पत्रिका राम दरबार में भेजी गई कवि की विनंती है ।

उपर्युक्त कृतियों के अतिरिक्त विवेचकों ने कई कृतियों का उल्लेख किया है । हमने यहाँ उन कृतियों का ही उल्लेख किया है, जो काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रामाणिक मानी गई हैं ।

लोकप्रियता की दृष्टि से एवं राम काव्य के प्रचार में तुलसीदास जी का स्थान सर्वोपरि है । संस्कृत राम काव्य परंपरा के कवियों से भी तुलसीदासजी का स्थान सर्वोत्तम है । वाल्मीकि रामायण को सरल एवं लोकभोग्य भाषा में आम जनता तक पहुँचाने का श्रेय तुलसीदास जी को ही है । रामचरितमानस की लोकप्रियता श्रीमद् भागवत, महाभारत एवं श्रीमद भगवत गीता से भी अधिक है ।

2.13 सूर साहित्य में रामकथा

सगुणोपासक भक्त कवियों की यह एक विशेषता रही है कि वे अपने आराध्य के प्रति संपूर्ण समर्पण का भाव रखते हैं । इन्होंने अन्य देवी–देवताओं पर अपनी कृतियों का निर्माण किया है । कृष्ण–उपासकों ने राम के और राम उपासकों ने कृष्ण के गुण गाये हैं । तुलसीदास जी की कृष्ण गीतावली इसका प्रमाण है । सूरदास ने भी राम विषयक पद लिखे हैं । इन्होंने श्रीमद भागवत के दशम स्कंध से प्रेरणा ग्रहण करके राम कथा में अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय दिया है । सूरदास के पदों पर किसी कवि का प्रभाव परिलक्षित नहीं होता ।

सूरसागर की रामकथा के संबंध में श्रीयुत केदार जोशी ने कहा है – “जिस प्रकार कोई पथिक प्रकृति के सुंदर दृश्यों को देखकर क्षणभर विश्राम कर लेता है और उनकी प्रशंसा करने लगता है इसी प्रकार सूर सागर का कवि भी भागवत की कथा कहते कहते विराम स्थलों पर पहुँचकर स्वतः अपनी भावनाओं को मुखरित करने लगता है । सूरसागर में राम कथा और कृष्ण कथा ऐसे ही विश्राम स्थल हैं ।[19] यों तो सूरदास का उद्देश्य कृष्ण कथा

कहना ही है फिर भी उन्होंने रामकथा विषयक पद अवश्य लिखे हैं । सूरदास ने राम के जन्म से लेकर अयोध्या में राम के राज्याभिषेक तक की कथा का वर्णन किया है । सूरदास ने बालकाण्ड में राम की बाल लीलाओं का हृदय स्पर्शी वर्णन किया है । राम के जन्मसमय पूरी अयोध्या निवासिओं का अदम्य उत्साह ध्यानाकर्षक है । विश्वामित्र यज्ञार्थ रक्षा हेतु राम और लक्ष्मण को ले जाते हैं । ताड़का वध और अहल्या उद्धार का वृतांत संक्षेप में है । सीता स्वयंवर के पूर्व ही सीता के मन में राम के प्रति पूर्व राग होना आदि पद दृष्टव्य है । सीता स्वयंवर में कंकण मोचन की कथा अतीव रोचक बन पड़ी है । इस प्रकार बालकाण्ड में 14 छंद है । अयोध्या काण्ड की घटनायें 26 छंदों में गुंफित है । इसमें राम के राज्याभिषेक से लेकर वन गमन एवं दशरथ की मूर्छा तक की कथा है । अरण्यकाण्ड में 12 छंद है । कथा परंपरागत है । सीता यहाँ एक वर्ष तक छाया में अदृश्य रहती है । छाया का ही रावण के द्वारा हरण होता है । राम का विलाप करुण भावमयी शैली में तीन पदों में आलेखित है । जटायु का वध, शबरी का प्रसंग आदि वर्णन में सुरदास जी ने अपनी मौलिकता का परिचय दिया है । सुग्रीव का राज्याभिषेक और सीता की खोज तक का वर्णन इस काण्ड में है । हनुमान जी का लंका गमन, सीता हनुमान संवाद, लंका दहन, राम के प्रति सीता संदेश सीता द्वारा हनुमान की मुद्रिका प्रदान करना आदि । बादमें राम रावण युद्ध, सेतु बंध, राम की विजय, भरत मिलाप अयोध्या में राम का राज्याभिषेक आदि का निरूपण है । सूरदास जी ने अंतिम पद में राज्य कार्य में व्यस्त है ऐसा वर्णन किया है । सूरदास जी राम को प्रार्थना करना चाहते हैं मगर सीधा वंदन या प्रणाम नहीं करते मगर उन्होंने तुलसीदास जी की विनयपत्रिका के समान कल्पना करके अपना उद्‌देश्य सिद्ध किया है । संक्षेप में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि तुलसीदास जी की राम विषयक भावना और सूरदास जी की भावना में अंतर है । जनमानस एवं लोक कल्याण हेतु ही तुलसीदास जी ने मानस की रचना

की है अन्होने रामकथा को सामान्य जनता तक पहुँचाने का प्रयास किया है, जबकि सूरदास जी के राम विषयक पदों में उपदेशों का पूर्णतः अभाव है । सूरदास को जहाँ ठीक लगा है वहीं विस्तारपूर्वक वर्णन किया है । अन्यत्र उन्होंने घटनामात्र का ही उल्लेख किया है अथवा समूचा प्रसंग ही छोड़ दिया है ।

2.14 अन्य कवियों द्वारा राम कथा वर्णन :

सूरदास जी के अलावा विद्यापति के भी चार पाँच पद उपलब्ध होते हैं । विद्यापति ने राधा कृष्ण और शिव शक्ति के साथ साथ राम सीता के प्रति भी अपनी भक्ति भावना प्रकट की है । मीराबाई ने भी कई पदों में राम का उल्लेख किया है । नंददास के रामकथा संबंधी तीन चार पद ही प्राप्त होते हैं, उनमें धनुष यज्ञ तथा हनुमान द्वारा समुद्र लांधकर सीता की खोज का वर्णन है ।[20] नंददास के अलावा गोविंद स्वामी और परमानंद दासके भी कुटकर पद मिलते हैं जिससे यह प्रतीत होता है कि कृष्ण भक्त कवियों ने भी रामकथा संबंधी पद लिखे हैं ।

2.15 निम्बार्क संप्रदाय में रामकथा

निम्बार्क संप्रदाय कें अंतगर्त रसिक शाखा के प्रवर्तक परशुराम देव राम के सगुण और निर्गुण दोनों रूपों के प्रति अनुरक्त रहे हैं । 'रघुनाथचरित' तथा 'दशावतार चरित' में उन्होंने अन्य अवतारों का वर्णन किया है । कृष्ण भक्त कवियों में उल्लेखनीय कवि राधा वल्लभ संप्रदाय के संस्थापक हितहरिवंश हैं, जिन्होंने राम–संबंधी पद लिखे हैं । इसी प्रकार सखी संप्रदाय के संस्थापक हरि राम व्यास के पिता माधवदास जगन्नाथ द्वारा रचित 'रघुनाथ लीला' उल्लेखनीय है ।

2.16 केशवदास की रामचंद्रिका

तुलसीदास जी के समकालीन केशवदास ने रामचंद्रिका द्वारा एक अभिनव क्रांति उपस्थित की । रामचंद्रिका अपने युग की एक विशिष्ट कृति है । केशवदास संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित थे । अतः उन पर संस्कृत का प्रभाव अधिक है । 'रामचंद्रिका' में कथानक की दृष्टि से उन पर हिन्दी साहित्य का कोई ऋृण नहीं है, क्योंकि सूर और तुलसी ने जिन संस्कृत ग्रंथों को आधार माना था, केशव ने स्वतंत्र रूप से उनका अध्ययन करके अपनी रचनाओं में उपयोग किया है । रामचंद्रिका राम भक्ति परक ग्रंथ है । रुहेल खण्ड तथा बुंदेल खण्ड में इसका धार्मिक महत्त्व आज भी देखने को मिलता है ।[21] 'रामचंद्रिका' की कथावस्तु प्रायः वाल्मीकि रामायण के अनुरूप है । कथावस्तु के विस्तार के लिए अध्यात्म रामायण हनुमन्नाटक और प्रसन्न राघव से सहायता ली गयी है । कथावस्तु के विस्तार में संवादों का महत्त्वपूर्ण योगदान है । आलोचकों ने रामचंद्रिका के काव्यरूप को प्रबंध काव्य या महाकाव्य के रूप में स्वीकार करने में संदेह व्यक्त किया है । समग्र दृष्टिकोणों से मूल्यांकन करने के पश्चात् कहा जा सकता है कि 'रामचंद्रिका' निःसंदेह हिन्दी साहित्य का एक प्रशंसनीय महाकाव्य है[22] जो शास्त्रीय परिभाषाओं के अनुसार प्रत्येक दृष्टिकोण से पूर्ण सिद्ध होता है । रामचंद्रिका में पांडित्य प्रदर्शन एवं कलापक्षीय चमत्कार विशेष ध्यान आकृष्ट करता है । केशवदास ने स्वयं स्वीकार किया है कि – "रामचन्द्र की चंद्रिका बरनत हौं बहु छंद" । प्रारंभिक छंदो को देखने से प्रतीत होता है कि केशव ने रामचंद्रिका की रचना छंदो की शिक्षा देने के हेतु की है । इस रचना में काव्यदोष पाये जाते हैं । कवि अगर चाहते तो दोषों का निवारण कर सकते थे मगर उन्होंने इसलिए निवारण नहीं किया क्योंकि काव्यदोषों के उदाहरण भी आवश्यक हैं । आलोचक केशवदास की तुलना अंग्रेजी साहित्य के प्रसिद्ध कवि मिल्टन से करते हैं । केशवदास के समय आमोद–प्रमोद का प्राधान्य था । कवियों को राज्याश्रय मिलने लगा था ।

आश्रयदाताओं के गुणगान के साथ साथ सुरासुंदरी का भी प्रचलन पाया जाता था । अतः केशवदास के काव्यों में भक्ति की पावन भावना सपष्टतः नहीं उभर सकी । कवि भी आखिरकार मनुष्य होता है । आसपास के वातावरण का प्रभाव उसकी रचनाओं में अवश्य लक्षित होता है । केशवदास ने रामचंद्रिका के द्वारा अपनी भावना प्रकट की है । इन्होंने कई ऐसे छंद प्रयुक्त किए हैं जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं । कहीं कहीं चमत्कार एवं शब्द लाघव का प्रयोग किया है – यथा

'कृतध्नी कुदाता कुकन्या हिचा है । हितू नग्नमुंडी नहीं को सदा है ।।
अनाथै सुन्यौ मैं अनाथानुसारी । बसै चित्त दंडी जटी मुंड धारी ।।
तुम्हैं देवि दूषै हितू ताहि मानैं । उदासीन तोसों सदा ताहि जानैं ।
महा निर्गुणी नाम ताकौ न लीजै । सदा दास मोपैकृपा क्यों न कीजै ।।

रावण सीता से मिलने के लिए अशोक वाटिका में जाता है । सीता को प्रलोभन देता है कि मैं तुम्हें पटरानी बनाऊँगा । राम की निन्दा करता है । कवि ने उन्हीं शब्दों के द्वारा दूसरे अर्थ का भी गूढ़ार्थ अंकित किया है, जिससे राम की स्तुति का स्पष्ट बोध हों । रावण सीता को प्रलोभन दे रहा है कि इन्द्राणी, सरस्वती और पार्वती भी तुम्हारी सेवा करेंगी । दूसरा अर्थ यह भी ध्वनित होता है कि हे सीते तुम्हारी सेवा शची, पार्वती और इन्द्राणी भी करती हैं । इसमें सीता की भी स्तुति की गई है, ऐसा अर्थ भी स्पष्ट होता है । कवि ने अपना पांडित्य प्रदर्शन ही नहीं किया मगर कवित्व शक्ति के अखूट भण्डार का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया है । हाँ ! ऐसा हो सकता है कि केशव की कला का आस्वाद शब्द शक्ति की विशिष्टता, भावों की गरिमा और शब्दों का लाघव केवल मर्मज्ञों तक ही सीमित है अथवा यों कहिए कि जो साहित्यिक लोग हैं जिनका साहित्य से संबंध है वे ही केशव की कला के उपभोक्ता बन सकते हैं । सामान्य जन के लिए रामचंद्रिका या अन्य रचनाएँ सिर्फ पढ़ने भरके लिए ही हैं । संक्षेप में अभिनव प्रयोग की दृष्टि से

'रामचंद्रिका' एक अभिनंदनीय राम काव्य है जिसमें अनेक प्रकार के छंदों, अलंकारों और उक्ति वैचित्र्य से केशवदास का पांडित्य अनायास झलक उठता है ।

2.17 सेनापतिकृत कवित्त रत्नाकर

'कक्ति रत्नाकर' इनका प्रसिद्ध ग्रंथ है ।इस ग्रंथ की चौथी और पांचवी तरंगों में रामायण के विविध मधुर प्रसंगों का सुसंस्कृत और सारगर्भित भाषा में वर्णन पाया जाता है । कवित्त रत्नाकर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें अनुप्रास और यमक अलंकारों का विशेष प्रयोग ध्यानाकर्षक है । सेनापति हिन्दी साहित्य में भावानुकूल रीतु वर्णन के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध हैं ।

2.18 प्राणचन्द चौहाण कृत – रामायण महानाटक

'रामायण महानाटक' इनका प्रसिद्ध प्रबंध काव्य है । इसमें यत्र तत्र दोहा चौपाई के दर्शन होते हैं । आलोच्य कृति पर ''हनुमन्नाटक' का स्पष्टतः प्रभाव लक्षित होता है ।

2.19 माधवदास चारण कृत – राम रासो, अध्यात्मरामायण

इनकी राम संबंधी दो रचनाएँ 'रामरासो' और 'अध्यात्म रामायण' हैं । उन्होंने राम रासो में संपूर्ण रामकथा का उल्लेख नहीं किया मगर राम के जीवन की मुख्य घटनाएँ एवं राम के जीवन की चारित्रिक विशेषताएँ जहाँ विशेष रूप से लक्षित होती हो उन्हीं प्रसंगों पर विस्तार से अपनी लेखनी चलायी है । 'अध्यात्म रामायण' को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि यह ग्रंथ संस्कृत के 'अध्यात्म रामायण' का भावानुवाद है ।

2.20 हृदयराम – हनुमन्नाटक

हृदय राम की राम कथा संबंधी प्रसिद्ध कृति ''हनुमन्नाटक' है । कहीं–कहीं इस कृति का नाम 'रामगीत' भी पाया जाता है । 'हनुमन्नाटक' शीर्षक के

विषय में कहा जाता है कि स्वयं हनुमान जी ने आकर इनको काव्य लिखने की प्रेरणा दी थी जिससे उन्होंने हनुमन्नाटक नाम रखा । कथा का प्रारंभ उन्होंने सीता स्वयंवर से किया है और कथा की पूर्णाहूति राम के राज्याभिषेक पर की है । इसकी शैली संवादात्मक है । संस्कृत के ''हनुमन्नाटक' का इस पर स्पष्ट प्रभाव लक्षित होता है, किन्तु कृति मौलिक है । कवित्त सवैया छंदों का इस में प्रयोग हुआ है ।

2.21 नरहरिबारहट रचित पौरुषेयरामायण

इनकी प्रसिद्ध कृति पौरुषेय रामायण है । रामचरितमानस के कुछ समय बाद ही इसकी रचना हुई है । 'पौरुषेय रामायण' रामकाव्य परंपरा की प्रौढ़ कृति है । आलोच्य कृति के शीर्षक के विषय में यों स्पष्टता पायी जाती है कि वाल्मीकि रामायण आर्ष ग्रंथ है जबकि यह रचना एक सामान्य पुरुष की कृति है । यह कृति नरहरिकृत 'चतुर्विंशति अवतार चरित्र' नामक विशाल ग्रंथ का एक अंश है जिसमें 21 वें अवतार के अंतर्गत रामचरित्र का वर्णन है । रचना शैली रासो ग्रंथ जैसी है । दोहा चौपाई छंदों के अलावा कवित्त सवैया, छप्पय पद्धरि, भुजंग प्रयात आदि का भी उपयोग किया गया है ।

पौरुषेय रामायण की भाषा राजस्थानी और ब्रज मिश्रित अवधी है ।

2.22 लालदास रचित अवध विलास

रामकाव्य परंपरा में 'अवध विलास' एक प्रसिद्ध कृ है । इसमें काण्ड के स्थान पर विश्राम अभिधान रखा गया है जिनकी संख्या 18 है । इसमें राम जन्म से लेकर राम वनगमन तक की कथा का वर्णन किया गया है । लालदास ने प्रसंगानुकूल भक्ति एवं ध्यान योग की क्रियाओं का विस्तार से वर्णन किया है । कृति की रचना दोहा चौपाई शैली में अवधी भाषा में हुई है ।

2.23 कपूरचन्द त्रिखा रचित रामायण

इन्होंने गुरुमुखी लिपि में 'रामाणय' लिखी है । यह 145 छंदों की एक लघुकृति है । जिसकी भाषा सरस, सरल ब्रज भाषा है । इसमें संक्षेप में रामकथा वर्णित है ।

उपर्युक्त सब कवि सगुण भक्ति धारा के हैं । अब हम निर्गुण भक्ति धारा के कवियों द्वारा लिखित राम काव्य का उल्लेख करेंगे ।

निर्गुण संतों की विचार धारा सिद्ध नाथ कवियों की देन मानी जाती है । निर्गुण भक्ति धारा में रामानंद का स्थान शीर्षस्थ है । वैसे रामानंद जी का उल्लेख सगुण और निर्गुण दोनों धाराओं में होता है । रामानंद जी के अनेक शिष्य थे । शिष्यों ने गुरु की आज्ञानुसार परंपरित भक्ति के स्थान पर उसे लोक भोग्य एवं समाज में प्रवाहित करने का प्रयास किया । इनके शिष्यों में अनन्त दास, कबीर, पीपा, धन्ना आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । 'रामानन्द' द्वारा रचित संस्कृत ग्रंथों की प्रामाणिकता निश्चित नहीं है । उनके गुरु राघवानन्द ने एक ग्रंथ लिखा है, जिसका नाम 'सिद्धांत पंचमात्रा' है । उसके आधार पर कहा जा सकता है कि रामानन्द की साधना पद्धति में नाम स्मरण का बहुत अधिक महत्त्व है । कबीर ने रामानन्द जी से ही प्रेरणा ग्रहण कर साधना एवं भक्ति को सभी वर्गों और सभी वर्णों के लिए सुलभ कर दिया था । रामानन्द की हिन्दी रचनाओं में उनका प्रगतिशील, आध्यात्मिक एवं साधनात्मक दृष्टिकोण देखने को मिलता है । तीर्थ यात्रा, मूर्तिपूजा, वेदादि धर्मग्रंथों एवं उपासना के बाहय साधनों की आलोचना करते हुए उन्होंने अंतर साधना का मार्ग प्रदर्शित किया है । अपने गुरु राघवानंद से प्राप्त भक्ति और ज्ञान की पृष्ठ भूमि में उन्होंने 'रामावत' संप्रदाय का प्रवर्तन किया । ध्यातव्य बात यह है कि इनके बाद सोलहवीं शताब्दी में इस संप्रदाय का संपर्क श्री संप्रदाय से इतना बढ़ गया कि लोग द्विधा में रह गये कि इसमें श्री संत्रदाय और रामावत संप्रदाय में भिन्नता कहाँ है ? परंतु दोनों में भेद विद्यमान था

ही । प्रमुख भेद यह था कि श्री संप्रदाय के आराध्य नारायण है और रामावत संप्रदाय के राम । रामावत संप्रदाय में साधनात्मक प्रवृत्तियों द्वारा मानसिक संतोष प्राप्त करने का मार्ग था । इसके साथ व्यावहारिक जीवन की उदारता, सहृदयता तथा सहिष्णुता की भावना का प्राचुर्य था । इनके आराध्य श्री राम अगम, अगोचर, निर्गुण, निराकार होते हुए भी संतों, भक्तों और दीन जनों के लिए सहज रूप से अवतार धारण कर लेते हैं ।

2.24 कबीरदास की कबीर की बानी

कुछ विद्वानों के अनुसार वे मूलतः भक्त थे, इसके सिवा कुछ नहीं । भक्त के अलावा कबीर के अन्य रूप भी उभरते हैं, जैसे कवि, समाज सुधारक, हिन्दु मुस्लिम ऐक्य के प्रणेता, संप्रदाय प्रवर्तक, वेदांत व्याख्याता, दार्शनिक, रहस्यवादी आदि । कबीर ने निर्गुण राम की भक्ति की है । निर्गुण राम की भक्ति कैसे हो सकती है ? आलम्बन बिना ध्यान कैसे लग सकता है ? आलोचकों ने उतर देते हुए यह भी कहा है कि ‘‘कबीर निर्गुण राम का ध्यान अवश्य धरते हैं मगर लोगों ने जो रूप दिया है वह उन्हें मान्य नहीं है । कबीर के राम अलख और अगम्य है । कबीर के राम पौराणिक नहीं है । उनके राम दशरथ के यहाँ पैदा नहीं हुए । उन्होंने (राम ने) लंका का नाश नहीं किया और न वे देवकी की कोख से उत्पन्न हुए, न जशोदा ने उन्हें पाला । वे ग्वालों के साथ और गौ के पीछे नहीं घूमे । कबीर के राम न तो बलि राजा को छलनवाले, मत्स्य, वाराह, कच्छप के अवतारी पुरुष हैं । कबीर के राम तो वही है जो सारे शरीर में व्याप्त है जिससे तन में चेतना पाई जाती है ।[23]

कबीर के राम की तरह उनकी कृतियों की प्रामाणिकता के विषय में भी विद्वानों में मतैक्य नहीं है । ‘खोज रिपोर्टो,संदर्भ ग्रंथों, पुस्तकालयों के विवरण में निम्नलिखित कृतियाँ कबीर के नाम से पायी जाती हैं – अगाध मंगल,

अनुराग सागर, अमरमूल, अक्षर खण्ड की रमैनी, अक्षर भेद की रमैनी, उग्रगीता, कबीर की बानी, कबीर गोरख की गोष्ठी, बीजक, ब्रह्म निरूपण, मुहम्मद बोध, रेखता, विचारमाला, विवेकसागर शब्दावली, हंसमुक्तावली, ज्ञान सागर आदि ।[24] वैसे तो कबीर द्वारा विरचित 63 ग्रंथों का उल्लेख मिलता है । इतना तो स्वीकार करना पड़ेगा कि कबीर ने जो भाव विचार या अपना मत प्रकट किया उसमें मौलिकता तो है ही । चाहे कबीर को छंद एवं भाषा का ज्ञान हो या न हों मगर कबीर एक स्वतः सिद्ध कवि माने जा सकते हैं । कबीर पुराण, वेद एवं अन्य शास्त्रों से अनुभूति को प्रथम स्थान देते हैं । वे कहते हैं कि 'मैं कहता हूँ आँखिन की देखी, तू कहता है कागद लेखी ।' कबीर का जन्म, बचपन, जाति आदि ने उनको प्रारंभ से ही विद्रोही प्रकृति के समाज सुधारक समसामयिक स्थिति अनुसार दार्शनिक और आवशयकतानुसार कवि बनाया था । कबीर के राम सर्व तत्त्वों से भिन्न हैं, फिर भी ज्ञानमय हैं । कबीर के राम अनुभवगम्य हैं । सबको राम से साक्षात्कार नहीं होता, अतः कबीर ने अकथ आनंद को यों व्यक्त किया है ।

'अविगत अकथ अनूपम देख्यां कहताँ कहया नजाई ।
सैन करै मन रहसैं, गूंगे जाँनि मिठाई ।।

संक्षेप में प्रभाव की दृष्टि से तुलसीदास के बाद कबीर का नाम सगर्व लिया जाता है । इसका कारण स्पष्ट है कि तुलसीदास के बाद हिन्दी भाषी जनता पर समान रूप से प्रभाव और किसी का नहीं पड़ा । कबीर ने यों भी कहा है कि –

''अकथ कहाणी प्रेम की कछु कही न जाई
गूँगे केरी सरकरा बैठे मुसुकाई ।।[26]

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में ''महिमा में वह केवल एक प्रतिद्वंद्वि जानता है – तुलसीदास ।''

2.25 लालदास – लालदास चेतावनी

संत कवि लालदास लाल पंथ के प्रवर्तक हैं । लालदास के समय का समाज प्रगतिशील नहीं था । जीविका के साधनों को जुटाने के पीछे इतना संघर्ष करना पड़ता था कि शिक्षा दीक्षा का समय ही किसी को नहीं मिलता था । लालदास का जन्म मुस्लिम परिवार में हुआ था । वे बचपन से ही साधु संत्संग में रत हो गए । वय एवं समय के साथ उनकी ख्याति बढ़ने लगी । लालदास एक सिद्ध महापुरुष एवं महान त्यागी संत थे । उनकी रचनाएं 'लालदास की चेतावणी' में संकलित हैं, जिसमें सरल अभिव्यंजना में गंभीर रहस्योदघाटन का बोध होता है । लालदास जन्म से मुसलमान थे किन्तु उनका व्यवहार एवं आचरण हिन्दूं जैसा था । उनके ग्रंथ में 'राम' ही सर्व श्रेष्ठ शक्ति है, वही आराध्य है, वही ब्रह्म है ऐसा बार बार वर्णित है । लालपंथ की आचार संहिता बड़ी आकर्षक है । इस पंथ के अनुयायी हिन्दू मुसलमान दोनों ही हैं किन्तु उनमें मेवों (मुसलमानों) की संख्या अधिक है ।

2.26 मलूकदास – रामावतारलीला

मलूकदास का आविर्भाव उस समय हुआ जब भारतवर्ष पर अकबर का शासन था । मलूकदास को बचपन से ही मायामोह एवं सांसारिक सुखों से विरक्ति हो गई थी । इसके मूल में उनके पिता सुंदरदास खत्री का नाम लिया जाता है । मलूकदास ने कई ग्रंथों का निर्माण किया है जिनमें राम संबंधी कृति 'रामावतार लीला' है । इसमें राम के अवतार एवं चरित्र पर कवि ने अपनी लेखनी चलायी है, वैसे तो मलूकदास निर्गुण मतवादी संत थे फिर भी 'रामवतार लीला', ब्रज लीला एवं 'ध्रुव लीला' की रचनाओं तक आते आते सगुण उपासना के प्रति आकृष्ट हो गए थे । उनका ब्रह्म निर्गुण और गुणातीत है । वह समग्र सृष्टि का पालक और संहारक है ।

2.27 रीतिकाल के रामकाव्य – रामानंद जी

हिन्दी साहित्य के आदिकाल में चरित काव्यों का प्रचलन रहा । इस युग में चारणों और भाटों के युद्ध संबंधी वर्णनों में अतिशयोक्ति होते हुए भी इस युग के समान वर्णन अन्यत्र संभव नहीं । भक्ति युग में इस युद्ध–विषयक वर्णन वाली भावना क्षीण रूप से चलती रही । राम और कृष्ण के चरित्र को विष्णु का अवतार मानकर वीर रस परक चित्रण पाया जाता है । रीतिकाल में राम कृष्ण के चरित काव्यों की धारा नितांत क्षीण हो गयी । इसके स्थान पर संस्कृत की प्रशस्ति परक मुक्तकों की परंपरा अनेक मुखी होकर प्रवाहित हो गयी । इसका यह अर्थ नहीं होता कि रीतिकाल में प्रशस्ति परक एवं श्रृंगार भावना से प्रेरित ही काव्य रूपों का निर्माण हुआ । राम काव्यों का सृजन तो हुआ ही है मगर भक्तिकाल के समान नहीं ।

हिन्दी रामकथा के विकास में रामानंद जी का महत्त्वपूर्ण योगदान सिद्ध होता है । सगुण काव्य धारा के इस संत कवि ने सामान्य जनता के हृदयकमल तक रामकथा पहुँचाने का एक प्रशंसनीय कार्य किया है । इसा की सत्रहवीं शती से लेकर आज तक राम कथाओं का निर्माण होता रहा है ।

2.28 गुरुगोविंदसिंह – 'रामावतार' और गोविंदरामायण

गुरु गोविंद सिंह जहाँ अपने पूर्व की नौ पीढ़ियों से चली आ रही धार्मिक परंपरा के उत्तराधिकारी थे, वहीं वे विदेशी शासन के विरुद्ध उभरते हुए एक जन आंदोलन के कर्णधार भी थे । समय की आवश्यकता ने उनके द्वितीय स्वरूप ने अर्थात् विदेशी शासन को दूर करके देश में शांति एवं समानधर्म, समान जाति एवं वसुधैव कुटुंबकम् की भावना जागृत हों, ऐसे प्रयत्न किए । हिन्दी राम काव्य के विकास पर अनेक ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं किन्तु उसमें गुरु गोविंद सिंह कृत 'रामावतार' का उल्लेख नहीं मिलता । कहीं कहीं रामावतार के बदले 'गोविंद रामायण' का उल्लेख मिलता हैं[27] गुरु गोविंद सिंह

ने विष्णु के चौबीस अवतारों में शिव और ब्रह्म के अवतारों एवं चण्डी द्वारा दैत्यों के संहार का वर्णन किया है । इससे इनकी धर्म युद्धकी भावना स्पष्टतः लक्षित होती है । रामावतार की रचना रामचरितमानस के सवा सौ वर्ष बाद हुई है, परंतु उस पर मानस का प्रभाव लक्षित नहीं होता । मानस का उद्‌देश्य कवि के अपने अंतःकरण के सुख के लिए फलित होता है ।[28] मानस क्रमानुसार पढ़ते पर ऐसा लगता है कि कवि का उद्‌देश्य रामकथा का प्रचार ही करना है । 'रामावतार' के कवि का उद्‌देश्य राम को राष्ट्र नायक के रूप में आसीन करने का है । समग्र रामावतार में 864 पद हैं, जिनमें से 800 से अधिक पदों में युद्ध का ही वर्णन है । वाल्मीकि रामायण के राम समसामयिक महान आदर्श चरित्र युक्त सम्पन्न पुरुष हैं । अध्यात्म रामायण के राम पूर्ण अवतारी ईश्वर हैं । तुलसीदास जी के राम मर्यादा पुरुषोतम अथवा पूर्ण पुरुषोतम राम हैं । गुरु गोविंद सिंह के राम विष्णु के अवतारी हैं –

मास त्रयोदशी चडयो तब संतन हंतू उधार ।
रावण रिपु परगट भये जग आन राम अवतार ।

संक्षेप में गुरु गोविंद सिंह के राम वीर पुरुष हैं । जिनको युद्ध भी प्रिय हैं और शांति भी ।

2.29 जानकी शरण कृत अवध सागर

राम काव्य संबंधित उनकी कृति 'अवध सागर' के नाम से प्रसिद्ध है । कवि कृष्ण भक्त कवियों की शैली से पूर्णतः प्रभावित होने से उनकी आलोच्य कृति में अष्टयाम प्रसंग में रास, नृत्य, भोजन, शयन आदि का वर्णन प्राप्त होता है । कवि ने यथासंभव श्रृंगार रस का अधिक निरूपण किया है । कवि की एक विशेषता यह है कि वे अवध के रहनेवाले होते हुए भी उनकी भाषा में ब्रज का सहज और सुन्दर प्रयोग प्राप्त होता है ।

2.30 भगवन्तराय खीची कृत हनुमत्पच्चीसी

शिवसिंह सरोज का मंतव्य है कि इन्होंने सात काण्डों में कवित्त छंद में रामायण की रचना की थी, मगर खेद की बात है कि यह ग्रंथ अप्राप्य है। उनकी एक कृति 'हनुमत्पच्चीसी' के नाम से मिलती है। इसमें हनुमान जी के चरित्र से संबंधित पच्चीस कवित्त, मिलते हैं। ग्रंथ की भाषा ओजपूर्ण और उत्साहपूर्ण है, जिसमें अनुप्रास की छटा दर्शनीय है।

2.31 जनकराज किशोरीशरण – सीताराम सिद्धांत

इन्होंने राम संबंधी अनेक कृतियों का निर्माण किया है, जो सब ब्रज भाषा में हैं। कृतियों के नाम इस प्रकार हैं – सीताराम सिद्धांत मुक्तावली, सीताराम रस तरंगिणी, जानकी करुणा भरण, रघुवर करुणा भरण आदि। ये सब उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। एक अनुमानानुसार इन्होंने बीस रचनाओं का निर्माण किया है। इससे स्पष्ट होता है कि रीतिकाल के अन्य कविओं की तुलना में इन्होंने सर्वाधिक परिमाण में राम काव्य का निर्माण किया है।

2.32 नवलसिंह – रामचन्द्र विलास

उनका व्यक्तित्व बहुमुखी था। वे कवि के साथ अच्छे चित्रकार भी थे। उन्होंने प्रायः ब्रज भाषा में ही काव्य लिखे हैं, जिनमें 'रामचंद्र विलास', 'आल्हारामायण', 'रूपक रामायण', 'सीता स्वयंवर', 'राम विवाह खण्ड', 'नाम रामायण', 'रामायण सुमिरनी', 'मिथिला खंड' आदि उल्लेखनीय हैं। कवि ने यत्र तत्र ब्रज भाषा के गद्य का भी प्रयोग किया है। कवि को अनुप्रास शैली अत्यंत प्रिय है।

2.33 विश्वनाथसिंह – रामायण

कवि ने रामकथा संबंधी सृजन किया है। ये रीवाँ नरेश थे। इन्होंने निर्गुण संत मत की विचारधारा में अपनी कृतियों के द्वारा महत्त्वपूर्ण योगदान

दिया है । इनकी 'रामकथा संबंधी छः रचनाएँ हैं, – 'रामायण' 'गीता – रघुनन्दन प्रामाणिक', 'रामचंद्र की सवारी', आनंद–रघुनंदन नाटक आदि । यह हिन्दी का प्रथम नाटक माना जाता है ।[30] आनंद रामायण तथा संगीत रघुनन्दन इन राम काव्यों की भाषा ब्रज है । अनुप्रास अलंकार कवि को अति प्रिय है । अन्य उल्लेखनीय राम भक्त कवि निम्न लिखित है :

2.34 रामप्रियाशरण – सीतायन

ये जनक पुर के महंत थे । इनकी उल्लेखनीय विशेषता यह है कि अन्य रामभक्त कविओं से भिन्न इन्होंने सीता पर अपनी लेखनी चलायी है इतना ही नहीं सीता के चरित्र को महत्त्व प्रदान करने के लिए कृति का नाम सीता पर ही रखा है 'सीतायन' । इसे कई लोग 'सीताराम प्रिया' के नाम से भी पहचानते हैं । काव्य की भाषा ब्रज है, रोला छंद कवि को अधिक प्रिय है ।

2.35 रसिक अली – मिथिला विहार

नाम के अनुरूप गुण रखनेवाले इस कवि ने चार कृतियों का सृजन किया है : 'षटऋृतु पदावली', ''होरी', 'अष्टयाम' और 'मिथिला विहार' । रामचन्द्रजी जब सीता स्वयंवर हेतु जनकपुरी जाते हैं तब राम जनकपुरी की शोभा देखकर प्रसन्न हो जाते हैं । इस बात का वर्णन मिथिला विहार में विविध छंदो में दिया गया है । राम और सीता के देहलालित्य के वर्णन में अधिकांशतः श्रृंगार रस का प्रयोग किया गया है, जो कहीं कहीं पाठक या भक्त को खटकता है ।

2.36 सरजुराम पंडित – जैमिनी पुराण भाषा

इन्होंने राम चरितमानस को दृष्टि समक्ष रखकर एक विशालकाय कथात्मक ग्रंथ का सृजन किया है जो 'जैमिनी पुराणभाषा' नाम से प्रसिद्ध है ।

इसमें 'महाभारत' तथा 'रामायण' से संबंधित अनेक कथाएँ हैं, जिनमें सीता त्याग और लव-कुश युद्ध कथा आदि उल्लेखनीय हैं । ग्रंथ में छतीस अध्याय हैं । दोहा-चौपाई छंदों के अतिरिक्त अन्य छंदों का भी प्रयोग इसमें हुआ है । इसी ग्रंथ में 'संक्षिप्त रामायण' शीर्षक के अंतर्गत संपूर्ण रामकथा सार भी प्राप्त होता है ।

2.37 कृपा निवास - भावना पच्चीसी

ये कवि रामावत सखी संप्रदाय के मूल प्रवर्तक हैं । इन्होंने रामकथा संबंधी 'भावना पच्चीसी', 'समय प्रबंध' (अष्टयामलीला), 'माधुरी प्रकाश' (राम और सीता के अंग प्रत्यंगों की शोभा का वर्णन) और 'जानकी सहस्रनाम' चार ग्रंथ लिखे हैं ।

2.38 मधुसूदनदास - रामाश्वमेघ

कवि ने 'रामाश्वमेघ नामक प्रबंधात्मक राम काव्य लिखा है । इसमें अड़सठ अध्याय हैं । यह पदम पुराण के पाताल खंड का भावानुवाद है । आलोच्य कृति की भाषा अवधी है । दोहा-चौपाई में गुंफित सुंदर शिल्प विधान है ।

2.39 जानकीशरण - सियाराम रसमंजरी

इन्होंने 'सियाराम रसमंजरी' की रचना की है । इस कृति का केवल ऐतिहासिक महत्त्व ही है ।

2.40 गोकुलनाथ - सीताराम गुणार्णव

इन्होंने ब्रज भाषा में 'सीताराम गुणार्णव' नामक प्रबंध काव्य लिखा है । वैसे यह आलोच्य कृति 'अध्यात्म रामायण' का अनुवाद है ।

2.41 मनियारसिंह – हनुमत छब्बीस

इन्होंने 'हनुमत छब्बीस', 'सौंदर्य लहरी' और 'सुन्दर खण्ड' नामक कृतियों का सृजन किया है । इनकी भाषा ब्रज है, जो परिष्कृत, प्रांजल और पांडित्यपूर्ण है ।

2.42 ललकदास – सत्योपाख्यान

ये लखनऊ निवासी महंत थे । 'सत्योपाख्यान' इनकी प्रसिद्ध कृति है जो रामचरितमानस को दृष्टि पथ में रखकर लिखी गयी प्रतीत होती है । आलोच्य कृति में राम चरित दोहा चौपाईयों में वर्णित है । इसमें वर्णनात्मकता का पुट अधिक होने से उत्कृष्ट काव्य कला का अभाव पाया जाता है ।

2.43 गणेश – वाल्मीकि रामायण – श्लोकार्थ प्रकाश

इनकी दो कृतियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं 'वाल्मीकि रामायण – श्लोकार्थ प्रकाश' तथा हनुमत पच्चीसी । ये गुलाब कवि के पुत्र और लाल कवि के पौत्र थे । इनके काव्यों की भाषा ब्रजभाषा है जो प्रवाहमय एवं आलंकारिक है ।

2.44 प्रेम सखी – श्री राम तथा सीताजी का शिखनख

वैसे तो इन्होंने राम और कृष्ण दोनों के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए हैं । इनके द्वारा रचित 'श्रीराम तथा सीता जी का शिखनख' काव्य महत्त्वपूर्ण है । इसमें ब्रजभाषा का प्रयोग है । शैली प्रवाहमयी है जो कवित्त सवैयों में गुंफित है ।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि समय के अनुरूप विषय तथा काव्यरूप निर्मित होता है । रीतिकाल में आराध्य के प्रति स्वार्पण की भावना तो है ही परंतु शैली भाव प्रदर्शन में श्रृंगार एवं लीलापरक दृष्टिकोण सहज रूप से प्राप्त होता है । निःसंदेह रीतिकालीन राम भक्त कवियों ने राम के प्रति अपना भक्ति भाव प्रदर्शित तो किया ही है परंतु उसमें कलामयी चमत्कारिकता

और अलंकारों का खुलकर प्रयोग भी किया है । रीतिकाल के कविओं में जो पांडित्य प्रदर्शन का भाव था वही भाव रीतिकालीन रामभक्त कविओं की कला में भी प्राप्त होता है ।

आधुनिक काल के रामकाव्य :

डॉ. परमलाल गुप्त ने अपने शोध प्रबंध 'हिन्दी के आधुनिक रामकाव्य का अनुशीलन' में लिखा है कि मर्यादित भक्ति के क्षेत्र में तुलसीदास के अतिरिक्त अन्य कोई प्रबल व्यक्तित्व उत्पन्न नहीं हुआ । परंतु रामभक्ति परंपरा में बहुत बड़े परिमाण में राम काव्य की सर्जना हुई । जैसे –

2.45 महात्माबालअली – नेह प्रकाश

नेहप्रकाश, सिद्धांत तत्त्व

दीपिका, ध्यान मंजरी, दयाल मंजरी, 'ग्वाल पहेली', प्रेम पहेली, प्रेम परीक्षा, परतीत परीक्षा ।

2.46 रामप्रियाशरण – प्रेमकली

'प्रेमकली', 'सीतायन' ।

2.47 रामसखे – जानकी नौरत्न माणिक्य

'जानकी नौ रत्न माणिक्य', पदावली – नृत्य, राघव मिलन, रूप रसामृत सिन्धु, रास्य पद्धति, दानलीला, बानी, मंगलशतक राममाला द्वेष भूषण आदि ।

2.48 प्रेमसखी – होली

होली, कवितादि प्रबंध, श्री सीताराम नख शिक्षा ।

2.49 कृपानिवास – गुरुमहिमा प्रार्थना शतक

गुरुमहिमा, प्रार्थना शतक, लगन पचीसी, युगल माधुरी प्रकाश, भावनाशतक, जानकी सहस्त्र नाम, राम सहस्त्र नाम, अनन्य चिंतामणि, समय

प्रबंध, नित्यसुख, रहस्योपास, वर्षोत्सव पदावली, रूप रसामृत सिंधु, रससार रहस्य पदावली, सिद्धांत पदावली, हनुमत पचीसी और उझकनी अष्टक ।

2.50 रामचरणदास – करुणा सिन्धु

'करुणा सिन्धु', 'विवेक शतक', 'वैराग्य शतक', 'उपासना शतक', 'विरह शतक', 'नाम शतक', 'अमृत खंड', 'शतपंचायिका', 'रसमालिका', 'राम पदावली', 'सियाराम रस मंजरी', 'सेवाविधि', 'छप्पय रामायण', 'जयमाल संग्रह', 'चरण चिन्ह', 'कवितावली', 'दृष्टांत बौद्धिक तीर्थ यात्रा', पिंगल अष्टयाम पूजाविधि', 'काव्य श्रृंगार', 'फूलन', 'कौशलेन्द्र रहस्य', 'रामचरितमानस की टीका' और 'रामनवरत्न सार संग्रह' आदि ।

2.51 रामगुलामविद्रोही – कवित्त प्रबंध

'कवित्त प्रबंध', 'रामगीतावली', 'ललित नामावली', 'विनय नवपंथक', 'दोहावली', 'रामायण', 'हनुमानाष्टक', 'रामकृष्ण सप्तक', 'श्रीरामाष्टक', 'रामविनय', 'रामस्तव राज' आदि ।

2.52 महाराज विश्वनाथसिंह – राम गीता टीका

कुल ग्रंथ संख्या 38 (अड़तीस) हैं जिनमें प्रमुख हैं 'रामगीताटीका', 'रामरहस्य टीका', 'राम मंत्रार्थ', 'निर्णय टीका', 'विनयपत्रिका टीका', 'संगीतरघुनन्दन', 'रामपरत्व' गीता रघुनन्दन शतिका', 'रामायण, 'रामचंद्र जी सवारी', 'भजनमाला', 'आनंद रघुनंदन नाटक' आदि ।

2.53 जीवाराम – जुगल प्रिया

'जुगलप्रिया', 'युगलप्रिया', 'पदावली', 'रसिक प्रकाश', 'भक्त माल', 'श्रृंगार रस रहस्य', 'अष्टयाम वार्तिक' आदि ।

2.54 स्वामी जनकराज किशोरीशरण रसिकअली – अमर रामायण

इनके कुल 24 (चौबीस) ग्रंथ हैं । सिद्धांत मुक्तावली, सिद्धांतान्य तरंगिणी, अंदोल रहस्यदीपिका, तुलसीदास चरित्र, विवेकसार चंद्रिका, सिद्धांत चौंतीसा, बारह खड़ी, ललित श्रृंगार दीपक, कवितावली, जानकी करुणा भरण, श्री सीता–राम अनन्य तरंगिणी, श्री सीताराम रहस्य तरंगिणी, आत्म संबंध दर्पण, होलिका–विनोद, वेदांत सार सुमदीपिका, श्रुतिदीपिका, श्री रामदास दीपिका, दोहावली, रघुवर कर्णाभरण, मिथिला विलास, अष्टधर्म प्रबंध पद, वर्षोत्सव पदावली, जिज्ञासा पंचक, अमर रामायण आदि ।

2.55 प्रतापकुँवरि बाई – रामचन्द्र महिमा

रामचंद्र महिमा, रामगुणसागर, रघुवर स्नेह लीला, राम सुजस पचीसी, राम प्रेम सुखसागर, रघुनाथ जी के कवित, भजन पद हरजस, प्रताप विनय, श्री रामचंद्र विजय, हरजस गायन आदि ।

2.56 काष्ट जिह्वा स्वामीदेव – रामायण परिचय

रामयण परिचर्या, विनयामृत पदावली, रामलगन, वैराग्य प्रदीप, अयोध्या बिन्दु, अश्विनीकुमार बिन्दु, गया विन्दु, जानकी विन्दु, पंचकोश महिमा राम रंग आदि ।

2.57 युगलानन्यशरण हेमलता – श्री जानकी स्नेह

इनके द्वारा रचित कुल ग्रंथों की संख्या 84 (चौरासी) हैं जिनमें प्रमुख हैं 'उज्जवल उत्कंठा विलास', अर्थ वंचक, ''श्रीजानकी सनेह, हलास शतक, सन्त सुख प्रकाशिका पदावली' श्री सीताराम परत्व पदावली, श्री प्रेम परत्व प्रभा दोहावली, श्री लवकुशशरण, लीला बिहारी जी आदि ।

2.58 महाराजा रघुराजसिंह – रघुराज विलास

कुल ग्रंथ संख्या 32 (बत्तीस) हैं जिनमें प्रमुख हैं – 'रघुराज विलास', 'रास रसिकावली', 'राम स्वयंवर' आदि ।

2.59 बैजनाथ कुरमी – रामचरितमानस की टीका

'गीतावली की टीका', 'काव्य कल्पद्रूम', 'कवितावली की टीका', 'रामचरितमानस की टीका', 'राम सतसैया भाव प्रकाशिका', 'सीताराम संयोग पदावली' आदि ।

2.60 जानकी प्रसाद – रामरसायन

'रसिक बिहारी' इनके द्वारा रचित कुल 26 (छब्बीस) ग्रंथ हैं, परंतु 'राम रसायन', 'रामायण' ही सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं ।

2.61 रघुनाथदास रामसनेही – विश्राम–सागर

'रघुनाथदास रामसनेही' इनकी 'विश्राम सागर' सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति है ।

2.62 बनादास

इनकी 'उभय प्रबोधक रामायण' प्रसिद्ध कृति हैं । इनके द्वारा रचित कुल 64 (चौसठ) कृतियों का उल्लेख हैं जिनमें से 61 (इकसठ) कृतियों की पाण्डुलिपि डॉ. भगवती प्रसाद सिंह ने अपने पास होने की सूचना दी है और इन कृतियों की सूची भी उपस्थित की है ।[31]

2.63 शीलमणि – कनक भवन महात्म्य

इनकी कुल 19 (उन्नीस) रचनायें हैं, जिनमें मुख्य हैं, कनक भवन महात्म्य, श्री अवधप्रकाश, पदावली संग्रह, रामकर मुद्रिका, विवेक गुच्छा आदि ।

2.64 रसरंगमणि – श्री सीताराम झूला विलास

इनकी रचनाओं में श्री सीताराम झूला विलास, श्री राम रूप पथ विलास, श्री सरयू रस रंगलहरी तथा अवध पंचक, श्री सीताराम शोभा बली, सीताराम प्रेम पदावली, श्रीराम शतक वंदना श्री राम रसरंग विलास, राम झांकी विलास, श्री रामस्त्वराज टीका, श्री सीताराम मानसी सेवा, श्री हनुमत यत तरंगिणी, होली विलास, श्री सीता राम नखशिख, श्रीराम जानकी विलास आदि हैं ।

2.65 सीताराम शरण शुभशीला – युगलोत्कंठ प्रकाशिका

इनकी 'युगलोत्कंठ प्रकाशिका' एक मात्र स्वतंत्र रचना है । इसमें माधुर्य भाव से सीताराम के विलास आदि का स्थूल वर्णन है ।

2.66 सियाराम शरण प्रेमलता – सीताराम रहस्य

इनकी 33 (तेंतीस) कृतियाँ हैं, जिनमें उल्लेखनीय है, 'बृहद उपासना' रहस्य, प्रेमलता पदावली, सीता राम रहस्य दर्पण, षट्कृत विमल विहार, सीताराम नाम रूप वर्णन, मिथिला विभूति प्रकाशिका, अष्टयाम्, जानकी बधाई, विश्व विलास बीसिका आदि मुख्य हैं ।

इसके अलावा सहचरिकृत 'सियवर केलि पदावली', रामनारायण दासकृत भजन रत्नावली, 'हरिहर प्रसाद कृत श्रृंगार प्रदीप', 'नवलसिंह श्रीशरण कृत' 'श्रीरामचंद्र विलास', युगल मंजरी कृत 'भावनामृत कादम्बिनी', सियाअली कृत 'समय रसविद्धिनी और नित्य रासलीला, श्याम सखे की पदावली, महाराजदास की रचनाएँ श्री सीताराम श्रृंगाररस और श्रीराम प्रेम मंजरी, वैष्णवदास कृत वैष्णव विनोद, रूप रस कृत 'विनय चालीसी', हरिचरणदास कृत 'भजन रस माल रामलौटन मिश्र कृत भक्त प्रमोदिनी, मथुराप्रसाद सिंह कृत श्री रामविलास, कोविदकृत, रम्यपदावली, बलदेवदास चन्दअली कृत 'अष्टयाम पदावली', 'लक्ष्मी नारायण दास पौहारी कृत' 'श्री भक्त प्रकाशिका', रामशरण कृत 'राम तत्त्व सिद्धांत संग्रह और मैथिली रहस्य पदावली' 'हनुमान शरण' 'मधुर अली'

युगलविनोद पदावली युगल वसंत विहारलीला, युगल हिंडोल लीला, युगल विनोद कवितावली और रामदोहावली । रामानुजदास 'रूपसरस' कृत सीताराम रहस्य चंद्रिका, भावना प्रकाश, युगल रहस्य प्रकाश, रस मंजरी जानकीवर शरण, प्रीतिलता कृत 'मिथिला महात्म्य', सरयूदास सुधामुखी कृत 'पदावली' परमहंस सीता शरण कृत 'पदावली' सीताप्रसाद कृत 'इश्कविनोद' रामवल्लभाशरण, कामदेन्द्र मणिकृत श्री सीताराम भद्रकेलि कादम्बिनी और श्री राघवेन्द्र रहस्य रत्नाकर रूपकला कृत 'भक्ति सुधा बिन्दु स्वाद तिलक, गोमती दास' माधुर्यलता कृत हनुमान जी की बधाई जानकी प्रसाद कृत 'राम निवास रामायण और सीताराम विलास बारह मासा, कँाचन कुंवरिकृत कँाचन कुसुमांजलि आदि अनेक मधुर भाव के उपासकों को कृतियाँ प्राप्त हैं । इन सबका विषय युगल प्रेम लीला का रसास्वादन करते हुए उसमें तन्मय होना अथवा सखी भाव से उसमें योग देना है जो मधुर उपासना का मुख्य आधार है ।[32]

आधुनिक युग में राम का चरित्र एक नव्य बोध एवं आदर्श चरित्र के रूप में ही अंकित किया जाता है । यही आधुनिक युग के लिए श्रेयस्कर है । आधुनिक युग में राम काव्यों का सृजन अधिक परिमाण में है परंतु जितनी लोकप्रियता एवं प्रसिद्धि मिलनी चाहिए उतनी किसी कृति को नहीं मिली ।

आधुनिक युग के कवि तथा उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं :

2.67 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – रामसीता संवाद

भारतेन्दु युग संक्रान्ति युग है । इस युग में कृष्ण काव्य की अपेक्षा राम काव्य का सृजन बहुत कम हुआ है । इसका कारण यह है कि राम काव्य का संबंध अधिकांशतः अवधी भाषा से रहा है । इस युग में अवधी की अपेक्षा ब्रज भाषा का प्रयोग अधिक होता था इसलिए कृष्ण काव्य का ही सृजन होता था । आधुनिक युग के जनक भारतेन्दु ने हिन्दी साहित्य की प्रायः सब विधाओं

का प्रणयन एवं विकास किया है । राम काव्य के सृजन में वे क्यों पीछे रहें ? भारतेन्दु ने 'दशरथ विलाप' नामक काव्य का सृजन किया है जिसे खड़ीबोली की प्रथम कविता भी माना जाता है । उन्होंने राम पर स्फुट निबंध भी लिखे हैं, जो जनक पुर यात्रा, सरयूपारकी यात्रा, चित्रकूटस्थ राम, प्रशस्ति, राम सीता संवाद के नाम से प्रसिद्ध हैं । उन्होंने 'रामलीला' शीर्षक से एक आख्यायिका भी लिखी है ।

2.68 श्री बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन' – रामागमन

इन्होंने ब्रज भाषा में 'प्रयाग रामागमन' नामक एक मुक्तक काव्य का सृजन किया है ।

2.69 लाला सीताराम – रघुवंश का पद्यानुवाद

इन्होंने रघुवंश का पद्यानुवाद किया है । इनकी भाषा तुलसीदास जी की भाषा के समान ब्रज और अवधी का मिश्रण है ।

2.70 श्री जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' – नव पंचामृत रामायण

इन्होंने 'नवपंचामृत रामायण' नामक रामकाव्य का सृजन किया है ।

2.71 श्री राधाकृष्णदास – रामचरितमानस

इन्होंने 'रामचरितमानस' की रचना की है ।

2.72 श्री बालमुकुन्दगुप्त – रामरक्षा स्रोत्र

इन्होंने 'रामरक्षा स्रोत' की रचना की है । इसके अलावा ओर कई कृतियाँ हैं जिनका राम परंपरा में कोई महत्त्व नहीं । इस युग में केवल परंपरा का ही पालन किया गया है । उसमें नया दृष्टिकोण प्रायः नहीं झलकता ।

द्विवेदीकालीन रामकाव्य :

द्विवेदी काल में भी राम विषयक काव्य का उल्लेखनीय सर्जन हुआ है जिनका संक्षेप में ब्यौरा यहाँ प्रस्तुत है ।

2.73 आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी – रघुवंशका गद्यानुवाद

भारतेन्दु जी ने जो बीज बोये थे उन बीजों का पल्लवन द्विवेदीजी ने किया । द्विवेदी जी ने रघुवंश का गद्यानुवाद किया ।

2.74 लाला भगवानदीन – रामगिर्याश्रम

इन्होंने ब्रज भाषा में 'रामगिर्याश्रम' एवं 'श्रृंगार शतक' की रचना की है ।

2.75 रामदेवी प्रसाद पूर्ण – राम रावण विरोध

इनकी 'राम रावण विरोध चम्पू' और 'राम का धनुर्विद्या शिक्षण' राम काव्य संबंधी काव्य है जो ब्रज भाषा में हैं ।

2.76 मिश्रबन्धु – लवकुश चरित्र

इन्होंने 'लवकुश चरित' की रचना ब्रज भाषा में की है ।

2.77 श्री गयाप्रसाद शुक्ल 'स्नेही' – राम वनगमन

इन्होंने 'रामवन गमन', 'लक्ष्मण मूर्छा या बंधु विलाप', 'कौशल्या विलाप' 'अशोक वाटिका में सीता' रचनाएँ की हैं, जो राम संबंधी हैं ।

2.78 मन्नन त्रिवेदी – गजपुरी की धनुषभंग

इन्होंने खड़ी बोली में 'गजपुरी की धनुष भंग' तथा 'लक्ष्मण कुमार' नामक दो कृतियाँ राम संबंधी लिखी हैं ।

2.79 अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध – वीरवर सौमित्र

इन्होंने बीरबर सौमित्र, सुतवती सीता, सतीसीता आदिकृत्यों का सृजन किया हैं । इस युग की स्फुट रचनाओं में राम नरेश त्रिपाठी कृत 'राम', नाथूराम शर्मा शंकर की 'रामलीला', 'पवित्र राम चरित्र' आदि रचनायें उपलब्ध होती हैं । इन सब रचनाओं का साहित्यिक मूल्य नहीं है, फिर भी इन रचनाओं में नया दृष्टिोण एवं भाव–बोध अवश्य मिलता है । श्री सत्यनारायण कविरत्न ने उतर रामचरित का अनुवाद किया है । इसके अलावा रघुवंश के कुछ सर्गों का भी अनुवाद किया है । अयोध्या सिंह उपाध्याय ''हरिऔध' ने 'उर्मिला' लघुप्रबंध की रचना की है ।

2.80 मैथिलीशरण गुप्त – उर्मिला

मैथिलीशरथ गुप्त ने काव्य की उपेक्षिता उर्मिला को लेकर उर्मिला नामक काव्य की सृष्टि की है ।

2.81 रामचरित उपाध्याय – रामचरित चन्द्रिका

इन्होंने 'रामचरित चंद्रिका' ओर 'राम चरित चिंतामणि' की रचना करके रामकाव्य परंपरा में नवीन परिवर्तन किया । इसके पूर्व पुरानी रीति अनुसार रामचरितावली की रचना की थी । कवि ने तटस्थ दृष्टिकोण से रामायण के चरित्र के गुणदोषों पर अपना मंतव्य प्रस्तुत किया है । दशरथ, सुग्रीव और विभीषण के निंदनीय कृत्यों की निंदा भी की है । कथन है कि 'रामचरित चिंतामणि' कवि की ही नहीं बल्कि आधुनिक युग की श्रेष्ठतम एक आदर्श कृति है । आलोच्य कृति में नये युग की विचारधारा को राम के द्वारा एवं अन्य चरित्रों के द्वारा व्यक्त किया गया है । वैसे कवि ने वाल्मीकि रामायण को ही आधार ग्रंथ बनाया है । उन्होंने कथावस्तु के रूप में कोई परिवर्तन नहीं किया मगर नया दृष्टिकोण ही व्यक्त किया है । यहाँ पं. रामदहिन मिश्र जी का मंतव्य ठीक ही है जो उन्होंने 'रामचरित चिंतामणि' की प्रस्तावना में

लिखा हे – ''इसमें कथा संक्षिप्त और वर्णन विशिष्ट है । कथा की भाव भंगी नयी तथा रडां ढंग रंग ढंग नया है । वर्णन शैली प्रभावशालिनी और हृदय हारिणी है ।

प्रस्तुत महाकाव्य में रचना का जैसा चारु चमत्कार है वैसा ही अलंकारों का मधुर झंकार जैसा ही रसों का सरस प्रवाह है वैसा ही कल्पना का प्रभूत पादुर्भाव और जैसा ही अर्थों का अशेष सौंदर्य है वैसा ही शब्दों का असीम माधुर्य । वह जैसा ही नूतनता का अनुपम आगार है वैसा ही भावों का भरपूर भण्डार । सर्वत्र ही लेखक के भाषा प्रभुत्व भाव प्राचुर्य, प्रगाढ़ पांडित्य कल्पना कौशल वर्णन और अलोकिक प्रतिभा का परिचय मिलता है ।

2.82 रामस्वरूप टंडन – सीता परित्याग

इनकी प्रसिद्ध रचना 'सीता परित्याग' है । शीर्षक से ही पता चलता है कि आलोच्य कृति राम के राज्याभिषेक के बाद सीता के त्याग से सम्बद्ध है । अवध का एक रजक सीता के चरित्र पर लांछन लगाता है, जिसके फल स्वरूप राम सीता का त्याग कर देते हैं और सीता से यह दुःख सहा नहीं जाता इसलिए धरती से प्रार्थना करती है कि अपने में समा ले । धरती फटती है और सीता उसमें समा जाती है । इस काव्य में इतिवृतात्मक शैली का प्रयोग पाया गया है ।

2.83 विष्णु – सुलोचना सती

इन्होंने 'सुलोचना सती' नामक कृति की रचना की है । इसमें मेघनाद के वध के बाद उसकी पत्नी सुलोचना सती होती है, उसका वृतांत है । राम सुलोचना के आदर्श से प्रभावित होते हैं और मेघनाद को पुनर्जीवित करने के लिए सुलोचना से पूछते हैं । सुलोचना अपने पति को पुनः मृत्युलोक में लाना नहीं चाहती इसलिए पति का सिर गोद में लेकर सती हो जाती है ।

2.84 मैथिलीशरण गुप्त – पंचवटी

कवि ने वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड पर आधारित 'लीला' नामक गीति नाट्य की रचना की है । गुप्त जी की दूसरी उल्लेखनीय कृति 'पंचवटी' है जो एक लघु खण्ड काव्य हैं । कवि की सिरमौर रचना है 'साकेत' जो आधुनिक काल का उल्लेखनीय महाकाव्य है । रचनाकर ने इसमें आधुनिक प्रवृत्तियों का समावेश किया हे ।

2.85 बलदेवप्रसाद मिश्र – मैथिली परिणय

इनकी राम काव्य संबंधी कृति 'मैथिली परिणय' है । पहले इस कृति का नाम 'कौशलकिशोर' था । इसकी कथा में नवीनता नहीं है । कृति का आधार रामचरितमानस है । इसमें राम के जन्म से लेकर युवराज तक की घटनाओं का वर्णन है ।

2.86 अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' – वैदेही वनवास

इनका 'वैदेही वनवास' खड़ीबोली में रचित प्रबंध काव्य है । इसमें राम के उतर जीवन से संबंधित कथा है । कथावस्तु की नवीनता यह है कि सीता अपने लोकापवाद को शमित करने के लिए स्वयं वनगमन करती है । लोकापवाद शांत हो जाने के बाद वापस लौट आती है । इससे ऐसा प्रतीत होता है कि सीता का त्याग (सीता परित्याग) नहीं मगर सीता का स्थानांतर ही है ।

इसके साथ ही इस युग में ब्रज भाषा में भी राम काव्य का सृजन हुआ है । जोतिसी कृत 'रामचंद्रोदय' सोलह कलाओंमें रचित उपदेशात्मक कृति है । शिव रत्न शुक्ल 'सिरस' कृत 'भरतभक्ति' एक प्रबंध काव्य है । इसमें 22 (बाईस) सर्ग हैं । इस कृति में विविध वर्णन पाये जाते हैं । इसमें मूल कथा से अलग ही नवीन उदभावनाएँ पायी जाती हैं । भरत के चरित्र को ही श्रेष्ठ चरित्र सिद्ध करने का कवि का ध्येय स्पष्टतः झलकता है । कवि ने

यथा–संभव विस्तृत मात्रा में अलंकार एवं छंदों का प्रयोग किया है । 'श्री कौशलेन्द्र कौतुक' पंडित बिहारीलाल विश्वकर्मा रचित कृति है । इसमें तुलसीदास जी का प्रभाव लक्षित होता है । बाल काण्ड से लेकर उत्तरकाण्ड की कथा का अंकन है । कहीं कहीं रामचरितमानस की सूक्तियों का अनुवाद पाया जाता है । आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने इस 'पदमाकर' आदि कवियों की भाषा परंपरा का अनुसरण करनेवाली अंतिम कृति कहा है । इसके अलावा रामकाव्य संबंधी इन कृतियों का भी उल्लेख आवश्यक है, जैसे राजा रमेशसिंह कृत 'रामविलाप' धरणीधर शास्त्री कृत 'सप्तकाण्ड रामायण' विद्याभूषण विभू कृत 'चित्रकूट चित्रण', सीतलसिंह गहरवार कृत 'श्री सीताराम चरितायन' आदि ।

छायावाद युगीन रामकाव्य :

छायावाद कालीन काव्य द्विवेदी युगीन काव्यों से भिन्न आदर्शों को लेकर चले । इसमें प्रबंध नहीं मुक्तक काव्य की सृष्टि हुई । इसके अनुरूप आत्माभिव्यक्ति तथा वैयक्तिकता की प्रधानता रही । छायावाद के उल्लेखनीय रामकाव्य तथा उसके कवि इस प्रकार हैं :

2.87 सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला – राम की शक्तिपूजा

इन्होंने मुक्तक छंद में 'पंचवटी प्रसंग' नामक लघुगीति नाट्य की रचना की है, वैसे यह गीति नाट्य की अपेक्षा गीत अधिक है । चमत्कार, भावबोध और शैली का नवीन प्रयोग होते हुए भी साहित्यकाश में निराला जी ने नाट्य कविता का आरंभ इस कृति से किया । निराला जी की एक अन्य उललेखनीय कृति राम की शक्ति पूजा है । अन्य रामकाव्यों में इसका उल्लेख नहीं मिलता कि 'राम ने शक्ति की पूजा' की हो । माइकेल मधुसूदन दत्त के 'मेघनाद वध' के द्वितीय सर्ग में राम की शक्ति पूजा का उल्लेख मिलता है । लगता है निराला जी ने आलोच्य कृति की प्रेरणा बंगला से ली है । प्रेरणा को व्यंजित करने के लिए उन्होंने अपनी विराट मौलिक कल्पनाओं का सहारा लिया है ।

कृतिवास रामायण में उल्लेख है कि राम रावण की शक्ति को देखकर हतोत्साह हो जाते हैं । रावण से ज्यादा शक्ति प्राप्त हेतु । 108 (एकसौ आठ) नील कमलों का अर्ध्य अर्पित करते हैं । राम शक्ति की पूजा भी करते हैं । बंगला में यह लोक प्रचलित आख्यान है ।

2.88 बालकृष्ण शर्मा नवीन – उर्मिला

स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति के अनुरूप इन्होंने 'उर्मिला' नामक कृति की रचना की है । इसमें प्राचीन और आधुनिक दोनों काल के काव्य रूपों का समन्वय पाया जाता है । भाषा में भी खड़ी बोली और ब्रज भाषा की विशेषताएँ निहित हैं । इसमें उर्मिला के संयोग और वियोग पक्ष का ही चित्रण है । आलोचकों ने कवि के प्रति एक आरोप लगाया है कि कवि छायावादी युग से प्रभावित होते हुए भी छायावादी नहीं है । 'उर्मिला' का आद्योपान्त अध्ययन करने के पश्चात् रीतिकालीन युग की कृति का अनुभव होता है ।

2.89 सुमित्रानंदन पंत – अशोकवन

इन्होंने लघु गीत काव्य 'अशोक वन' का सृजन किया है । पंतजली ने राम, सीता और रावण को प्रतीक के रूप में अंकित किया है । उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि राम रावण का युद्ध आज के मानव मन के अंतर्मन का संघर्ष है । इसमें आध्यात्मिकता का पुट भी मिलता है ।

डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र : आपकी कृति

'साकेत संत' अपने समय की एक उल्लेखनय कृति है । इसमें भरत के विवाह से लेकर राम के अयोध्यागमन (वनवास के बाद) तक की कथा का चौदह सर्गों में वर्णन है । कवि का लक्ष्य भरत के चरित्र का विकास करना है ।

आलोच्य कृति पर साकेत का प्रभाव स्पष्टतः लक्षित होता है । वैसे कवि का पत्र व्यवहार गुप्त जी से हुआ था । कवि की राम काव्य संबंधी

अन्य कृति 'रामराज्य' है । मिश्र जी ने आलोच्य कृति में अभिनव प्रयोग किया है । उन्होंने राम को नायक के रूप में प्रस्थापित करके राष्ट्रीय एकता के प्रश्न को सुलझाने का उतम प्रयास किया है । इसमें कथा रामवनगमन से प्रारंभ होती है । काव्य की कथा परंपरित होते हुए भी उसमें पर्याप्त अभिनव प्रयोग पाये जाते हैं ।

2.90 केदारनाथ मिश्र प्रभात – कैकेयी

इन्होंने 'कैकेयी' नामक रामकाव्य संबंधी रचना की है । 'प्रभात' जी ने कैकेयी के चरित्रोत्थान के लिए 'कैकेयी' काव्य का निर्माण किया है । कवि ने अपनी मौलिक उदभावनाएँ कलात्मक ढंग से अभिनव रूप से आकर्षक बनाकर अंकित की है । आलोच्य कृति में कैकेयी अपने पुत्र भरत के लिए राज सिंहासन नहीं माँगती और न तो राम को वनवास देती है । कैकेयी राष्ट्र की उन्नति के लिए चिंतित है । राक्षसों के आक्रमणों से आम जनता पीड़ित है । राष्ट्र में अशांति प्रवर्तमान है इसलिए आम जनता के सुख शांति के लिए और भारत की प्रगति हेतु राम को वन भेजती है । इस कृति में मनोवैज्ञानिकता का पुट मिलता है जो अपने आप में न्यून है ।

2.91 गोकुलचंद्र शर्मा – अशोकवन

ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने साकेत से प्रेरणा ग्रहण कर 'अशोक वन' का निर्माण किया है । कवि को बचपन से ही राम सीता की भक्ति विरासत में मिली है । इसलिए उन्होंने मुख्य कथा में परिवर्तन करना मुनासिब नहीं माना है । सारी कथा अशोकवन से संबंधित है । विभीषण की पत्नी सरमा और सीता का वार्तालाप ही मुख्य है । सरमा के पूछने पर सीता अशोक वन में आने के पहले की घटना सविस्तार कहती है । कवि ने चमत्कारोकी ओर ज्यादा ध्यान केन्द्रित किया है ।

2.92 श्रीमति शकुन्तला कुमारी रेणु – सती सीता

इनकी सीता जी संबंधित उल्लेखनीय कृति 'सती सीता' है । इसमें परंपरित कथा है । ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है । कवयित्री ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए ही आलोच्य कृति का निर्माण किया है

2.93 हरदयालसिंह – रावण महाकाव्य

इन्होंने ब्रजभाषा में 'रावण महाकाव्य' का सृजन किया है । कवि ने मूल कथा को छोड़कर कई स्थलों पर मौलिक उद्भावनायें की हैं, जो राम भक्त पाठकों को अरुचिकर लगती हैं । कवि ने मेघनाद, कुंभकर्ण और रावण को प्रतापी एवं अत्यंत वीर के रूप में चित्रित किया है जिससे लक्ष्मण, विभीषण और राम के चरित्र अपने आप ही दब गए हैं । इन्होंने आलोच्य कृति में ब्रज और अवधी दोनों भाषाओं का खुलकर प्रयोग किया है । कवि ने विभीषण को कामुक और अत्यंत लोभी बताया है । आलोचकों ने इसे 'आधुनिक ब्रजभाषा की रामकाव्य परंपरा का सर्वोच्च काव्य कहा हे ।'[33]

2.94 पोदार रामावतार अरुण – विदेह

अपने पूर्ववर्ती कविओं ने राम सीता एवं भरत के चरित्र पर काव्य लिखे हैं, उसी प्रकार आलोच्य कवि ने जनक राजा संबंधित कृति का निर्माण किया है । जो 'विदेह'' नाम से ख्यात है । कुटकर आख्यानों एवं रामकथा आलोच्य कृति का आधार है । कवि जनक राजा के प्रति अपार श्रद्धा भाव रखने के कारण यथा संभव जनक राजा के चरित्र को प्रशंसात्मक बनाने का यत्न किया है । कवि के जनक पुरातन परंपरा के युग पुरुष तो है ही साथ साथ आधुनिक विचारधारा के आग्रही भी हैं । कृति में अधिकांशतः मुक्त छंद का प्रयोग मिलता है । कहीं कहीं गद्य शैली का चमत्कार भी प्राप्त होता है ।

2.95 चन्द्रप्रकाश शर्मा – सीता

कवि की एक करुण रस प्रधान कृति है – 'सीता' । जिसकी चरित्र योजना द्वापर के अनुसार है । इसमें चरित्रों के मानसिक अंतद्वंद्व की स्थिति बौद्धिक एवं भावात्मक स्तर पर प्रकट हुई है । इसके वर्णन में रसात्मकता है । माखनलाल चतुर्वेदी ने इस कृति के वसुंधरा सर्ग की भूरी भूरी प्रशंसा की है ।

2.96 सरयूप्रसाद त्रिपाठी 'मधुकर' – सीतान्वेषक

'मधुकरजी', ने 'सीतान्वेषक' नामक रचना की है । रावण द्वारा सीता हरण होता हे और सीता की खोज ढूँढने से लेकर हनुमान जी चित्रकूट वापस लौटते हैं तब तक का वृतांत आलोच्य कृति में हैं । कृति में एक इतना अवश्य अभिनव प्रयोग यह है कि हनुमान जी मृगचर्म लेकर अशोक वाटिका पहुँचते हैं । कवि का मंतव्य है कि मृगचर्म के लिए ही राम सीता का वियोग हुआ । यदि हनुमान जी मृगचर्म लेकर जायें तो सीता को पता लग जाये कि हनुमान जी राम द्वारा ही भेजे गये हैं, और मृगचर्म के लिए ही यह सब हुआ था । इसमें समग्र राम काव्य नहीं है । कवि ने राम के चरित्र को गौण बनाकर हनुमान जी के चरित्र को प्रधान बनाने का प्रयास किया है ।

2.97 आचार्य तुलसी – अग्नि परीक्षा

फिल्मी भजनों और तर्जो पर लिखि हुई 'अग्नि परीक्षा' एक गीति प्रधान प्रबंध कृति है । काव्य में गंभीरता का अभाव है, उर्दू शब्दों के अविरत प्रयोग के कारण काव्य का स्तर गिर गया है ।

2.98 गोविन्ददास विनीत – प्रिया या प्रजा

इन्होंने 'प्रिया या प्रजा' नामक 17 (सत्रह) सर्गवाला प्रबंध काव्य लिखा है । इसमें लोकापवाद से लेकर सीता विदाय तक का वर्णन है । अशोक

वाटिका से सीता का आगमन होता है । उस वक्त उसकी परीक्षा होती है, इसके बावजूद भी अयोध्या का एक रजक राम के प्रति निर्बलता युक्त शब्दों का प्रयोग करता है । जिससे राम सीता का त्याग करते हैं । उस वक्त राम के दिमाग में दो बातें उठती हैं कि 'प्रिया या प्रजा ?' अंत में प्रजा को महत्त्व देते हुए प्रिया (सीता) का त्याग करते हैं ।

2.99 गयाप्रसाद द्विवेदी – नंदीग्राम

इन्होंने 'नंदीग्राम' नामक बृहत प्रबंध काव्य का सृजन किया है । इसमें कथा दो वक्ताओं द्वारा कही गयी है । श्री कृष्ण को महर्षि नारद जी और राम को सुमन्त भरत की कथा सुनाते हैं । कवि ने भरत के चरित्र को श्रेष्ठ अंकित करने का प्रयास किया है, फिर भी राम का चरित्र ही उन्नत बन गया है । काव्य में 18 (अठारह) सर्ग हैं ।

आधुनिक युग के उपर्युक्त राम काव्यों के अलावा प्रताप नारायण पुरोहित की 'रामार्चन' हृषिकेश चतुर्वेदी कृत 'राम कृष्ण काव्य', राजा राम श्री वास्तव कृत 'लक्ष्मण शक्ति', स्वामी सत्यभक्त कृत 'महात्मा राम', राजनारायण त्रिपाठी 'कमलेश' कृत 'राम राज्य', जगदीशप्रसाद तिवारी कृत 'कल्याणी कैकेयी', जमुनाश्यामकृत 'जनतंत्र रामराज्य', हरिहरशर्मा शंकर कृत 'रामराज्य', कैलाशनाथ बाजपेयी 'कुमुदेश' कृत 'माण्डवी', मोहन स्वामी कृत 'मनमोहिनी' हरिशंकर सिनहा कृत 'माण्डवी', प्रियदर्शी कृत 'उर्मिला', रामकिशोर अग्रवाल 'मनोज' कृत 'सिय विजनवास' आदि कृतियाँ उपलब्ध होती हैं, वैसे इन कृतियों का साहित्यिक मूल्य ज्यादा नहीं है । रामकथा संबंधी कई स्फुट रचनाएँ भी उपलब्ध होती हैं, जिसमें बालकृष्ण राय की निर्वासिता सीता का एक गीत, 'नागार्जुन की 'पाषाणी', शिवमंगल सिंह 'सुमन' की 'जल रहे हैं दीप जलती है जवानी' आदि रचनायें उल्लेखनीय हैं । समय के अनुसार रामकथा का मौलिक रूप प्रायः हर कृति में पाया जाता है ।

हिन्दी में रामकथा के विकास को लेकर क्रमानुसार हमने निरूपण किया है । लोकप्रियता एवं लोकमानस में सर्वाधिक रमनेवाला कोई काव्य है तो वह है 'रामचरितमानस' । तुलसीदास वाल्मीकि परंपरा के एक सक्षम उत्तराधिकारी तो है ही साथ साथ अनुगामी कविओं के लिए आधार स्तंभ भी हैं । राम काव्य का प्रचलन इतने विस्तृत फलक पर फैला हुआ है कि भारतीय भाषाओं में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी रामकथा का सृजन हुआ है । राम का जीवन–वृत्त संक्षिप्त नहीं बल्कि विस्तृत है । इसलिए प्रबंधात्मक काव्य के रूप में राम काव्य का ही प्रचलन मिलता है । समाज का जैसे जैसे विकास होता गया उसी के अनुसार रामकथा में भी आत्माभिव्यंजना और बुद्धिवाद का विस्तृत फलक दृष्टिगोचर होता गया । काव्य रूपों में भी कई प्रकार के काव्य रूप दृष्टि पथ में आये । राम काव्य में प्रतीकार्थ और गूढ़ार्थ का भी प्रयोग पाया गया । राम तो वही है मगर कवियों ने अपने विचारानुसार उन्हें आधुनिक बनाकर उनकी भक्ति की है, जैसे नरेश महेता के काव्य 'संशय की एक रात' में राम द्विधाग्रस्त दिखाई देते हैं । यहाँ यह भी कहना चाहिए कि राम काव्य का विकास जितना हिन्दी में हुआ है उतना अन्य भाषाओं में नहीं । हिन्दी में भी मध्ययुगीन धारा का विशेष महत्त्व है । हिन्दी भाषा का सामान्य ज्ञान रखनेवाला शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति मिले जिसने राम, रामायण या मानस का नाम न सुना हो ।

संदभ सूची :

1	हिन्दी साहित्य का इतिहास, सं. डॉ. नगेन्द्र, पृ. 201
2	रामकथा उत्पत्ति और विकास, फादर कामिल बुल्के, पृ. 246
3	कल्याण – अश्विन अंक संवत 1993 का एक लेख । श्री गोस्वामी के नामराशी लेखक श्री बालक रामजी विनायक
4	हिन्दी साहित्य का इतिहास, सं. डॉ. नगेन्द्र, पृ. 204
5	रामलला नहछू, छंद 9
6	हिन्दी नवरत्न, मिश्रबंधु, पृ. 82–89
7	तुलसीदास, डॉ. माताप्रसाद गुप्त, पृ. 331
8	कल्याण, रामायणांक, पृ. 162
9	हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग डॉ. नामवरसिंह, पृ. 169
10	रामचरितमानस, तुलसीदासजी, गीता प्रेस गोरखपुर, बालकाण्ड, पृ. 171
11	भारतीय जीवन की आचार संहिता, 'रामचरितमानस', 'राष्ट्रवीणा', अंक 23, पृ. 48
12	बरवै रामायण, छंद 21
13	जानकी मंगल, छंद 20
14	जानकी मंगल
15	रामचंद्रिका का विशिष्ट अध्ययन गार्गी गुप्त, पृ. 137
16	डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा, आकाशवाणी, इलाहाबाद से वार्ताप्रसारण तिथि, 1–12–55
17	तुलसीदास, माताप्रसाद गुप्त, पृ. 331
18	वैराग्य संदीपनी – गोस्वामी तुलसीदास मुद्रक तथा प्रकाशक घनश्यामदास जालान, गीताप्रेस गोरखपुर, प्र. संस्करण

19	नया पथ : सूरसागर में रामकथा केदार जोशी, पृ. 62
20	नंददास ग्रंथावली, पृ. 284–285
21	रामचंद्रिका का विशिष्ट अध्ययन, गार्गी गुप्त, पृ. 180
22	रामचंद्रिका का विशिष्ट अध्ययन, गार्गी गुप्त, पृ. 457
23	कबीर ग्रंथावली, पृ. 242
24	हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ. 144
25	कबीर ग्रंथावली, पृ. 6
26	कबीर ग्रंथावली, पृ. 156
27	हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र,
28	रामचरितमानस, बालकाण्ड, श्लोक 7, नानापुराण
29	हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ. 394
30	हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ. 395
31	राम भक्ति में रसिक संप्रदाय, डॉ. भगवतीप्रसाद सिंह, पृ. 484–485
32	हिन्दी के आधुनिक रामकाव्यों का अनुशीलन, डॉ. परमलाल गुप्त, पृ. 65–70
33	हिन्दी के आधुनिक रामकाव्यों का अनुशीलन, डॉ. परमलाल गुप्त, पृ. 100

अध्याय - 3
मध्यकालीन गुजराती साहित्य में रामकथा

3. मध्यकालीन गुजराती साहित्य में रामकथा
3.1 कर्मण मंत्री - सीता हरण
3.2 भालण - रामायण, सीताविवाह
3.3 मांडण बंधारो - प्रबोधबत्रीसी, रामायण
3.4 भीम - प्रबोध प्रकाश, हरि लीला षोडशकला
3.5 कीकु वसही - अंगद विष्टि
3.6 श्रीधर कवि - रावण मंदोदरी संवाद
3.7 कवि नाकर - रामायण - लवकुशाख्यान
3.8 सूरदास - रामायण
3.9 उद्धव - रामायण
3.10 विष्णुदास - रामायण
3.11 वजियो - सीतावेल - सीता संदेश
3.12 काशीसुत शेधजी बंधारो - हनुमान चरित
3.13 हरिराम - सीता स्वयंवर
3.14 हरिदास - सीताविरहनी चातुरीओ
3.15 प्रेमानंद - रणयज्ञ - ॠष्यशृंग

3.16 भवान – रावण मंदोदरी संवाद
3.17 वल्लभ भट्ट – रामविवाह, लंका नाशलोका
3.18 गोविंद – रघुनाथ जी नो विवाह,
राम वनवासनी साखीओ
3.19 द्वारकादास – सीता विरहना बारहमास
3.20 शामलभट्ट – अंगद विष्टि – रावण मंदोदरी संवाद
3.21 कालिदास – सीता स्वयंवर
3.22 पूरीबाई – सीता मंगल
3.23 कृष्णाबाई
3.24 राजाराम – रामकथा
3.25 रणछोड – रावण मंदोदरी संवाद
3.26 रामैयो – सीताजी ना बार मास
3.27 दयाराम – हनुमान गरुड संवाद
3.28 प्रीतम – अध्यात्म रामायण
3.29 जगजीवन – रामकथा
3.30 धीरो – रणयज्ञ
3.31 रणछोडजी दीवान – रामायणना राम वाकां
3.32 रघुराम – लवकुशाख्यान
3.33 शंभुराम – लवकुशाख्यान
3.34 गिरधर – रामायण

अध्याय – 3
मध्यकालीन गुजराती साहित्य में रामकथा

3. मध्यकालीन गुजराती साहित्य में रामकथा

गुजराती साहित्य के इतिहास का प्रारंभ कई सालों से, नरसिंह मेहता के समय से माना जाता है । उनका समय ई. सन् 1414–1479 माना जाता है । साहित्यिक खोज रिपोर्टो के आधार पर नरसिंह मेहता पूर्व तीन शतकों की हस्तप्रतें उपलब्ध हैं । समग्र भारत–वर्ष राम और कृष्ण दो अवतारों के लिए गौरवान्वित है । गुजरात में राम भक्ति की तुलना में कृष्ण भक्ति एवं राम काव्य की तुलना में कृष्ण काव्य का प्रचलन अधिक पाया जाता है । इसके कई कारण हो सकते हैं मगर इतना तो स्पष्ट ही है कि राम का चरित्र आदर्श एवं पुराण पुरुषोत्तम है । मर्यादा उनके जीवन का प्रधान लक्ष्य है । समग्र भारत वर्ष में भक्ति का आंदोलन गतिशील हुआ और प्राकृत अपभ्रंश भाषाओं में प्रादेशिक भाषाओं ने जब अपना स्वतंत्र रूप धारण किया, उस वक्त अन्य राज्यों की तरह गुजरात में भी गुजराती भाषा में वैष्णव भक्ति की सगुण ईश्वर भक्ति धारा का प्रचलन हुआ । कृष्ण और राम के अवतारों ने भारत को एक निश्चित आदर्श एवं दिशा का पथ निर्देश दिया । गुजराती में ही नहीं मगर भारत की अन्य भाषाओं में भी कृष्ण काव्य से राम काव्य की संख्या बहुत ही कम पायी जाती है । गुजराती भाषा के राम भक्त कवियोंने राम काव्य की अपेक्षा कृष्ण काव्य अधिक लिखे हैं । फ़ादर कामिल बूल्के लिखते हैं कि "गुजराती साहित्यकारों की सूची से पता चलता है कि ई. सन् 1370 से ई. सन् 1852 तक 372 कवियों में से पचास कवियों ने राम कथा विषयक साहित्य की सृष्टि की है ।"[1] मध्यकालीन समय (प्रायः सन् 1089 से 1853) के पूर्व राम काव्य का उल्लेखनीय विकास नहीं पाया जाता । विद्वानों ने

हेमचंद्राचार्य से लेकर दयाराम कवि तक के समय को मध्यकाल माना है । ग्यारहवें शतक से उन्नीसवें शतक तक का समय मध्यकाल के नाम से अभिहित किया जाता है । यहाँ एक बात और उल्लेखनीय है कि ग्यारहवीं से चौदहवीं सदी का समय जैन मुनियों का अथवा जैन साहित्यकारों का माना जाता है । जैन कविओं ने विशेषतः फागु, रासा, चरिय आदि रूपों में काव्य लिखे हैं । नरसिंह पूर्व जैनेतर कवि हुए हैं, उनमें अब्दुर रहेमान 'संदेश रासक' के लिए, कवि असाइत (अशाएत) ''हंसावली' के अलावा भवाई वेश (भेष) लिखने के लिए प्रसिद्ध हैं । 'भीम कवि' सदमवत्स चरित के लिए श्रीधर व्यास 'रणमल्ल छंद' के लिए प्रसिद्ध हैं । इनके अलावा दो अज्ञात कविओं की कृति भी पायी जाती है जो 'वसंत विलास' एवं 'नारायण फागु' के नाम से प्रसिद्ध हैं । कृतिओं के कर्ता का नाम नहीं पाया जाता । नरसिंह मेहता के पूर्व क्रमानुसार कृतियाँ नहीं पायी जाती । इससे प्रमाणित होता है कि नरसिंह मेहता पूर्व कोई रामकाव्य नहीं लिखा गया होगा ।

पंद्रहवें शतक के प्रारंभ में ही गुजरात को एक भक्त एवं संत की प्राप्ति हुई । गुजराती के प्रायः सभी विद्वानों ने गुजराती भाषा के आदि कवि के रूप में नरसिंह मेहता को माना है । इन्होंने गुजरात को उर्मि काव्य से विभूषित किया । वे कृष्ण के भक्त हैं मगर राम के भक्त नहीं हैं ऐसी संकुचित विचारधारा से विद्वत् लोग सम्मत नहीं हैं । एक मंतव्य के अनुसार कहा जाता है कि नरसिंह महेता ने कहीं कहा है कि गोपनाथ महादेव ने स्वयं कृष्ण भक्ति के लिए ही उन्हें संकेत दिया था । अंततः नरसिंह मेहता की कोई राम संबंधी साद्यन्त कृति नहीं पायी जाती । नरसिंह की प्रेमा भक्ति में और ज्ञान वैराग्य की कविता में 'राम' का उल्लेख मात्र मिलता है । उनका एक मात्र पद उन्हें राम भक्त के रूप में स्थान अर्पित कर सकने में सक्षम है यथा – 'संतो अमेरे वेवारिया श्री रामनामना'[2] कवि ने इस पद में राम नाम की महिमा अंकित की है । राम नाम का उच्चारण करने से कभी घाटा नहीं जाता ।

जिसमें जमा आयकी आवश्यकता नहीं होती । लाखों और करोड़ों का व्यापार कल्याण प्रद है । पद की अंतिम पंक्ति पर दृष्टि पात करने से पता चलता है कि कवि के राम दाशरथि राम नहीं बल्कि चतुर्भूज विष्णु या कृष्ण ही हैं । नरसिंह मेहता का एक पद जो 'आरती' के रूप में है, उसकी एक पंक्ति दृष्टव्य है –

'ऊँची मेडी रे मारा संतनी, में तो माली ना जाणी राम'[8]

इसमें भी राम का उल्लेख कृष्ण या परब्रह्म के रूप में है । कवि बाहयाचार के विरुद्ध हैं लोगों को अपनी बात समझाने के लिए लोक भोग्य उदाहरण प्रस्तुत करते हैं । हंस – कौआ अन्न–भूख, एवं वर्षा के उदाहरण देकर अपनी उक्ति सहज और सरल बना देते हैं – जैसे

'सुख–दुःख मनमां न आणिये, घट साथे रे घडियां ।
टाण्यां ते कोइना नव टणे, रघुनाथ नां जडियां ।।

शायद ही कोई गुजरातीभाषा जाननेवाला मिले जिसने यह पद सुना न हो या उसकी जानकारी न हो ।

नरसिंह मेहता ने 'अमे रे वेवारिया' एवं 'सुख–दुःख मनमां न आणिये' को छोड़कर अन्य राम काव्य की रचना नहीं की । कवि ने स्वतंत्र रूप से राम काव्य का सृजन नहीं किया, मगर गुजराती भाषा के आदि कवि के रूप में गौरवान्वित स्थान अवश्य प्राप्त है । नरसिंह मेहता ने ही गुजराती राम काव्य के बीज बोये हैं, यह निर्विवाद है ।

3.1 कर्मण मंत्री :

इनकी 'सीता हरण' प्रसिद्ध कृति है । गुजराती साहित्य में 'सीता हरण' का महत्त्वपूर्ण स्थान है । यही रचना सर्वप्रथम प्रबंधात्मक कृति के रूप में ख्याति प्राप्त है । उससे पहले की सब कृतियाँ फूटकल के रूप में पायी जाती हैं । कर्मण मंत्री को गुजराती के मूर्धन्य आलोचक श्री के. का. शास्त्री, के.

ह. ध्रुव और अनंतराय रावल, सामान्य कोटि का कवि मानते हैं ।[4] सीताहरण 495 दोहे का अर्थात् 990 पंक्तियों का काव्य है । गुजराती में दो पंक्तियों के काव्य रूप को कड़ी कहते हैं । आलोच्य कृति चार खंडों में विभाजित है । कृति के प्रथम संपादक श्री के. ह. ध्रुव पुस्तक की प्रस्तावना में लिखते हैं कि ''प्रस्तुत काव्य नी कड़ी 4, 18, 19 अने 495 विचारी जोता एनुं नाम 'रामायण' अने 'रामकथा' पण होय एम जणाय छे । एना पूर्वे रामचंद्र जी ना जीवनना विविध प्रसंग संबंधी कर्ताए कविता रचेली ते एणे पछी थी आ रामकथामां मेळवी दीधी जोवामां आवे छे.''[5] आलोच्य कृति में कवि ने बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड की कथा को सर्वथा छोड़ दिया है । आलोचकों ने बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड को प्रक्षेप ही माना है । कर्मण मंत्री का भी एसा ही मत होगा अतः उन अंशों को छोड़ दिया है यह मानना खतरे से खाली नहीं है । कर्मण मंत्री ने मौलिक उद्भावनाओं का उपयोग किया है । जैसे –

दशरथ राजा ने कैकेयी को वरदान इसलिए माँगने के लिए कहा क्योंकि उनके हाथ का अँगूठा पक गया था अतः असहय वेदना हो रही थी । कौशल्या ने पके हुए अंगूठेको अपने मूँह में लिया । अँगूठे का घाव पक जाने से फूट गया । फोड़े का प्रवाही कौशल्या के मुँह में आया । अतः वह कुल्ला करने के लिए गयी । उसी वक्त कैकेयी वहाँ आती है । राजा को ऐसा लगता है कि कैकेयी की सेवा के कारण ही दर्द से मुक्ति मिली है । अतः कैकेयी को राजा वरदान माँगने के लिए कहते हैं । कैकेयी राम के लिए वनवास माँगती है ।[6] गुजराती लोक साहित्य (FALK LITERATURE) में 'रुडा रामनी गरबी' में ऐसा वृतांत मिलता है । संक्षेप में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि आलोच्य कृति दोहा, चौपाई, छप्पय, पावडु, गीत, धोळ और सुभाषितों से युक्त यह एक उल्लेखनीय कृति है । साहित्यिक दृष्टि से यह सामान्य कृति है । तत्कालीन समय में कथा–काव्य लिखने की एक सद्रढ़ परंपरा थी । गुजराती के आलोचक श्री अनंतराय रावळ कर्मणमंत्री के

'सीताहरण' के विषय में अपना मत इस प्रकार व्यक्त करते हैं "श्री कृष्ण लीला नी माफक भगवान रामनी लीलानुं गान पण मध्यकालीन गुजराती कविताए पंदरना शतकथी आरंभ्यानुं आ कृति बतावे छे."[7] अतः गुजराती राम काव्य का आरंभ 'सीता हरण' से ही मानना यथार्थ है ।

3.2 भालण :

गुजराती साहित्य में भालण कवि का त्रिविध महत्त्व है । गुजराती साहित्य में कड़वा बद्ध आख्यान के जनक भालण ही माने जाते हैं । दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि उनके द्वारा किया गया 'कादम्बरी' (बाण कृत) का अनुवाद । उस समय इस प्रकार के साहित्यिक रूप प्रचलित नहीं थे । भालण के समय में धार्मिक कृतियों के अलावा अन्य कृतियों का निर्माण ही नहीं होता था । भालण ने अभिनव प्रयोग करके यह सिद्ध किया है । भालण के विषय में सबसे महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय तीसरी बात यह है कि उस वक्त तक किसी ने बाल लीला के पद नहीं लिखे थे । भालण ने कृष्ण और राम की बाल लीलाओं के पद लिखकर गुजराती भाषा पर ही नहीं समग्र भारतीय भाषाओं पर उपकार किया है । आलोचकों ने मध्यकालीन गुजराती साहित्य में भालण के राम काव्य को प्रथम पंक्ति का माना है । राम बाल लीला के पदों के अतिरिक्त 'रामायण', 'सीता विवाह' या 'राम विवाह' उनकी अप्रकाशित कृतियाँ मानी जाती हैं जिनमें उत्तम साहित्यकर्ता के गुण नहीं पाये जाते । बृहत् काव्य दोहन के संपादक श्री इच्छा राम सूर्यराम देसाई ने भाग –1 (एक) में रामचरित के सब पद दिये हैं । वाल्मीकि रामायण में राम जन्म बालकाण्ड के 18वें सर्ग में अंकित है । भालण के समय तक आते–आते राम परब्रह्म के रूप में प्रसिद्ध हो गए थे । इसलिए भालण ने प्रथम, द्वितीय और तृतीय पद में राम को परमेश्वर मानकर स्तुति की है । उदा. के रूप में देखें तो –

"थयां मंदिर तेज प्रकाश ए रूप कुण कळे,

अवनि कारण श्री अविनाश महारूप कुण कळे ।।"[8]

उपरोक्त अंश में भक्ति का रूप तो है ही साथ साथ परब्रह्म के शब्दों का प्रयोग भी चित्ताकर्षक है ।

'सीता विवाह' की हस्तप्रत गुजरात विद्यासभा, अमदावाद में प्राप्त है । मंगलाचरण में कवि ने बताया है कि कई नाटकों पर से मैंने इस कृति का सृजन किया है । इससे प्रमाणित होता है कि भालण से पहले रामकथा का प्रचार विस्तृत फलक पर हो चुका था । इक्कीस कड़वें इसमें प्रयुक्त हुए हैं तथा अंत में फलश्रुति है । इसके साथ राम का नाम और संख्या भी दी गई है । यथा :

"शीखे सांभळे ते पामे वास ।

नवराग सोहामणा, पद बंध लीला विलास ।।"[9]

संक्षेप में इतना ही कहा जाएगा कि भालण ने यथा संभव अपने आराध्य देव राम के प्रति वात्सल्य भाव का काव्य लिख कर गुजराती साहित्य में अपना स्थान निश्चित किया है । भालण कृत रामायण लघु है । प्राचीन काव्य सुधा के भाग–3 (तीन) के पृष्ठ 194 से 201 तक आलोच्य अंश प्राप्त होता है । इसमें कवि ने राम कथा को तीव्रतम गति से आलेखित किया है – जैसे

'तो तो रावण नाख्यो रे मारी राज विभीषण ने

बेसारी भालण ना स्वामी आव्याधाम,

हुं तो वाल्मीकि रट्युं रामनाम ।"[10]

भालण ने संक्षेप में ही रामकथा का अंकन किया है । इससे उनके द्वारा लिखित रामायण का महत्त्व अधिक न मानकर ऐतिहासिक ही माना जा सकता है ।

मामकी आख्यान :

भालण कृत इस कृति की विषयवस्तु राम संबंधी न होने के बावजूद भी आलोचक आलोच्य कृति को राम भक्ति की कविता के रूप में मानते हैं । ई. सन् 1927 फरवरी के बुद्धिप्रकाश के अंतर्गत यह कृति पायी जाती है । कृति सात छोटे छोटे कड़वे के रूप में प्राप्त है । राम बाल लीला के पद चित्ताकर्षक हैं । भालण के आलोच्य आख्यान का प्रेरणा स्रोत 'पद्मपुराण' है । मामकी नामक एक वेश्या थी । उसने एक तोता पाल रखा था । रात्रि के समय उसने तोते के पिंजरे पर हाथ रखा । उस वक्त पिंजरे पर एक साँप बैठा हुआ था । उसने मामकी के हाथ पर दंश दिया । मामकी को ऐसा लगा कि तोते ने काटा है । असलियत का बाद में पता चला । मामकी तोते को राम का नाम लेने के लिए कहती है । इससे मामकी का उद्धार होता है । मामकी पतिता थी । इस कृति में राम नाम लेने के लिए कहा गया है । वस्तुतः इस कृति का उद्देश्य राम नाम की महिमा का प्रतिपादन करना है । अतः उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मामकी आख्यान को राम–विषयक काव्य के अंतर्गत स्थान दिया गया है । गुजराती के आलोचक भालण को सूरदास जी के समान मानते हैं । बाल लीला के पदों में दोनों ने अपनी विशेषता प्रस्थापित की हे ।

3.3 मांडण बंधारो :

आलोच्य कवि की 'प्रबोध बत्रीसी' नामक प्रसिद्ध रचना है जिसमें बाहयाचार के विरोध में अपना मत प्रकट किया गया है । इसमें कहावतों का प्रचुर परिमाण में उपयोग किया गया है । कवि की राम कथा संबंधी 'रामायण' प्राप्त होती है । प्रस्तुत ग्रंथ का काव्य रूप आख्यान काव्य सदृश है । कवि ने इसमें 'हनुमंतोपाख्यान' को भी मिला दिया है । श्री के. का. शास्त्री कहते हैं कि 'रामायणनां जाणीतां कथानकमां एणे कोई विशिष्ट प्रदान नथी कर्युं ए एनी

कृति जोतां सत्य हकीकत प्रतीत थाय छे. मध्यकालीन गुजराती साहित्यमां रामभक्ति नी कवितामां मांडण बंधाराना हनुमंतोपाख्यान साथ ना 'रामायण'नुं ऐतिहासिक मूल्य ज वधु गणाय ।

3.4 **भीम :**

गुजराती साहित्य में भीम नाम धारी एक से अधिक कवि हुए हैं । आलोच्य कवि का समय विष्णुदास के बाद का माना जाता है । वैष्णव भक्ति युक्त 'प्रबोध प्रकाश' और 'हरिलीला षोडश कला' की प्रसिद्धि भीम के कारण ही है । आलोच्य कृति में राम भक्ति का सीधा उल्लेख नहीं मिलता किन्तु 'हरि लीला षोड़श कला' में सोलह विभाग में श्रीमद् भागवत पुराण का भावानुवाद दिया गया है । वैसे भीम कवि मूलतः कृष्ण कवि हैं । कवि ने मत्स्य, कूर्म, वाराह नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि आदि दशावतारों की चर्चा की है । दूसरी कला की 47 (सैंतालीस) वीं पंक्ति में राम विष्णु के अवतार के रूप में उल्लेखित किया है । इसके बाद राम नाम का उल्लेख दसवीं कला में पाया जाता है । दसवीं कला की पूर्व छापों के अंतर्गत नौंवी कथा कहते हैं, इसलिए देवदत्त जोशी ने कहा है कि "भीमनी हरिलीला षोड़श कला अंतर्गत नौंमी कला ते राम लीलानां पद छे. ।"[11] कवि भीम ने दशवीं कला में भी पूरी रामकथा का अंकन नहीं किया मगर अड़तीसवें पद से लेकर पचासवें पद तक ही रामकथा पायी जाती है । कवि ने संक्षेप में ही अयोध्याकाण्ड से युद्धकाण्ड तक की घटनाएँ अंकित की हैं । मध्यकालीन कविओं में बहुतेरे कविओं की भाँति भीम भी कृष्ण कवि हैं । भीम की रामकथा संबंधी कोई स्वतंत्र रचना नहीं है ।

3.5 कीकु वसही

गुजराती साहित्य में इनकी 'बाल चरित' कृति लोकप्रिय है, जिसमें कृष्ण चरित का आलेखन है । इनकी रामकथा संबंधी 'अंगद विष्टि' है । यह कृति

गुजराती साहित्य की पंद्रहवें शतक की ही नहीं मगर रामकथा संबंधी एक उल्लेखनीय कृति है । इसमें प्रस्तुत वीर रस का निरूपण प्रशंसनीय है । 360 (तीन सौ साठ) पंक्तियों में वर्णित प्रसंग अत्यंत आकर्षक बन पड़ा है । रचना में छप्पय छंद प्रयुक्त हुआ है । श्री के. का. शास्त्री कृति के विषय में लिखते हैं कि "आ काव्य काव्यनी दृष्टिए पण सारो कहेवाय तेवो नमूनो छे । छप्पा द्वारा कवि वीर काव्य रजू करे छे, ए गुजराती साहित्यनां इतिहासमां एक महत्त्वनी वात छे । शामळ पर आ कविनी असर हो के नहो एना मूळ तो अवश्य आटलां जूना आमां मळे छे ।"[12]

3.6 श्रीधर कवि

गुजराती साहित्य में श्रीधर नामक दो कवि मिलते हैं । 'रणमल्ल छंद' के कवि श्रीधर व्यास के सौ साल के बाद श्रीधर अडालजा नामक कवि हुआ है । यह नरसिंह मेहता के परवर्ती कवि हैं । इनकी राम कथा संबंधी कृति 'रावण मंदोदरी संवाद है । इस कृति का मूलाधार अथवा प्रेरणा स्रोतके विषय में कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती । इसमें कवि ने कुल मिलाकर 460 (चारसौ साठ) पंक्तियाँ यानी कि 230 (दो सौ तीस) कड़ियों में काव्य का निर्माण किया है । रावण और मंदोदरी के संवाद में मौलिकता पायी जाती है । समाज में रहनेवाले सामान्य स्त्री पुरुषों के विचार भी रावण और मंदोदरी के संवाद द्वारा व्यक्त हुए हैं । रावण मंदोदरी की सब बातों का खंडन करता है तब मंदोदरी झुंझलाकर कहती है कि –

"आज मरण आवि तो भलुं, दीसई नहीं दशमुख दोहिलु ।
तुम्ह मरतां कुंअर किमटली, सूफी बलतां नील बलि ।।[13]

बाद में दोनों एक दूसरे पर आरोप लगाते हैं । रावण मंदोदरी को राम अर्थात् परपुरुष की प्रशंसा न करने के लिए कहता है । रावण मंदोदरी पर क्रोधित होकर कहता है कि तुम मेरी पत्नी हो और तुझ से प्रेम करने से

ऐसा लगता है कि मूर्ख प्रेमी से दुश्मन पंडित अच्छा । बाद में ब्रह्मा आते हैं । दोनों में समाधान होता है । प्रस्तुत संवाद में कहावतों का प्रचुर प्रयोग पाया जाता है । श्री के. का. शास्त्री कहते हैं कि ''रावण मंदोदरी संवाद''मां जेटली कहेवतो नो संग्रह मळे छे तेटली संख्यामां कहेवतो अन्यत्र क्यांय पण मळवानो अने नवी पण शोधवानो संभव घणो ओछो छे ।''[14] गुजराती साहित्य में इस नाम से कइ कृतियाँ उपलब्ध होती हैं । पंद्रहवें शतक के कुल मिलाकर बारह कवि हैं, जैसे नरसिंह, पद्मनाथ, वीरसिंह, कर्मण, भालण, मांडण, भीम, जनार्दन, वीरसिंह, देहल, कीकु वसही और श्रीधर अडालजा । इनमें से सात कविओं ने राम काव्य लिखे हैं । इससे प्रमाणित होता है कि मध्य युग में राम काव्य का प्राचुर्य था ।

पंद्रहवें शतक के आदि कवि के रूप में जिस प्रकार नरसिंह मेहता का नाम लिया जाता है उसी प्रकार सोलहवें शतक के प्रारंभ में हिन्दी, राजस्थानी और गुजराती भाषा की कवयित्री मीरा बाई का नाम उल्लेखनीय है । गुजराती साहित्य को गीति काव्य की देन मीरा बाई एवं नरसिंह मेहता की है । मीराबाई का जीवन कृष्णमय ही था । उनको लोक लाज की कोई परवाह नहीं थी । मीराबाई ने स्पष्ट रूप से किसी रामकाव्य संबंधी कृति का सृजन नहीं किया परंतु उनके काव्यों में राम का कहीं न कहीं उल्लेख अवश्य मिलता है – उदाहरणार्थ –

''राम रमकडुं जडियुं रे राणाजी,
मुने राम रमकडुं जडियुं ।''[15]

उपरोक्त पद अत्यंत प्रसिद्ध है । जहाँ तक अर्थ का सवाल है वहाँ तक एसा फलित होता है कि जैसे किसी छोटे बच्चे को कोई खिलौना प्राप्त हो गया है । ऐसे खिलौने से खेलते समय बच्चा सारी सृष्टि को भूल जाता है इतना ही नहीं बच्चा समग्र विश्व को खिलौने के सामने तुच्छ समझता है, उसी प्रकार

भक्त को भगवान रूपी, परमतत्व रूपी खिलौना प्राप्त हुआ है, फिर क्या कहना ? एक और उदाहरण, द्रष्टव्य है –

“राम सीतापति तारी लेह लागी,
तमने भजेथी मारी भीड़ भागी ।”[16]

मीरा राम का उल्लेख अवश्य करती है मगर पूरा पद पढ़ने के पश्चात् यही अर्थ फलित होता है कि मीरा कृष्ण को ही राम का नाम देती है । मीरा की दृष्टि से राम और कृष्ण में कोई अंतर नहीं है, दोनों एक ही हैं । मीरा के आराध्य देव पति एवं प्रियतम कृष्ण ही है । आलोचकों ने सोलहवें शतक को सर्जन की दृष्टि से 'मंद युग' कहा है । मीराबाई जैसी समर्थ कवयित्री के कारण उपर्युक्त विधान गलत ठहरता है ।

3.7 कवि नाकर

कवि ने 'रामायण' और 'लवकुश आख्यान' का सृजन किया है । 'रामायण' नाकर की एक अप्रकाशित कृति है । इसकी पाण्डुलिपि भी सुरक्षित नहीं पायी जाती । नडियाद की डाहीलक्ष्मी ग्रंथालय में एक मात्र जर्जरित पुरानी हस्तप्रत पायी जाती है । रचना में 431 (चार सौ इकतीस) पृष्ठों का उल्लेख पाया जाता है । किन्तु 415 (चार सौ पंद्रह) पृष्ठ ही उपलब्ध हैं । प्रस्तुत काव्य कृति सात काण्डों में विभक्त है । आख्यान के प्रारंभिक और अंत के पृष्ठ नहीं पाये जाते, जिससे आख्यान की शुरुआत और अंत कहाँ पर किया होगा यह कहना कठिन ही नहीं असंभव है । नाकर ने मूल कथा में कई परिवर्तन किए हैं । पूरी रामकथा हनुमान जी अपनी माता अंजनी को कहते हैं । नाकर ने कथा में जो परिवर्तन किया है वह मौलिक है इतना ही नहीं प्रेमानंद ने अपन सुदामा चरित में भी ऐसा ही परिवर्तन किया है । इसके लिए प्रेमानंद जी नाकर के ऋणी हैं । सुदामा जी दूबले–पतले हैं । कृष्ण इसका कारण पूछते हैं तो सुदामा जी ऐसा ही उत्तर देते हैं । नाकर कृत

रामायण का संपूर्ण रस दर्शन करने से पता चलता है कि नाकर को करुण रस अधिक प्रिय है । भक्ति का भी परिपाक यत्र तत्र हुआ है । श्रृंगार रस का निरूपण बहुत ही कम सिर्फ उल्लेख करने के लिए ही किया है । हनुमान अंजनी माता को अपने कृशकाय होने का कारण यों कहते हैं कि –

'एक क्षण मुजति राम वियोग तेणे दुबलु हुं आइ'

मध्यकालीन गुजराती साहित्य में राम भक्ति कविता के अंतर्गत क्रमानुसार और विस्तृत रामकथा किसी ने लिखी हो तो नाकर ने ही लिखी है । इसके लिए गुजराती साहित्य नाकर का ऋणी रहेगा । गुजराती साहित्य में नाकर का महत्त्व अक्षुण्ण और चिरंजीव रहेगा यह निःसंदेह है ।

लवकुशाख्यान :

नाकर कृत राम काव्य विषयक 'लवकुशाख्यान' अवश्य है, किन्तु यह 'रामायण' पर आधारित नहीं है । इस कृति का आधार 'जैमिनीय अश्वमेघ' है । लवकुशाख्यान की पाण्डुलिपि गुजरात विद्या सभा में सुरक्षित है । गुजराती के विद्वान श्री ह. द्वा. कांटावाला ने प्राचीन काव्य त्रि–मासिक अंक–2 वर्ष–8 में प्रकाशित भी किया है । जैमिनीय अश्वमेघ के बारह अध्याय में यह आख्यान अंकित है । बभ्रु वाहन के युद्ध के बाद इस कथा का स्थान है । मूल कथानक में परिवर्तन करने का नाकर का स्वभाव यत्र–तत्र झलकता है । मूल उपाख्यान की कथावस्तु नाकर की कथावस्तु से भिन्न है । मूल उपाख्यान में रावण के पराजय के बाद विजयी राम का अयोध्या में प्रवेश, राम की आज्ञा से लक्ष्मण का गमन, वाल्मीकि से मिलन, यज्ञाश्व को लवकुश द्वारा पकड़ना, लव का मूर्छित होना, कुश का युद्ध भूमि में प्रवेश, लक्ष्मण का आगमन, लव का विजय, सूर्य स्तुति, लक्ष्मण की सेना का पराजय और राम के अश्वमेघ की समाप्ति – ये सब प्रसंग विस्तृत मात्रा में मूल उपाख्यान में पाये जाते हैं, लेकिन नाकर ने अपने आख्यान के प्रारंभ में जनमेजय से प्रश्न

करवाया है कि लवकुश ने राम को किस तरह (कैसे) पराजित किया ? इस प्रश्न के उत्तर में आख्यान का आरंभ होता है । इसमें मंगलाचरण या ईष्टदेव की स्तुति नहीं है । 'लवकुशाख्यान' 23 कड़वे का है । नाकर ने सीता त्याग के प्रसंग को बहुत ही करुण रस युक्त बनाया है । ऐसा वर्णन है कि पाषाण हृदय भी द्रवित हो उठे । लवकुशाख्यान के 23 कडवों में से 17 कडवे सीता त्याग संबंधी हैं । राम अपने पराजय का कारण जानना चाहते हैं तब भरत और अंगद कहते हैं कि आपने निर्दोष सीता का त्याग किया है यही मूल कारण है । वाल्मीकि ऋषि सबका परिचय करवाते हैं और सीता का स्वीकार करने के लिए कहते हैं । आख्यान के अंत में नाकर फलश्रुति देते हैं –

"चैत्र सुदी दसमी दिन, रामचरित्र कीधुं आख्यान
श्रोता वक्ता वैकुंठ वास, कर जोड़ी कह नाकरदास ।"

मध्यकालीन गुजराती साहित्य में राम भक्ति के कवि के संदर्भ में नाकर का स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है । कई आलोचकों ने नाकर को 16 (सोलहवें) शतक के द्वितीय श्रेणी का कवि माना है । नाकर की आख्यान पद्धति, वस्तु निरूपण, समाजदर्शन, वर्णनकला इत्यादि के लिए अंबालाल बुलाखीराम जानी,[17] श्री के. का. शास्त्री[18] और चिमनलाल द्विवेदी[19] । सब सहमत हैं और सभी ने कवि की उपर्युक्त कला को सराहा है । मीराबाई के इने–गिने थोड़े पदों को छोड़कर सोलहवें शतक में राम काव्य का प्रारंभ नाकर से ही माना जाएगा ।

3.8 सूरदास

सूरदास ने सोलहवीं शती में रामायण का सृजन किया है । रचना का समय संवत् 1616 है जो देवदत्त जोशी ने 'स्वाध्याय दीपोत्सवी अंक' के पृष्ठ 17 (सत्रह) पर उल्लेख किया है । स्वाध्याय संवत 2033 का है । यदि यह सच है तो नाकर की रामायण के पहले इस रचना का प्रादुर्भाव मानना

चाहिए । सूरदास जी ने 32 कड़वों के अंतर्गत रामायण का सृजन किया है । कवि को किसी भी प्रसंग का विस्तार से निरूपण करने का समय नहीं मिला । सूरदास के विषय में और उनकी कृति रामायण के विषय में एक संदेह भी है । श्री के. का. शास्त्री ने 'ध्रुवाख्यान' और 'प्रहलादाख्यान' के कर्ता कवि सूरदास संवत् 1611 में प्रसिद्ध थे ऐसा कहा है, कहीं इनकी कृति 'रामायण' का कहीं उल्लेख नहीं किया । ऐसा भी संभव है कि उस समय तक 'रामायण' की प्रति न मिली हो । मध्यकालीन कविओं की कृतिओं के विषय में ऐसी भ्रांति स्वाभाविक है । कवि नाकर के विषय में भी ऐसी भ्रान्ति प्रवर्तमान है । श्री के. का. शास्त्री ने 'कविचरित' में ऐसे ही संशोधन के फलस्वरूप नये तथ्यों का उद्घाटन किया है । आलोचक सूरदास कृत रामायण का सिर्फ ऐतिहासिक महत्त्व ही मानते हैं ।

3.9 उद्धव

सूरदास के बाद 'भालण सुत उद्धव' के नाम से 'रामायण' मिलती है । इसका काव्य रूप कड़वा बद्ध है । इस रामायण का ह. द्वा. कांटावाला ने प्रकाशन किया है । पूरी कृति पढ़ने के पश्चात् ऐसा प्रतीत होता है कि वाल्मीकि रामायण को ही दृष्टि में रखकर उसका भावानुवाद किया गया है । कवि ने 'हनुमन्नाटक' और 'अध्यात्म रामायण' के अनुसार घटनाक्रम में परिवर्तन किया है । उदाहरणार्थ लक्ष्मण की उपासना के पीछे एक घटना है । एक बार लक्ष्मण जी का पैर गलती से सीता को छू जाता है । इससे राम लक्ष्मण को डाँटते हैं । लक्ष्मण को राम का डाँटना बुरा लगता हैं । अतः प्रायश्चित करने के लिए उपासनारत होते हैं । पाठकों की रुचि के लिए उद्धव ने ऐसे कई परिवर्तन किए हैं । शिव धनुष्य तीन हजार सैनिकों से भी टस से मस नहीं होता, उसी धनुष्य को छः साल की लड़की सीता सहज रूप से उठाकर दूर रख देती है । शूर्पणखा के नाक, कान राम काटते हैं । राम ने

वनगमन का स्वीकार सीता से निरंतर सहवास और कैकेयी के हित के लिए किया है । उद्धव ने वसिष्ठ और विश्वामित्र के कलह और युद्ध का प्रसंग आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है । राम समुद्र पर गुस्सा करते हैं यह प्रसंग भी आकर्षण बन पड़ा है । समुद्र से राम का कोप सहा नहीं जाता इसलिए मानवरूप धारण करके हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता है । और कहता है कि –

"मुने राखो रुडा रामजी रे
तुं छे दीनानाथ हवे हुं तो जोडुं छुं हाथ ।'[20]

इस प्रकार समुद्र वाला प्रसंग आकर्षक है ।

उद्धव की लेखनी सुंदरकाण्ड तक ही चली है । युद्धकाण्ड में मधुसूदन नामक कवि का उल्लेख मिलता है । वास्तव में युद्धकाण्ड का सृजन किसने किया है उसका अब तक पता नहीं चला । इसमें उत्तरकाण्ड भी है जिसके रचयिता के बारे में भालण के दूसरे पुत्र विष्णुदास का नाम लिया जाता है । इस काण्ड में राजनकुंवर कुंवर और रामकुंवर आदि नाम भी मिलते हैं । आलोचकों ने विष्णुदास के अस्तित्व के संदर्भ में भी संदेह व्यक्त किया है । इस रामायण का एक प्रसंग ऐसा भी है जिसमें राम सुरा पान करते हैं । सीता उन्हें मद्य पिलाती हैं । संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है कि उद्धव कवि नाकर के समान आख्यानकार ही है । इनकी कोई हस्तप्रत नहीं मिलती । गुजराती के विद्वान के. का. शास्त्री 'कवि चरित' में कहते हैं कि "ज्यां सुधी एनी कोई प्रामाणिक हाथ प्रत न मळे त्यां सुधी एनुं कर्तव्य उद्धवनुं पुरवार करी शकाय एवुं नथी' (पृ. 279 आवृत्ति दूसरी)

3.10 विष्णुदास (खंभातवाला)

मध्यकालीन गुजराती साहित्य में रामभक्ति कविता के 16 वें (सोलहें) शतक में विष्णुदास का स्थान महत्त्वपूर्ण माना गया है । विष्णुदास खंभात के

नागर ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे । आलोचक विष्णुदास को नाकर की कोटि में रखते हैं । विष्णुदास ने 'रामायण' में संपूर्ण रामकथा का निरूपण किया है जो राम काव्य परंपरा में विशेष उल्लेखनीय है । आलोच्य कृति छः काण्डों में विभक्त है – जिसमें अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड आदि हैं । संवत् 1654 से संवत् 1660 के समय के अंतर्गत इस कृति का सृजन हुआ है । युद्धकाण्ड के अंत में कवि ने कहा है कि –

"श्री राम तणां पराक्रम कहया हवि पांचकाण्ड
पुरा थयां अहीं थकी उत्तरकाण्ड आरंभीए ।"

इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि अयोध्याकाण्ड से ही कथा का प्रारंभ किया है । आदि रामायण के बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड को प्रक्षेप माना गया है, इस तथ्य को दृष्टि समक्ष रखते हुए कवि ने बालकाण्ड की कथा का समावेश अयोध्याकाण्ड में ही कर दिया है ।

विष्णुदास कवि ने 'जैमिनीय अश्वमेघ' के आधार पर 'लवकुशाख्यान' की रचना की है । आलोचकों ने इस रचना को नाकर के लवकुशाख्यान से निम्न कोटि की माना है । 'अंगद विष्टि' नामक एक रामकाव्य का उल्लेख मिलता है । रचनाकार का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता । अतः इस कृति के विषय में चर्चा करना ठीक नहीं है । विष्णुदास ने मूल रामायण से सर्वथा परिवर्तित रूप अंकित नहीं किया एवं चमत्कृति लाने का प्रयास भी नहीं किया फिर भी मध्यकालीन गुजराती साहित्य में विष्णुदास का निःसंदेह उल्लेखनीय स्थान है । ऐसा कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं होगी कि विष्णुदास ने इस युग के जन मानस में धर्म, नीति एवं ज्ञान का प्रसार किया है । विष्णुदास ने अपने युग के लोगों को योग्य पथनिर्देश तो किया ही है साथ साथ परवर्ती युग के रामायणकारों के लिए कच्चा माल तैयार किया है, अथवा यों कहा जा सकता

है कि प्रेमानंद जैसे कवियों के लिए योग्य पृष्ठभूमि निर्मित की है । इस प्रकार विष्णुदास का धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व विशेष रूप से उल्लेखनीय है ।

3.11 वजियो

सोलहवीं शताब्दी में नाकर कवि के परवर्ती आख्यानकारों में वजिया कवि का नाम लिया जाता है । कवि की रामकाव्य संबंधी तीन कृतियाँ हैं । सीतावेल, सीता संदेश और रणजंग । तीनों काव्य घटनाक्रम की दृष्टि से एक दूसरे से सम्बद्ध हैं । 'रणजंग' की पूर्व कथा के लिए 'सीता वेल' और 'सीता संदेश' को देखना आवश्यक है । 'सीता वेल' कवि का छोटा काव्य है । इसमें पाँच कड़वे हैं । यह साहित्यिक दृष्टि से सामान्य कोटि का काव्य है कथानक परंपरागत है । सीता स्वयंवर के समय सीता के आभूषणों का एवं सौंदर्य का वर्णन सामान्य ढंग से किया गया है फिर भी पाठकों के लिए प्रभावोत्पादक हैं । संक्षेप में आलोच्य कृति का ऐतिहासिक महत्त्व ही है ।

'सीता संदेश' इक्यावन पदों का काव्य है । 'सीतावेल' सद्दश यह काव्य है । काव्य के अंत में कवि ने लिखा है कि –

''पद बंध पद बावन तणो, ए रच्यो गुणनाथ,
कवि कहे वजीयो रामयश में जप्यो जोडी हाथ ।''

बृहद काव्य दोहन में इक्यावन पद पाये जाते हैं । कवि ने बावनवां पद शायद लिखा है मगर अब तक वह पद प्राप्त नहीं हुआ, फिर भी ईक्यावन पदों का यह काव्य अधूरा प्रतीत नहीं होता । कथानक का प्रारंभ कवि ने गणेश और सरस्वती वंदना से किया है । दूसरे पद के अनुसार हनुमान जी ने समंदर को पार कर लिया है और राम की मुद्रिका सीता को दे दी है । सीता अपने उद्धार हेतु राम को संदेश भेजती है यथा –

''मुज देखतां दयाळ, माधव मीन थयां महाराज''

कवि ने कथा वस्तु को तीव्र गति से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जो प्रशंसनीय है । आलोच्य कृति के द्वारा कविने मध्यकालीन युग और युगीन जनमानस को नीति, सदबोध एवं भक्ति का उत्तम पथ निर्देश किया है । जिससे अनायास रूप से कवि का महत्त्व निर्धारित हो जाता है ।

'रणजंग' कवि की उत्तम कोटि की कृति है । श्री मं. र. मजमुदार ने प्रेमानंद के 'रणयज्ञ' के संपादन में (परिशिष्ट 4 चार) वजिया की यह कृति अंकित की है । रणजंग आख्यान काव्य है । इसमें 17 (सत्रह) कड़वें हैं । बारहवाँ और तेरहवाँ कडवा अप्राप्य है । सबसे विस्तृत कड़वा 10 वाँ (दसवाँ) है । जिसमें 61 (इकसठ) कड़ी पायी जाती हैं । प्रारंभ में सरस्वती वंदना है । कवि ने प्रारंभ में यों कहा है –

'रणजंग लंका कीधो राघव', गाउं गुण पाघोड ।[24]

कवि का उद्देश्य सीता की मुक्ति एवं देवताओं का कार्य पूर्ण करना है । 'रणजंग' के नौवें कड़वे में कवि की कलापक्षीय विशेषता दर्शनीय है । रूपकों की भरमार इस कड़वे में पायी जाती है । राम यज्ञदीक्षित यजमान के समान रथ में ठाठ से बैठे हैं यथा –

'रामजी नवाण तरल ने वदन रातुं, देह धखीया धोम,
रावण ने घेर कोप्यो राघव, करे असुरां होम,
सारंग सरुओ असुर आहूत शोणित ते सोमपान,
ठबके ठीके थयां, पोते त्यां जजमान ।।'

कवि ने युद्ध को यज्ञ के रूप में अंकित करके अपना वैशिष्ट्य सिद्ध किया है । वजिया को यज्ञ की प्रेरणा कहाँ से मिली ? महाभारत के सभापर्व के बीसवें अध्याय में 'रणयज्ञेषु दीक्षितः' ऐसा शब्द प्रयोग पाया जाता है । इसके अलावा भट्ट नारायण कृत 'वेणी संहार' में भी युद्ध को यज्ञ के रूप में अंकित करने का प्रयास किया गया है । कवि ने युद्ध को यज्ञ के रूप में

अंकित करने की प्रेरणा जहाँ से भी प्राप्त की हो मगर सांग रूपक की योजना कवि की अपनी ही है । रणरूपी यज्ञ का कारण सीता ही है । उद्देश्य सूरों की कार्य सिद्धि है । इस यज्ञ में दीक्षित यजमान के रूप में राम हैं । धृत की आहुति के लिए स्त्रुवा उनका धनुष्य है । यज्ञ की आहुति राक्षस गण हैं । यज्ञ में जो सोमपान किया जाता है वह शोणित एवं लंका का गढ़ है । इस प्रकार रूपक की योजना करनेवाला मध्ययुग का प्रथम कवि वजिया ही है । युद्ध के समय रावण ने अपने बीसों हाथों में जो जो ग्रहण कर रखा था, कवि ने उसका भी वर्णन किया है जो कवि की कल्पनाशक्ति का परिचायक है । इसी कड़वे में एक बात और पायी जाती है जिसमें रावण युद्ध भूमि में जाने से पहले मंदोदरी से पूछता है कि मेरी विजय होगी कि नहीं ? मंदोदरी किस मुँह से कह सकती है कि आपकी पराजय होगी ? कवि वाजिया ने उत्कृष्ट शब्द लाघव प्रयुक्त किया है – यथा

'लोका चारे एम कही, धर्मेजय निरधार''

उपर्युक्त पंक्ति के पूर्व कवि ने यों कहा है कि –

''रावण ने घरे सर्व हतुं पण एक नहोतो धर्म''

'रणजंग' की कथावस्तु का मूल आधार वाल्मीकि रामायण का युद्धकाण्ड है । कवि ने थोड़ा बहुत परिवर्तन करके अपनी कल्पना शक्ति को योग्य रूप प्रदान किया है ।

3.12 काशीसुत शेधजी बंधारो

कविने आठ आख्यानों का सृजन किया है । रामकथा संबंधी कवि की एक ही रचना मिलती हैं 'हनुमान चरित' । आलोच्य कृति में 28 (अठाइस) कड़वें हैं । कृति अप्रकाशित है । हस्तप्रति में रचनाकाल संवत 1647 है जो ई. सन् 1591 प्रायः माना जायेगा । आलोचकों ने इस कृति को मांडण बंधाणो कवि रचित 'रामायण' से श्रेष्ठ माना है । कवि के विषय में एक तथ्य

विशेष रूप से जानने को मिलता है । कवि ने अपने ओर आख्यानों में अपना नाम काशी सुतही लिखा है । आलोच्य कृति में 'शेधजी' लिखा है – यथा :–

संवत सोल सडताला सोय ।। मागशर द्वितीय वद होये ।।
नक्षत्र हस्त हतो रवीवार ।। ते माहे कीधो विस्तार ।।
पल वट कुल बंधारा शार ।। रामचंद्र की धो आधार ।।
ते में ग्रंथ कीधो पद बंध ।। काशी सुत शोधजी मति मंद ।।[28]

आदि कवि विरचित रामायण से हमें हनुमान जी के चरित्र के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है । हनुमान जी एक सामान्य बंदर नहीं है । उनमें एक चतुर मंत्री, उत्तम सखा, पराक्रमी दूत एवं सहृदय भक्त के गुण एक साथ देखने को मिलते हैं । मध्यकालीन गुजराती साहित्य में संपूर्ण रामकथा अथवा राम के चरित्र के विषय में कर्मण मंत्री से लेकर गिरधर कृत रामायण तक की कृतियों में हनुमान जी के विषय में कुछ न कुछ लिखा गया है । यह सही है कि आलोच्य युग में हनुमान जी की यशोगथा किसी न किसी रूप में पायी जाती है लेकिन स्वतंत्र रूप से मात्र हनुमान जी से संबंधित आख्यान लिखनेवाले शेध जी ही प्रथम माने जायेंगे । शेधजी के आख्यान की शैली अनुपम है । कवि मांडण और नाकर जैसी उनकी शैली सरल और प्रभावोत्पादक है । कवित्व की दृष्टि से उक्त दोनों कविओं से शेध जी आगे निकल गये हैं । एक दृष्टांत दृष्टव्य है – हनुमान जी रावण की अशोक वाटिका में हैं । वाटिका को तहस–नहस कर दिया है । हनुमान जी के सामने लंका का पूरा सैन्य दल बल सहित है । फिर भी ये अजेय रहते हैं, जिससे रावण का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच जाता है । कवि ने यहाँ हास्य रस का निरूपण किया है यथा –

'कोपियो लंकानो धणी वानरनुं बल सुंणि,
तेडाव्यो पछे वेध करी, वाहन धणी कोपियो,

एसी सहस्त्र महामल संग्रामे शधदा भल,

मोकलो वाडी सत्रना शाल,

जाओरे, वानर ने हणो, रखे मनमां दया गणो ।

कटके कटको करो पापी तणो ।'[29]

कवि ने आलोच्य कृति में रावण की महत्ता के विषय में विस्तार से अंकन किया है जिसमें सब देवता गण को रावण के यहाँ दास के समान कार्य करते हुए दिखाया है । इतना प्रभावशाली रावण एक सामान्य बंदर को वश में नहीं कर सकता यह आश्चर्य का विषय है । कवि ने हनुमान जी का चरित्र–चित्रण वाल्मीकि रामायण के अनुसार ही किया है । हनुमान जी अपार शक्ति के भण्डार हैं । भक्ति और शक्ति का सुभग समन्वय पाया जाता हैं । ऐसे चरित्र के चरित का निरूपण करना हों तो वीर रस के उपयुक्त भाषा का होना अनिवार्य है । कवि ने तीनों वीर, भयानक और रौद्र रसों का सुंदर निरूपण किया है । अब तक के हनुमान चरित्र में आलोच्य कृति का विशेष महत्त्व इसलिए है कि पहले की रचनाओं में हनुमान जी के विषय में सिर्फ उल्लेख ही प्राप्त होता है । स्वतंत्र रूप से हनुमान जी पर इस प्रकार विस्तार से नहीं लिखा गया । कर्मण मंत्री, मांडण, नाकर, विष्णुदास एवं गिरधर कवि भी शेघ जी के समान हनुमान जी के चरित्र को अंकित नहीं कर पाये । अन्य कविओं का प्रतिपाद्य हनुमान जी नहीं मगर राम थे । श्री बेचरभाई पटेल ने आलोच्य कृति की तुलना अन्य कृतियों से करते हुए लिखा है कि हनुमान पराक्रम की कथा ने उद्धव, नाकर, विष्णुदास अने गिरधर पोतानां 'रामायण'मां आथी वधारे विगते अने रसे कही छे पण रामायणनां युद्धकाण्ड पर थी रचायेला स्वतंत्र काव्योमां शेघ जी कृत 'हनुमान चरित' उतम छे'.[30] अर्थात् हनुमान चरित्र मध्यकालीन गुजराती साहित्य में एक उल्लेखनीय कृति है जो हनुमान जी विषयक रचनाओं में सर्वोतम है । आलोचक बेचरभाई के मत को गौर से देखें तो एक प्रश्न खड़ा हो सकता है कि शेघ जी के अलावा अन्य

कवियों ने यदि हनुमान जी के चरित्र के विषय में विस्तार से लिखा है तो क्या उसमें आलोच्य कृति से अधिक हनुमान जी का पराक्रम अंकित हैं ? क्या अन्य कृतिओं में हनुमान जी का चरित्र अधिक शक्तिशाली पाया जाता है ? उतर में यही कहा जायेगा कि सोलहवें शतक में रस और कवित्व शक्ति में शेघ जी के समान कोई कवि नहीं है । कवि नाकर की काव्यगत विशेषताएँ अप्रतिम है लेकिन शेघ जी कहीं कहीं नाकर से आगे निकल गए हैं । श्री बेचरभाई र. पटेल आगे स्पष्टता करते हुए लिखते हैं कि 'आपणां समग्र मध्यकालीन गुजराती साहित्य नी एक मात्र हनुमान विषयक स्वतंत्र आख्यान कृति छे.'[31] इस अवतरण में आलोचक ने आलोच्य कृति को मध्यकालीन गुजराती साहित्य में हनुमान विषयक कथा को प्रस्तुत करनेवाली एक मात्र कृति कहा है ।

मध्यकालीन गुजराती साहित्य में हनुमान चरित्र का महत्त्व अक्षुण्ण है । रामायण में भी हनुमान जी का महत्त्व विशेष उल्लेखनीय है । संपूर्ण रामकथा में से यदि हनुमान जी का चरित्र निकाल दिया जाय अथवा बालकाण्ड से लेकर उत्तरकाण्ड की कथा में से सुन्दरकाण्ड अथवा युद्धकाण्ड निकाल दिया जाय तो क्या रहेगा ? गुजराती साहित्य में रामायण के किसी एक चरित्र का महत्त्व सिद्ध करना हों तो हनुमान चरित एक उतम ही नहीं बल्कि सर्वोतम रचना है । जो स्वयं सिद्ध है ।

3.13 हरिराम

सोलहवें शतक के उत्तरार्द्ध में दक्षिण गुजरात, सुरत निवासी कवि ने बभ्रुवाहन आख्यान, रुक्मणीहरण एवं कृष्ण चरित्र के पदों की रचना की है । इन्होंने सीता स्वयंवर नामक आख्यान भी लिखा है । इसके पूर्व वजिया कवि ने 'सीतावेल' नामक सीता जी संबंधित काव्य की रचना की थी । हरिराम कवि ने सीता स्वयंवर को दृष्टि में रखकर अपनी कवित्व शक्ति का परिचय

दिया है । कवि ने सीता स्वयंवर की कथा वाल्मीकि और भारद्वाज के संवाद द्वारा प्रस्तुत की है, जो अपने आप में न्यून प्रयोग है । नाकर कवि ने 'रामायण' की कथा अजंनी और हनुमान जी के संवाद द्वारा प्रस्तुत की है । कवि ने आलोच्य कृति का विस्तार इक्कीस कड़वों तक किया है । आख्यानों की प्रायः यह एक परंपरा है कि प्रारंभिक एक दो पंक्तियों में स्तुति होती है लेकिन कवि ने 12 (बारह) कड़ी तक यानि कि 24 (चौबीस) पंक्तियों तक स्तुति की है, जिसमें शंकर, पार्वती, गजानन, गंगा, सरस्वती गुरुजन एवं वैष्णवजन की स्तुति की है । कवि विषयप्रवेश वहाँ से करते हैं जब कि राजा जनक ऋषियों से पूछते हैं कि पुत्र–प्राप्ति के लिए क्या किया जाए ? उतर में राजा को यज्ञ करने के लिए कहा जाता है । यज्ञ के लिए पृथ्वी की शुद्धि करनी चाहिए । पृथ्वी की शुद्धि करते समय जनक राजा को शिवधनुष और सीता की प्राप्ति होती है । दिव्य कन्या रत्न की प्राप्ति से राजा का मन प्रसन्न हो जाता है । वे कहते हैं कि –

"मारे लक्ष पुत्र समान पुत्री, एम कही चांपीतन"[82]

सीता धनुष को उठाकर सहज रूप से एक ओर रख देती है, जिस धनुष्य को दस हजार सैनिक एक साथ प्रयत्न करने पर भी हिला नहीं पाये थे । सीता के स्वयंवर में वरुण, शेष वासुकि आये हैं, साथ साथ राम के पूर्वज, अंशुमान भी आये हैं । सब सीता से विवाह करने की आशा लेकर उपस्थित हुए हैं । इतना ही नहीं कृष्णावतार में उत्पन्न धृतराष्ट्र, कर्ण, अंबरिष, पुंडरिक, हरिश्चन्द्र भरत और राजा बाहुक भी आए हैं । यहाँ कहना होगा कि वर्णनातिरेक के कारण कवि से काल व्युत्पतिक्रम का दोष हो गया है, जो अनुचित प्रतीत होता है । कवि ने तीसरे कड़वें से कथानक को नया मोड़ दिया है । महाकाव्य में जैसे गौण कथा का महत्त्व होता है, उसी प्रकार कवि ने सुन्दर कथावस्तु के होते हुए भी गधि राजा के पुत्र विश्वामित्र, उनके कठिन तपस्यापूर्ण जीवन का वृतांत, वसिष्ठ के साथ कलह के अलावा विश्वामित्र

राजा से ब्रह्मर्षि कैसे हुए, इन सब बातों का वर्णन पाँचवें कड़वे तक देखने को मिलता है । कवि ने जो मौलिक परिवर्तन किए हैं, वे सुंदर हैं । राम यज्ञ की रक्षा करते हैं । ताड़का का उद्धार करते हैं और कृष्णावतार में पूतना होने का वरदान देते हैं । कवि ने केवट उद्धार की कथा यहाँ जोड़ दी है जो अनुचित लगती है । केवट और अहल्या के उद्धार के बाद राम मिथिलापुरी आते हैं । राम को बताया जाता है कि सीता रावण की पुत्री है । धृतराष्ट्र और शिबि राजा धनुष उठाने का प्रयत्न करते हैं मगर सफल नहीं हो पाते । राजा रावण का मंत्री जनक से कहता है कि रावण ही धनुष उठा सकता है और कोई नहीं । जनक राजा उक्त बात का स्वीकार नहीं करते । राम और सीता का मिलन होता है, बाद में धनुष भंग होता है । अयोध्या से बारात आती है और विधि अनुसार विवाह होता है । रास्ते में बारात को बीच में परशुराम आकर रोकते हैं, जो मूल कथा से भिन्न है । परशुराम की शक्ति अपरिमित है । वे सैन्य का नाश करने लगते हैं तब राम परशुराम का तेज हरण करते हुए कहते हैं कि अब आपके अवतार का कार्य पूर्ण हुआ है, अब आप तपस्या के लिए वन में पधारें । बाद में बारात का अयोध्या में स्वागत होता है । आख्यान की फलश्रुति बताते हुए कवि कहते हैं कि –

“ए स्वयंवर सीताराम तणो जे भावक भावे गाय रे

श्रोताजन जे सांभळे, तेनां पातिक पांचे जायरे ।।”[183]

कवि अपने आख्यान काव्य की महत्ता के विषय में अंत में कहते हैं कि यदि उक्त कथा को सुननेवाला ब्राह्मण, स्त्री, पशु के बच्चे का घातक भी हो तो भी उसे मुक्ति मिलती है । मनुस्मृति में भी लिखा है कि “जितनी हरि के नाम स्मरण की शक्ति उद्भूत है उतना पाप तो डोम मानव भी नहीं कर सकता ।” कवि ने प्रत्येक कड़वे के बाद वलण (फलश्रुति) नहीं दिया । कवि की शैली अन्य मध्यकालीन कविओं के समान बाहयाडंबर रहित एवं सरल है । इक्कीसवाँ कड़वा प्रक्षेप प्रतीत होता है । जो भी हो काव्य सुंदर एवं अनुपम है

। डॉ. शशित ओझा कहते हैं कि "21 (इक्कीस) कड़वानुं अद्‌भूत रस युक्त सीता स्वयंवर एणे रच्युं छे"[34] गुजराती साहित्य के मूर्धन्य आलोचक श्री के. का. शास्त्री कहते हैं कि "विक्रमनी 17 (सत्रहवीं) सदी (ई. स. 16वाँ सैका)ना एक भागमां कवि एक मध्यम कोटिनुं काव्य आपी पौराणिक आख्यान काव्योमां सुरत दक्षिणनां रही एक नो उमेरो करे छे."[35] ऐसा लगता है कि श्री के. का. शास्त्री ने यहाँ रस की दृष्टि से नहीं किन्तु कवित्व की दृष्टि से अपना मत प्रस्थापित किया है । सोलहवीं शती के उल्लेखनीय कवियों के विषय में हमने विस्तारपूर्वक उल्लेख किया । सोलहवीं शती में कई कृतियाँ ऐसी हैं जिनका नामोल्लेख करना आवश्यक है – लक्ष्मीदास कृत 'रामरक्षा स्तुति' कहान या कहान जी कृत 'रामायण', मीठा कवि कृत रामप्रबंध, अज्ञात कविकृत 'लवकुशाख्यान' कविजशो कृत 'रामचरित', तुलसी लिखित 'सीताजीनो सोहैलो' तुलसीपुत्र वैकुंठकृत 'रामविवाह', शिवदास रचित 'परशुराम आख्यान', राणा सुत कृत 'महेरावणनुं आख्यान एवं प्रभाशंकर का 'रावण मंदोदरी संवाद' आदि उल्लेखनीय हैं ।

हमने आगे उल्लेख किया है उसी के अनुसार सोलहवीं सदी को आलोचकों ने सृजन की दृष्टि से 'मंद युग' अथवा प्रगति की दृष्टि से हीन कहा है, जो ठीक नहीं है क्योंकि इसी शतक में मीरा बाई जैसी महान प्रतिभा का उदय हुआ है, जो कम महत्त्वपूर्ण नहीं है ।

सत्रहवाँ शतक और रामकाव्य :

पंद्रहवें और सोलहवें शतक के राम काव्यों के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में हमने उक्त समय की कृतियाँ एवं कृतिकार के विषय में उल्लेख किया । आलोच्य शतक में मध्यकालीन गुजराती साहित्य ही नहीं किन्तु समग्र गुजराती साहित्य में जिनका शीर्षस्थ स्थान है ऐसे मूर्धन्य प्रतिभा संपन्न प्रेमानंद और अखा कवि इसी शतक की देन है । रामकाव्य के विकास में दोनों के महत्त्व

की चर्चा हम आगे विस्तृत रूप से करेंगे । क्रमानुसार अब हम इस शतक के राम काव्यों का एवं कृतिकारों का परिचय प्राप्त करेंगे ।

3.14 हरिदास

आलोचकों ने हरिदास के चरित्र को काल्पनिक माना है, फिर भी इस शतक में सर्वप्रथम हरिदास का उल्लेख करना आवश्यक है । 'सीता विरहनी चातुरीओ' नामक कृति को कौन भूला सकता है ? 'प्राचीन काव्य माळा' ग्रंथ 9 (नौ) श्री हरगोविंददास द्वारकादास कांटावाला संपादित ग्रंथ में आलोच्य कृति के विषय में यथा संभव सविस्तृत विवेचन किया गया है । आलोचकों का मत है कि हरिदास प्रेमानंद के यहाँ रहते थे, उन्हीं के शिष्य थे । किसी ने प्रेमानंद के समकालीन के रूप में हरिदास का उल्लेख किया है । जो भी हो । आलोच्य कृति 'सीता विरहनी चातुरीओ' राग धनश्री पर आधारित विप्रलंभ श्रृंगार की कृति है । काव्य में दश–दश कड़ी वाली दश चातुरी प्राप्त होती है यानि कि दो सौ पंक्तियों से युक्त सो कडियोंवाला आलोच्य काव्य है । जिसके प्रारंभ में मध्यकालीन गुजराती कविओं की परंपरा के अनुसार स्तुति प्रस्तुत की गई है । जिसमें गुरु, गजानन, सरस्वती देवी आदि से याचना की गई है । कथा का प्रारंभ, अशोक वाटिका में सीता की मुक्ति से होता है । सीता अयोध्या में निवास कर रही है । अयोध्या का एक धोबी अपनी पत्नी से कलह होने के कारण कहता है कि 'मैं थोड़ा राम हूँ कि निर्वासित पत्नी को ससम्मान फिर से घर में स्थान दूँ ? राम के गुप्तचर यह सुनते हैं । वे आकर राम को सुनाते हैं । वैसे तो राम ने सीता की अग्नि परीक्षा की थी फिर भी धर्म, कर्तव्यपालन एवं लोकमत के कारण सीता का त्याग करते हैं । राम सीता का स्पष्ट रूप से त्याग नहीं कर सकते अतः युक्ति करते हैं, वन में घूमने के लिए जाना है ऐसा बहाना बनाते हैं । राम तीनों भाइयों को इस अभियान की सफलता हेतु बुलाते हैं । सीता के प्रति जो अन्याय हो रहा है

वह शत्रुघ्न से सहा नहीं जाता । अतः वे धोबी की हत्या करने के लिए तैयार हो जाते हैं । गर्भवती सीता की दशा शत्रुघ्न से देखी नहीं जाती । राम राज्य होने से शत्रुघ्न की एक भी नहीं चलती, वे मूर्छित हो जाते हैं । अतः सीता को वन में छोड़ने के लिए राम साधुचरितवाले भरत जी को बुलाते हैं । भरत जी सीता की स्थिति से दुःखी होकर भगवे कपड़े पहनकर साधु हो जाते हैं । आखिर में लक्ष्मण जी को कार्य सुपुर्द किया जाता है । लक्ष्मण रामाज्ञा का अनादर नहीं कर सकते । अतः तैयार हो जाते हैं लेकिन उसी समय अपशकुन होते हैं । सीता लक्ष्मण से कहती हैं कि रावण मुझे उठाकर लंका ले गया था उस वक्त के समान ही अपशकुन हो रहे हैं, इसलिए आप मुझे वापस अयोध्या ले जाइए । लक्ष्मण से चुप रहा नहीं जाता अतः सत्य घटना कह देते हैं । सीता मूर्छित हो जाती है । लक्ष्मण की स्थिति दयनीय हो जाती है, वे राम कार्य या रामाज्ञा की निंदा नहीं कर सकते और सीता की स्थिति देख भी नहीं सकते । निर्दोष सीता का त्याग उनके लिए असहय है । यहीं से सीता विरह की चातुरी प्रारंभ होती है । जो सात, आठ और नौ चातुरी में है । सीता की उक्ति बड़ी भाववाही एवं मर्मस्पर्शी है यथा –

“वगर वांके शे तज्यां, करत मननुं सूल
हशे राघव तमने न निंदु, वंदु रात ने दिन ।”[36]

और

“विलपी मरशुं विठ्ठला वगर वांके जाण
लोक लाजे वालाजी, तजी करुं तोय वखाण”[37]

उक्त पंक्ति में ‘विठ्ठला’ शब्द ठीक नहीं लगता क्योंकि यह शब्द कृष्ण का पर्याय माना जाता है । सीता का विरह अकथ है । सीता के दुःख से मानव ही नहीं किन्तु जंगल के पशु पक्षी एवं अन्य जीव भी द्रवित होते हैं । बाघ एवं प्रकृति भी सीता को आश्वासन देते हैं, रुदन भी करते हैं । बाद में वाल्मीकि वहाँ आते है सीता को अपने आश्रम में ले जाते हैं । सीता

लव–कुश नामक दो पुत्रों को जन्म देती हैं । दोनों पुत्र शस्त्र–विद्या में पारंगत होते हैं । राम द्वारा आयोजित अश्वमेघ यज्ञ के अश्व को लव–कुश अपने अधिकार में करतें हैं, अतः युद्ध होता है । राम लक्ष्मण लव–कुश द्वारा पराजित होते हैं । आलोच्य कृति का एक ही उद्देश्य लक्षित होता है कि पतिधर्मका लोप हो भी जाए तो कोई बात नहीं लेकिन राजधर्म का आजीवन पालन करना चाहिए । कृति का ऐतिहासिक मूल्य तो है ही साथ–साथ साहित्यिक मूल्य एवं मध्यकालीन साहित्य में भक्ति मूलक स्थान इस प्रकार तीन दृष्टियों से आलोच्य कृति का मूल्य उल्लेखनीय है ।

3.15 प्रेमानंद :

मध्यकालीन गुजराती साहित्य में ही नहीं लेकिन संपूर्ण गुजराती साहित्य में प्रेमानंद का स्थान महत्त्वपूर्ण है । ये साहित्यकारों की श्रेणी में अग्रगण्य हैं । प्रायः प्रत्येक युग के कवि की अपनी अलग निजी विशेषता होती है । किसी के काव्य का अभिप्रेत भक्ति होता है जैसे नरसिंह महेता, मीराबाई आदि । कोई कवि अपने काव्यों के द्वारा समाज के बाहयाडंबर एवं सड़े गले रिवाजों के प्रति व्यंग्य युक्त बानी का प्रयोग करके योग्य पथ निर्देश करते हैं । कोई उपदेश देकर समाज में समन्वय की भावना प्रस्थापित करने का सुप्रयत्न करते जैसे अखा । कई कवि ऐसे होते हैं जो ज्ञान, मनोरंजन के साथ–साथ भक्ति की भावना प्रकट करते हैं जैसे प्रेमानंद । प्रेमानंद ने कई आख्यानों का सृजन किया है, जिनमें 'नळाख्यान', 'मामेरुं', 'सुदामा चरित', 'ओखाहरण' और 'रणयज्ञ' उल्लेखनीय हैं । जहाँ तक हमारे शोध का प्रश्न है रामकथा के परिप्रेक्ष्य में 'रणयज्ञ' ही आता है ।' प्रेमानंद की एक कृति बहुत ही विवादास्पद है जो 'ऋृष्यशृंग आख्यान' के नाम से प्रसिद्ध है । आज जहाँ गुजराती भाषा का व्यवहार होता है वहाँ प्रथम संतान की उत्पत्ति के पूर्व प्रसंग को जिसे सीमंत कहते हैं, उस वक्त प्रेमानंद की कृति 'मामेरुं' को सब लोग

समूह में सुनते हैं और सस्वर उसका पाठ किया जाता है । चैत माह में सब लोग साथ बैठकर 'ओखाहरण' सुनते हैं । प्रेमानंद ने ही आख्यानों का प्रचलन किया है ऐसा कहेंगे तो अत्युक्ति नहीं होगी । प्रेमानंद का महत्त्व मध्ययुग में था ही और आख्यानों के कारण आज भी उनका महत्त्व कम नहीं हुआ । अब हम उनकी रामकथा संबंधी कृतियों के विषय में सविस्तृत उल्लेख करेंगे ।

ॠष्यशृंग आख्यान

इस कृति के विषय में अनेक मतमतांतर हें । कृति का रचयिता कोई भी हो, हमारा संबंध कृति से होने के कारण आलोचना करना नैतिक धर्म हो जाता है । आलोच्य कृति में पच्चीस कड़वें हैं । कृति का मूलाधार आदि रामायण का बालकाण्ड है । अति संक्षिप्त में सर्ग 9 (नौ) और 10 (दश) में ॠष्यशृंग आख्यान है । ग्यारहवें सर्ग में दशरथ राजा ॠष्य शृंग को अयोध्या लाते हैं । महाभारत के आरण्यक पर्व में ॠष्यशृंग का उपाख्यान विस्तृत रूप से है । ऐसा प्रतीत होता है कि ॠष्यशृंग आख्यान का सृजन करते समय आख्यानकार की दृष्टि समक्ष महाभारत का यही उपाख्यान रहा हो । पौराणिक ग्रंथों में एक कथा उपलब्ध होती है, जिसमें ॠष्यशृंगमुनि हरिणी के द्वारा उत्पन्न हुए थे । दशरथ राजा को एक पुत्री भी थी जिसका नाम शांता था । ऐसे तथ्यों का समर्थन वैसे कहीं मिलता नहीं । आदि रामायण में ऐसा वृतांत नहीं है । ॠष्यशृंग आख्यान महाभारत के कथानक के अंतर्गत पाया जाता है । पांडव तीर्थाटन करने के लिए निकलते हैं उनकी लोमस ॠषि से मुलाकात होती है । लोमस ॠषि विभांडक ॠषि की तपस्या के विषय में सविस्तार बताते हैं । विभांडक ॠषि को वीर्य स्खलन होता है । हरिणी वीर्यपान करती है अतः शिंगवाले मानव का जन्म होता है । यही मानव बड़ा होकर ॠष्यशृंग के नाम से पहचाना जाता है । आख्यानकार ने एक स्थान पर काल व्युत्क्रम का दोष किया है । महाभारत के परिप्रेक्ष्य में कथावस्तु चल रही है और कथा

में राम का उल्लेख आता है यथा – "पाग बांधी राम उतर्या ।"[38] ऐसा लगता है कि आख्यानकार मूल कथा को भूल गये । आलोच्य कृति में ग्यारहवें कड़वे से लेकर सोलहवें कड़वे तक श्रृंगार का विस्तृत वर्णन है । मोहलेखा अपनी सखी के साथ विभांडक के आश्रम में जाकर ऋृष्यशृंग को येनकेन प्रकार से मोहित करने का प्रयास करती है, जिसमें क्लिष्टता होते हुए भी श्रृंगार का शास्त्रीय पक्ष प्रेक्षणीय है । मोहलेखा ऋृष्यशृंग को कामशास्त्र के शास्त्रीय ज्ञान के पाठ पढ़ाती है, जो मनोरंजक तो है ही कहीं कहीं अश्लीलता भी पायी जाती है । आख्यान में हमारी दृष्टि से उल्लेखनीय हिस्सा अंतिम दो कड़वें ही हैं । जिस में दशरथ ऋृष्यशृंग से पुत्रेष्टि यज्ञ करवाते हैं । राम–लक्ष्मण आदि पुत्रों का राजा के यहाँ जन्म होता है । ऋृष्यशृंग अपने पुत्र कृष्ण केश को उतराधिकार सुपुर्द करके शांता के साथ तपस्या करने के लिए वन में चले जाते हैं । आलोच्य आख्यान में अकाल का वर्णन है, जो बहुत ही मर्म वेधक एवं प्रभावोत्पादक बन पड़ा है । प्रेमानंद की प्रथम कृति ओखाहरण है । नळाख्यान उनकी प्रौढ़तम कृति है । तात्पर्य यह है कि ऋृष्यशृंग आख्यान और ओखाहरण की रचना शैली में जमीन आसमान का अंतर है, जिससे आलोच्य कृति अप्रेमानंदीय सिद्ध होती है । यहाँ यह भी कहना होगा कि प्रेमानंद के नाम पर कई कृतियाँ चढ़ाने का निंदनीय कार्य सहेतुक किया गया है । कृति का ऐतिहासिक मूल्य होने के कारण उल्लेख करना आवश्यक था । कृति के रचयिता के संदर्भ में जो विवाद है उसे हम वहीं रख देते हैं ।

रणयज्ञ :

सत्रहवें शतक के सबसे अधिक प्रतिभासम्पन्न कवि आख्यानकार प्रेमानंद ने एक मात्र रामकथा संबंधी कृति 'रणयज्ञ' का सृजन करके गुजराती साहित्य को अपना ऋृणी बनाया है । 'रणयज्ञ' का आधार आदि रामायण का युद्धकाण्ड है । युद्धकाण्ड रामायण का महत्त्वपूर्ण अंश है, तथा सब काण्डों में विस्तृत है । आदि रामायण के अयोध्याकाण्ड में 119 (एकसो उन्नीस) सर्ग हैं जबकि

युद्धकाण्ड में 128 (एकसौ अट्ठाइस) सर्ग हैं । आदि रामायण के युद्धकाण्ड के प्रथम सर्ग में लंका का सेनापति अपने राजा रावण को सच्ची सलाह देता है, विभीषण भी भ्राता को समझाने का प्रयास करता है लेकिन रावण किसी की भी एक नहीं सुनता । अतः युद्ध होता है, रावण की मृत्यु मंदोदरी विलाप, विभीषण का राज्याभिषेक, सीता की अग्नि परीक्षा, राम का अयोध्या में पुनरागमन आदि तक की कथा है । इस प्रकार अत्यंत संक्षिप्त युद्धकाण्ड की कथावस्तु है । आलोचक उत्तरकाण्ड को प्रक्षेप मानते हैं । अतः राम राज्य तक के वर्णन से ही रामकथा को पूर्ण मानना चाहिए ।

प्रेमानंद की आलोच्य कृति 'रणयज्ञ' का कथानक 26 (छब्बीस) कडवें तक फैला है । प्रारंभ में गणपति और राम की स्तुति के साथ साथ वस्तु निर्देश है और श्रवण भक्ति का महात्म्य दिखाया गया है । समुद्र पर सेतु बन जाने की घटना से रामकथा का प्रारंभ होता है । बाद में विभीषण का राम की शरण में आना, अंगदविष्टि आदि का उल्लेख है । 'रणयज्ञ' का अर्थ क्या है ? क्यों ऐसा शीर्षक रखा गया है ? इसे कवि ने पूर्ण रूपक (साँग रूपक) के द्वारा समझाने का यत्न किया है । रणभूमि यज्ञ स्थंभ की वेदी है, विभीषण यजमान है, हनुमान उपस्कर ला देने वाले, स्नेही हैं । होमादिक पदार्थ मंत्रीगण हैं, रावण के पुत्र तिल और जव हैं । यज्ञ में महिष की आहुति देनी चाहिए जिसके लिए कुंभकर्ण है, बतीसलक्षण युक्त पुरुष भी चाहिए जो इन्द्रजीत है । यज्ञ के लिए अज चाहिए उसके लिए अतिकाय है । यज्ञ की पूर्णाहूति के लिए श्रीफल का होना चाहिए जिसके लिए रावण है । यज्ञ की आग की ज्वाला जानकी है । वायु के रूप में लक्ष्मण हैं । राम ॠत्विज ॠषि हैं । यज्ञ द्वारा प्राप्ति देव कार्य की पूर्णाहूति है । इस प्रकार रूपक का सफल प्रयोग किया गया है । आलोच्य कृति एक सफल आख्यान है इसका कारण यह भी है कि प्रेमानंद ने पहले भी ऐसा आख्यान लिखा था बाद में शंकरदास की प्रेरणा से उसे परिष्कृत करके लिखा, यथा –

"देसाई महेता शंकरदासे मुजने आज्ञा दीधीजी
संक्षेपे कथा कही हुती पूरवे ते विस्तारी कीधीजी ।।"[39]

वैसे प्रेमानंद ने मूल रामायण का आधार लेकर यथा संभव मौलिकता का पुट देने का प्रयास किया है । पूरी कथा प्रस्तुत करना योग्य नहीं ।

"शतकोटि रामायण लीलामांथी सार ग्रह्युं छे थोडुं
जुद्धकाण्ड मां हाथी संक्षेपे, रणयज्ञ जुगते जोडुं ।।[40]

प्रेमानंद ने जो मौलिक परिवर्तन किए हैं उनमें उल्लेखनीय दृष्टांत यह है – युद्ध हो रहा है । इन्द्रजीत क्रोधित होकर राम लक्ष्मण सहित पूरे सैन्य को नाग–पाश में बाँध देता है तब नारद जी आकर राम को उनके विष्णुपद का अहसास दिलाते हैं । राम को विष्णु पद की स्मृति हो जाने के कारण उनको अपने वाहन गरुड़ की याद आती है । अतः तत्क्षण गरुड़ वहाँ आता है और सब नाग वहाँ से भाग जाते हैं । राम लक्ष्मण पुनः युद्ध के लिए तैयार हो जाते हैं । आदि रामायण के युद्धकाण्ड का रावण पूर्ण रूप से राक्षस है जब कि रणयज्ञ का रावण राक्षस नहीं लेकिन भक्त बन जाता है । प्रेमानंद ने रावण शब्द का भी कम प्रयोग किया है । रावण को प्रति नायक ही माना है । इसमें ऐसा लगता है कि रणयज्ञ का रावण तुलसीदास जी के रावण के समान है । एक उदाहरण देखें, जब अंगद रावण के पास संधि के लिए जाता है, उस वक्त वह रावण को अपमान – युक्त – शब्द – बाण से बेधने का यत्न करता है तब भी रावण क्रोधित नहीं होता । ध्यान मग्न हो जाता है, जैसे –

"अंगद कहे सांभल रे तस्कर ! तुंने जगत करे तिरस्कार ।
एक मस्तकना धणी ने धन्य छे : तारा दस मस्तक धिक्कर ।।"[41]

अंगद के ऐसे वचन सुनने पर भी रावण ध्यान मग्न रहता है । अंगद जब मंदोदरी के साथ अशोभनीय बर्ताव करने लगता है तब रावण ध्यान छोड़कर खड़ा हो जाता है । प्रेमानंद ने कथानक में कई परिवर्तन किए हैं,

फिर भी कहीं भी औचित्य का भंग नहीं होता । इतना ही नहीं रसाभास एवं रसभंग भी नहीं होता । 'रणयज्ञ' का मुख्य रस वीर रस है । अन्य उल्लेखनीय रस हास्यरस है । हास्य के उदाहरण यत्र तत्र मिल जाते हैं । कुंभकर्ण को जगाने का उपक्रम किया जाता है उस वक्त का हास्य प्रशंसनीय है । रणयज्ञ में मंदोदरी के चरित्र को प्राधान्य दिया गया है । संक्षेप में, इतना ही पर्याप्त है कि प्रेमानंद की प्रतिभा असाधारण है । 'रणयज्ञ' रामभक्ति की अथवा रामकथा की श्रेष्ठ एवं उल्लेख्य कृति है ।

3.16 भवान

भवान कृत 'रावण मंदोदरी संवाद' रामकथा संबंधी एक उल्लेखनीय कृति है । भवान की प्रतिभा साधारण कोटि की है । रणयज्ञ की प्रस्तावना में श्री मंजुलाल मजमुदार ने लिखा है – "संवत 1736 मां भवान भगते सात पदमां रावण मंदोदरी संवाद लख्यो छे."[42] बृहत काव्य दोहन के पाँचवें ग्रंथ में भवान का 'रावण मंदोदरी संवाद' दिया गया है लेकिन इसमें सिर्फ दो ही पद हैं । वैसे इस ग्रंथ में सात पद हैं, जिनमें से चार पद कृष्ण काव्य के हैं, पाँचवाँ और छट्ठा पद 'रावण मंदोदरी संवाद' से संबंधित है और सातवाँ पद आत्मज्ञान विषयक है । मंदोदरी रावण को राम से युद्ध न करने की सलाह देती है, उस वक्त वह प्रिय पत्नी अथवा कार्येषु मंत्री के समान नहीं लगती । मंदोदरी ने मर्यादाओं का उल्लंघन किया है । कोई भी पत्नी कैसी भी क्यों न हो मगर पति के दुश्मन की प्रशंसा तो नहीं करती अथवा यों तो कभी नहीं कह सकती यथा –

"ओ राणा जी रामनी साथे राड न कीजिए"[43] यहाँ तक उसकी बात सही लगती है, आगे वह कहती है जो ठीक नहीं है –

"एवा रामजी उपर जाउं वारी रे"[44]
ए बळियाथी एवा, एना चरण चांपे छे तम जेवा

आगे कहती है कि –

“केनुं कह्युं न मानो तमे पापी, सती सीताने पाछी शेनापी”[45]

रावण मंदोदरी को छठ्ठे पद में उतर देता है, जिसमें उसने मर्यादा का पूरा पक्ष निभाया है । मंदोदरी रावण को पापी कहती है मगर वह उसे यों कहता है –

“ओ मनोहारी रामने नमवानो मारे नेम छे”[46]

विनय के साथ संवाद आगे बढ़ता है । रावण मंदोदरी को अपने पूर्वजन्म के विषय में बताता है । शनकादिक के शाप (जो श्रीमद् भगवत पुराण से संबंधित है) के विषय में वह विस्तार से कहता है । वह यह भी कहता है कि मैं राम के हाथों से ही मृत्यु का वरण करना चाहता हूँ इसलिए ही मैं सीता को बहुत सोच विचार के बाद उठा लाया हूँ । रावण–मंदोदरी संवाद की कथावस्तु आदि रामायण से भिन्न लगती है । मौलिकता की छाप यत्र–तत्र पायी जाती है । संक्षेप में, आलोच्य कृति साधारण सी है । कृति का साहित्यक मूल्य भी अधिक नहीं है, लेकिन ऐतिहासिक मूल्य होने के कारण उल्लेख करना आवश्यक था ।

इस काल की अन्य उल्लेखनीय कृतियों में नरहरिकृत ‘योग वासिष्ठनो सार’ है । साधारणतः योगवासिष्ठ और वाल्मीकि रामायण का किसी प्रकार से संबंध नहीं है । कवि थोभण कृत ‘हनुमान गरबी’ का यहाँ उल्लेख आवश्यक है ।

3.17 वल्लभ भट्ट

मध्यकालीन गुजराती साहित्य की सबसे बड़ी विकट समस्या यह है कि आलोच्य युग में समान नामधारी अनेक कवि हुए हैं जिसके फल स्वरूप निश्चित नहीं होता कि कृति का रचयिता वास्तव में कौन है ? कवि का जन्म स्थान कौन सा है ? ज्यों ज्यों अनुसंधान होते जाते हैं तब तब स्पष्टता प्राप्त

होती रहती है लेकिन जब तक कार्य सम्पन्न नहीं होता तब तक अनुमान से ही काम चलाना पड़ता हैं, अथवा संतोष व्यक्त करना पड़ता है । मध्यकालीन गुजराती साहित्य में वल्लभ नामधारी एक से अधिक कवि हुए हैं जिनमें एक वल्लभ सुरत का रहनेवाला है । दूसरा वल्लभ जो वल्लभ भट्ट मेवाड़ो के नाम से प्रसिद्ध है, उसने शक्ति के गरबे लिखे हैं । ऐसा कहा जा सकता है कि 'रामविवाह' और 'लंकानाशलोका' नामक दोनों कृतिओं का रचयिता वल्लभ सुरती है । इसमें वल्लभ भट्ट मेवाडा की कतिपय विशेषताएँ नहीं पायी जाती 'लंकानाशलोका' के रचयिता के एक नहीं लेकिन दो नाम मिलते हैं, वल्लभ और अंबाइदास । वास्तव में कृति का कर्ता एक ही है एसा प्रतीत होता है । श्री देवदत्त जोशी ने लिखा है कि "ए कृति भागवत वाला सुरती वल्लभनी होवानी संभावना छे ।"[47] वैसे तो उक्त कृतियों का सिर्फ ऐतिहासिक ही मूल्य है अतः राम काव्य के विषय में नामोल्लेख ही पर्याप्त है । प्रसिद्ध शक्ति–भक्त वल्लभ भट्ट ने 'शक्ति के गरबे' लिखे हैं । मेवाडा ने कृष्ण कथा पर आधारित पदों का सृजन किया है । उन्होंने रामकथा विषयक बहुत थोड़े पदों की रचना की है, जिनमें कवि की विशेषताएँ स्पष्ट रूप से देखी जाती हैं । कवि की कल्पना और कवित्व शक्ति का परिचय प्रत्येक पद में पाया जाता है । ये पद जो रामविषयक हैं वे बृहत काव्य–दोहन के आठवें ग्रंथ में प्रकाशित हैं । संपादक ईच्छाराम सूर्यराम देसाई है । वल्लभ भट्ट के उक्त पदों का उल्लेख 'रणयज्ञ' की प्रस्तावना में संपादक श्री मंजूलाल र. मजमुदार ने भी किया है । "संवत् 1788 मां गरबा लखनार वल्लभ भट्ट मेवाडा ना रचेला रामना पद मळी आवे छे ।"[48] अतः काव्य दोहन के आठवें ग्रंथ में प्रकाशित पद श्री मजमुदार के मत का समर्थन करते हैं ।

बृहत काव्य दोहन में रामकथा विषयक केवल चार पद ही दिए गए हैं, जिनमें से तीन पदों में सीता स्वयंवर के समय राम द्वारा किये गए धनुष भंग का वृतांत है । चारों भाइयों का विवाह होता है । बारात अयोध्या वापस

आती है तब तक का वर्णन है । चौथा पद ज्ञान भक्ति का है । आलोच्य अंश के द्वितीय पद में मर्यादा का लोप हुआ प्रतीत होता है । राम मिथिला में आते हैं । विवाह विधि सम्पन्न होती है । मिथिला की स्त्रियाँ आपस में वार्तालाप करती हैं कि राम अब अयोध्या चले जायेंगे । आँखों को अब राम के सौंदर्य का लाभ कब मिलेगा ? अतः सब राम को देखने के लिए निकल पड़ती हैं यथा –

''कुळ मर्यादा भूली, घणुं प्रेम विवश थइ मत फूली,
ना पालक पडे रहयां नयन खूली,
धरी धीरज सखी सहु एम कहे
भाग्य सीतानुं कवण लहे ।''[49]

राम का व्यक्तित्व प्रभावोत्पादक अवश्य था किन्तु अन्य स्त्रियाँ अपनी मर्यादाओं को भूलाकर राम से नाता जोड़ दें, यह कहाँ तक उचित है ? संक्षेप में वल्लभ के राम काव्य में ऐतिहासिकता के साथ साथ काव्य गुण युक्त भक्ति के भी दर्शन होते हैं ।

3.18 गोविंद

गोविंद अथवा गोविंदराम की तीन कृतियाँ प्राप्त हैं । 'रघुनाथ जी नो विवह' 'रामवनवास नी साखीओं' और 'रावण ने विभीषण' है ।

रघुनाथ जी नो विवाह :

इस कृति में तेरह कड़वें और एकसौबयानबें चौपाई हैं । कवि ने प्रारंभ में सरस्वती की वंदना की है । इसमें महिषासुर वध का वर्णन है । आलोच्य कृति में हमें तदयुगीन गुजराती समाज के दर्शन होते हैं ।

राम वनवासनी साखीओ :

यह तेरह साखिओं का एक लघु राम काव्य है । तीन पंक्तियों के बाद ध्रुव पद की तान देखने को मिलती है, जिसमें 'राजा राम ने राजगादी मळो' ऐसा उल्लेख है ।

रावण ने विभीषण :

आलोच्य कृति चौबीस कड़ी की है । दो पंक्तिओं की एक कड़ी होती है । वन में अकेली सीता को रावण सन्यासी बनकर कपट से उठा ले जाता है । विभीषण रावण को बोध देता है । रावण के लिए विभीषण की सीख अग्राहय है । रावण अपने अनुज पर पाद प्रहार करता है । इतनी संक्षिप्त कथावस्तु परंपरित ढँग से प्रस्तुत की गई है । आलोच्य कृति अलंकार विहीन सरल भाषा में लिखी गई है ।

3.19 द्वारकादास

संस्कृत एवं हिन्दी काव्यों की परंपरा में गुजराती में भी बारह मासा वर्णन उपलब्ध होता है । 'सीता विरहनां बारमास' में सीता के विरह का तादृश्य मार्मिक चित्र अंकित है । आलोच्य कृति विशाल है । बारह पद दस–दस कड़ी के हैं और तेरहवाँ पद ग्यारह कड़ी का है । अतः कुल मिलाकर कृति में एक सौ इक्तीस कड़ी हैं । कवि ने प्रत्येक पद में नौ कड़ी के बाद एक दोहा रखा है, जिससे विरह वर्णन में प्रभावोत्पादकता आ गयी है । प्रत्येक दोहे में रूपक परंपरा का भी निर्वाह किया गया है –

''उरज अति परसन्न थयां, कंचुकी भात विभात ।
कंटक विरह उद्‌भव थयां, क्युँ कष्ट विख्यात ।''[50]

कवि के विषय में कहा जाता है कि उनको अक्षर ज्ञान नहीं था लेकिन गला बहुत ही मधुर था, इससे प्रेमानंद ने प्रभावित होकर उसे काव्य रचना करना सिखाया था । आलोच्य कृति का अगीरस विप्रलंभ श्रृंगार है । श्रृंगार

वर्णन में कहीं कहीं औचित्य का भंग हो गया है जो अरुचिकर प्रतीत होता है । यथा – आषाढ़ माह वियोगियों के लिए बड़ा कष्टदायक होता है, सीता कहती है कि –

''मयूर कोयल बोले रे, राम धालुं आंगळी कान,
काम कूड़ो हदे छोलेरे हरि भूलावे मारुं भान ।।''[51]

उक्त पंक्तियों में अनौचित्य है । सीता जी ने वन में भी संयम और सात्विक जीवन का निर्वाह किया था । ब्रह्मचर्य का पालन किया था लेकिन लंका में काम से पीड़ित है ऐसा कहना ठीक नहीं लगता । 'काम कूड़ो हदे छोले रे' में 'छोले' शब्द ठीक नहीं है । अश्लील सा प्रतीत होता है । कवि ने सीता राम का मिलन बारह महीने के बाद नहीं करवाया लेकिन अधिक महीने के बाद यानि की तेरहवें महीने के बाद करवाया है । सीता आत्महत्या करना चाहती है और राम उसे बचाते हैं । युद्धकाण्ड के बीसवें श्लोक में आदि रामायण के राम यों कहते हैं –

''राक्षसोना राजा रावणनां मर्म स्थळमां तीक्ष्ण बाण मारीने,
हुं सीताना हृदय मां रहेला शोकनो ज्यारे नाश करीश,
अहो ! देव कन्या सरखा स्वरूपवाळी सति शिरोमणि सीता,
हर्ष भेर मारा कंठमां वळगीने आनंदाश्रु ज्यारे वडेवडावशे ।।''[52]

मध्यकालीन गुजराती साहित्य में भक्ति का प्राधान्य पाया जाता है । 'बारहमासा' लिखने की एक परंपरा पायी जाती है । मध्यकालीन गुजराती साहित्य में सीता विरह के बारह मासा नामक एक से अधिक कृतियाँ मिलती हैं ।

सत्रहवें शतक की कृतिओं में प्रेमानंद की 'रणयज्ञ' के बाद 'सीता विरहनां बार मास' का स्थान है । एक दो स्थान पर काल व्युत्पतिक्रम एवं अनौचित्य दोष होते हुए भी कृति का विशिष्ट महत्त्व निःसंदेह सिद्ध होता है ।

सत्रहवें शतक में कृष्णदास कृत 'सीता जी नी कांचळी', वसीदास कृत 'हरनामजी नो छंद' और मोरारकृत 'रामना महिना' का उललेख आवश्यक है ।

अठारवें शतक के राम कथा विषयक काव्य :

(कवि शामळ, दयाराम से लेकर कवि गिरधर तक के काव्य)

कवि शामळ के समय से लेकर दयाराम तक का समय अठारहवाँ शतक और उन्नीसवें शतक का पूर्वाद्ध है । मध्यकालीन गुजराती साहित्य की अंतिम ज्योति दयाराम ही माने जाते हैं । वैसे दयाराम की उपस्थिति में ही सुधार युग का प्रारंभ हो चुका था । मध्यकालीन साहित्य के ह्रासोन्मुख होने के चिन्ह दिखाई दे रहे थे । आलोच्यकाल में प्रबंध काव्यों का सृजन बहुत ही कम हुआ है । इस युग में ज्ञान वैराग्य युक्त बोधदायक काव्यों का प्रचलन बहुत ही पाया जाता है ।

3.20 शामळभट्ट

संपूर्ण मध्यकालीन गुजराती साहित्य में प्रथम पंक्ति का स्थान प्राप्त करनेवाले कवियों में नरसिंह, मीरा, दयाराम और शामळ भट्ट हैं । शामळ भट्ट ने अन्य कविओं से भिन्न प्रकार के साहित्य का सृजन किया है । प्रेमानंद के आख्यान, लोकमनोरंजन के साथ साथ धर्मोपदेश युक्त हैं जबकि शामळ भट्ट ने समाज के सामान्य स्तर के मानव के लिए साहित्य का सर्जन किया है जिसका साधन धर्म नहीं लेकिन लौकिक व्यवहार है । कवि ने आम आदमी के हृदय में निरंतर घूमनेवाली रीति से कथ्य उठाया है उसमें मौलिकता का पुट भरकर अपने ढंग से प्रस्तुत किया है । कवि ने जन समाज का गहरा अध्ययन किया है । ये मौलिकता के आग्रही है । काव्य के विषय में शामळ अपना विचार यों प्रकट करते हैं –

''सादी भाषा सादी कड़ी सादी वात विवेक;
सादामां शिक्षा क्ये तेज कवि जन एक ।''[53]

कवि के मतानुसार ज्यादा पढ़ना आवश्यक नहीं, नीति का उपदेश एवं जनकल्याण की भावना ही मुख्य है । शामळ भट्ट ने रामकथा संबंधी दो कृतिओं का सृजन किया है (1) अंगदविष्टि (2) रावण मंदोदरी संवाद । मध्यकालीन गुजराती साहित्य में दोनों कृतिओं का विशेष महत्त्व माना जाता है । अतः दोनों कृतिओं का सविस्तृत उल्लेख आवश्यक है ।

अंगद विष्टि :

आलोच्य कृति दोहा, छप्पय और कवित्त पर आधारित है । यह तीन सौ साठ (360) कड़ियों में लिखा गया काव्य है । काव्य के विस्तार एवं कड़ियों की संख्या के विषय में मतैक्य नहीं हैं । भिन्न भिन्न प्रतों में कड़ी की संख्या भिन्न भिन्न हैं । कथा के विषय में देखें तो – प्रारंभ में कवि राम को हृदय में धारण करके चौदह कड़ी तक गणेश जी की वंदना करता है । कथा का प्रारंभ समुद्र पर सेतु बंध हो गया है । राम येन केन प्रकारेण युद्ध को रोकना चाहते हैं । अतः विष्टि के विषय में सोचते हैं । रावण के पास किसे भेजा जाये ? हनुमान जी में अपार शक्ति है लेकिन सहिष्णुता का अभाव है । सुग्रीव राजा है अतः ऐसा निम्न कार्य कैसे सौंपा जाये ? नल, नील जामवान ठीक है लेकिन राम के हृदय में इन लोगों के प्रति उतना विश्वास नहीं जितना होना चाहिए । अतः अंगद उनकी दृष्टि में खरा उतरता है । राम अंगद को रावण के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए उसकी सिख देते हैं । भाषा डींगल के समान है । राम कहते हैं –

“वळी साम दाम भेदे करीने, विष्टि वधारी वाघजो,
मूरखनुं मन माने नहीं, शूरपणुं त्यां साधजो ।।”[54]

अंगद लंका पहुँचता है । लंका नगरी का वर्णन कवि ने विस्तार से किया है । प्रारंभ में अंगद और सामद का संवाद चलता है । रावण सीधे रूप से अंगद को कुछ नहीं कहता और अंगद सामंद से नहीं कहता मगर सीधा

रावण से कहता है । इस संवाद में अश्लीलता आ गई है । बाद में रावण–अंगद संवाद प्रारंभ होता है, जिसमें रावण ने अपना शौर्य व्यक्त किया है । अतः अंगद राम के पराक्रमों के विषय में विस्तार से कहता है । रावण कूटनीति का प्रयोग करता है, जिसमें अंगद को यह समझाने का उपक्रम करता है कि तुम्हारे पिता जी निर्दोष थे, फिर भी रामने उनकी हत्या की है । मैं और तुम्हारे पिता अच्छे मित्र रह चुके हैं । अतः तुम्हारा यहाँ से वापस जाना ही श्रेयस्कर है । अंगद वापस आता है । उसके पूर्व रावण ने अंगद को पकड़ने का एवं दंड देने का प्रयत्न किया था जो सफल नहीं हुआ । अंत में युद्ध होता है । रावण का अंत होता है । राम सीता के साथ अयोध्या आते हैं । शामळ भट्ट ने आदि रामायण के युद्धकाण्ड के 41 (इकतालीस) वें सर्ग का आधार लिया है किन्तु कई मौलिक परिवर्तन किए हैं । एक उल्लेख यहाँ आवश्यक है – मंदोदरी रावण को समझाती है, जिसमें कायर न बनने के लिए कहती है । कवि का यह मौलिक प्रयोग दर्शनीय है यथा –

“मानुनी कहे बेसुं माळिये, जुद्ध जोउं छुं ताहरुं ।
कायर थशो मा कंथडा, वचन मानो ए माहरुं ।।”[55]

आलोच्य कृति के अंत में कवि ने रावण की प्रशंसा की है । कवि ने ऐसा कहा है कि रावण शक्तिशाली था जिसका वध करने के लिए परमात्मा को मनुष्यावतार लेना पड़ा । कवि के वर्णन में कहीं कहीं औचित्य भंग पाया जाता है, जिससे रसाभास होता है । अंगद रावण संवाद में अंगद रावण की माता के लिए अशोभनीय शब्दों का प्रयोग करता है । जिसमें रंडा, कुती, सर्पिणी कटकटी, अर्भकी आदि हैं ।

रावण मंदोदरी संवाद :

यह शामळ भट्ट की दूसरी उल्लेखनीय कृति है । आलोच्य कृति के पूर्व इसी शीर्षक से चार रचनाएँ पायी गयी हैं । जिनमें पंद्रहवें शतक में जैन

मुनिलावण्य समय का 'रावण मंदोदरी संवाद', सोलहवें शतक में प्रभाशंकर का 'रावण मंदोदरी संवाद' उपर्युक्त कृतियों में प्रभाशंकर कृत और भवानकृत कृतियाँ सामान्य कोटि की मानी जाती हैं । लावण्य समय कृत अति सुन्दर कृति है । श्रीधर कवि पर लावण्य समय जैन कवि का पूरा प्रभाव पाया जाता है । श्रीधर कवि की कृति साहित्यिक है । आलोच्य कवि शामळ भट्ट पर श्रीधर एवं लावण्य समय दोनों का बराबर रूप से प्रभाव पाया जाता है । कृति में 204 (दो सौ चार) कड़ी है, इनमें दोहरा चोखरा, छप्पा, कवित नामक छंद पाये जाते हैं । प्रारंभ मे स्तुति है जिसमें क्रमशः गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, महेश और गुरु की विस्तार से वंदना की गई है । रामकथा का संक्षेप में संकेत करके कवि अपने प्रतिपाद्य की ओर तेजी से अग्रसर होता है । सरयू नदी के तट पर अयोध्या नामक नगरी है । दिलीप, रघु, अज और दशरथ नामक वहाँ के राजा हो गये । दशरथ के चार पुत्र राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुध्न हैं । चारों के विवाह के बाद अपर माता के वचन अनुसार राम वन में जाते हैं, साथ में सीता और लक्ष्मण भी हैं । वन में शूर्पनखा आती है । शूर्पनखा के नाक, कान के छेदन से उसका भाई रावण क्रोधित होकर सीता को उठा लाता है । बाद में रावण मंदोदरी संवाद प्रारंभ होता है । शामळ की मंदोदरी वाल्मीकि की मंदोदरी के समान भीरु और सहिष्णु भी नहीं हैं । मंदोदरी रावण से कहती है कि राम आम मानव नहीं है, त्रिलोकपति है । आपने सीताहरण करके अच्छा कार्य नहीं किया है । राम की शक्ति के विषय में कहती है कि जिसका एक सेवक (हनुमान जी) इतना बलवान हों तो ससैन्य उनकी शक्ति कितनी होगी ? रावण मंदोदरी को समझाता है कि, तुम्हें पता ही है कि सब देवताओं पर मैंने विजय प्राप्त की है, कुंभकर्ण जैसा मेरा भाई है, इन्द्रजीत जैसा मेरा पुत्र है अतः डरने की कोई आवश्यकता नहीं । रावण अभिमान युक्त अपनी शक्ति का पुनः पुनः उच्चार करता है तब मंदोदरी कहती है कि –

विश्वपति साथ जो वेर वधारशो उडया जशो आंकना तुर पेर[56]

इतना स्पष्टतः लक्षित होता है कि शामळ भट का रावण वाल्मीकि रामायण के रावण के समान पूर्ण रूपेण प्रतिनायक नहीं है । राम के प्रति शामळ के रावण के विचार कुछ ऐसे हैं

'आज एकांत छे भ्रांत भागुं भली वात वनिता प्रत्ये वेण पामुं
दशरणतणा नंदन ने आद्य ओळखुं अमो नेह शुं देह नहीं शिश नामुं ।
नेह निःशंक शुलंग लगि आवशे, शूर सजी सहु सैन्य सामुं,
आज इच्छु घणुं काम हुं एटलुं वेरभाव थी वैकुंठ पामुं ।'[57]

रावण राम को विश्ववंद्य मानता है । रावण अपना पूर्वजन्म जानता है । उसका मत है कि वैर रखने से ही भगवान जल्दी प्राप्त होते हैं । इसलिए ही वह बैर भाव से मुक्ति प्राप्त करना चाहता है । शामळ ने कथा में नवीनता लाने का प्रयास भी किया है, जैसे वह सीता को वापस लौटा देने के लिए लंका नगरी के सब वर्ण के लोगों का मंतव्य जानना चाहता है । शामळ भट्ट ने अठ्ठारह वर्ण का उल्लेख किया है, जिसमें चौवन जाति के लोगों का मंतव्य दिया गया है जिसमें काने, अंधे, हिजड़े, विधवा, रोगी, बहरे, अपाहिज आदि आदि लोगों की जाति बताई गई है । प्रायः सब जाति के लोगों ने राम से बैर न रखने के लिए कहा है । अपवाद स्वरूप हिजड़ों ने ही ऐसा कहा है कि बंदर और मनुष्य से नहीं डरना चाहिए । यहाँ रामराज्य की तरह रावण ने प्रयोग किया है । जनमत का रावण राज्य में भी महत्त्व है । इसमें हास्य रस का परिपाक हुआ है । हास्य के साथ साथ ज्ञान और नीति की उपदेशात्मक बातें भी पायी जाती हैं । कवि ने कहावतों का भी खुलकर प्रयोग किया है । आलोचकों ने आलोच्य कृति को वीर और हास्य रस युक्त माना है ।

3.21 काळिदास

प्रहलादाख्यान और ध्रुवाख्यान के रचयिता ने 'सीता स्वयंवर' नामक राम काव्य संबंधी कृति का सृजन किया है जो प्राचीन काव्य त्रिमसिक के अंक 1 (एक) में श्री हरगोविंददास कांटावाला और नाथाशंकर शास्त्री ने प्रकाशित किया है । प्रस्तुत विषय पर हरिराम और वजिया कवि ने सीता स्वयंवर और सीतावेली नामक स्वतंत्र कृतियों का निरूपण भूतकाल में किया ही था । उक्त दोनों कृतियों से आलोच्य कृति आकर्षक एवं सरस है । सीता स्वयंवर इक्कीस कड़वे में रचा हुआ आख्यान काव्य है । प्रारंभ के दो कड़वों में गणेश और शारदा की स्तुति है । बाद में कवि ने कविता की परिभाषा देकर सूर्यवंश की नामावली प्रस्तुत की है । अयोध्या में अकाल, ऋष्यशृंग ऋषि का आख्यान प्रसंग, रानियों को पायसदान और सब को गर्भवती होते हुए कवि ने बताया है । बाद में रामजन्म महोत्सव, बाललीला वर्णन, यज्ञोपवित प्रसंग, विश्वामित्र का आगमन, राम और लक्ष्मण को यज्ञ की रक्षा हेतु वन में ले जाना, अस्त्र विद्या का ज्ञान आदि का वर्णन आठवें कड़वें तक है । यहीं से कथा में मोड़ आता है । कथा में सीता संबंधी चित्रण प्रारंभ होता है । सीता की उत्पति, वृद्धि आदि । जनक राजा सीता स्वयंवर के लिए अनेक राजाओं को निमंत्रण भेजते हैं । विश्वामित्र को भी विवाह की पत्रिका भेजते हैं । राम विश्वामित्र की आज्ञा से मिथिलानगरी की शोभा देखने जाते हैं । नगर की महिलाएँ राम से मोहित होती हैं । सीता जनक की वाटिका में गौरी पूजनार्थ जाती है । सीता राम को देखती है । प्रथम दृष्टि में ही राम के प्रति प्रेम उत्पन्न होने के कारण यही (राम) उसके पति हों ऐसी कामना गौरी से करती है । वर्णन की दृष्टि से बारहवाँ कड़वा सुन्दर है स्वयंवर के लिए जो मंडप बनाया गया है वह अनुपम है । धनुष का भंग, रावण, देवताओं एवं सहस्र राजाओं से भी नहीं होता । राम उसी धनुष के तीन टुकड़े कर देते हैं । धनुषभंग की ध्वनि से परशुराम क्रोधित होकर वहाँ आते हैं । राम उनकी स्तुति करके उनका तेज

हरण करते हैं जिससे वे शस्त्र त्याग करके कोंकण में चले जाते हैं । दशरथ राजा को विश्वामित्र राम के पराक्रम के विषय में विस्तार से बताते हैं । अंत में विश्वामित्र की स्तुति, बारात की वापसी, सीता को माता की सीख आदि का वर्णन है । यह कृति कवित्व चमत्कार से पूर्ण उतम कृति है । कवि ने कई मौलिक परिवर्तन भी किए हैं, जैसे आदि रामायण में सीता गौरी पूजन के लिए नहीं जाती जबकि कालिदास ने ऐसा किया है । परशुराम वाल्मीकि रामायण में बारात की वापसी के समय रास्ते में मिलते हैं जब कि कवि ने मिथिला में ही परशुराम को प्रस्तुत किया है । इसमें तुलसीदास जी का प्रभाव पाया जाता है । रामचरितमानस में ऐसा ही वृतांत है, जैसे रामचरितमानस के बालकाण्ड में विश्वामित्र रामलक्ष्मण को नगर देखने की आज्ञा देते हैं –

''जाइदेखि आचडु नगरु सुख निधान दोउ भाइ ।
करहु सुफल सबके नयन सुंदर वदन देखाइ ।।''[58]

कविने इस तरह लिखा है –

''मागी ॠषि पासे आगन्या सुहागी रघुनाथ
चाल्या नगर निरखवा भेळां बन्ने भ्रात ।।''[59]

इसी तरह रामचरितमानस में सीता पुष्प वाटिका में प्रार्थना करती हुई कहती है कि –

''मोर मनोरज जानहु नीके । बसहु सदा उर पुर सबही कें
कीन्हेउ प्रकट न कारन तेहीं । अस कहि चरन गहे वैदेही ।।''[60]

काळिदास ने ऐसा ही कुछ कहा है,

''प्रभु चरणे वळग्युं चित्त अलगुं न थाये,
करे पूजन देवीनुं घरे मनमां अभिलाष
माता रघुवर ने करे भांजजी पिनाक ।।''[61]

इस प्रकार रामचरितमानस और काळिदास कृत सीता स्वयंवर में कहीं कहीं समानता पायी जाती है । राम और लक्ष्मण जब मिथिलानगरी में जाते हैं तब वहाँ की युवतियाँ

'कोई मानुनी वधावे भरी मोतीडानां थाळ,
कोई जीवनमां तेडी जई करे उपचार,
कोई आपे वस्त्रो अनुपम हीरा तणां हार ।।''[62]

उक्त वर्णन में कृष्ण काव्य का प्रभाव पाया जाता है । श्रीमद भागवत पुराण में भागवतकार ने कुछ ऐसा ही लिखा है कि – ''पछी हवेलीओनां शिखरो पर चडेली अने प्रीतिथी प्रफुल्ल मुख कमळवाली ते मदमाती स्त्रीओए बळदेवजी अने श्रीकृष्ण उपर पुष्प वृष्टि करी'' आलोच्य कृति में शांत, वीर और श्रृंगार रस की निष्पति पायी जाती हैं । चरित्र चित्रण में कवि को पूर्णतया सफलता मिली है । कवि ने कृति में तत्कालीन गुजराती समाज एवं उक्त समय के रीति रिवाजों का निरूपण किया है । काव्य का शीर्षक सार्थक है । सीता स्वयंवर के संबंध में श्रीमती कीर्तिदाबहन मेहता कहती हैं कि ''आम मात्र एकज कडवाना आ लघुकाव्यमां सीता स्वयंवर विदायना मधुर मंगल छतां करुण एवा प्रसंगनुं मनोहर आलेखन एमां मळी आवे छे.''[63] कीर्तिदाबहनने अपने मंतव्य में 'सीता स्वयंवर' एक कड़वा की कृति बताया है, जो ठीक नहीं । कृति में इक्कीस कड़वे हैं । संभव है महीपतराम ने एक ही कड़वा दिया हो । उन्होंने जो कड़वा दिया है वह इक्कीसवाँ है । अनंतराय रावळ, चिमनलाल त्रिवेदी, मंजुलाल मजमुदार कवि कालिदास कृत 'सीता स्वयंवर' का उल्लेख करते हैं लेकिन उन्होंने उक्त कृति एक कड़वे की है वैसा नहीं कहा ।[64]

मध्यकालीन गुजराती साहित्य की कवयित्रियाँ :

मध्यकालीन गुजराती साहित्य में गवरीबाई का उललेख आवश्यक है । मीरा के पश्चात् उन्होंने वेदांत विचार धारानुसार अपने विचार प्रस्तुत किए हैं । खेद का विषय है कि गवरीबाई के विषय में हम विस्तृत प्रकाश नहीं डाल सकते क्योंकि इनका समय मध्यकाल नहीं है । रामभक्ति के संबंध में अब तक तीन कवियत्रिओं के नाम पाये जाते हैं जिसमें पूरीबाई दिवाळीबाई और कृष्णाबाई हैं । इनमें कृष्णाबाई और पूरीबाई की कविता ही प्रामाणिक मानी जाती है ।[65]

3.22 पूरीबाई

इनकी 'सीता मंगळ' राम कथा विषयक महत्त्वपूर्ण कृति है । आलोच्य कृति का प्रकाशन बृहत् काव्यदोहन भाग–1 संपादक ईच्छाराम सूर्यराम देसाईने पृष्ठ 896 पर एवं महीपतराम नीलकंठ ने काव्यदोहन पृष्ठ 447 से 450 पर किया है । 'सीता मंगळ' का काव्य स्वरूप पदमाला अथवा लघुआख्यान सा है । इसमें छः कड़वें पाये जाते हैं । कड़वे के अंत में वलण नहीं दिया गया । प्रारंभ में सीता की वंदना की गयी है । सीता स्वयंवर के लिए मंडप सजाया गया है । रावण के अलावा अनेक राजाओं का आगमन हुआ है । सीता राम के साथ विवाह करना चाहती है । वह प्रार्थना करती है और राम सुनते हैं । अन्य राजाओं को सफलता नहीं मिलती । राम धनुष भंग करके सीता को प्राप्त कर लेते हैं । बारात का आगमन होता है । दूल्हे राम की शोभा परंपरित रूप से वर्णित है । कन्यादान का प्रसंग मर्मस्पर्शी एवं आकर्षक है । छट्टा और अंतिम कड़वा अन्य कड़वों से विस्तृत है । बारात की वापसी और फलश्रुति इसी कड़वे में संक्षेप में हैं । कवयित्री ने नारी सहज निरीक्षण शक्ति का विवाह के समय का ज्ञान और सूझबूझ का अच्छी तरह से परिचय दिया है । एक उदाहरण पर्याप्त होगा –

राम विवाह के लिए जा रहे हैं, उनकी शोभा अवर्णनीय है । माता को चिंता है कि मेरे लाडले पर किसी की कु दृष्टि न पड़े । कौशल्या राम को उक्त बाधा से मुक्त करने के लिए काला टिका लगाती है यथा –

"माताते नयणे अंजन करे, कंकु चंदन रघुपतिने धरे,
माताते मनमां एवुं भणे, रखे कुंवर कौनी दृष्टि पड़े ।।"[66]

उक्त उदाहरण में गुजरात के रीति रिवाजों का परिचय प्राप्त होता हे, जो स्वाभाविक, चित्रात्मक और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण जैसा प्रतीत होता है । संक्षेप में 'सीता मंगल' में विवाह विधि, बारात क स्वागत, भोजन और कन्या बिदाई के प्रसंगों का निरूपण है ।

3.23 *कृष्णाबाई*

'सीता जी नी कांचळी' रामकथा संबंधी संवाद शैली में लिखी गई कवयित्री की कृति है । काव्य का उद्देश्य कांचळी या कंचुकी के प्रसंग होने से चरित्रों के विकास पर ध्यान कम दिया गया लगता है । वाल्मीकि रामायण में सीता जब स्वर्ण मृग को देखती है तब राम और लक्ष्मण को वहाँ बुलाती है । लक्ष्मण स्वर्ण मृग की असंभावना बताते हुए मायावी मारीच की माया बताते हैं । राम सीता के समान कनक मृग को विस्मय की दृष्टि से देखते हैं । सीता मृग के साथ खेलना चाहती है । यदि मृग जीवित अवस्था में हाथ में न आये तो उसका चर्म प्राप्त करके राम के साथ बैठना चाहती है । अन्यत्र कहीं ऐसा उल्लेख नहीं मिलता कि सीता मृगचर्म की कंचुकी बनाकर पहनना चाहती है । वाल्मीकि रामायण में ऐसा उल्लेख नहीं है । तुलसीदास जी ने भी रामचरितमानस में कंचुकी का उल्लेख नहीं किया । 'सीता जी नी कांचळी' नामक कृति का सृजन करनेवाली नारी है । अतः नारी स्वभाव का वर्णन नारी के अलावा कौन कर सकता है ? कहना चाहिए कि कथानक की

उपज कृष्णाबाई की ही है जो मौलिक है । इस कृति में संवाद मार्मिक बन पड़े हैं जैसे –

"सीता : शूर्पणखा भगिनी रावणनी,
तेनो शो हतो वांक रे,
वण अपराधे ते अबलाना
छेद्यां कर्ण ने नाक रे ।।"[67]

राम सीता के प्रश्न का उतर देते हुए कहते हैं कि

राम : शूर्पणखा कहे मुज ने परणो
ते मारे मन नव भावे रे,
एक थकी अमे वाज आव्या,
तो बीजीने कोण लावे रे ।।"[68]

उक्त दोनों अंशों से सामान्य मानव की प्रतीति होती है । बाद में सीता यौवन को चार दिनका मेला कहकर उपभोग की बात करती है । राम को सीता प्रिय है अतः वह मर जानेकी धमकी देकर अपनी मनमानी करवाने का प्रयास करती है, जिसमें उसे सफलता मिलती है । राम स्वर्णमृग लाने के लिए जाते हैं । आलोच्य कृति के द्वारा कवयित्री को स्त्रियों को बोध देना चाहती है कि ऐसी गलत हठ नहीं करना चाहिए । पति की आज्ञा का उल्लंघन करके सीता जैसी सती को दुःख एवं वियोग का सामना करना पड़ा तो आम स्त्री की बात ही क्या ?

श्री कृष्णलाल झवेरी और हीराबहन पाठक आलोच्य कृति को 'सृंदर सरल निर्व्याज मनोहर काव्य कृति मानते हैं ।"[69] श्रीमती कीर्तिदा बहन मेहता – 'सीता जी नी कांचली' को 'अनन्य काव्य' कहती हैं ।[70]

3.24 राजाराम

कवि के जीवन के संदर्भ में अब तक कोई प्रामाणिक आधार नहीं मिलता । बृहत् काव्य दोहन के ग्रंथ 8 में राजाराम के राम कथा विषयक पद पाये जाते हैं । कृति का नाम 'रामकथा' है । इसमें ग्यारह पद पाये जाते हैं, जिनमें पद संख्या 7 (सात) और 8 (आठ) नहीं है । कवि ने अयोध्याकाण्ड से लेकर युद्धकाण्ड तक के प्रसंगों का समावेश किया है । प्रारंभ में राम वन में जाने की तैयारी करते हुए दिखाये हैं । कौशल्या राम को वन में जाने से रोकने का उपक्रम करती है । बाद में राम वन में जाते हैं, भरत ननिहाल से आते हैं । कैकेयी को कटू वचन कहकर वन में आकर राम से मिलते हैं । राम भरत को अपने अवतार कार्य का उल्लेख करके उनको समझाते हैं । नौवे पद में सीताहरण हो चुका है । राम लक्ष्मण से सुग्रीव की मैत्री होती है । हनुमान लंका में सीता को मिलकर लंका दहन करके किष्किंधा वापस आते हैं । बाद में राम विजय और राज्याभिषेक का वृतांत है । मूल रामायण से तुलना करने की आवश्यकता ही नहीं क्योंकि कवि मूल रामायण से पूर्णतः परिचित लगते हैं । घटनाक्रमों की उपेक्षा करके भक्ति के प्रभाव में काव्य का सृजन किया हों ऐसा लगता है । आलोच्य कृतिमें कई दोष पाये जाते हैं कालव्युत्क्रमदोष, अनौचित्यदोष एवं राम के मुँह से अपनी ही प्रशंसा ठीक नहीं लगती । लंका में हनुमान जी जब सीता से मिलते हैं तब राम की दी हुई मुद्रिका देते हैं । अतः सीता प्रसन्न हो जाती है –

"प्रसन्न थयां रे माता जानकी, मस्तक मेलो रे हाथ ।
चिरंजीवो तमो महाबली, चांप्यो रुदिया संगात ।।"[71]

उक्त अंश में सीता हनुमान जी को पुत्रवत् ही मानती है, फिर भी सीने से लगाना अनौचित्य ही है । एक और उदाहरण देखें भरत राम को अयोध्या वापस आने के लिए समझाते हैं, विनंती करते हैं कहते हैं कि – "माता पिता धणुं वृद्ध छे."[72]

वास्तव में ननिहाल से आने के पूर्व ही दशरथ राजा का स्वर्गवास हो गया था । संक्षेप में भ्रातृहृदय का एवं मातृप्रेम का उत्कृष्ट वर्णन आलोच्य कृति का उज्जवल अंश है ।

3.25 रणछोड

मध्यकालीन गुजराती साहित्य में रणछोड नाम से अनेक कवि पाये जाते हैं । बृहत् काव्य दोहन ग्रंथ 8 संपा. ई. सू. देसाई ने रणछोड कवि का 'रावण मंदोदरी संवाद' दिया है । साथ साथ तीन फूटकल पद भी दिए हैं, जिन में से दो कृष्ण–संबंधी और एक राम काव्य संबंधी है । आलोच्य कृति के प्रारंभ के तीन पद गायब है । प्रकाशक हस्तप्रति के प्रारंभ के पृष्ठ अनुपलब्ध होने के कारण नहीं दे पाये । चौथे पद से काव्य का आरंभ होता है, जिसमें मंदोदरी रावण को अपने दुःस्वप्न के विषय में बताती है । संक्षेप में वह यह कहना चाहती है कि रावण ने जो सीता का हरण किया है वह ठीक नहीं है । रावण अपनी सामर्थ्य के बारे में संदेह न करके विश्वास रखने की बात मंदोदरी को कहता है । मंदोदरी राम को भगवान का अंश और अवतार बताकर असामान्य सिद्ध करने का प्रयत्न करती है इससे रावण क्रोधित होता है और मंदोदरी से कहता है कि राम मानव है, वह मेरा आहार है । भालू और बंदर सेना मेरे भाई कुंभ कर्ण का आहार है । यहाँ रावण–मंदोदरी–संवाद पूर्ण होता है । आगे कथानक वर्णनात्मक शैली में आगे बढ़ता है । रावण को युद्ध के विषय में पता चलता है । रावण किसी भी स्थिति में झुकना नहीं चाहता । वह बार बार गर्व करता है । ग्यारहवें और बारहवें पद में फिर रावण मंदोदरी संवाद चलता है । रावण मंदोदरी से कहता है कि मैं मिथिला सीता स्वयंवर में उपस्थित था । सीता राम को मिली, मुझे नहीं, तब से मेरा बैर राम से हो गया । शूर्पनखा के नासिका और कर्ण छेदन से वह बैर दृढ़ हो गया । अब मैं किसी भी हालत में सीता को वापस लौटाने वाला नहीं

हूँ । राम की अवश्य पराजय होगी । इस प्रकार रावण मंदोदरी को अपनी बात समझाने का उपक्रम करता है । रणछोड कवि ने रावण मंदोदरी संवाद में नवीनता लाने के लिए काव्य रूप में परिवर्तन किए हैं । अब तक के काव्य रूपों में संवाद कड़िओं के स्वरूप में पाये जाते थे लेकिन कवि ने आलोच्य कृति में संवाद पद के रूप में प्रयुक्त किए हैं । कवि ने रावण के चरित्र को मंदोदरी के चरित्र से उद्दात अंकित किया है – यथा –

“मर्ण आव्युं हशे माहरुं, हरिने हाथे हणाशुं
लंका लेइ वैकुंठ आपशे, तेमां लाभ शो खोशुं ।।”[73]

और

“शत्रुभावे सनमुख मरुं पामुं पद रज सार ।”[74]

आलोच्य कृति के पूर्व की कृतियाँ जो श्रीधर और लावण्य समय ने लिखी हैं, उन के समान यह नहीं है ।

3.26 रामैयो

कवि के जीवन के संदर्भ में प्रामाणिक उल्लेख अप्राप्य है । कवि ने ‘सीता जी ना बार मास’ नाम कृति का सृजन किया है । बृहत् काव्य दोहन के ग्रंथ 5 (पाँच) में आलोच्य कृति प्राप्य है । प्रस्तुत काव्य पर कृष्ण काव्य का स्पष्टतः प्रभाव लक्षित होता है । कथा सीताहरण से प्रारंभ होती है । राम के विरह में सीता की दयनीय स्थिति का वर्णन बड़ा ही मार्मिक है । कार्तिक मास से अश्विन मास तक का वर्णन पाया जाता है । चार चार कड़ी के काव्य रूप में कवि ने अपनी अभिव्यक्ति की है । विप्रलंभ श्रृंगार का वर्णन प्रभावोत्पादक बन पड़ा है । आषाढ़ माह का वर्णन देखें तो

“सखी आविओ अषाढ़ मास, बपैंयो पियु पियु करे,
मुशलधारे वरसे मेह, आभमांथी उतरे

सखी एक अंधारी रात, बीजी चमके दामिनी

जेनो पियु गयो परदेश, सेज शा कामनी ।।"[75]

संक्षेप में 'सीता जी ना बारमास' कृति का ऐतिहासिक मूल्य है ।

3.27 दयाराम

कवि सम्राट दयाराम को बाँसुरी के शब्दों का कवि माना जाता है । दयाराम पूर्णतया कृष्ण भक्त कवि हैं किन्तु उनके 'हनुमान गरुड़ संवाद' नामक काव्य का उल्लेख करना आवश्यक है । उसकी कथा इस प्रकार है – कृष्ण के उद्यान में गरुड़ रक्षा हेतु पहरा देता है । हनुमान जी वहाँ जाकर फल खाने लगते हैं । गरुड हनुमान को फल खाने से रोकता है । दोनों में संवाद होता है, आक्षेप होते हैं । दोनों एक दूसरे के आराध्य के प्रति कटूवचन कहते हैं, जैसे गरुड कहता है –

परणी स्त्री एकली अबळा ने बहारवटो दीधो

सहित प्रेमदा पुत्र पोताना ब्राह्मणे पाळ्या ।।[75]

हनुमान गरुड के आक्षेप का उतर देते है कि –

वण परणी बहु अबळा साथे रंगे पण रमियो

व्यभिचारी ब्रजनाथ रघुवर एक पत्नी पणिया ।।"[76]

आगे चलकर गरुड राम के निवास के विषय में पूछता है । दोनों द्वारिका आते हैं । वहाँ एक चमत्कार दिखाया गया है । वहाँ कृष्ण राम का रूप लेते हैं और रुक्मणी सीता बनती है । अतः हनुमान उनकी स्तुति करने लगते हैं । हमने आगे उल्लेख किया है उसी अनुसार कवि कृष्ण भक्त है अतः फलश्रुति अपनी ही देते हैं । वे उदारमतवादी हैं अतः कृति के अंत में कहते हैं कि –

"जुगल नाम पण जोता दीसे उभय एक रूप,
हळया मळयां हनुमान गरुड संदे सहुना टळिया
ए वाणी विलास कर्यो नथी निंदा उचारी ।।[77]

उनका कहना यही है कि राम और श्याम दोनों एक ही है । परोक्ष संबंध के कारण भी कृति राम एवं कृष्ण के चरित्र संबंधी महत्त्वपूर्ण बातों का उद्घाटन करने में सफल हुयी है । दयाराम कवि की एक अन्य कृति 'दशावतार' है आलोच्य कृति में कवि ने राम की स्तुति की है । बाद में सब अवतारों को कृष्ण के ही अवतार बताये हैं । अतः नामोल्लेख करना ही आवश्यक है, आलोचना नहीं ।

3.28 प्रीतम

कवि प्रीतम ने 'अध्यात्म रामायण' का सृजन किया है । हमारे विषय क्षेत्र में आलोच्य कृति का समावेश नहीं होने का कारण हम आलोचना नहीं करते । 'अध्यात्म रामायण' के अलावा 'राम रटण कर रंगमां', 'अंग आनंद आणी' और जय जय श्री जानकी राय भक्त हितकारी नामक पद पाये जाते हैं । इसका प्रकाशन संपा. ईच्छाराम सूर्यकान्त देसाई ने बृहत काव्यदोहन ग्रंथ 2 (दो) में पृष्ठ 715 पर किया है । इन कृतिओं का रामकथा से प्रत्यक्ष संबंध नहीं होने से सिर्फ उल्लेख मात्र आवश्यक है ।

3.29 जगजीवन

कवि ने 'रामकथा' नामक कृति का सृजन किया है । काव्य कला की दृष्टि से कृति सामान्य है ।

3.30 धीरो

धीरा कवि के नाम पर 'रणयज्ञ' नामक कृति पायी जाती है जिसका सिर्फ ऐतिहासिक मूल्य है ।

उक्त कृतियों के अतिरिक्त मध्यकालीन गुजराती साहित्य में राम कथा विषयक कृतियाँ मिलती है । बृहद काव्य दोहन में नीरांत रचित तीन पद,[77] डुंगर बारोट के दो पद[78], अग्रदास रचित दो पद[79] प्राप्त होते हैं । उक्त अंशों में राम को परमात्मा के रूप में एवं आत्मा की मुक्ति के लिए राम स्मरण ही श्रेष्ठ है ऐसा बार बार कहा गया है ।

3.31 रणछोडजी दीवान

कवि ने 'रामायणनां रामवाळा' नामक कृति का सृजन किया है, जिसका नामोल्लेख ही पर्याप्त है ।

हमारे शोध के विषय के आलोच्य समय के अंतर्गत कवि भोजा, बापु साहेब, भाणदास, जीवनदास, त्रीकम कवि के अलावा स्वामिनारायण संप्रदाय के बारह कवियों ने अपनी कृतियों में कहीं न कहीं राम का उल्लेख किया है । यहाँ राम का उल्लेख अयोध्या के राजा के रूप में नहीं किन्तु अपने इष्टदेव के रूप में अंकित किया है । उन्नीसवें शतक के पूर्वार्द्ध में रघुनाथ और शंभु राम का उल्लेख करना आवश्यक है । इन्होंने 'लवकुशाख्यान' की रचना की है ।

3.32 रघुराम

इनका 'लवकुशाख्यान' नामक रामकथा विषयक काव्य पाया जाता है ।[80] कृति की रचना संवत् 1772 की है । किसी कृष्णराम भट्ट के शिष्य रघुनाथ कृत आलोच्य कृति की रचना 12 (बारह) कड़वों की है । वर्णन प्रायः परंपरित है । अब तक जितने 'लवकुशाख्यान' प्राप्त हुए हैं, उन सबका आधार वाल्मीकि रामायण नहीं किन्तु 'जैमिनीय अश्वमेघ' है । राम वनवास के कथा प्रसंग को लेकर लवकुश और सीता के अयोध्या में पुनरागमन तक की कथा इसमें वर्णित है । मूल कथा आधे आख्यान के बाद ही प्रारंभ होती है । आख्यान का समापन फलश्रुति से होता है । उसके पहले कवि कहते हैं कि

"नगर लोक माँ कर्यो जगत ते रुडी पेर
सीता जी पुत्र आव्या छे घरे ।।"[81]

3.33 शंभुराम

आलोच्य कवि की कृति का नाम 'लवकुशाख्यान' है ।[82] कृति तीस कडवों की है । रचना अब तक अप्रकाशित है । प्रारंभ में स्तुति है और वर्णन परंपरागत है । फलश्रुति के साथ आख्यान पूर्ण होता है –

"भावक भावे सीखे नरनारी सुणी गायजी
ते जन वहीकुंठ वासने पामे
सार करे रघुराय जी राम नामनो महिमा मोटो,
गातां पाप हरे बापुजी ।।"[83]

3.34 गिरधर

मध्यकालीन गुजराती साहित्य में गिरधरकृत रामायण का अपना विशिष्ट स्थान हैं । कवि ने 'रामायण' के अलावा 'दाणलीला', 'कृष्णजन्म वर्णन' राधाकृष्ण नो रास, 'प्रहलाद चरित्र' 'ग्रीष्म ॠतुनी लीला', 'तुलसीविवाह' 'राजसूय यज्ञ', 'कृष्ण चरित्र', 'जन्माष्टमी नो सोहेलो', 'नृसिंह चर्तुदशीनी वधाई' आदि कृतियों का सृजन किया है । उक्त कृतियों में से 'रामायण', 'कृष्ण चरित्र', 'तुलसी विवा'' और 'राजसूय यज्ञ' की अधिक प्रसिद्धि है । ग्यारह कृतियों में से 'रामायण' ही सबसे प्रसिद्ध और श्रेष्ठ रचना है । कृष्णचरित्र की कथा विस्तृत है लेकिन प्रसिद्धि उतनी नहीं । गिरधर ने रामायण की कथा को सात काण्डों में विभक्त किया है । कवि उन्हें अध्याय कहते हैं । उसका बाहय रूप आख्यान के कड़वें का है । प्रायः प्रत्येक अध्याय के अंत में 'वलण' का प्रयोग पाया जाता है । आम तौर से मध्यकालीन गुजराती साहित्य की अन्य रामकथा विषयक कृतियों में आलोच्य कृति का स्थान शीर्षस्थ माना जाएगा । आलोच्य कृति रामकथा आख्यान अथवा विस्तृत आख्यान नहीं साथ साथ भावानुवाद भी

है नहीं है, फिर भी यदि उसे किसी काव्य स्वरूप की संज्ञा देनी हो तो महाकाव्य सदृश रचना कह सकते हैं । अब हम आलोच्यकृति की संक्षिप्त चर्चा करेंगे ।

कवि ने 'रामायण' में कौन सा प्रसंग कौन सी कृति से लिया है उसका यथा संभव उल्लेख कर दिया है । उसने वाल्मीकि रामायण को ही नहीं, हनुमन्नाटक, पद्मपुराण अग्निपुराण और रामचरितमानस के प्रसंगों को भी यथा संभव आधार के रूप में गृहीत किया है । इतने ग्रंथों का आधार ग्रहण करने के पश्चात् भी यह नहीं कहा जा सकता कि 'रामायण' मात्र अनुवाद है । गुजराती साहित्य रसिकों के लिए गिरधर कृत 'रामायण' एक उत्कृष्ट एवं अनुपम कृति है । आज भी गुजरात के कई घरों में गिरधरकृत 'रामायण' का पाठ नियमित रूप से होता है । अतः आलोच्य कृति गुजराती समाज की एक उज्जवल भक्ति–रस युक्त कृति है ।

कवि ने बालकाण्ड के प्रारंभ में स्तुति की है जिसमें कवि के गुरु पुरुषोतम महाराज का उल्लेख है । उसके पश्चात् गणेश, सरस्वती और शंकर की स्तुति है । गिरधर अपनी नम्रता का भाव व्यक्त करते हैं । उसका कहना है कि कृति को काव्य कला की दृष्टि से नहीं किन्तु भक्ति रस युक्त हरि के गुणगान की कृति के रूप में देखने का यत्न करें । दूसरे अध्याय में कवि ने पूर्ववर्ती रामकथाओं का उल्लेख किया है । तीसरे अध्याय से राम कथा का प्रारंभ होता है । कवि का कहना है कि जिसके लिए रामचरित हुआ उसका वर्णन प्रस्तुत करना चाहिए अतः रावण की उत्पति के विषय में भागवत पुराण आदि ग्रंथों के अनुसार भगवान के दो दरवान जय और विजय थे । भगवान से शाप प्राप्त होने से दोनों को दानव कुल में जन्म लेना पड़ा । वे रावण और कुंभकर्ण के नाम से प्रसिद्ध हुए । इस वर्णन में रामचरितमानस का प्रभाव पाया जाता है । चौथे अध्याय में रावण, कुंभकर्ण और विभीषण की तपस्या, वरदान, विवाह, कुबेर की पराजय, रावण के हृदय में अमृत कुप्पी होने

के कारण रावण ने दिग्विजय किया । तुलसीदास जी ने रावण के हृदय में नहीं किन्तु नाभि में अमृत की बात कही है । पाँचवे अध्याय में रावण की विजय प्राप्त होने के कारण देवता उसकी सेवा करते हैं । रावण का अनाचार देखकर उसका भाई कुबेर सत उपदेश देता है । रावण क्रोधित होकर कुबेर की अलका नगरी को चारों ओर से घेर लेता है । इसी अध्याय में एक कथा यह भी है कि रावण एक बार कैलाश गया तब नंदी ने रावण को अंदर जाने से रोका । रावण नंदी का अपमान करता है । इससे नंदी रावण को शाप देता है । रावण पूरा कैलाशपर्वत उठाने का यत्न करता है । इससे पार्वती क्रोधित होती है । वह पैरों के अंगूठे से पर्वत को दबा देती है जिससे रावण चिल्लाता है । अन्य ग्रंथों में पार्वती द्वारा नहीं, शंकर द्वारा पर्वत को दबाने का वर्णन है । आगे रावण सहस्रार्जुन, बलिराजा एवं बाली से किस प्रकार पराजित होता है उसका वर्णन है । बलिराजा की रानी विंद्यावली के दूत का पासा रावण उठा नहीं पाता । यह वर्णन कवि का अर्थात् मौलिक है । छठ्े और सातवें अध्याय में रावण को ब्रह्मा के द्वारा पता चलता है कि उसकी मृत्यु दशरथ के पुत्र से होगी । अतः दशरथ के विवाह के पहले ही उसको एवं कौशल्या को मार डालने का प्रयत्न करता है । रावण नौका को तोड़ देता है । कौशल्या को लकड़ी की संदूक में बंद करके ऋषि रखवाली करते हैं । दशरथ राजा किसी तरह वहाँ पहुँच जाते हैं । नारद जी दोनों का विवाह वहीं कर देते हैं । रावण ब्रह्मा के पास जाकर अपने शौर्य एवं बुद्धि की प्रशंसा करता है । ऐसी कथा वाल्मीकि रामायण में नहीं किन्तु आनद रामायण में वर्णित हैं ।”[84] इसी अध्याय में पृथ्वी द्वारा गाय का रूप लेकर परमात्मा से याचना करने का वर्णन है । भागवत में भी यह प्रसंग वर्णित है । वाल्मीकि रामायण में देवता प्रार्थना करते हैं और विष्णु कहते हैं कि मैं दशरथ राजा के यहां अवतार धारण करूँगा । गिरधर कवि ने एक बड़ी गलती पहले काण्ड में की है । श्रवण के प्रसंग में उसकी मृत्यु के समय (1–9–25) ऐसा शब्द

प्रयोग किया है – 'कही राम पडियो तेहु तब तो राम का जन्म भी नहीं हुआ था, सो ठीक नहीं लगता । कवि ने आगे परंपरित कथानक में थोड़ा परिवर्तन किया है । रानियों को पायस देने की घटना में कवि ने ऐसा उल्लेख किया है कि चील (समड़ी) कैकेयी से पायस छीन जाती है और अंजनी को वह प्राप्त होता है । फलस्वरूप अंजनी के यहाँ पुत्र का जन्म होता है, जो हनुमान के नाम से प्रसिद्ध होता है । तेरहवें अध्याय में हनुमान के पराक्रम के विषय में बताया गया है । चौदहवें अध्याय में कौशल्या एवं अन्य रानियों की गर्भावस्था की स्थिति के विषय में वर्णन है । सोलहवें अध्याय में राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुध्न के जन्म का वृतांत है । गिरधर कवि ने कैकेयी के यहाँ दो पुत्रों का जन्म बताया है, वास्तव में सुमित्रा के यहाँ दो पुत्रों का जन्म होता है । सत्रहवें अध्याय में रावण के जन्म की कथा है । अठ्ारहवें अध्याय में राम की बाल लीला, उन्नीसवें अध्याय में राम तीर्थ यात्रा करते हैं । गिरधर ने तीर्थ यात्रा का वर्णन अध्यात्म रामायण के आधार पर किया है । कवि से एक गलती हो गई हों ऐसा लगता है सीता के जन्म से पूर्व सीता देवी नामक तीर्थ का उल्लेख किया है । (बालकाण्ड 20–60) इक्कीस से चौबीस अध्यायों में विश्वामित्र का आगमन, राम–लक्ष्मण का उनके साथ वन में जाना आदि वर्णित है । पच्चीस और छब्बीस अध्याय गंगा की उत्पत्ति के विषय में है जिसमें ब्रह्मा पार्वती पर मोहित होते हुए दिखाये हैं । पश्चाताप स्वरूप प्रत्येक पवित्र पदार्थों में से गंगोदक की उत्पत्ति होती है । गिरधर कवि की यह मौलिकता है । सताईस और अठ्ाईस अध्याय में ताड़िका वध और यज्ञ रक्षा का वर्णन है । उन्तीसवें अध्याय में अहल्या उद्धार और जनकपुर जाते हुए राम–लक्ष्मण का वर्णन है । अहल्या वरदान देती है कि राम का विवाह सीता से होगा । तीसवें अध्याय में अहल्या के शाप का कारण उसकी पुत्री अंजनी (हनुमान की माता) आदि का उल्लेख है । अंजनी को अहल्या और गौतम की पुत्री के रूप में बताया गया है । इक्कतीस और बत्तीसवें अध्याय में सीता जन्म का वृतांत

है । गिरधर कवि ने सीता के विषय में न्यूनतम उल्लेख किया है । सीता पद्‌माक्ष राजा की पुत्री थी । रावण पुत्री मानकर उसे लंका लाया । मंदोदरी ने रावण को यह कहा कि आपके विनाश का कारण सीता होगी । अतः रावण के सेवक सीता को संदूक में रखकर जनकपुर छोड़ आये । बाद में सीता जनक राजा की पुत्री कहलायी । उत्तरपुराण, वसुदेव हिन्डी, काश्मीरी रामायण तथा तिबेटी नोतानी रामायण में सीता को रावण की पुत्री बतलाया गया है ।[86] सीता का शिवधनुष के साथ घोड़ा घोड़ा का खेल खेलना आदि रामायण में नहीं तैंतीस से तैतालीस अध्याय में गिरधर ने यथा संभव परंपरागत वर्णन प्रस्तुत किया है । राम–लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ जनकपुर आते हैं । नगरदर्शन के लिए दोनों का जाना, सीता का पूर्वानुराग, चारों पूत्रों का विवाह, बारात की वापसी आदि है । राम सीता के पूर्वानुराग के विषय में आदि रामायण में उल्लेख नहीं है । चवालीसवें अध्याय में रास्ते में बारात की परशुराम से भेंट होती है । परशुराम से संघर्ष लक्ष्मण नहीं राम करते हैं । राम मर्यादा का लोप भी करते हैं । पैंतालीसवें अध्याय में परशुराम राम की स्तुति करते हैं । छ्यालीसवें अध्याय में अयोध्या में प्रवर्तमान आनंद का वर्णन है ।

अयोध्याकाण्ड के प्रथम अध्याय में गुरु की वंदना की गई है । दूसरे अध्याय में भरत और शत्रुध्न ननिहाल जाते हैं । तीसरे अध्याय में दशरथ राजा दर्पण में अपनी वृद्धावस्था के दर्शन करते हैं, अतः वे राम के राज्याभिषेक के लिए तत्पर होते हैं । दर्पण में देखने का प्रसंग लोक कथा पर आधारित है । चतुर्थ अध्याय में मंथरा का राम के साथ पूर्व वैर और उस में कळियुग का प्रवेश बताया गया है । इस प्रसंग का आधार आनंद रामायण एवं वाल्मीकि रामायण की हस्तप्रति है ।[87] पाँचवें अध्याय में मंथरा कैकेयी को आलिंगन देती है, फलस्वरूप मंथरा में स्थित कलि कैकेयी के शरीर में प्रवेश करता है । गिरधर कवि का यह वर्णन प्रेमानंद के नळाख्यान के समान है ।

छठ्ठे अध्याय में कैकेयी दशरथ राजा के पास दो वरदान मांगती है, जिनमें भरत को अयोध्या का राज मिले और राम को चौदह साल का वनवास । सातवें अध्याय में दशरथ राजा कैकेयी को समझाते हैं । कैकेयी अपनी बात को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होती । राम को कैकेयी की बात का पता चलता है, अतः वे वन में जाने के लिए तैयार होकर कौशल्या की इजाज़त लेने जाते हैं । आठवें अध्याय में कौशल्या राम की रक्षा के लिए प्रार्थना करती हैं । दशवें अध्याय में लक्ष्मण राम के साथ वन में जाना चाहते हैं । राम वशिष्ठ ॠषि की आज्ञा से संमति देते हैं । ग्यारहवें और बारहवें अध्याय में कवि ने कथा में परिवर्तन किया है । यहाँ राम लक्ष्मण और सीता राजा दशरथ की अनुमति लेकर वनगमन के लिए अयोध्या से निकलते हैं । दशरथ राजा सीता के मस्तक पर हाथ रखते हैं इतना ही नहीं लेकिन गोद में भी बिठाते हैं, यथा

''पछे भूपतिए वैदेहीने, बेसाडी खोळामांय;
मस्तक कर मूक्यो तदा, घणुं रुदन करे राय त्यांय ।।''[88]

राम गंगा पार करने के लिए नौका में बैठते हैं, वहाँ गुह राम के पैर नहीं धोता बल्कि उसकी माता यह कार्य करती है । तेरहवें अध्याय में राम–वाल्मीकि का मिलन बताया गया है । चौदहें अध्याय में सुमंत की वन से वापसी होती है जिससे करुण वातावरण उपस्थित होता है । पंद्रहवें अध्याय में दशरथ राजा की मृत्यु होती है, जिससे करुणता का चरमोत्कर्ष पाया जाता है । सोलहवें अध्याय में भरत ननिहाल से आते हैं, कैकेयी का तिरस्कार करते हैं, इतना ही नहीं मंथरा को अपने कार्य का दण्ड भी देते हैं । वास्तव में अन्य ग्रंथों में शत्रुघ्न दण्ड देते हैं । गिरधर कवि का यह मौलिक परिवर्तन है । भरत दशरथ राजा के अग्नि संस्कार के पहले और राम को मिले बिना वसिष्ठ ॠषि की आज्ञा से पादुका को राज सिंहासन पर रखते हैं । सत्रहवें अध्याय

में कवि ने राम मिलन के लिए आतुर भरत के साथ कैकेयी को नहीं लिया इसका कारण कवि ने यों दिया है –

''कैकेयी रही घेर सर्वथी, भरत तेनुं मुखजोतां नथी ।''[89]

भरत द्वारा वसिष्ठ ऋषि से पूछने पर वे बताते हैं कि पूर्वजन्म के पाप के कारण ऐसा हुआ है । अठारहवें अध्याय में भरत और गुह का मिलन मार्मिक शैली में प्रस्तुत हैं । उन्नीसवें अध्याय में राभ भरत का मिलन होता है । सीता के पैर के अंगूठे पर इन्द्र का पुत्र जयंत नहीं मगर गंधर्व कौए का रूप लेकर चंचू प्रहार करता है । बीसवें अध्याय में राजा जनक सपरिवार वनमें मिलने के लिए आते हैं । राम को पुनागमन के लिए समझाते हैं लेकिन एक वचनी, एक बाणधारी और एक पत्नीव्रती राम अपनी मजबूरी एवं असमर्थता व्यक्त करते हैं इससे भरत को बहुत दुःख होता है । भरत अग्नि प्रवेश के लिए तैयार हो जाते हैं । वसिष्ठ ऋषि के प्रयत्न के फलस्वरूप भरत अपना निर्णय बदलते हैं । बाद में भरत नंदिग्राम में कुटिया बनाकर रहते हैं । राम राजनीति के विषय में आवश्यक उपदेश तेईसवें अध्याय में देते हैं । चौबीसवें अध्याय में भरत का नंदिग्राम में निवास ओर ऋषिओं की आज्ञा से राम चित्रकूट छोड़कर जाने की कथा है । पच्चीसवें और अंतिम अध्याय में वाल्मीकि राम को चित्रकूट छोड़कर नहीं जाने के लिए कहते हैं लेकिन आगे का भविष्य जानकर राम वहीं से चल पड़ते हैं ।

अरण्यकाण्ड में कथा की गति तेज है । अयोध्याकाण्ड और बालकाण्ड से आलोच्य काण्ड का कथाप्रवाह तेज है । प्रथम अध्याय की चार कड़िओं में कवि गुरु की वंदना करते हैं, साथ में अयोध्याकाण्ड का सार भी दे देते हैं । राम के द्वारा वन में भ्रमण करना तथा अनेक ऋषियों के आश्रमों में जाना वर्णित है । राम लक्ष्मण और सीता अत्रि और अनसूया के आश्रम पर आते हैं, और दोनों को वंदन करते हैं । अनसूया सीता को पतिव्रता के लक्षण समझाती है । वह सीता को अमूल्य कुमकुम, कभी न मुरझानेवाली पुष्पमाला

आदि देती है । कवि ने यहाँ एक नवीन प्रयोग किया है कि अनसूया सीता को रेणुका का दर्शन कराती है । रेणुका परशुराम की माता है । तृतीय अध्याय में विराध वध के साथ शरभंग मुनि द्वारा रामदर्शन के बाद देहत्याग करने का प्रसंग है । राम के हाथों स्नान करके मरने की शरभंग की ईच्छा पूर्ण होती है । यह गिरधर कवि की मौलिकता है । चौथे अध्याय में राम सुतीक्ष्ण ऋषि से मिलते हैं । प्रांचवें अध्या में सुतीक्ष्ण ऋषि अगस्त्य के जीवन की चमत्कारपूर्ण घटनाओं का वृतांत सुनाते हैं । छट्ठे अध्याय में अगत्स्य द्वारा आतापी वातापी के वध का वर्णन है । सातवें अध्याय में राम का अगत्स्य और जटायु के साथ मिलन का वृतांत है । आठवें अध्याय में पंचवटी में निवास कर रहे राम लक्ष्मण और सीता के प्रसन्न जीवन का कवि ने वर्णन किया है । नौंवे अध्याय में शूर्पनखा के पुत्र की मृत्यु लक्ष्मण के हाथों होती है । दशवें अध्याय में शूर्पनखा प्रतिशोध लेने के लिए आती है लेकिन राम, लक्ष्मण पर मोहित होती है । राम शूर्पनखा की पीठ पर उसकी पहचान लिख देते हैं । यह प्रसंग वाल्मीकि रामायण में नहीं है । ग्यारहवें अध्याय में खरदूषण शूर्पनखा के कहने से खरदूषण और त्रिशिरा के साथ चौदह हजार राक्षस राम–लक्ष्मण से युद्ध करने के लिए आते हैं । सब राक्षसों का अंत इसी अध्याय में होता है । बारहवें अध्याय में शूर्पनखा रावण के पास आती है । रावण को राम से प्रतिशोध लेने के लिए कहती है । रावण मारीच के पास जाता है । मारीच रावण को सद् उपदेश देता है लेकिन उसका प्रभाव नहीं पड़ता । अंततोगत्वा मारीच सुवर्ण मृग दो मुखवाला बनकर पर्णकुटी के समक्ष खड़ा रहता है । सीता स्वर्ण मृग को देखकर कंचुकी बनाने की महेच्छा राम से व्यक्त करती है । राम सीता को समझाने का उपक्रम करते हैं । सीता अपनी बात छोड़ ने के लिए तैयार नहीं है । गिरधर कवि पाठकों से कहते हैं कि राम परमेश्वर ही हैं लेकिन मानुषी लीला करने के लिए ही ऐसा करते हैं । चौदहवें अध्याय में राम सुवर्ण मृग की हत्या हेतु जाते हैं ।

गिरधर कवि ने यहां ऐसा उल्लेख किया है कि राम ही अपने मुख से लक्ष्मण को बुलाते हैं । सीता लक्ष्मण को कटू वचन अधिक नहीं कहती किन्तु संक्षेप में इतना ही कहती है कि आप राम का भला नहीं चाहते । पंद्रहवें अध्याय में रावण सीता का हरण करता है । सीता प्रार्थना करती है कि मेरा छाया स्वरूप ही आपके साथ आयेगा । सोलहवें अध्याय में जटायु और रावण का युद्ध, सीता को पटरानी के रूप में स्वीकृति देने के लिए रावण की प्रार्थना, सीता द्वारा रावण का तिरस्कार और अशोक वाटिका में सीता का निवास इतने प्रसंग वर्णित है । कवि ने रावण के साथ हनुमान जी का युद्ध भी बताया है लेकिन रावण अदृश्य हो जाता है । रावण बार बार अदृश्य हो जाता है अतः हनुमान जी निराश होकर सीता के दिए गए आभूषणों की रखवाली करते हैं । सत्रह और अठारहवें अध्याय में राम का विलाप और घायल जटायु का मिलन वर्णित है । उन्नीसवें अध्याय में जटायु की मृत्यु वर्णित है । कवि ने कथा में परिवर्तन इस प्रकार किया है कि राम लक्ष्मण को रास्ते में पार्वती सीता का रूप लेकर मिलती है । राम पहचान जाते हैं । राम पहचान जाते हैं । अतः पार्वती लज्जित होकर दक्ष राजा के यज्ञ कुंड में समर्पित होकर आत्महत्या करती है । बीसवें अध्याय में राम द्वारा क्षत्री बाहु महादेव की स्थापना है । कबंध का वध एवं सुग्रीव के विषय में सूचना इसी अध्याय में वर्णित है । इक्कीसवें अध्याय में राम शबरी मिलन और राम–लक्ष्मण का पंपातट पर आकर विश्राम लेना वर्णित है । बाईसवा अध्याय अरण्य काण्ड का अंतिम अध्याय है । प्रायः सब घटना हनुमन्नाटक का आधार है, ऐसा कवि ने स्वीकार किया है । राम की विरह वेदना आलोच्य कृति में अनूठी है । मृग, मोर, कमल, सिंह चक्रवाक आदि को राम शाप देते हैं । बाद में राम उन पर अनुग्रह करते हैं । अंत में हरिकथा का महत्त्व बताया है । हरिकथा से दूर रहनेवालों की स्थिति दयनीय होती है ऐसा उल्लेख किया है । यहाँ अरण्यकाण्ड पूर्ण होता है ।

किष्किंधाकाण्ड के प्रारंभ में गुरु की वंदना के बाद राम लक्ष्मण की गोद में मस्तक रखकर विश्राम करते हुए दिखाई देते हैं । सुग्रीव उनको देखकर भयभीत होता है । सुग्रीव हनुमान जी के पास जाकर अपने स्वप्न की बात करता है । यह प्रसंग गिरधर कवि की अपनी मौलिक उपज है । दूसरे अध्याय में राम–लक्ष्मण और हनुमान मिलते हैं । इस प्रसंग में कवि की मौलिकता ही दृष्टिगोचर होती है । हनुमान राम–लक्ष्मण को अपनी माता की दी गई पहचान से पहचानते हैं । हनुमान राम की स्तुति करते हैं और सुग्रीव के साथ मैत्री संबंध स्थापित करने के लिए प्रार्थना करते हैं । तीसरे और चौथे अध्याय में हनुमान राम को वाली और सुग्रीव की उत्पति, दोनों के बीच प्रवर्तमान बैर का कारण बताते हैं । राम सुग्रीव से दोस्ती करते हैं । राम सुग्रीव को किष्किंधा का राज्य एवं बाली की हत्या करके उसकी स्त्री सहित राज्य को वे दिला देंगे वैसी प्रतिज्ञा करते हैं । पाँचवे अध्याय में राम सुग्रीव को वाली के साथ युद्ध करने का आदेश देते हैं । सात ताल का छेदन भी राम करते हैं । तारा वाली को युद्ध न करने के लिए समझाती है । छठ्े अध्याय में वाली तारा की प्रार्थना ठुकराकर युद्ध करता है और राम के हाथों छल से मारा जाता है । सातवें अध्याय में तारा का विलाप है । राम आश्वासन देते हैं, इतना ही नहीं सुग्रीव के साथ विवाह करने की आज्ञा एवं सुग्रीव का राज्याभिषेक इसी अध्याय में वर्णित है । आठवें अध्याय में पूरा वर्षाॠतु का ही वर्णन है । नौवें अध्याय में शरद ॠतु का आगमन, लक्ष्मण का क्रोधित होकर किष्किंधा में जाना, बंदर सेना का सीता की खोज में जाना और हनुमान को राम द्वारा मुद्रिका देना आदि वर्णन है । राम सीता के संबंध में हनुमान से इस प्रकार कहते है :

“सुण मारुति सीता अनुप, नथी त्रिभुवनमां एवुं रूप,
एना अंस तणी जे सुवास, अर्ध जोजन चाले प्रकाश ।।”[90]

उक्त अंश कवि का मौलिक है । राम सीता के बीच गोपनीय किसी बात के विषय में यों कहते हैं कि –

“पहेराव्यां केकैए वनकूल, अमो, पहेर्यां जाणी अनुकूण;
सीताने पहेरावा मूक्या ज्यारे, नेत्र समस्या करी अमो त्यारे ।
ते माटे न धर्यां वनचीर, छानी वात ए कहेजे वीर;
पोतानी मुद्रिका रघुनाथ, घाली अंजनी सुतने हाथ ।”[91]

वैसे वाल्मीकि रामायण में राम हनुमान को अंगूठी ही देते हैं, किसी गोपनीय बात का वहाँ उल्लेख नहीं है । दशवें अध्याय में हनुमान डंडी ऋषि के पुत्र का उद्धार करते हैं । यह प्रसंग भी मौलिक है । ग्यारहवाँ अध्याय हेमा अप्सरा की सखी तापसी स्वयं प्रभा का है । स्वयं प्रभा अपने आपको देव कन्या सुप्रभा के रूप मे ही अपना परिचय देती है । बंदर सेना को मुक्ति दिलाने के बाद वह रामदर्शन के लिए गमन करती है । बारहवाँ अध्याय संपाति के वृतांत से अंकित है । तेरहवें और चौदहवें अध्याय में हनुमान को जो शाप के कारण अपने पराक्रमों की विस्मृति हो जाती है । पंद्रहवें और किष्किंधा काण्ड के अंतिम अध्याय में हनुमान सीता को ढूँढने के लिए महान पराक्रम करने के लिए तैयार होते हैं । अंत में राम नाम की महिमा अंकित है ।

सुन्दरकाण्ड के प्रथम अध्याय में पुरुषोतम की स्तुति के बाद किष्किंधा काण्ड का सार एवं सुन्दर काण्ड की कथा के विषय में संक्षेप में संकेत पाया जाता है । द्वितीय अध्याय में हनुमान जी महेन्द्र पर चढ़कर समुद्र लांधने का प्रयत्न करते हैं । रास्ते में उनको रंभादेवी, सिंहिका आदि बाधा उत्पन्न करती हैं । हनुमान जी सबको अपने मार्ग से दूर करके लंका पहुँच ही जाते हैं । लंका के प्रवेश द्वार में लंकणी और कौंचा हनुमान जी के मार्ग में बाधा डालने का उपक्रम करते हैं । हनुमान जी इनसे भी छुटकारा पाकर आगे बढ़ते हैं । कौंचा का उल्लेख गिरधर कवि की अपनी मौलिकता का परिचय है । तीसरे

अध्याय में हनुमान जी सीता को ढूँढते ढूँढते इन्द्रजीत और विभीषण के महल के पास पहुँच जाते हैं । वहाँ सीता का पता नहीं चलता । कुंभकर्ण का घर भी देखते हैं । चौथे अध्याय में हनुमान रावण के महल में आते हैं । मंदोदरी रावण को अपने दुःस्वप्न के विषय में वृतांत सुनाती है । रावण–मंदोदरी संवाद रोचक है । इसी अध्याय के अंत में अशोक वाटिका में अशोक वृक्ष के नीचे हनुमान जी सीता का दर्शन करते हैं । पाँचवे अध्याय में हनुमान जी सीता को अंगूठी देते हैं । छट्ठे अध्याय में हनुमान जी राम कथा का वर्णन गायन के द्वारा सुनाते हैं । इससे सीता अपने केश से आत्महत्या करने का प्रयास करती है । सातवें अध्याय में हनुमान जी सीता को राम की स्थिति अपने पराक्रम एवं समुद्र के उल्लंघन के विषय में बताते हैं । अंत में रावण के उद्यानों का विनाश इसी अध्याय में वर्णित है । आठवें अध्याय में हनुमान जी से युद्ध करने के लिए आए हुए रावण पुत्र अक्षयकुमार का वधवर्णित है । नौंवे अध्याय में हनुमान जी द्वारा इन्द्रजीत की पराजय एवं ब्रह्मा द्वारा हस्तक्षेप आदि अंकित है । ब्रह्मा का उल्लेख गिरधर कवि का अपना मौलिक परिवर्तन है । बाद में हनुमान को ब्रह्म पाश से बांधा जाता है । दशवें अध्याय में हनुमान जी सोचते हैं कि मैं राम के पास जाकर अपने मुँह से अपनी प्रशंसा कैसे कर सकता हूँ ? अतः ब्रह्मा जी के पास जाते हैं । अपनी द्विधा व्यक्त करते हैं । ब्रह्मा राम पर पत्र लिख देते हैं जिसमें हनुमान जी का पराक्रम है । ग्यारहवें अध्याय में हनुमान जी बंदरों से मिलते हैं । खत पढ़वाते हैं । बारहवें अध्याय में हनुमान राम–लक्ष्मण और सुग्रीव से मिलते हैं । तेरहवें अध्याय में ब्रह्मा का लिखा हुआ पत्र लक्ष्मण पढ़ते हैं । चौदहवें अध्याय में राम लंका की उत्पति के विषय में जामवान से पूछते हैं । यह कवि की मौलिकता का परिचय है । पंद्रहवें अध्याय में शरभंग राक्षस का वृतांत, गरुड की घटना और लंका की उत्पति आदि का वर्णन है जो आदि रामायण में नहीं है । राम अठारह पदम का सैन्य लेकर लंका पर चढ़ाई करने के लिए तत्पर

होते हैं । सोलहवें अध्याय में राक्षसों का राम मे नहीं डरने को वृतांत है । सत्रहवें अध्याय में अपनी माता की आज्ञा से चार सहायकों के साथ विभीषण राम की शरण में जाता है । ईसमें रावण का पद प्रहार नहीं है । अतः मौलिक है । अध्याय बारह से लेकर बीस तक विभीषण की कथा है जिसमें समुद्र के जल से राम के हाथों विभीषण का राज्याभिषेक है । राम से सुग्रीव प्रश्न करता है कि यदि रावण सीता को लेकर आपकी शरण में आ जाये तो आप क्या करेंगे ? राम प्रत्युत्तर देते हैं कि तो मैं विभीषण को अपनी अयोध्या का राज्य दे दूँगा । इस प्रसंग के लिए कवि ने तुलसीकृत रामचरितमानस का आधार लिया है । इक्कीसवें अध्याय में कवि ने अपनी मौलिकता से दो परिवर्तन किए हैं जिन में एक सेनापति नल को अभिमान हो जाता है कि मेरे स्पर्श से समुद्र में पत्थर तैरते हैं । राम नल का अभिमान दूर करते हैं । दूसरा परिवर्तन पत्थरों पर यदि 'रामनाम' लिखा जाय और इससे सेतुबंध निर्मित किया जाय तो बंदर और भालू रामनाम लिखित पत्थर पर पैर कैसे रख सकते हैं अतः कवि ने हनुमन्नाटक का आधार लेकर पत्थर पर रामनाम नहीं लिखा बल्कि राम नाम का उच्चारण करते हुए समुद्र में पत्थर रखे हैं । यथा –

"हनुमान नाटक मां कहयुं छे कहुँ जथारथ तेह
मुखे रामनाम स्मरण करी नळ मूकतो पाषाण ।।"[92]

बाईसवें और तेईसवें अध्याय में समुद्र पर सेतुबंध हो जाता है । उस पर से राम का अठारह पदम गुजरता है । अतिम और चौबीसवें अध्याय में हनुमन्नाटक के आधार पर लक्ष्मण द्वारा रावण के दशमकुट और छत्र उड़ा देने का वृतांत है । अंत में राम की स्तुति की गई है ।

युद्धकाण्ड के प्रारंभ के अध्याय में सुन्दरकाण्ड का सार है । रावण सीता के साथ छल करने के लिए अशोक वाटिका की ओर जाता है । दूसरे अध्याय में रावण राम का कृत्रिम मस्तक सीता के सन्मुख रखता है । अतः

सीता दुःखी होकर विलाप करती है । सीता का विलाप रोकने के लिए रावण मंदोदरी को भेजता है । मंदोदरी सीता को यह समझाने का प्रयास करती है कि राम और रावण में कोई अंतर नहीं है । सीता मय तनया (मय राजा की पुत्री) मंदोदरी को राम की महत्ता के विषय में विस्तार से समझाती है । मंदोदरी सीता को गुरु मानकर वहाँ से चली जाती है । कवि गिरधर ने कहा है आलोच्य प्रसंग का आधार अध्यात्म रामायण है । चौथा अध्याय रावण मंदोदरी संवाद है । पाँचवा अध्याय सुग्रीव और रावण के युद्ध से वर्णित है । छठ्ठे अध्याय से लेकर दशवें अध्याय तक अंगद विष्टि का प्रसंग है जिसमें अंगद के पैर को रावण सहित कोई भी राक्षस हटा नहीं सकता बारहवें अध्याय में इन्द्रजीत राम लक्ष्मण को पूरे सैन्य के साथ नागपाश में बांध देता है । तेरहवें अध्याय से लेकर पंद्रहवें अध्याय तक रावण मंदोदरी संवाद का पुनरावर्तन है । सोलहयों अध्याय में बंदर की सेना से रावण की सेना का घोर पराजय वर्णित है । अतः रावण कुंभकर्ण को जगाने का आदेश देता है । सत्रहवें अध्याय में कुंभकर्ण जाग्रत होता है । कुंभकर्ण रावण को कुकृत्य के लिए उपालंभ देता है । अंत में वह लड़ाई के लिए तैयार हो जाता है । अठारवें और उन्नीसवें अध्याय में कुंभकर्ण का युद्ध और राम के हाथों वीरगति का वर्णन है । बीसवें अध्याय में रावण के सैन्य के मुख्य राक्षस एवं पुत्रों की मृत्यु वर्णित है जिसमें देवांतक, नरांतक, त्रिशरा, अकंपन, अतिकाय आदि का उल्लेख है । इन्द्रजीत रणदेवी को प्रसन्न करने के लिए युद्ध भूमि में आता है । इक्कीस वें अध्याय में इन्द्रजीत राम सेना को मूर्छित कर देता है । बाईसवें अध्याय में हनुमान द्रोणाचल पर्वत से औषधि लाते हैं और सैन्य चेतना वस्था को प्राप्त होता है । तेईवें अध्याय में कृत्रिम सीता वध का वर्णन एवं हनुमान जी का विलाप अंकित है । चौबीसवें अध्याय में इन्द्रजीत युद्ध में अपराजित होने के लिए निकुंभीलादेवी का यज्ञ करने के लिए प्रयाण करता है । पच्चीस वें अध्याय में बंदर सेना इन्द्रजीत को यज्ञ पूर्ण नहीं करने

देती । अतः क्रोधावेश में इन्द्रजीत युद्ध भूमि में आता है । छब्बीसवें अध्याय में लक्ष्मण के हाथों इन्द्रजीत का वध होता है । सताईस वें अध्याय से लेकर तीसवें अध्याय तक का वर्णन कवि ने अग्निपुराण के आधार पर किया है । इन्द्रजीत का वध होने पर उसका एक हाथ उसकी पत्नी सुलोचना के महल में गिरता है । सुलोचना अपने पति का मस्तक लेने के लिए राम के पास आती है । राम की स्तुति करती है । इन्द्रजीत का मस्तक मुस्कुराता है । सुलोचना पति के साथ सती होती है । इकतीस से अड़तीस अध्यायों में अहिरावण और महिरावण की कथा है । उनतालीसवें अध्याय में रावण को संकेत मिलता है कि मैं अब पराजित होनेवाला हूँ अतः वह युद्ध भूमि में आता है । चालीसवें अध्याय में रावण के शस्त्र से लक्ष्मण मूर्छित होते है । इकतालीसवें अध्याय में राम का विलाप और बयालीसवें अध्याय में राम का बाण रावण का पीछा करता है । इससे रावण मंदोदरी की शरण में जाता है । रावण मृत्युंजय का अनुष्ठान करने के लिए तैयार होता है । हनुमान जी लक्ष्मण के उद्धार के लिए संजीवनी लेने के लिए जाते हैं । रास्ते में मकरी का उद्धार, कालनेमिका वध और भरत हनुमान मिलन का प्रसंग वर्णित है जो अब तक के रामायणों में नहीं है । यह कथा पैतालीसवें अध्याय तक है । छ्यालीसवें अध्याय में रावण का अनुष्ठान, बंदरों द्वारा मंदोदरी को लाकर रावण के अनुष्ठान में बाधा उत्पन्न करना एवं राम रावण का भयंकर युद्ध वर्णित है । अंत में रावण का वध होता है । यहाँ उनचासवाँ अध्याय पूर्ण होता है । पचासवें अध्याय में मंदोदरी विलाप और रावण की अंत्येष्टि वर्णित है । इक्यावन वें अध्याय में लंका में विभिषण का राज्याभिषेक वर्णित है । बावनवें अध्याय में सीता हनुमान और विभीषण के साथ राम के पास आती है। तिरपन वे अध्याय में सीता की अग्नि परीक्षा वर्णित है । चौवनवें अध्याय में अमृत वृष्टि से राम सैन्य सजीवन होता है । पचपनवें अध्याय में राम पुष्पक विमान में सीता और लक्ष्मण के साथ बैठकर अयोध्यागमन का वर्णन हैं ।

गिरधर कृत रामायण का उत्तरकाण्ड अति विस्तृत है । एकसौ बारह अध्याय में आलोच्य काण्ड फैला हुआ है । प्रथम अध्याय में कवि ने चरित्रों को आध्यात्मिक रूपक के रूप में परिचय दिया है । दूसरे अध्याय में पुष्पक विमान में बैठे हुए राम सीता को युद्ध के मैदान के संस्मरण बताते हैं । तृतीय अध्याय में राम अगत्स्य ऋषि के आश्रम में आते हैं । सीता और अगत्स्य पत्नी लोपा मुद्रा का वर्णन थोड़ा अरुचिकर लगता है । चौथे अध्याय में राम अयोध्या आते हैं । पाँचवे अध्याय में राम लक्ष्मण और सीता के आगमन से अयोध्या की प्रजा में हर्षोल्लास देखने को मिलता है । छट्ठे अध्याय से लेकर नौवें अध्याय तक की घटना में राम के राज्याभिषेक का वर्णन है । दशवें अध्याय में राम की वेद स्तुति है । बारहवें अध्याय में राम बंदरों को उपहार देते हैं । राम विभीषण को भी सम्मानित करते हैं । तेरहवें अध्याय में हनुमान की भक्ति का वर्णन है । हनुमान जी सभा के बीच में अपने हृदय में राम–सीता किस प्रकार बिराजित हैं वह दिखाते हैं । चौदहवें अध्याय में सुग्रीव और विभिषण की बिदाई है । पंद्रहवें अध्याय में राम राज्य के कारण प्रवर्तमान आनंद का वर्णन है । सोलहवें और सत्रहवें अध्याय में भरत हनुमान संवाद है जिसमें वर्णाश्रम व्यवस्था और संत–असंत के विषय में वर्णन है । अठारहवें अध्याय में शत्रुघन द्वारा लवणासुर का वध अंकित है । उन्नीसवें अध्याय में वाल्मीकि रामायण की कथा अनुसार शिकारी (पारधी–भील) को राम स्वर्ग भेजते हैं, ब्राह्मण के पुत्र को नवजीवन देते हैं । इक्कीसवें अध्याय में उलफ गीध को न्याय, बाईसवें अध्याय में अगत्स्य और राम संवाद है । तेईसवें अध्याय में श्वान सन्यासी संवाद है । यहाँ से चौंतीसवें अध्याय तक की कथा में धोबी का सीता के प्रति आक्षेप, सीता त्याग, सीता विलाप आदि का वर्णन है । पैंतीसवें अध्याय में लव–कुश का जन्म लालन–पालन आदि का वर्णन है । छतीसवें अध्याय में लव–कुश के हाथों ब्रह्म हत्या होती है । दोनों पश्चाताप करते हैं । यह प्रसंग आदि रामायण में नहीं । कवि की

मौलिकता है । अड़तीसवें अध्याय में राम द्वारा आयोजित अश्वमेघ यज्ञ का वृतांत है । सीता त्याग के कारणों का भी वर्णन है । चालीसवें अध्याय में भरत पुत्र पुष्कल अश्वमेघ यज्ञ के अश्व की रक्षा हेतु जाता है । इकतालीस से छयालीसवें अध्याय तक यज्ञ के अश्व की रक्षा हेतु गये हुए शत्रुघ्न के पराक्रम का वर्णन है । गिरधर कवि का कहना है कि यह वृतांत लोमश रामायण पर आधारित है । अडतालीसवें अध्याय में आरण्य ऋषि के मोक्ष की गाथा है । उन्चासवें अध्याय से लेकर छासठ अध्याय तक अश्वमेघ यज्ञ के अश्व को जिन जिन राजाओं ने बंधन में रखने का प्रयास किया था उन सबका वर्णन है । जो आदि रामायण में नहीं है । अडसठ से लेकर तिरासी अध्याय तक कवि ने लवकुशाख्यान का विस्तार से वर्णन किया है । चौरासीवें अध्याय में वाल्मीकि राम की स्तुति करते हैं । पचासी से नब्बे अध्याय तक कवि की मौलिकता देखने को मिलती है । राम एक नही लेकिन तीन–तीन अश्वमेघ यज्ञ करते हुए दिखाई देते हैं । सीता भी उनके साथ है । यह कथा आदि रामायण में नहीं है । लवकुश का विवाह होता है । इक्यावनवें अध्याय मे सीता भूमिगत होती है । जिसके मूल में कैकेयी काछल और रावण का चित्र है । बयानवें और तिरानवें अध्याय में राम के पास काल पुरुष का आगमन और वसिष्ठ की आज्ञा से लक्ष्मण का त्याग वर्णित है । चौरानवें अध्याय से लेकर अठानवें अध्याय तक राम–कौशल्या संवाद है । जिसमें राम का अध्यात्म ज्ञान संबंधी संवाद और कौशल्या का मोक्ष है । निन्यानवें से लेकर एकसौ आठ अध्याय तक में राम का स्वधाम जाने का संकल्प, सरयू तट पर जाना, देवताओं की रामस्तुति, सीता के साथ वैकुंठ प्रवेश एवं हनुमान और जामवान को दिया गया आदेश निरुपित है । एक सौ नौवें अध्याय में कुश वंश का वर्णन है । एसकौ दश और ग्यारहवें अध्याय में गिरधर कवि ने सात काण्डों का संक्षेप में वर्णन किया है । मध्यकालीन साहित्य की परंपरानुसार कवि ने अपना परिचय दिया है । आगे कवि ने अपनी कृति

रामायण के काण्ड अध्याय, चौपाई, आदि की संख्या बताई है । अंत में 'श्रीहरि' कहकर राम कथा का समापन किया है । यथा –

"भगवान भयहर कामपूरण, राखजो शरण कृपा करी;
कर जोड़ी ने कहे दास गिरधर, श्रोताजन बोलो श्रीहरी ।।"[93]

गिरकर धवि ने अंत में अपनी नम्रता प्रदर्शित की है कि रामकथा के लिए मैं सिर्फ निमित्त हुआ हूँ ।

यहाँ एक स्पष्टता आवश्यक है कि विषय विस्तार दोष हों तो भी गिरधर कृत रामायण के विषय में सविस्तृत उल्लेख आवश्यक था । आलोच्य कृति का ऐतिहासिक, धार्मिक, साहित्यिक एवं गुजराती साहित्य में अति महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय स्थान है ।

संक्षेप में करीब पांचसौ वर्ष के समय में विशाल मात्रा में राम विषयक काव्यों का सृजन हुआ है जिस में साहित्य और भक्ति दोनों की दृष्टि से कर्मण, भालण, नाकर, प्रेमानंद, वजिया, आदि कवियों के नाम उल्लेखनीय हैं । रामकथा के विकास में प्रायः प्रत्येक कवि ने अपना योगदान दिया है ।

राम कथा मध्यकालीन गुजराती साहित्य तक पहुँचते पहुँचते लोकप्रिय हो गई थी । अतः प्रायः प्रत्येक गुजराती कवि ने राम को मानवीय मर्यादाओं से अलग करके परमेश्वर के रूप में निरुपित करने का प्रयास किया है । कविओं का उद्देश्य कविता करना ही नहीं था अपितु लोगों में भक्ति, नीति एवं सत् मार्ग का प्रचार करना ही था ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1	रामकथा उत्पत्ति और विकास फादर कामिल बूल्के, पृ. 253
2	परिचित पद संग्रह प्रकाशक सस्तु साहित्य, पृ. 211
3	गुजरात साहित्यनो इतिहास, खंड–2, प्र. साहित्य परिषद, पृ. 162
4	प्राचीन गुर्जर काव्य, संपादक के. ह. ध्रुव, प्रस्तावना, पृ. 16
5	प्राचीन गुर्जर काव्य, संपादक के. ह. ध्रुव, प्रस्तावना, पृ. 15–16
6	प्राचीन गुर्जर काव्य, संपादक के. ह. ध्रुव, प्रस्तावना, पृ. 33
7	बृहत् काव्य दोहन, भाग–1, सं. ई. सू. देसाई, पृ. 639
8	बृहत् काव्य दोहन, भाग–1, सं. ई. सू. देसाई, पृ. 639
9	भालण एक अध्ययन, श्री के. का. शास्त्री, पृ. 87
10	भालण एक अध्ययन, श्री के. का. शास्त्री, पृ. 28
11	स्वाध्याय दीपोत्सवी अंक, 1977, पृ. 17
12	रावण मंदोदरी संवाद, सं. रं. छ. रावळ, पृ. 81
13	रावण मंदोदरी संवाद, सं. रं. छ. रावळ, पृ. 91
14	गुजरात साहित्यनो इतिहास, खंड–2, प्र. साहित्य परिषद, पृ. 191
15	मीराना पदो, सं. भूपेन्द्र त्रिवेदी, पृ. 13
16	मीराना पदो, सं. भूपेन्द्र त्रिवेदी, पृ. 23
17	बृहत् काव्य दोहन, भाग–8, प्रस्तावना, अं. बु. जानी, पृ. 49
18	'कविचरित' श्री के. का. शास्त्री, पृ. 205
19	कवि नाकर एक अध्ययन, डॉ. चिमनलाल त्रिवेदी, पृ. 464
20	'रामायण' उद्भव प्रकाशक, ह. दा. काटावाला, पृ. 399
21	गु.व.सो.नी.ह.ब.पु. नं. 31 की हस्तप्रत अंशत शब्द परिवर्तन के साथ
22	बृहत् काव्य दोहन, भाग–4 सं. ई. सू. देसाई, पृ. 758

23	बृहत् काव्य दोहन, भाग–4 सं. ई. सू. देसाई, पृ. 751
24	'रणयज्ञ', सं. मं. र. मजमुदार, परिशिष्ट–4, पृ. 181
25	'रणयज्ञ', सं. मं. र. मजमुदार, परिशिष्ट–4, पृ. 186
26	'रणयज्ञ', सं. मं. र. मजमुदार, परिशिष्ट–4, पृ. 190
27	'रणयज्ञ', सं. मं. र. मजमुदार, परिशिष्ट–4, पृ. 190
28	फार्बस गु. सभा ह. नामावली भाग–2, पृ. 9
29	गु.सं.ह.लि.पु. नं. 50, पृ. 8
30	स्वाध्याय, पृ. 4, ए. 4 बेचरभाई पटेल, पृ. 469
31	स्वाध्याय, पृ. 4, ए. 4 बेचरभाई पटेल, पृ. 469
32	बृहद काव्य दोहन, भाग–3, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 462
33	बृहद काव्य दोहन, भाग–3, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 493
34	गुजराती साहित्यनो इतिहास, ग्रंथ–र, प्र. साहित्य परिषद, पृ. 464
35	'कवि चरित' श्री के. का. शास्त्री, पृ. 501
36	प्राचीन काव्य माळा, ग्रंथ–9, सं. ह. द्वा. कांटावाला, पृ. 97
37	प्राचीन काव्य माळा, ग्रंथ–9, सं. ह. द्वा. कांटावाला, पृ. 97
38	बृहद काव्य दोहन, भाग–4, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 317
39	रणयज्ञ, सं. प्रा. नरोतम वाळंद, राष्ट्रभाषा पुस्तक मंदिर, सूरत, पृ. 156
40	रणयज्ञ, सं. प्रा. नरोतम वाळंद, राष्ट्रभाषा पुस्तक मंदिर, सूरत, पृ. 80
41	रणयज्ञ, सं. प्रा. नरोतम वाळंद, राष्ट्रभाषा पुस्तक मंदिर, सूरत, पृ. 148
42	रणयज्ञ, सं. मंजुलाल मजमुदार, आवृत्ति, 1966, पृ. 59
43	बृहद काव्य दोहन, भाग–5, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 796
44	बृहद काव्य दोहन, भाग–5, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 798
45	बृहद काव्य दोहन, भाग–5, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 798
46	बृहद काव्य दोहन, भाग–5, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 798

47	स्वाध्याय त्रिमासिक दिपोत्सवी अंक, पु. 15, सं. 2033, पृ. 21
48	रणयज्ञ, सं. मंजुलाल र. मजमुदार आ. 1966, पृ. 59
49	बृहद काव्य दोहन, भाग–8, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 708
50	प्राचीन काव्य माळा, ग्रंथ–9, सं. ह.द्वा. काटावाला तथा शास्त्री, पृ. 143
51	प्राचीन काव्य माळा, ग्रंथ–9, सं. ह.द्वा. काटावाला तथा शास्त्री, पृ. 145
52	रामायण वाल्मीकि कृत अनुवाद प्रकाशक सस्तु साहित्य युद्धकाण्ड, पृ. 850
53	प्राचीन काव्य त्रिमासिक अंक–1, पृ. 38
54	मध्यकालीन गुजराती साहित्यमां रामकथानो विकास, पृ. 109
55	मध्यकालीन गुजराती साहित्यमां रामकथानो विकास, पृ. 115
56	बृहद काव्य दोहन, भाग–1, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 895
57	बृहद काव्य दोहन, भाग–1, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 898
58	रामचरितमानस, तुलसीदास बालकाण्ड, दोहा, 218, पृ. 129
59	बृहद काव्य दोहन, भाग–1, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 89
60	रामचरितमानस, तुलसीदास बालकाण्ड, 236, पृ. 137, आ. 29, सं. 2037, गीता गोरखपुर
61	बृहद काव्य दोहन, भाग–1, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 896
62	श्रीमद भागवत पुराण, प्रका. सस्तु सा. स्कंध, 10, पृ. 793
63	मध्यकालीन गुजराती साहित्यमा रामकथानो विकास मुंबई, युनि. कीर्ति महेता, पृ. 114–115
64	गुजराती साहित्य मध्यकालीन अ.म. रावळ, पृ. 173
65	श्री के. का. शास्त्री के नये संशोधन के फलस्वरूप दिवाली बाई और राधाबाई को अर्वाचीन युग में माना जाएगा । अतः प्रस्तुत शोध प्रबंध में उल्लेख नहीं किया गया ।

66	बृहद काव्य दोहन, भाग–1, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 898
67	बृहद काव्य दोहन, भाग–1, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 891
68	बृहद काव्य दोहन, भाग–1, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 891
69	काव्यभावन हीराबहन पाठक, पृ. 193–197
70	मध्यकालीन गुजराती साहित्यमां रामकथानो विकास, के. आर. महेता, पृ. 1189
71	बृहद काव्य दोहन, भाग–8, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 727
72	बृहद काव्य दोहन, भाग–8, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 726
73	बृहद काव्य दोहन, भाग–8, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 731
74	बृहद काव्य दोहन, भाग–8, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 734
75	दयाराम कृत काव्य संग्रह, पृ. 162
76	दयाराम कृत काव्य संग्रह, पृ. 163
77	बृहद काव्य दोहन, भाग–5, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 649
78	बृहद काव्य दोहन, भाग–5, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 769–770
79	बृहद काव्य दोहन, भाग–5, सं. इ. सू. देसाई, पृ. 745
80	गुजरात विद्यासभा, हस्तप्रति क्रमांक, पृ. 371, पृ. 55
81	गुजरात विद्यासभा, हस्तप्रति क्रमांक, पृ. 371, पृ. 55
82	गुजरात विद्यासभा, हस्तप्रति नं. 241, पृ. 1 से 64
83	गुजरात विद्यासभा, हस्तप्रति नं. 241, पृ. 64
84	आनंद रामायण, अनु. लक्ष्मीशंकर भट्ट, भावनगर सारकाण्ड, पृ. 4
85	रामकथा उत्पति और विकास, डॉ. कामिल बुल्के, पृ. 666
86	रामकथा उत्पति और विकास, डॉ. कामिल बुल्के, पृ. 663
87	रामकथा उत्पति और विकास, डॉ. कामिल बुल्के, पृ. 399–400

88	गिरधर कृत रामायण सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अमदावाद, मुंबई आवृत्ति 9, ई. स. 1977 अयोध्या अध्याय – 11, पृ. 164
89	गिरधर कृत रामायण, सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अमदावाद, मुंबई आवृत्ति 9, ई. स. 1977 अयोध्याकाण्ड – 17, पृ. 181
90	गिरधर कृत रामायण, सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अमदावाद, मुंबई आवृत्ति 9, ई. स. 1977 किष्किंधा काण्ड अध्याय – 9, पृ. 289
91	गिरधर कृत रामायण, सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अमदावाद, मुंबई आवृत्ति 9, ई. स. 1977 किष्किंधा काण्ड अध्याय – 9, पृ. 289
92	गिरधर कृत रामायण, सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अमदावाद, मुंबई आवृत्ति 9, ई. स. 1977 सुंदरकाण्ड काण्ड अध्याय – 2, पृ. 353
93	गिरधर कृत रामायण, सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अमदावाद, मुंबई आवृत्ति 9, ई. स. 1977 किष्किंधा काण्ड अध्याय – 112, पृ. 769,

☆☆☆

अध्याय – 4
हिन्दी गुजराती रामायणों का तुलनात्मक अध्ययन

4.1 तुलनात्मक साहित्य

4.2 'रामचरितमानस' और 'रामायण' के प्रेरणा स्त्रोत

4.3 'रामचरितमानस' में निरुपित राम कथा

4.4 'रामायण' में निरुपित रामकथा

4.5 'रामचरितमानस' और 'रामायण' के कथा निरूपण में साम्य वैषम्य

4.5.1 साम्य

4.5.2 वैषम्य

4.6 'रामचरितमानस' ओर 'रामायण' : चरित्र सृष्टि

4.6.1.1 'रामचरितमानस' में राम का चरित्र

4.6.1.2 गिरकृत 'रामायण' में राम का चरित्र

4.6.2.1 'रामचरितमानस' के लक्ष्मण

4.6.2.2 'रामायण' में लक्ष्मण का चरित्र

4.6.3.1 'रामचरितमानस' के भरत

4.6.3.2 'रामायण' के भरत

4.6.4.1 तुलसीदास रचित 'रामचरितमानस' का रावण

4.6.4.2 गिरधर कृत 'रामायण' का रावण

4.6.5.1 'रामचरितमानस' के हनुमान

4.6.5.2 गिरधर कृत 'रामायण' के हनुमान

4.6.6 'रामचरितमानस' और 'रामाणय' में सीता का चरित्र चित्रण

4.6.6.1 'रामचरितमानस' में सीता का चरित्र चित्रण

4.6.6.2 गिरधरकृत 'रामायण' में सीता का चरित्र

4.7.1 'रामचरितमानस' की भाषा

4.7.2 गिरधर कृत 'रामायण' की भाषा

4.8 'रामचरितमानस' और 'रामायण' की दार्शनिकता

4.8.1 'रामचरितमानस' में दार्शनिकता

4.8.2 गिरधर कृत रामायण में दार्शनिकता

4.9 'रामचरितमानस' में रसाभिव्यक्ति

4.9.1 श्रृंगार रस

4.9.1.अ संयोग श्रृंगार

4.9.1.ब वियोग श्रृंगार

4.9.1.2. करुण रस

4.9.1.3. वीर रस

4.9.1.4. हास्य रस

4.9.1.5. रौद्र रस

4.9.1.6. भयानक रस

4.9.1.7. बीभत्स रस

4.9.1.8. अदभूत रस

4.9.1.9. शांत रस

4.9.1.10 वात्सल्य रस

4.9.2. 'रामायण' में रस निरूपण

4.9.2.1. करुण रस

4.9.2.2. श्रृंगार रस

4.9.2.3 वीर रस

4.9.2.4. वात्सल्य रस

4.9.2.5. शांत रस

4.9.2.6. बीभत्स रस

4.9.2.7 भयानक रस

4.9.2.8. हास्य रस

4.9.2.9. अद्‌भूत रस

4.10 'रामचरितमानस' और 'रामायण' में छंद योजना

4.10.1 'रामचरितमानस' में छंद योजना

4.10.1.1. चौपाई

4.10.1.2. दोहा

4.10.1.3. सोरठा

4.10.1.4. हरिगीतिका

4.10.1.5. त्रिभंगी

4.10.1.6. तोमर

4.10.1.7 चोपैया

4.10.1.8 अरिल्ल

4.10.1.2.1 अनुष्टुप

4.10.1.2.2. इन्द्रवज्रा

4.10.1.2.3. त्रोटक

4.10.1.2.4. भुजंग प्रयात वृत्त

4.10.1.2.5. मालिनी वृत्त

4.10.1.2.6 रथोद्धता वृत्ति

4.10.1.2.7 वसंतकलका वृत्त

4.10.1.2.8. वंशस्थविलयवृत्त

4.10.1.2.9 शार्दूलविक्रीडित वृत

4.10.1.2.10. स्त्रग्धरा वृत

4.10.1.2.11 नागस्वरुपिणी वृत

4.10.2. गिरधर कृत 'रामायण' में छंद योजना

4.10.2.1. चौपाई छंद

4.10.2.2. दोहा छंद

4.10.2.3. सोरठा छंद

4.10.2.4. छप्पय

4.10.2.5. हरिगीतिका छंद

4.10.2.6. कवित सवैया

4.10.2.7 त्रोटक छंद

4.11 'रामचरितमानस' और 'रामायण' में अलंकार योजना

4.11.1.'रामचरितमानस' में अलंकार योजना

4.11.1.1. अनुप्रास

4.11.1.2. यमक अलंकार

4.11.1.3. श्लेष अलंकार

4.11.1.4. वक्रोक्ति अलंकार

4.11.1.5. वीप्सा अलंकार

4.11.1.6. उपमा अलंकार

4.11.1.7. रूपक अलंकार

4.11.1.8. परिणाम अलंकार

4.11.1.9 संदेह अलंकार

4.11.1.10 भ्रांतिमान अलंकार

4.11.1.11 उल्लेख अलंकार

4.11.1.12. अपन्हुति अलंकार

4.11.1.13 उत्प्रेक्षा अलंकार

4.11.1.14 अतिशयोक्ति अलंकार

4.11.1.15 दीपक अलंकार

4.11.1.16 दृष्टांत अलंकार

4.11.1.17 निर्दशना अलंकार

4.11.1.18 व्यतिरेक अलंकार

4.11.1.19 अर्थान्तरन्यास अलंकार

4.11.1.20 विभावना अलंकार

4.11.1.21 प्रतीप अलंकार

4.11.2गिरधर कृत रामायण में अलंकार योजना

4.11.2.1. अनुप्रास अलंकार

4.11.2.2. यमक अलंकार

4.11.2.3. वर्णानुप्रास अलंकार

4.11.2.4. उपमा अलंकार

4.11.2.5. रूपक अलंकार

4.11.2.6. उत्प्रेक्षा अलंकार

4.11.2.7 दृष्टांत अलंकार

4.11.2.8. स्वभावोक्ति अलंकार

4.11.2.9. अतिशयोक्ति अलंकार

4.11.2.10. अन्योक्ति अलंकार

4.11.2.11 निदर्शना अलंकार

4.11.2.12 अनन्वय अलंकार

4.11.2.13 अर्थान्तरन्यास अलंकार

उपसंहार

अध्याय – 4
हिन्दी गुजराती रामायणों का तुलनात्मक अध्ययन

राम कथा ने अनंत काल से भारतीय जनमानस को प्लावित, परिष्कृत तथा पवित्र किया है । वेद, पुराण, साहित्य आदि ने अपना अद्वितीय स्थान अर्जित किया है । राम लोकनायक रूप में स्वीकृत हैं । राम के चरित्र का प्रचार–प्रसार तुलसदास जी ने ही सर्वाधिक किया है, ऐसा कहेंगे तो अत्युक्ति नहीं होगी । तुलसी का मानस विश्व धर्म पर आद्यृत है । तुलसी विध्वंसक क्रांति में विश्वास न कर विधायक परिवर्तन में आस्था रखते हैं । वह सर्वहारा के आजन्म प्रतीक रहे किन्तु वर्ग संघर्ष का प्रतिपादन न कर सके । वह स्वस्थ वादी हैं । उन्होंने हृदय की कसक को वाणी दी है । अनेकानेक विषमताओं के बीच समता की कसक को वाणी दी है । अनेकानेक विषमताओं के बीच समता के सूत्र खोजकर एकता का सूत्रपात करनेवाला व्यक्ति लोकनायक और समन्वयवादी नहीं होगा तो और कौन होगा ? समन्वय का विशेष प्रयास जो कि भारतीय संस्कृति और साहित्य की अन्यतम विशेषता है, वह सब तुलसी में प्राप्य है । उन्होंने रामचरितमानस के द्वारा लोक और शास्त्र का समन्वय, भक्ति, ज्ञान और कर्म का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय, ब्राह्मण और शुद्र का समन्वय आदर्श और व्यवहार का समन्वय इत्यादि अनेकानेक विषमताओं का निराकरण करके एकता का स्वस्थ एवं स्फूर्तिदायक आदर्श प्रस्तुत किया । अतः रामचरितमानस राम काव्य में 'मील का पत्थर' माना गया है । मानस विश्व के लोगों का कंठहार है । रामचरितमानस की लोकप्रियता को लक्ष्य करते हुए डॉ. जी. ए. ग्रियर्सन ने कहा है कि "गंगा की घाटी में जितना प्रचार इस महाग्रंथ का है, इंग्लैण्ड में बाइबिल भी उतनी

लोकप्रिय नहीं ।"[1] अतः हम निःसंदेह कह सकते हैं कि मानस भारतीय कला, संस्कृति एवं आस्था की अमूल्य धरोहर है ।

तुलसी रचित रामचरितमानस की लोकप्रियता अक्षुण्ण है । मानस की तुलना गुजराती भाषा की अमूल्य कृति श्री गिरधरकृत रामायण से हम करेंगे । गिरधरकृत रामायण गुजरात एवं गुजराती भाषा का आर्ष ग्रंथ है । देवदत्त जोशी कहते हैं कि "गुजराती भाषानुं प्रतिनिधि रामायण ते गिरधरकृत रामायण छे ।"[2] जीवन का उद्देश्य हरिगुण संकीर्तन ही है ओर कुछ नहीं । सहज स्वाभाविक रूप से काव्य प्रवृत्ति करनेवाले गिरधर कवि गुजरात प्रांत में अपनी अमरकृति रामायण से प्रसिद्ध है । गिरधरकृत रामायण की लोकप्रियता इतनी व्यापक है कि हिन्दु ही नहीं बल्कि अन्य धर्मावलंबी एक हाथ में तानपूरा और दूसरे हाथ में मंजीरा लेकर जब लयबद्ध रूप से रामायण के प्रसंगों को प्रस्तुत करता है तब देव मंदिरों में पैर रखने की भी जगह नहीं मिलती ।

4.1 तुलनात्मक साहित्य :

आधुनिक युग में तुलनात्मक अध्ययन का महत्त्व बढ़ रहा है । तुलनात्मक अध्ययन आज के युग की माँग है । तुलनात्मक अध्यय भाषा और साहित्यों के परस्पर संपर्क को बढ़ाता है । तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा समता और विभेदों का तटस्थ अध्ययन करके भ्रम और पूर्वग्रह से मुक्त हुआ जा सकता है । यह मानव के सीमित ज्ञान क्षेत्र को विस्तृत करता है और उसके भाषागत साहित्यिक एवं प्रादेशिक बंधनों को ज्ञानार्जन में बाधा नहीं डालने देता । विजयपालसिंह कहते हैं कि "भारत की सांस्कृतिक और साहित्यिक एकता की अनुभूति को तुलनात्मक अध्ययन आधार प्रदान करता है ।"[3] यह सही है कि पारस्परिक संपर्क और आदान–प्रदान से भाषाओं और साहित्यों के क्षितिज विस्तृत होते हैं । तुलनात्मक अध्ययन का अर्थ किसी को बड़ा या छोटा स्थापित करना नहीं है, किन्तु एक ही वस्तु पर दो कवियों के लिखे

काव्यों में प्राप्त होनेवाले समांतर भावों, विचारों और कल्पना के अंतर में जाकर समान बिंदुओं को पहचानना तुलनात्मक अध्ययन का लक्ष्य है । दो सृजनात्मक प्रतिभाएँ जब कि एक ही कथावस्तु को केन्द्र में रखकर लिखती हैं तो उनकी अवधारणाएँ और अभिव्यक्ति की भंगिमाओं में निश्चित रूप से समानताएँ भी पायी जाती हैं और भिन्नताएँ भी । दूसरे शब्दों में इन कवियों के चिंतन में साम्य के साथ वैषम्य भी पाया जाता है । भारत जैसे सामासिक संस्कृतिवाले देश में जहाँ सैकडों भाषाएँ बोली और समझी जाती हैं, वहाँ हर भाषा की अपनी समृद्ध साहित्यिक परंपरा है । दो साहित्यों की तुलना करने का मतलब दो चिंतन परंपराओं की तुलना करना है । प्रस्तुत शोध प्रबंध में तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' और गिरधरकृत 'रामायण' की तुलना के द्वारा दो महान कवियों की भावधाराओं, चिंतनधाराओं एवं उनकी उपलब्धियों का गंभीर अध्ययन करने का प्रयास किया गया है । अंततोगत्वा यह प्रयास भी किया गया है कि इन महाकवियों की भाषाएँ भले ही अलग–अलग हों मगर इनकी चिंतन धारा एक ही है । आज के युग की माँग है कि विभिन्न भाषाओं में विकसित भारतीय भाषा संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन हो जिन से भारतीय संस्कृति का एक व्यापक रूप प्रस्थापित हो सकता है । यही आगे चलकर स्थानीय प्रांतीय सीमाओं से उपर उठकर विश्व साहित्य की विभावना बन सकती है । भारत एक बहुभाषिक एवं बहुभाषायी साहित्य संपन्न देश है, इसलिए भारतीय भाषाओं और साहित्य के इतिहास की अवधारणा के निर्माण के लिए तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है । सर जेम्स ने कहा है कि "***Comparison bestows perfection***" अर्थात् 'तुलना पूर्णता प्रदान करती हैं ।' तुलनात्मक अध्ययन पूर्ण एवं समग्र ज्ञान की प्राप्ति का साधन है । हेनरी जार्ज मानते हैं कि "It grants essence of our culture" अर्थात् 'तुलनात्मक अध्ययन हमें संस्कृति का सार प्रदान करता है ।' स्पष्ट है कि विभिन्न संस्कृतियों का सार ग्रहण करने के लिए भी तुलनात्मक अध्ययन की

अपेक्षा है । एक राष्ट्रीय परिधि के परे दूसरे राष्ट्रों की कला, इतिहास, समाज, विज्ञान, धर्मशास्त्र आदि की समग्र जानकारी और पारस्परिक तद्रुपता, साम्य, वैषम्य और व्यतिरेकता के ज्ञान के लिए भी तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है । किसी ने ठीक ही कहा है कि 'विविध साहित्यों के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन तुलनात्मक अध्ययन द्वारा ही संभव है । मैक्समूलर ने कहा है कि 'सभी उच्चतर ज्ञान की प्राप्ति तुलना पर ही आधारित है ।' इसका अर्थ यह हुआ कि तुलना ज्ञान, उच्चता और विकासात्मकता के लिए अपेक्षित है । तुलनात्मक अध्ययन के वैशिष्ठय को आत्मसात करते हुए डॉ. एस. गुलाम रसूल कहते हैं कि "इससे ज्ञान विज्ञान की नई दिशाओं का उद्घाटन भाषा–शैली एवं अभिव्यंजना की मनोहारी अभिनव छटाओं का दिग्दर्शन, राष्ट्रीय एवं भावनात्मक ऐक्य का विश्वसनीय प्रतिपादन विश्वमानव चेतना का संश्लेषण बहुमुखी प्रकट रूप, जाति, धर्म एवं रुढ़ियों द्वारा आरोपित भिन्नता में अंतर्हित सामाजिक आदर्श एवं त्याग प्रधान भारतीय संस्कृति का संस्थापन एवं अनेक न्यूनताओं के प्रति सतर्कता तुलनात्मक अध्ययन द्वारा संभव हैं ।"[4] इस प्रकार तुलनात्मक अध्ययन के कारण काफी कुछ नाविन्य एवं वैशिष्ट्य को उजागर किया जा सकता है क्योंकि ऐसा अध्ययन व्यक्ति को देश, काल, भाषा एवं साहित्य के ऐसे सभी बंधनों से मुक्त कर ज्ञान के द्वार को अर्जित करने में सहायक सिद्ध होता है । हमें यह भी प्रतीति होती है कि हमारी भाषा का साहित्य ही सर्वश्रेष्ठ नहीं है, बल्कि विभिन्न प्रदेशों की भाषा–भूमियों के बीच बहनेवाली हमारी वैचारिक एवं भावात्मक जीवन सरिता एक है । अतःवर्तमान तुलनात्मक अध्ययन की उपादेयता निःसंदेह युगमें सर्वाधिक है ।

4.2 'रामचरितमानस' और 'रामायण' के प्रेरणा स्त्रोत :

कोई भी कला सृष्टि अपने मूल रूप में कतिपय भावों की ही सरस एवं संवेदनात्मक अभिस्फुरणा हुआ करती है । इस अभिस्फुरणा के लिए तीव्र

अनुभूति तथा इस अनुभूति को नवोन्मेष देने के लिए प्रसादपूर्ण कल्पना, साथ ही इस कल्पना को सुमूर्त रूप देने के लिए व्यंजक शक्ति की आवश्यकता होती है । सूत्र रूप में काव्य कला के उदभव एवं विकास का इतिवृत भी इतना ही है । भारतीय जनमानस को अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा से जिन कवियों ने प्रभावित किया है, उनमें गोस्वामी तुलसीदास का महत्त्वपूर्ण स्थान है । तुलसी का 'रामचरितमानस' हिन्दी साहित्य की एक ऐसी उपलब्धि है, जिसका प्रभाव लोक मानस पर अक्षुण्ण रहा है । भारत के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन पर इस ग्रंथ का ऐसा प्रभाव पड़ा है कि आज भी 'रामचरितमानस' के नायक राम के द्वारा प्रतिपादित मानवीय मूल्य आकाशदीप की भाँति मानवजगत को आलोकित कर रहे हैं । केवल राम ही नहीं 'मानस' का हर चरित्र मानवीय भावनाओं के संस्पर्श से जगमगाते आ रहे हैं । तुलसी ने रामचरितमानस जैसा अमर महाकाव्य किस प्रेरणा के परिणाम स्वरूप रचा यह अनुसंधान का विषय हो सकता है । मनोवैज्ञानिक किसी कृति की प्रेरणा के मूल में आत्माभिव्यंजना की विकलता, परिस्थितियों का प्रभाव और क्षतिपूर्ति के सिद्धांत को निरुपित करते हैं । प्राचीन काव्य शास्त्रियों ने काव्य की प्रेरणा के अनेक स्त्रोत बतायें हैं । भरतमुनि ने नाट्य रचना की प्रेरणा के मूल में मनोरंजन को प्रमुखता प्रदान की है ।[5] भामह ने काव्य रचना की प्रेरणा के मूल में चतुवर्ग की सिद्धि कला में चतुरता तथा प्रीति और कीर्ति को प्रमुख माना है ।[6] दण्डी महाकाव्य की रचना के प्रेरणा का मूल आधार सिद्धि तत्त्व को प्रेमतत्व माना है ।[7] वामन ने प्रीति और कीर्ति के साथ अकीर्ति विनाश की इच्छा पर भी जोर दिया है ।[8] रुद्रट ने नायक की कीर्ति का विस्तार, धन प्राप्ति, विपत्तिनाश, असाधारण आनंद और वाणी की सार्थकता को भी प्रेरक तत्त्व माने हैं ।[9] काव्य प्रकाशकार मम्मट की दृष्टि से यश की प्राप्ति और कान्ता सम्मित उपदेश काव्य रचना के प्रयोजन हैं ।[10] तुलसी ने रामचरितमानस का संवत 1631

(सन् 1574) में चैत्र मास की नवमी तिथि मंगलवार को राम जन्म स्थान अयोध्या से कथा का प्रारंभ किया ।

संवत सोरह सै एकतीसा । करउँ कथा हरिपदधरि सीसा

नौमी भौम वार मधु मासा । अवधपुरी यह चरित प्रकासा ।।[11]

तुलसीदास ने बालकाण्ड के मंगलाचरण में स्पष्ट कहा है कि

नानापुराण निगमागमसम्मतं यद

रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोडपि ।

स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा ।

भाषा निबंधमति मंजुल मातनोति ।।[12]

तुलसी ने लोक मंगल की भावना समन्वित अथवा बहुजनहिताय मानस की रचना की है । इसमें स्वान्तः सुखाय भी निहित है । कवि ने नानापुराण वेद आगम के नाम निर्दिष्ट नहीं किए । इसमें वाल्मीकि रामायण, हनुमन्नाटक प्रतिमानाटक, योगवाशिष्ट, महावीरचरित, उतर रामचरित, प्रसन्नराघव, अध्यात्म रामायण, भागवत, उपनिषद्, महाभारत, हितोपदेश आदिइत्यादि ग्रंथों का प्रभाव पाया जाता है । तुलसी ने अपने अंतःकरण के सुख के लिए रघुनाथ की गाथा, सुंदर कथा को भाषाबद्ध करके जनता के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया । उस समय हिन्दू धर्म ह्रासोन्मुख था । सामाजिक कुप्रथाएँ प्रचलित थीं । मुगलों के आक्रमण से त्रस्त जनता पथभ्रष्ट हो गई थी । इस संदर्भ में शंकराचार्य, रामानुजाचार्य आदि महात्माओं ने समाज का मार्गदर्शन अवश्य किया लेकिन सामाजिक जीवन को प्रभावित करनेवाले तत्त्वों का उसमें पूर्णतः अभाव रहा । इसी कारण कवि ने मानस को भाषा (अवधी) में लिखा । यह सच है कि देश की आम जनता संस्कृत नहीं जानती थी इसलिए सबके हित को दृष्टि में रख कर ही भाषा में लिखा । तुलसी ने स्पष्ट कहा है कि –

कीरति भनिति भूति भलि सोई । सुरसरि समसब कहँ हितहोई

जे एहि कथहि सनेह समेता । कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता ।।[13]

रचनाकार का उद्‌देश्य 'शिवेत रक्षये' स्पष्ट है । कलि कलुष को नष्ट कर के लोगों का योग्य पथ निर्देश करने के लिए ही मानस की रचना की है । भारतीय परंपरा काव्य प्रयोजनों में चतुर्वर्ग धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में से किसी एक को प्रमुख मानती है । बालकाण्ड में तुलसी कहते हैं कि

ब्रह्म निरूपनधरम बिधि बरनहिं तत्त्व विभाग ।

कहहिं भगति भगवंत कै संजुत ग्यान बिराग ।।[14]

यहाँ यह कहना चाहिए कि लोक मंगल की भावना समन्वित अथवा बहुजनहिताय यदि रामनाम रहित है तो अन्य गुणों के होते हुए भी वह समाहत नहीं हो सकता । अतः राम के प्रति रति ही एक मात्र प्रयोजन है ओर कुछ नहीं । अयोध्याकाण्ड में कवि कहते हैं कि

''अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरवान ।

जनमजनम रति रामपद, यह वरदानु न आन'' ।[15]

कवि ने इस प्रकार भक्ति की श्रेष्ठता प्रतिपादित की है । तुलसी का मानस लोक मंगलाशा और भक्तिभाव समन्वित है । स्वान्तः सुखाय तो है ही बहुजन हिताय भी है क्योंकि सर्व हित मे ही तुलसी का स्वान्तः सुख है ।

गिरधर कवि ने उतर काण्ड के अंतिम अध्याय में रामायण का रचना काल स्पष्ट निर्दिष्ट किया है –

शाके सत्तरसें अठ्ठावन, धन संक्राति त्यांहेजी ।

संवत अष्टादश त्रिनेवुं हेमंतऋतुनी मांहेजी ।।[16]

गिरधर कवि बिना लाग लपेट स्पष्ट कह देते हैं । कवि की प्रतिभा अनूठी थी । कवि गिरधर आख्यानकार थे । लोगों के सन्मुख बैठकर अपना भाव प्रस्तुत करना आम बात नहीं है । इसमें लोकरंजन एवं लोक रुचि का विशेष ध्यान रखना पड़ता है । कवि के पास कवि हृदय तो है ही श्रद्धा के द्वारा भक्ति मार्ग के सोपानों को सिद्ध करते हुए आराध्य की विशेष कृपा प्राप्त करना चाहते हैं । उनका स्पष्ट मत है कि

केशव कीर्तन कळियुगसाधन अब नहि एने तोलेजी
एवुं जाणी विश्वास धरी मन गाया हरिगुणग्रामजी ।।[17]

कवि का स्पष्ट मत है कि कलियुग में नाम स्मरण ही अमोध शस्त्र है । गिरधर कवि जन मानस के बहुत ही करीब थे । अतः तद्‌युगीन सामाजिक परिस्थितियों का विशद अध्ययन करके अपनी कृति को जन मानस तक पहुँचाने में सफल हुए हैं । कवि ने अपनी कृति के प्रेरणा स्त्रोत ग्रंथों का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है । कवि ने अनेक स्थानों पर अपने विनय एवं अल्प मति का उल्लेख करते हुए अपनी दीनता का भाव भी प्रदर्शित किया है जिससे कवि की गरिमा का परिचय प्राप्त होता है ।

वाल्मीकि रामायण नो अर्थ, मांहे नाटककृत हनुमंतजी ।
ते थकी भाषा ग्रंथ कर्यो छे, लेई दृष्टांत अनंतजी ।।
पदमपुराण ने अग्निपुराणनो, मेळव्यो माहे संबंधजी ।
अल्पबुद्धि ते माटे कई एक, कर्युं प्राकृत पदबंध जी ।[18]

कवि ने स्पष्ट रूप से अन्य ग्रंथों का ऋृण स्वीकार करते हुए उल्लेख किया है । कवि की विनम्रता भी ध्यानाकर्षक है, जैसे

बुद्धि प्रमाणे ए ग्रंथ कर्यो रसहीण होय अलंकारजी ।
ते दोष क्षमा करजो सहु कविजन राखजो चित उदारजी ।।[19]

कवि अपने आपको अल्पमति घोषित करके विनम्रता का परिचय देते हैं । कवि एक स्थान पर यह भी कहते हैं कि मेरा यह ग्रंथ चाहे जैसा भी हो मगर योग्य फल देनेवाला अवश्य है क्योंकि –

नानुं मोटुं साकरनुं श्रीफल, सर्व दिशा रसरूप जी ।
अवळुं, सवळुं बीज पड़े, पण उगे पृथ्वी मोझारजी ।।[20]

गिरधर कवि स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं कि रामायण आम कथा नहीं है । राम का नाम प्राणी मात्र के लिए संजीवनी रूप है । वे कहते हैं कि –

“हरिनामनो महिमा घणो, महापतित पावन थाय;
वाल्मीकि मुनि मोटा थया ते, नामनो महिमाय ।।[21]

कवि ने बार बार नाम की महिमा का उल्लेख करके प्राणी मात्र के मोक्ष का सरल आधार बताया है । अतः राम की भक्ति सबके लिए हितकारी है । गिरधर का स्पष्ट कहना है कि लोकमंगल एवं जनहित हेतु ही मैंने आलोच्य कृति का सर्जन किया है । इस में तनिक भी अभिमान या दंभ नहीं है यथा –

“परमारथ कारण श्रम करियो नथी कर्यो स्वारथलेशजी,
मानदंभ मूकी, गाया छे, पावन गुण परमेश जी ।।”[22]

यहाँ कवि का उद्‌देश्य भी देखने को मिलता है । कवि ने रामायण में एक स्थान पर यह कहा है कि मैं ब्राह्मण नहीं हूँ । कविता करना मेरी कला भी नहीं है । मेरा जन्म तो वैश्य कुल में हुआ है जैसे –

“वैश्य वर्णमां जन्म ज धरियो, वीरक्षेत्रमां वास जी,
वणिक ज्ञाति दशा लाड़नी, वैश्नव गिरधर दासजी ।।”[23]

कवि ने रामायण को आख्यान के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । तद्‌युगीन समाज में चौराहे पर, मंदिर के प्रांगण में या किसी मैदान पर ग्रीष्म ॠतु में संध्या आरति के बाद भोजनोपरांत लोग इकट्ठे होते थे । आख्यानकार एक हाथ में तानपुरा दूसरे हाथ में मंजीरा लेकर रामायण के प्रसंगों को लोगों के सम्मुख भाववाही मुद्रा में प्रस्तुत करता था । गिरधर कवि ने अतः ऐसे अनेक आख्यानों की रचना की है, जिनमें ‘प्रह्लादचरित्र’, ‘तुलसी विवाह’, ‘राजसूययज्ञ’, ‘कृष्ण चरित्र’ अत्यंत प्रसिद्ध हैं । इन आख्यानों के अलावा ‘दाणलीला’, ‘श्री कृष्णजन्म वर्णन’, ‘राधा कृष्ण नो रास’, ‘ग्रीष्म ॠतुनी लीला’, ‘जन्माष्टमी नो सोहेलो’, ‘नृसिंह चतुर्दशीनी वधाई’ इत्यादि अनेक काव्यों की रचना की है । कवि के पिताजी गरबडदास भी कविता लिखते थे । गिरधर कवि के दो भाई थे । दोनों कवि से छोटे थे । कवि की दो बहनें

सदा और कंकु थीं । कवि ने रामायण या अन्य आख्यानों की रचना इसलिए की थी कि इन रचनाओं को ऐसे सुपात्रों को दान किया जाए जो आर्थिक उपाजनका आधार बने । ये आख्यान लिखकर ब्राह्मणों को दान कर देते थे जिससे उनके परिवार का निर्वाह हो सके । कवि ने एक स्थान पर उल्लेख किया है कि –

"साक्षर द्विजने लखावीने, पुस्तक दान करेजन जेहजी;
पृथ्वी दान तणुं पुण्य होय तेने, महासुख पामे तेहजी ।।"[24]

गिरधर दान की महिमा के साथ साथ भक्ति का प्रचार भी करते हैं ।

4.3 'रामचरितमानस' में निरुपित राम कथा :

रामचरितमानस की कथावस्तु पूर्णतया सुव्यवस्थित और सुसंगठित है । इसका कथानक भारतीय साहित्य में चिरकाल से प्रसिद्ध प्रचलित है । मानस का कथानक नानापुराण निगमागम के अनुसार वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण, हनुमन्नाटक, प्रसन्न राघव, श्रीमद्भागवत एवं अन्य आर्ष ग्रंथों में वर्णित कथानक है । इसकी कथावस्तु ऐतिहासिक अर्थात् प्रख्यात है । आचार्य भामह के निर्देश अनुसार मानस का कथानक सभाश्रित एवं दण्डी की विवेचना के अनुरूप वह 'इतिहासोद्भूत' है । मानस में आधिकारिक और प्रासंगिक दोनों प्रकार की कथावस्तु हैं । राम की कथा आधिकारिक और शूर्पनखा, अहिल्या, ताड़िका की कथा प्रासंगिक मानी जाएंगी । काव्य शास्त्रीय दृष्टि से महाकाव्य की कथावस्तु असंक्षिप्त होनी चाहिए । मानस में रामकथा का विशद वर्णन है । मानसकार का महत्ती उद्देश्य है रामचरित का प्रतिपादन करना । इसमें जीवन के विविध पक्षों, वस्तुओं और कार्य व्यापारों का सर्वांगीण विवेचन किया गया है । रामचरितमानस की कथावस्तु सात काण्डों में विभाजित है । जो बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड नाम से प्रसिद्ध है । इन सब में बालकाण्ड सबसे विस्तृत

है । बालकाण्ड में 361 दोहा चौपाई, अयोध्याकाण्ड में 326, अरण्य में 46, किष्किंधा में 30, सुन्दर में 60 लंका में 121 और उत्तरकाण्ड में 130 दोहा चौपाई है ।

बालकाण्ड की कथा में मंगलाचरण, श्रीनामवंदना, सतीका मोह, याज्ञवल्क्य, भरद्वाज संवाद, शिव पार्वती संवाद, नारद का अभिमान, मनुशतरूपा का तप, भानुप्रताप की कथा, राम जन्म, विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा, पुष्पवाटिका प्रसंग, धनुषभंग, परशुराम प्रसंग, श्री सीताराम विवाह आदि मुख्य हैं । तुलसीदास ने आलोच्य काण्ड में राम का जन्म दोहा संख्या 190 पर दिया है, यथा

''जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल ।

चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुखमूल ।।''[25]

रामावतार के कई कारण कविने बताये हैं, जिनमें जय विजयों को सनकादियों का शाप, भगवान विष्णु के अवतार कश्यप अदितियों का जन्म, दशरथ कौशल्या के रूप में तुलसीने जलंधर की घटना के साथ साथ अलग अलग कल्पों में रामावतार का उल्लेख किया है । इसमें नारद की कथा, मनुशत रूपा की कथा और प्रतापभानु की कथा है ।

नारद की कथा के अंतर्गत यह कहना चाहिए कि काम पर विजय प्राप्त कर लेने पर उन्हें अभिमान हो गया था । अतः इनके अभिमान के निराकरण हेतु श्री हरि ने अपनी माया के आधार पर विश्वमोहिनी की उत्पत्ति की । नारद ने विश्वमोहिनी को देखा तो हृदय में अनुराग उमड़ पड़ा । विश्वमोहिनी को प्राप्त करने हेतु नारद भी स्वयंवर में जाते हैं । विष्णु अपनी माया से नारद का रूप विकृत कर देते हैं । नारद को पता नहीं चलता । उस स्वयंवर में दो शिव गण भी उपस्थित थे । उन्होंने नारद का रूप देखा तो खिल्ली उड़ाने लगे । नारद को शंका होती है । विष्णु वहाँ राजा के रूप में आकर विश्वमोहिनी को प्राप्त कर लेते हैं । क्रोधित नारद शिवगणों को शाप देते हैं । नारद विष्णु के पास आते हैं । कुपित अवस्था में ही उनको भी शाप दे देते

हैं । नारद के मन में यही था कि इस स्वयंवर में मेरे समान कोई सुन्दर एवं योग्य पुरुष हे ही नहीं । प्रभुने उन्हें वानर का रूप दे दिया था । नारद ने प्रभु को (विष्णु को) इस प्रकार शाप दिया –

बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा । सोइतनु धरहु श्राप मम एहा ।।
कपि आकृति तुम्ह कीन्हि हमारी । करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी ।।
मम उपकार कीन्ह तुम्हभारी । नारी बिरहँ तुम्ह होब दुखारी ।।[२६]

मानसकार ने रामावतार का दूसरा कारण मनु–शतरूपा की कठिन तपस्या बताया है । मनु–शतरूपा की भक्ति भावना एवं कठोर तप के फलस्वरूप भगवान प्रसन्न होकर प्रकट होते हैं । दोनों को वर माँगने के लिए कहते हैं । तब मनु शतरूपा प्रभु के चरणों में नत मस्तक होकर विनय करते हैं कि 'चाहउँ तुम्ह हि समान सुत' भगवान प्रत्युत्तर में दोनों को प्रसन्न करते हैं ।

तहँ करि भोग विसाल तात गएँ कछु काल पुनि ।
होइहहु अवध भुआल तब मैं होब तुम्हार सुत ।।
इच्छामय नरबेष सँवारे । होइहउँ प्रगट निकेत तुम्हारे ।।
अंसन्ह सहित देह धरिताता । करिहउँ चरित भगत सुख दाता ।।[27]

कवि ने रामावतार के कारणों में प्रताप भानु की कथा का उल्लेख किया है । कथा तो विस्तृत है । संक्षेप में देखे तो युद्ध में प्रतापभानु से पराजित राजा कपट मुनि के वेष में जंगल में था । एक दिन आखेट खेलते हुए राजा प्रतापभानु रास्ता भटककर उस मुनि के पास पहुँचता है । पूर्व द्वेष को साधने के लिए वह मुनि रूपी राजा प्रतापभानु को आतिथ्य करके प्रतिदिन एक लाख नए ब्राह्मणों को भोजन कराने का उपदेश देता है । प्रतापभानु का एक बैरी काल केतु इस मुनि के साथ शामिल होकर राजा के महल में आकर भोजन में ब्राह्मणों का माँस मिलाता है । इसकी सूचना आकाशवाणी द्वारा भोजन करनेवाले ब्राह्मणों को मिलती है । क्रोधावस्था में ब्राह्मण राजा प्रतापभानु को कुल सहित

नष्ट होने का शाप देते हैं । प्रतापभानु परिवार सह राक्षस बनता है जिसमें प्रतापभानु रावण, उसका छोटा भाई अरिमर्दन कुंभकर्ण और बुद्धिमान मंत्री जिसका नाम धर्मरुचि था वह रावण का सौतेला भाई विभीषण बनता है । रावण आदि राक्षस दुनिया के समग्र प्राणियों को, देवताओं को, मुनि गंधर्व भूमाता और ब्राह्मण सभी को दुःख देते हैं । अतः इनके आर्तनाद से प्रभु प्रकट होते हैं और अशरीरी वाणी के द्वारा वरदान देते हैं कि –

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा । तुम्ह हि लागि धरिहउँ नर बेसा ।।
अंसन्ह सहित मनुज अवतारा । लहेउँ दिनकर बंस उदारा ।
कस्यप अदिति महातप कीन्हा । तिन्ह कहूँ मैं पूरब बर दीन्हा ।।
ते दसरथ कौसल्यारूपा । कोसलपुरी प्रगट नरभूपा ।।[28]

इन सब प्रसंगों का उल्लेख करके तुलसीदास ने स्पष्ट रूप से कहा है कि प्रभु अपने भक्तों की रक्षा अवश्य करते हैं । दुष्टों का और अनिष्ट तत्त्वों का निश्चित समय पर नाश करते हैं । कवि ने रामावतार के कारणों में सगुण निर्गुण के भेद को भी मिटाने का प्रयास करके अवतारी राम के ब्रह्मत्व को श्रेष्ठता प्रदान करने का प्रयास किया है । अतः हम कह सकते हैं कि रामावतार का उद्देश्य दुष्ट को शिक्षा और शिष्ट की रक्षा है ।

बालकाण्ड में कथा अनेक प्रासंगिक घटनाओं के साथ आगे बढ़ती है । दशरथ ने विश्वामित्र की आज्ञा से पुत्र कामेष्टि यज्ञ किया । अग्निदेव प्रत्यक्ष प्रसन्न होकर पायस देते हैं । राजा तीनो पत्नियों को पायस देते हैं । निश्चित समय पर योग्य योग, लग्न, ग्रह, वार और तिथि आदि पर राम का जन्म होता है । भगवान का विराट रूप देखकर कौसल्या विनंती करती है कि हे प्रभु ! आप बाल–लीला करें । प्रभु माता की इच्छा पूर्ण करते हैं । राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न बाललीला करते करते बड़े हो रहे हैं । यज्ञोपवित संस्कार के बाद दशरथ राजा चारों भाइयों को गुरुकूल विश्वामित्र के यहाँ भेजते हैं । चारों भाई विद्या पारंगत होकर लौटते हैं । विश्वामित्र वन में तपस्या,

यज्ञ करते हैं तब असुर उन्हें सताते हैं । यज्ञ में विघ्न डालते हैं । अतः विश्वामित्र राजा दशरथ के पास आकर अपने यज्ञ एवं आश्रम की रक्षा हेतु राम–लक्ष्मण को माँगते हैं । पुत्र मोह के कारण दशरथ राजा विश्वामित्र की बात का अस्वीकार करते हैं । विश्वामित्र राम की अलौकिकता और शौर्य की बात कहकर दशरथ को पुत्र भेजने के लिए संमत कर लेते हैं । राम–लक्ष्मण विश्वामित्र के आश्रम आते हैं । ताड़का का वध करते हैं । सुबाहु का वध करते हैं । मारीच को बिना फणवाले बाण से सौ जोजन दूर फेंक देते हैं । विश्वामित्र राम–लक्ष्मण को शस्त्र विद्या का ज्ञान देते हैं । तद्पश्यात मिथिला के राजा जनक की और से विश्वमित्रको सीता स्वयंवर और धनुष यज्ञ का निमंत्रण मिलता है । अतः विश्वामित्र राम–लक्ष्मण को लेकर मिथिला जाने के लिए तैयार होते हैं । मुनि रास्ते में गौतम अहल्या की कथा राम से कहते हैं । उनका आश्रम दिखाते हैं । मुनि राम–भक्ष्मणको शापग्रस्त शिला बनी हुई अहल्याके पास ले जाते हैं । मुनि राम से कहते हैं कि अपनी पद रज से अहल्या का उद्धार करो । राम का पद स्पर्श होते ही अहल्या शाप–मुक्त हो जाती है । वह राम की स्तुति करती है –

मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना ।
देखेउँ भरिलोचन हरिभवमोचन इहइलाभ संकर जाना ।।
विनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न माँगउँ वर आना ।।
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ।।[29]

अहल्या का उद्धार करके राम–लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ मिथिला आते हैं । नगरजन राम–लक्ष्मण का सौंदर्य देखकर अत्यंत प्रभावित होते हैं । राम–लक्ष्मण यज्ञ शाला देखने जाते हैं । विश्वामित्र की पूजा के लिए राम–लक्ष्मण जनक की वाटिका में फूल लेने के लिए जाते हैं । राम मालियों से पूछ कर फूल चुनते हैं । उसी समय सीता गौरी पूजा के लिए वाटिका में आती है । सीता अपनी सखियों के साथ है । सीता राम का साक्षात्कार होता

है । राम का सौंदर्य देखकर सीता आकर्षित होती है । सीता राम के साथ विवाह के लिए गौरी की पूजा करती है । वहाँ पार्वती की मूर्ति हँसती है ।

कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं । अस कहि चरन गहे वैदेही ।।
विनय प्रम बस भई भवानी । खली माल मूरति मुसुकानी ।।[30]

पुष्प वाटिका का प्रसंग तुलसी का मौलिक है । राजा जनक शतानंद को भेजकर विश्वामित्र को राम–लक्षण के साथ यज्ञशाला ले आते हैं । राजा जनक भरी सभा में अपनी प्रतिज्ञा एवं धनुष चढ़ाने की बात कहते हैं । सभी राजा सीता का वरण करना चाहते हैं मगर उनसे धनुष चढ़ाना तो दूर हिलता तक नहीं । राम विश्वामित्र की आज्ञानुसार धनुष चढ़ाते हैं । चारों ओर जयजय कार होता है । सीता राम के गले में जयमाला डालती है । उसी समय परशुराम वहाँ आते हैं । लक्ष्मण और परशुराम के बीच लंबी वाक्पटूतामय संवाद योजना चलती है । राम अपनी सात्विकता के आधार पर परशुराम को शांत करते हैं । बाद में जनक दूत को अयोध्या भेजते हैं । राम के साथ–साथ लक्ष्मण, भरत और शत्रुध्न के विवाह भी सम्पन्न होते हैं । राम के साथ सीता, लक्ष्मण के साथ उर्मिला, भरत के साथ मांडवी और शत्रुध्न के साथ श्रुतिकीर्ति का विवाह होता है । विवाह से जनकपुरी एवं अयोध्या में आनंदोत्सव का वातावरण देखने को मिलता है ।

जहँ तहँ राम ब्याहु सबु गावा । सुजसु पुनीत लोक तिहुँ छावा ।।
आए ब्याहि रामु घर जब तें । बसई अनंद अवध सब तब तें ।।[31]

बालकाण्ड की कथा राम के विवाह के साथ समाप्त होती है । अयोध्याकाण्ड रामचरितमानस का अत्यंत प्रमुख काण्ड है । इसमें शील, सौंदर्य, मर्यादा, भ्रातृप्रेम एवं समर्पण का भाव सर्वश्रेष्ठ है । राम के चरित्र के बाद कोई उत्तम चरित्र हों तो संत भरत का ही है । भरत का चरित्र अयोध्याकाण्ड में विशेष रूप से ध्यानाकर्षक है । तुलसी ने अयोध्याकाण्ड के प्रारंभ में गुरुवंदना की है । दशरथ राजा एक बार अपनी सभा में बैठे थे ।

वे दर्पण में देखकर मुकुट सीधा करते हैं । उसी समय कर्ण के पास सफेद बाल दिखाई देते हैं । बुढ़ापे का स्मरण आते ही राम को युवराज बनाने का विचार आता है । गुरु वशिष्ट जी से परामर्श करके राम के राजतिलक की तैयारियाँ शुरु करवाते हैं । देवताओं ने राम के राज्याभिषेक के समाचार सुने तो दुःखी हुए । उन्होंने माता सरस्वती से प्रार्थना की । अतः सरस्वती ने मंथरा को अपयश की पिटारी बना दी । मंथरा ने कैकेयी को कूटनीति बताकर दशरथ से दो वर माँगने के लिए तैयार की । फलस्वरूप कैकेयी भरत के लिए अयोध्या की गादी और राम के लिए चौदह साल का वनवास माँगती है । दशरथ राम को वन भेजना नहीं चाहते थे । राम, लक्ष्मण और सीता के साथ वनगमन करते हैं । दशरथ मूर्छित हो जाते हैं । अयोध्यावासी भी राम के साथ–साथ चलते हैं । राम तमसा नदी से आगे श्रृंगवेरपुर पहुँचते हैं । वहाँ तीनों निषादराज का आतिथ्य ग्रहण करते हैं । केवट रामको गंगापार कराता है । राम भारद्वाजके आश्रम जाते है । बाद में राम वाल्मीकि के आश्रम में पहुँचते हैं । रास्ते में वनवासी तीनों का आदर सत्कार करते हैं । राम चित्रकूट निवास करते हैं । मंदाकिनी में स्नान करते हैं । यहाँ पुत्र–वियोग में राजा दशरथ अत्यंत दुःखी हो जाते हैं । श्रवण के माता–पिता का शाप याद आता है । दशरथ राम राम कहते कहते नश्वर शरीर का त्याग कर देते हैं । गुरु वशिष्ठ नाव में तेल भरकर राजा के शरीर को उसमें रखने के लिए कहते हैं । भरत, शत्रुध्न मातुल गृह से लौटते हैं । दशरथ की मृत्यु और राम वनगमन के पीछे माता कैकेयी का ही हाथ है ऐसा जब भरत को पता चला तो माँ को कटू वचन कहते हैं । शत्रुध्न कुपित होकर मंथरा को लात मारते हैं । भरत और शत्रुध्न कौसल्या माँ के पास जाकर क्षमा माँगते हैं । वश्ष्ठि जी भरत को सांत्वना देकर दशरथ की अंत्येष्टि विधिवत् कराते हैं । बाद में भरत शत्रुध्न सपरिवार नगरजनों के साथ राम से मिलने के लिए निकल पड़ते हैं । तीनों माताओं और भरत शत्रुध्न से मिलकर राम–लक्ष्मण,

सीता प्रसन्न होते हैं । राम अपने मुख से भरत की प्रशंसा लक्ष्मण से करते हैं कि हे लक्ष्मण ! सुनो; भरत सरीखा उत्तम पुरुष ब्रह्मा की सृष्टि में न तो कहीं सुना गया है नही देखा गया है । ब्रह्मा, विष्णु और महादेव का पद पाकर भी भरत को राज्य का मद नहीं होता । क्या कभी काँजी की बूंदों से क्षीर समुद्र नष्ट हो सकता है ?

भरतहिं होई न राजमदु, बिधि हरिहर पद पाइ ।
कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ ।।[32]

भरत परिजन सहित राम को अयोध्या पुनः लौटने का आग्रह करते हैं । वशिष्ट यहाँ भरत को समझाते हैं । जनक और सुनयना भी चित्रकूट आते हैं । राम नाना भाँति भरत को समझाते हैं । राम अपनी चरण पादूका भरत को देते हैं । सब लोग भारी हृदय से चित्रकूट से बिदा होते हैं । भरत राम की आज्ञा शिरोधार्य मानकर अयोध्या लौटते हैं । राज सिंहासन पर पादूका रखते हैं । भरत नंदीग्राम में निवास करके सन्यासी के रूप में जीवन यापन करते हैं । भरत पर्णकूटी में रहने लगते हैं । अयोध्याकाण्ड की कथा यहाँ समाप्त होती है ।

अरण्यकाण्ड में राम द्वारा मानवेतर प्राणियों के साथ किए गए व्यवहारों का सुंदर वर्णन है । अरण्यकाण्ड की कथा संक्षिप्त है । इसमें मंगलाचरण के बाद इन्द्र पुत्र जयंत की कुटिलता, सीता अनसूया मिलन, विराध वध, शरभंग का वृतांत, राम अगत्स्य मिलन, पंचवटी में पर्णकुटी, खरदूषण वध, शूर्पनखा विरूपीकरण, मारीच प्रसंग, सीता हरण, अशोक वाटिका में सीता स्थापना, शबरी पर कृपा आदि प्रसंग हैं । खग, मृगादि के साथ किए गए व्यवहारों के फलस्वरूप ही राम को सीतान्वेषण में सहायता मिलती है । काण्ड के प्रारंभ में इन्द्र पुत्र जयंत कौआ बनकर सीता के पैर पर चंचु प्रहार करता है । नारद द्वारा ही जयंत का उद्धार होता है । बाद में राम अत्रि और अनसूया के आश्रम जाते हैं । अनसूया सीता को न मुरझानेवाली माला, आभूषण एवं

पतिव्रता के लक्षण समझाती है । आगे राम विराध का उद्धार करते हैं । बाद में शरभंग मुनि को योग्य गति प्रदान करते हैं । आगे राम लक्ष्मण सीता सहित अगत्स्य ऋषि से मिलते हैं । उनकी आज्ञा अनुसार दण्डकारण्य में स्थित पंचवटी की ओर प्रस्थान करते हैं । गोदावरी तट पर राम पंचवटी में पर्णकुटी बनाकर सीता, लक्ष्मण सहित रहने लगते हैं । रावण की बहन शूर्पनखा दण्डक वन में रहती थी । वह एक दिन पंचवटी पहुँच जाती है । राम का सौंदर्य देखकर वह मोहित हो जाती है । अतः वह सुंदर रूप धारण करके राम से प्रणय की भिक्षा माँगती है । राम उसे लक्ष्मण के पास भेजते हैं । लक्ष्मण फिर उसे राम के पास भेजते हैं । अतः शूर्पनखा क्रोधित होकर अपना असली रूप प्रकट करती है । सीता भयभीत हो जाती है । राम का संकेत पाकर लक्ष्मण शूर्पनखा को कुरूप कर देते हैं । नाक–कान काट लेते हैं । शूर्पनखा अपने भाई खर–दूषण के पास जाकर उन्हें युद्ध के लिए प्रोत्साहित करती है । राम अकेले ही खर–दूषण सहित चौदह हजार राक्षसों को नष्ट कर देते हैं ।

राम राम कहि तनु तजहि पावहिं पद निर्बान ।
करि उपाय रिपु मारे, छन महुँ कृपानिधान ।।[33]

खरदूषण की मृत्यु से भयभीत शूर्पनखा रावण की सभा में जाती है । रावण को उकसाती है । रावण रथारुढ़ होकर मारीच के पास जाता है । मारीच रावण को समझाता है । मारीच रावण की बात नहीं मानता । अतः रावण क्रोधित होकर मारीच की हत्या करने के लिए तैयार हो जाता है । मारीच राम की शक्ति से पूर्व परिचित है अतः वह सोचता है कि रावण के हाथों मरने से अच्छा है कि राम के हाथों मेरी मृत्यु हो । अतः वह कपट मृग बनकर पर्णकुटी के सम्मुख जाता है । राम को दूर ले जाने में मारीच सफल हो जाता है । मरते समय मारीच करुण स्वर में लक्ष्मण को पुकारता है । सीता यह समझती है कि राम संकट में है । सहायता चाहते हैं ।

लक्ष्मण सीता को छोड़कर जाना नहीं चाहता तब सीता मरम बचन कहकर लक्ष्मण को जाने के लिए विवश करती है । लक्ष्मण सीता के संरक्षण का भार देवताओं को सौंपकर राम के पास चले जाते हैं । रावण सन्यासी का भेष धारण करके सीता का हरण करता है । मार्ग में सीता की करुण वाणी सुनकर जटायु रावण का सामना करता है । अंत में जटायु घायल होकर गिर जाता हैं । सीता आकाशमार्ग जाते हुए पर्वतों पर वानरों को देखती है । अतः अपने वस्त्र आभूषण गिराती है । रावण येन केन प्रकारेण सीता को वश में करने का प्रयास करता है । सीता को अशोकवाटिका में रखा जाता है । राम लक्ष्मण सहित पर्णकुटी पहुँचते हैं । सीता की अनुपस्थिति देखकर अत्यंत दुःखी होते हैं । विलाप करते हैं । राम–लक्ष्मण, वन वन भटकते हैं । वन में घायल जटायु की राम से भेंट होती है । जटायु राम को सारा वृतांत सुनाता है । राम जटायु को मोक्ष प्रदान करते हैं । राम को आगे चलकर कबंध मिलता है । वास्तव में यह एक गांधर्व था । दुर्वासा मुनि के शाप के कारण राक्षस बन गया था । राम कबंध का भी उद्धार करते हैं । राम शबरी के आश्रम आते हैं । शबरी को राम नवधा भक्ति का उपदेश देते हैं । शबरी राम को गंतव्य के लिए संकेत करती है कि

''पंपा सरहि जाहु रघुराई । तहँ होइहि सुग्रीव मिताई ।।

अतः राम, लक्ष्मण के साथ पंपा सरोवर जाते हैं । यहाँ नारद मुनि आते हैं । राम की शक्ति, शील, सौंदर्य और महिमा से प्रभावित होते हैं । प्रसन्न होकर ब्रह्मलोक चले जाते हैं । यहाँ पर अरण्यकाण्ड समाप्त हो जाता है ।

किष्किंधाकाण्ड मानस का सबसे छोटा काण्ड है । इसमें मंगलाचरण, राम–हनुमान भेंट, बालि वध, सीता की खोज के लिए वानरों का प्रस्थान हनुमान जामबंत संवाद आदि प्रसंग हैं । सीतान्वेषण करते हुए राम ऋष्यमूक पर्वत पहुँचते हैं । सुग्रीव भयभीत होता है अतः हनुमान को राम की परीक्षा

करने के लिए भेजता है । हनुमान राम से भली भाँति परिचित हो जाते हैं । हनुमान राम और सुग्रीव की मित्रता स्थापित करवाते हैं । राम अपनी व्यथा कथा सुनाते हैं । सुग्रीव को अपना किष्किंधा का राज्य पुनः दिलाने का वचन देते हैं । सुग्रीव सीता द्वारा गिराये गये वस्त्राभूषण राम को दिखाता है । वाली–सुग्रीव के बीच में युद्ध होता है । राम वाली का वध करते हैं । राम सुग्रीव को किष्किंधा का राजा और अंगद को युवराज बनाकर अपना वचन निभाते हैं । वर्षाऋृतु बीत जाने पर सुग्रीव अपना वचन नहीं निभाता । राम, लक्ष्मण को भेजते है । सुग्रीव क्षमा माँगता है । सुग्रीव निश्चित समयावधि में सीता की खोज के लिए वानरों को अलग अलग दिशा में भेजता है । हनुमान तथा अन्य वानरों की भेंट स्वयंप्रभा से होती है । वह हनुमान की सहायता करती है । जटायु के भाई संपाति से सब वानर मिलते हैं । संपाति कहते हैं कि सीता लंका में है । जाम्बवान के कहनेसे हनुमान समुद्रोल्लंघन के लिए तैयार हो जाते हैं । यहीं पर यह काण्ड पूर्ण होता है ।

सुन्दरकाण्ड मानस का सुन्दरतम काण्ड है । इसमें हनुमान ही छाये हुए हैं । इसमें मंगलाचरण के बाद हनुमान का लंका में प्रवेश, सीता–हनुमान संवाद, लंकादहन रामहनुमान संवाद, लंका के लिए प्रस्थान, विभीषण की शरणागति और समुद्र पर कोप आदि प्रसंग मुख्य हैं । यदि भरत अयोध्याकाण्ड के नायक हैं तो हनुमान सुन्दरकाण्ड के नायक हैं । यह काण्ड छोटा है मगर मानस में इसका महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है । भक्ति के लिए सुंदरकाण्ड श्रेष्ठ फलदायक माना गया है । हनुमान की शक्ति परीक्षा हेतु अनेक बाधाएँ आती हैं । सुरसा, सिंहिका आदि का सामना करते हुए हनुमान आगे बढ़ते हैं । लंका में प्रवेश करते समय लंका नगरी की रक्षिका लकिनी से हनुमान का युद्ध होता है । हनुमान लंकिनी को योग्य गति प्रदान करके रावण के महलों में सीता की खोज करते हैं । हनुमान विभीषण से मिलते हैं । विभीषण के कहने से हनुमान अशोक वाटिका पहुँचते हैं । हनुमान सीता को

राम की मुद्रिका देते हैं । सीता असुर की माया समझकर मुँह मोड़ लेती है । हनुमान सीता हरण के बाद की सब घटनाएँ कहते हैं और अपना विराट और दिव्य स्वरूप दिखाते हैं । सीता को तब प्रतीति होती है । हनुमान अपनी क्षुधा तृप्त करने के हेतु सीता की अनुमति माँगते हैं । वहाँ वाटिका में फल खाने के साथ साथ वाटिका ध्वंस करते हैं । हनुमान रावण के पुत्र अक्षयकुमार सहित अनेक योद्धाओं का वध करते हैं । ब्रह्मास्त्र के कारण हनुमान बंदी होकर रावण के सम्मुख प्रस्तुत होते हैं । दोनों का संवाद होता है । रावण हनुमान को शिक्षा देने हेतु इनकी पूंछ जलाने का आदेश देता है । हनुमान सारी लंका जला देते हैं । बाद में सीता से मिलकर चूडामणि ग्रहण कर हनुमान वापस आते हैं । राम सुग्रीव को सेना आगे बढ़ाने का आदेश देते हैं । विभीषण राम की शरण में आता है । मंदोदरी रावण को समझाती है । रावण मानता नहीं । राम समुद्र से विनय करते हैं । समुद्र राम की उपेक्षा करता है । राम समुद्र पर बाण चलाने के लिए तैयार होते हैं । समुद्र राम की शरण में आता है । राम नल नील की सहायता से सेतु बाँधने के लिए सोचते हैं । यहीं पर सुंदरकाण्ड की कथावस्तु पूर्ण होती है ।

लंकाकाण्ड संक्षिप्त है । इसमें राम रावण युद्ध और रावण का वध मुख्य है । इसमें सेतुबंध, अंगद का दूत बनकर जाना, लक्ष्मण मेघनाद युद्ध, कुंभकर्ण वध, मेघनाद वध, राम रावण युद्ध, रावण वध, मंदोदरी का विलाप, सीता की अग्नि परीक्षा और राम का अयोध्या के लिए प्रस्थान इत्यादि घटनाएँ मुख्य हैं । राम समुद्र के सुझाव अनुसार नल नील द्वारा सेतुबंध का निर्माण करते हैं । समुद्र तट पर शिवलिंग की स्थापना करके सेना सहित लंका पहुँचते हैं । रावण को मंदोदरी, प्रहस्त आदि समझाते हैं कि राम से युद्ध करना ठीक नहीं । रावण किसी की एक नहीं सुनता । राम अंगद को दूत बनाकर भेजते हैं । रावण अंगद का भी अपमान करके संधि प्रस्ताव को ठुकरा देता है । अतः युद्ध निश्चित हो जाता है । दोनों सेनाओं के बीच धमासान युद्ध प्रारंभ

हो जाता है । राक्षस अपने स्वभाव अनुसार माया का आश्रय लेकर वानर सेना को बार बार भयभीत करते हैं । रावण पुत्र अतिकाय युद्ध भूमि में मोक्ष को प्राप्त करता है । रावणपुत्र मेघनाद (इन्द्रजित) अपनी शक्ति के फलस्वरूप राम–लक्ष्मण को नाग–पाश में बाँध लेता है । गरुड दोनों को नाग–पाश से मुक्त करता है । रावण के कई सेनापति और पुत्र युद्ध में वीरगति को प्राप्त होते हैं । कुंभकर्ण दीर्घकाल तक युद्ध भूमि में अपना कौशल दिखाकर अंत में वीरगति को प्राप्त होता है । इन्द्रजित लक्ष्मण को मूर्छित कर देता है । हनुमान द्रोण पर्वत लाते हैं । सुषेण की चिकित्सा के फलस्वरूप लक्ष्मण स्वस्थ हो जाते हैं । बाद में इन्द्रजित को लक्ष्मण वीरगति प्रदान करते हैं । अंत में रावण अपने दल–बल के साथ युद्ध क्षेत्र में प्रवेश करता है । अपनी विराट शक्ति के फलस्वरूप रण क्षेत्र में हाहाकार मचा देता है । अंत में राम के हाथों रावण का वध होता है । मंदोदरी विलाप करती है । राम विभीषण और मंदोदरी को सांत्वना देते हैं । विभीषण रावण की विधि अनुसार अंत्येष्टि करते हैं । राम के आदेशानुसार लक्ष्मण विभीषण का राज तिलक करते हैं । सीता की अग्नि परीक्षा होती है । राम पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्या की ओर प्रस्थान करते हैं । राम हनुमान को भरत के पास अपने आगमन की पूर्व सूचना के लिए भेजते हैं । यहाँ पर लंका काण्ड पूर्ण होता है ।

उत्तरकाण्ड मानस का महत्त्वपूर्ण अंश है । इसमें कथा का विस्तार नहीं है । प्रसंग इने गिने ही हैं । इसमें हनुमान भरत मिलन, राम का राज्याभिषेक आदि मुख्य प्रसंग हैं । तुलसी ने उत्तरकाण्ड में भक्ति एवं दार्शनिकता की विशद् चर्चा की है । कवि ने गरुड भुशुण्डि संवाद एवं काकभुशुण्डि लोमस संवाद के द्वारा अनेक पहलुओं से भक्तिकी चर्चा की है । इससे तुलसी को भक्त कवि का सम्मान मिला है । उत्तरकाण्ड का महत्त्व सर्वाधिक है । राजगुरु वशिष्ठ ब्राह्मणों को बुलाकर राम का राज्याभिषेक करते हैं । राम कथा यहीं पर पूर्ण होती है ।

4.4 'रामायण' में निरुपित रामकथा :

गिरधर कवि ने गुजराती भाषा में रामायण की रचना करके रामकथा संबंधी रचनाओं में अपना स्थान निश्चित कर लिया है । गिरधर अधिक पढ़े लिखे नहीं थे । भाषा का अधिक ज्ञान नहीं था । काव्य शास्त्र या काव्य कला का ज्ञान नहीं था । ज्ञाति से बनिया अर्थात् वैश्य थे । कहा जाता है कि इनके पिता गरबड़दास कवि थे । अतः कवि गिरधर को काव्य कला पैतृक संस्कार में प्राप्त हुई थी । इसी के आधार पर रामायण का सर्जन किया । प्रत्येक अध्याय के अंत में कवि ने वाल्मीकि का उल्लेख किया है, जैसे इति श्री वाल्मीकि संमत नाटक धारायां... । इसका अर्थ यह नहीं कि रामायण का एक मात्र आधार वाल्मीकि रामायण है । कवि ने चार स्थान पर शतकोटि रामायण का उल्लेख किया है जैसे –

शतकोटि रामायण तणी, जेने करी वहेंचण सार[35]

शतकोटि रामायण करी, वाल्मीकि मुनिए सार[36]

वाल्मीकि महिमा वर्णव्यो, शतकोटि रामचरित[37]

रामायण के अंत में भी कवि ने कहा है कि :

शतकोटि रामचरित्रनो नव पार पामे कोय[38]

गिरधर ने रामायण की कथा को परंपरा अनुसार सात काण्डोंमें विभाजित करने का प्रयास किया है, जिनमें बालकाण्ड, अयोध्या, अरण्य, किष्किंधा, सुन्दर, युद्धकाण्ड, (लंका काड के स्थान पर) उत्तरकाण्ड आदि हैं । प्रत्येक काण्ड में कथा को अलग अलग अध्यायों में विभाजित किया है । अध्याय संख्या भी अलग अलग हैं जैसे बालकाण्ड में 46 अध्याय हैं, अध्योध्या काण्ड में रप, अरण्यकाण्ड में 25, किष्किंधा में 15, सुन्दर में 24, युद्धकाण्ड में पप और उत्तरकाण्ड में 112 अध्याय हैं । इस प्रकार रामायण की कथा 299/15 अध्यायों में विभाजित है । प्रत्येक अध्याय के अंत में कथावस्तु अर्थात् प्रसंग का उल्लेख कर दिया है जैसे –

इति श्री रामचरित्रे वाल्मीकि संमत नाटक धारायां सुन्दरकाण्डे समुद्रोल्लंघने हनुमतो लंकाप्रवेशानाम द्वितियोऽध्यायः [39]

गिरधर कवि ने प्रारंभ में गुरु वंदना के साथ साथ सरस्वती, नरहरि गजानन, उमिया, शिवजी, हंसवाहनी, भारती, भगवती, भोलेनाथ आदि की स्तुति के बाद सज्जनों से क्षमा याचना की है । क्षमा का कारण यह बताया है कि मैं प्राकृत वाणी में रामकथा प्रस्तुत कर रहा हूँ । कवि ने प्रारंभ में यह उल्लेख किया है कि रामायण के मूल रचयिता वाल्मीकि हैं । आगे चलकर व्यास, वसिष्ठ, शुकदेव, ब्रह्मा, हनुमान, विभीषण, शिव, अगत्स्य, सर्वमुनिओ, स्वामि कार्तिक, पौलस्त्य, बगदाल्व ऋषि, धर्मराजा इत्यादि विभूतियों ने रामकथा का सर्जन किया है । कवि ने प्रारंभ में रावण की उत्पति, रावण और इसके परिवार को वरदान, रावण का दिग्विजय आदि प्रसंगों का उल्लेख किया है । रावण ब्रह्मा से पूछता है कि मेरी मृत्यु किसके हाथों होगी ? ब्रह्मा कहते हैं कि अयोध्या के राजा दशरथ के यहाँ राम अवतार लेंगे । यही तेरी मृत्यु का निमित्त बनेंगे । अतः रावण यह निर्णय करता है कि मैं दशरथ को ही मार दूँ । अतः रावण दशरथ राजा के वध के लिए आयोजन करता है । इधर राजा दशरथ का कौशल्या के साथ विवाह निश्चित हो गया । विवाह में सात दिन ही बाकी थे । नारद दशरथ के यहाँ जाकर रावण की योजना बताते हैं । दशरथ कौशल्या को लेकर द्वीप चले जाते हैं । रावण को पता चल जाता है अतः जहाज का ध्वंस कर देता है । दशरथ और कौशल्या फिर भी बच निकलते हैं । नारद वहाँ आ जाते हैं । दोनों का विवाह सम्पन्न कराते हैं । रावण को पता चलता है । वह अत्यंत कुपित होता हुआ दुःखी होता है । आग चलकर सब देवता नारायण की स्तुति करते हैं । भगवान कहते हैं कि मैं चार स्वरूप में अवतार लूँगा । हमें लोग राम, लक्ष्मण, भरण, शत्रुध्न के नाम से पहचानेंगे । सीता का जन्म होगा । हनुमान, जाम्बवान, सुग्रीव, नल नील, अंगद सभी अवतरित होकर पृथ्वी पर दुष्टों का संहार करेंगे । आगे

श्रवण कथा, पुत्र कामेष्टियज्ञ पायसदान, हनुमान जन्म, राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न जन्म, रामबाल लीला, यज्ञोपवित संस्कार, विद्याभ्यास, राम लक्ष्मण तीर्थ यात्रा, विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा हेतु राम लक्ष्मण का जाना, गंगा उत्पति, ताड़िका वध, सुबाहु आदि राक्षसों का वध, अहल्या उद्धार, पदमाक्षिचरित्र, सीता उत्पति, विश्वामित्र के साथ राम लक्ष्मण का धनुष यज्ञ में जाना, सीता के प्रति राम का मोह, यज्ञशाला में राम लक्ष्मण का आगमन, जनक की प्रतिज्ञा, लक्ष्मण का क्रोध, राम का धनुष भंग करना, दशरथ का आमंत्रण, चारों भाइयों का विवाह, राम का सीता के साथ, लक्ष्मण का उर्मिला के साथ, भरत का मांडवी के साथ और शत्रुध्न का श्रुतकीर्ति के साथ विवाह होता है । विवाह के बाद रास्ते में उपवन में परशुराम का राम लक्ष्मण से मिलन, परशुराम का बदरिकाश्रम जाना इत्यादि प्रसंगों का कवि ने विस्तार से वर्णन किया है । कवि बालकाण्ड के अंत में यह भी कहते हैं कि मैंने आप सब के सन्मुख जो यह बालकाण्ड की कथा प्रस्तुत की है उसके लिए मैं तो मात्र निमित्त ही हूँ । मेरे गुरु पुरुषोतम की कृपा से ही यह संभव हो पाया है । कवि गिरधर कहते हैं कि –

वाल्मीकि रामायण थकी, प्राकृत करयो वस्तार;
मांहे नाटक धारा तणो संमत मेळव्यो छे सार
बालकाण्डनी कथा पूरण, करी मति अनुसार;
पद पूरा सतरसें ने पांत्रिस, कथा रसिके विस्तार ।।[40]

यहाँ कवि ने छयालिस अध्यायों में बालकाण्ड की कथा का विस्तार किया है । कवि ने अलग अलग अध्यायों में अपनी मति अनुसार पदों की रचना की है । पद का काव्य रूप दोहा छंद के समान है । दोहे में चरण होते हैं उसी प्रकार पद के भी चार चरण होते हैं । अतः एक हजार सात सौ पैंतीस पदों में बालकाण्ड की कथा प्रस्तुत की है । गिरधर ने कथा में मौलिकता का प्रदर्शन किया है, जिससे रोचकता आ गई है ।

गिरधर ने अयोध्याकाण्ड का विस्तार 25 अध्यायों में किया है । प्रारंभ में गुरु वंदना है । कवि ने द्वितीय अध्याय के प्रारंभ में बालकाण्ड की कथा का सार दिया है जैसे –

बालकाण्डमां प्रथम कथा कही, रावण कुळ उत्पन्न;
दशरथ लग्न श्रवण वध समर, शृंगी चरित्र जगन्न
हनुमंतनी उत्पत्ति कही, पछी राम जन्म समुदाय;
बाळचरित्र कह्युं राघवनुं, तीर्थाटन विदाय ।।[41]

दशरथ राजा अपने चारों पुत्रों का विवाह करके अयोध्या आ गये हैं । सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं । कैकेयी का भाई संग्रामजित दशरथ के यहाँ आता है । भरत शत्रुध्न को एक माह के लिए ननिहाल ले जाता है । दशरथ दर्पण में देखते हैं । कान के पास श्वेत बाल दिखाई देते हैं । अतः राजा राम को अयोध्या का राज्य देने की बात सभा में करते हैं । राम के राज्याभिषेक की धाम–धूम से तैयारियाँ हो रही हैं । देवताओं को दुःख होता है कि यदि राम राजा बन जायेंगे तो राक्षसों का संहार कैसे होगा ? अतः देवतालोग ब्रह्मा के पास जाते हैं । अपनी बात कहते हैं । ब्रह्मा विधि और कलि की सहायता से मंथरा की मति फेर देते हैं । मंथरा कैकेयी को सब समझा देती है । कैकेयी दो वरदान माँगती है, जिनमें भरत को अयोध्या का सिंहासन और राम को चौदह वर्ष का वनवास । राम, लक्ष्मण, सीता तीनों वनगमन के लिए प्रस्थान करते हैं । कौशल्या का रुदन बहुत ही हृदय द्रावक है जैसे –

''मारे किया जनमनां करमहशे ? हो वाला रे;
रे आवीने नडियां आज कुंवर काला रे ।।[42]

राम, सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्यावासी भी जाते हैं । राम के कहने से सबको मध्यरात्रि में निद्राधीन अवस्था में छोड़कर सुमंत शृंगवेर पुर लाता है । केवट का नाम कवि ने धोराय कहा है । राम गंगा पार करते

हैं । राम भारद्वाज के आश्रम आते हैं, चित्रकूट जाते हैं । वाल्मीकि से मिलते हैं । वहाँ पर पर्णकूटी बनाकर रहते हैं । राम वियोग में दशरथ का विलाप, देहावसान, भरत शत्रुध्न का ननिहाल से वापस अयोध्या आना, भरत कैकेयी के प्रति कटू वचन कहते हैं । भरत मंथरा का वध करने का प्रयत्न करते हैं लेकिन वसिष्ठ ऐसा करने से रोकते हैं । दशरथ की अंतिम क्रिया भरत जी करते हैं । राम से मिलने के लिए भरत जी चित्रकूट जाते हैं । शृंगवेरपुर में गृह राजा से भरत मिलते हैं । इन्द्रपुत्र जयंत के स्थान पर कवि ने गांधर्व सुदर्शन को कौआ बनाकर सीता के पैर में चंपूपात कराते हुए बताया है । नारद के कहने से सुदर्शन का उद्धार होता है । राम दशरथ की मृत्यु पर शोक प्रकट करते हैं । जनक चित्रकूट में राम से मिलते हैं । राम भरत को अपनी पादुका देते हैं –

''एवुं कठण पण सुणी भरतनुं, द्रवित थयां रघुनाथजी;
त्यारे रत्नजडित पोतानी पादुका, आपी भरतने हाथजी ।।[43]

सुनयना सीता को सीख देती है । भरत राम की पादुका सिंहासन पर रखकर खुद नंदिग्राम में निवास करते हैं । राम को चित्रकूट के सभी ब्राह्मण अन्यत्र जाने के लिए कहते हैं । राम दंडकवन जाते हैं । यहीं पर अयोध्याकाण्ड की कथा समाप्त होती है ।

अरण्यकाण्ड के प्रारंभ में गुरु की वंदना है । कवि प्रथम अध्याय के प्रारंभ में ही कहते हैं कि

''आधार रामायण तणो, वाल्मीकि जेनुं नाम,
हनुमान नाटकनी कथा, मांहे मेळवी अभिराम ।।[44]

कवि ने आगे की कथा में जो परिवर्तन किए हैं उसका संकेत प्रारंभ में ही दे देते हैं । राम सिंहाद्रि पर्वत आते हैं । यहाँ पर अत्रिमुनि अनसूया के साथ रहते हैं । अनसूया सीताको पतिव्रता के लक्षण समझाती हैं । अमूल्य वस्त्र आभूषण प्रदान करती है । अनसूया परशुराम की माता रेणुका के दर्शन

कराती है । विराध का उद्धार, शरभंग का आश्रम, सुतीक्ष्ण का आश्रम, अगत्स्य का आश्रम, अगत्स्य की उत्पत्ति की कथा, अगत्स्य का समुद्र पान, अगत्स्य के कहने से गोदावरी तट पर पंचवटी बना कर राम सीता लक्ष्मण का निवास करना, जटायु राम मिलन शर्पनखा अपनी दो सखियों के साथ पंचवटी आती है । राम शूर्पनखा की पीठ पर संदेश लिखकर नाक–कान छेदन कराते हैं । खर, दूषण त्रिशरा आदि असुरों का वध, शूर्पनखा का रावण के पास जाना, रावण का मारीच के पास जाना, स्वर्ण मृग का रूप लेने के लिए तैयार करना, स्वर्ण मृग, सीतामोह, राम द्वारा मारीच वध, रावण का सन्यासी बनकर सीता का हरण करना, रावण जटायु का युद्ध, जटायु का घायल होना, सीता द्वारा मातंग पर्वत पर बैठे हुए सुग्रीव, जांबवान, नल नील, हनुमान के प्रति चीर में बांधकर आभूषणों का फेंकना, सीता की अशोक वाटिका में स्थापना, रामविलाप, राम जटायु मिलन, जटायु मृत्यु, राम द्वारा जटायु की अंतिम क्रिया करना, सती द्वारा राम की परीक्षा, कबंध उद्धार, राम शबरी मिलन, पंपा सरोवर पर राम लक्ष्मण का आगमन, राम द्वारा पक्षियों को शाप यहाँ पर अरण्यकाण्ड की कथा पूर्ण होती है । कवि ने इस काण्ड में अनेक परिवर्तन किए हैं जैसे राम शूर्पनखाकी पीठ पर स्वयं लिखते हैं कि–

तुज पृष्ठे लखुं आज्ञाय, त्यारे अवळी थई अबळाय;
लीधी दर्भ सळी निरधार, रामे लखियुं पृष्ठ मोझार ।
ए रावणनी भगिनी प्रमाण, शूर्पनखा निशाचरीजाण;
एनाकरण नासिका जेह, निश्चये छेदन करशो तेह
पछी जीवती मुक जो धीर, स्त्री हत्या न करशो वीर
एवुं लखी मोकली राम, चाली अबळा जाण्युं थयुं काम ।।[45]

राम स्वर्ण मृग के पीछे धनुष बाण लेकर जाते हैं । स्वर्ण मृग का वध करते हैं । तब रावण पुकारता है कि

"पछे रामना जेवो स्वर काढीने, रावणे पाडी रीर,
हुं महा संकटमां पडयो छुं माटे धाजो लक्ष्मण वीर ।।[46]

गिरधर ने लक्ष्मण रेखा का आयोजन करके अपनी मौलिकता का परिचय दिया है । जैसे

एवुं कही लक्ष्मण नी आंखे, चाली आंसुनी धार;
पछी मढ़ीनी पूंठळ लीक ज ताणी, धनुष तणी तेणी वार
अमो आव्या विण आण ओळंगी मढीमां पेसे जेह
तो बळीने भस्म थजो ते प्राणी निश्चे कहुं छुं एह ।।[47]

किष्किंधाकाण्ड सिर्फ पंद्रह अध्यायों में विभाजित है । प्रारंभ में गुरु वंदना है । गिरधर ने प्रत्येक काण्ड के प्रारंभ में गुरु वंदना की है । आलोच्यकाण्ड की कथावस्तु संक्षेप में है । राम पंपा सरोवर आते हैं । ऋषिमुख पर्वत पर बैठे हुए सुग्रीव ने राम–लक्ष्मण को देखा । वह भयभीत हुआ । वह यह सोचता है कि वाली ने मुझे मारने के लिए इन दोनों को भेजा है । अतः वह युद्ध करने के लिए तैयार हो जाता है । हनुमान सुग्रीव को समझाते हैं । हनुमान राम लक्ष्मण की परीक्षा करने के लिए आते हैं । हनुमान को पवन देव (वायुदेव) आकाश में मिलते हैं । राम लक्ष्मण के विषय में कहते हैं कि

साक्षात ए श्री भगवंत, आव्या करवा असुरनो अंत,
आदि नारायणने शेष, आव्या स्थापवा धर्म अशेष,
माटे था तुं रामनो दास, सेवा करजे सदा रह पास ।।[48]

हनुमान के द्वारा राम की सुग्रीव से मैत्री होती है । हनुमान वाली और सुग्रीव की कथा सुनाते हैं । राम एक ही बाण से सात ताल के वृक्षों को काट देते हैं । वाली का वध होता है । वाली राम से अंगद को युवराज बनाने की अपनी इच्छा प्रकट करता है । राम वचन देते हैं । राम तारा का सुग्रीव से विवाह कराते हैं ।

कोइए नहि करे निंदा तारी, माटे वचन मुज पाळ;
पछे सुग्रीवने ते तारा सोंपी, नंखावी छे वरमाळ ।।[49]

बाद में सुग्रीव का राज्याभिषेक होता है । वर्षाऋतु के समय राम–लक्ष्मण के साथ ऋषिमुख पर्वत पर निवास करते हैं । वर्षाऋतु का वर्णन सुंदर है । शरदऋतु का आगमन, सुग्रीव प्रमादवश, भोग में लिप्त रहने के कारण राम कार्य भूल जाता है । राम लक्ष्मण को भेजकर सुग्रीव को सीता खोज के लिए तैयार करते हैं । राम हनुमान को मुद्रिका देते हैं । रास्ते में अंगद और हनुमान को डंडी ऋषि का पुत्र जो ब्रह्म राक्षस बन गया था, वह मिलता है । आगे खेचरी जिसका नाम सुप्रभा है वह मिलती है । हनुमान उसका उद्धार हनुमान करते हैं । संपाति का हनुमान से मिलन होता है । हनुमान को शक्ति ऋषि ने दिया हुआ शाप याद आता है जैसे –

''अरे सुण कपिवर कहुं तने ए सत्य वाणी मुज;
तने रामजी मळतां लगी, बळ क्षीण रहेजो तुज,
त्यां लगी रहेजो गुप्त बळ, तं नहि पामे रणजीत
एवां वचन सुणी मुनिवर तणा, त्यारे उपजी मुंने प्रीत ।।[50]

जांबवान हनुमान को उनकी शक्ति का परिचय देते हैं । हनुमान सीता की खोज के लिए महेन्द्र पर्वत पर जाते हैं । यहीं पर किष्किंधाकाण्ड पूर्ण होता है ।

सुंदरकाण्ड में हनुमान का चरित्र मुख्य है । जिस प्रकार भरत का चरित्र के अयोध्याकाण्ड में केन्द्रस्थान पर है उसी प्रकार सुन्दरकाण्ड के केन्द्र स्थान पर हनुमान हैं । प्रारंभ में पुरुषोतम को याद कर के गुरुवंदना की गई है । बाद में हनुमान राम कार्य को पूर्ण करने के लिए महेन्द्र पर्वत पर चढ़कर विराट रूप धारण करते हैं । महेन्द्र पर्वत को हनुमान पाताल भेज देते हैं । रास्ते में इन्द्र रंभा नामक अप्सरा को हनुमान की शक्ति परीक्षा हेतु भेजते हैं । हनुमान जी रंभा के मुख–मार्ग से प्रवेश करके कान से निकल

जाते हैं । हनुमान के मार्ग में मैनाक पर्वत, सिंहिका राक्षसी, लंकिनी आदि अवरोध उत्पन्न करते हैं । हनुमान निर्विघ्न आगे निकल जाते हैं । क्रौंचा नामक राक्षसी का पेट चिरकर हनुमान लंका में प्रवेश करते हैं । प्रारंभ में हनुमान इन्द्रजित और सुलोचना के महल में सूक्ष्म रूप धारण करके प्रवेश करते हैं । सुलोचना का रूप देखकर हनुमान को सीता का भ्रम होता है । हनुमान विभीषण, कुंभकर्ण रावण आदि के महलों में सीता की खोज के लिए जाते हैं । सोई हुई मंदोदरी देखकर हनुमान को सीता का आभास होता है । कहीं यह सीता तो नहीं ? अतः कवि हनुमान से इस प्रकार प्रतीति कराते हैं कि,

''सूंधी जोयुं मारुतिए मुख, मदगंध जोई पाम्या दुःख;
न होय सीता जे जनककुमारी, आ दीसे असुरनी नारी ।।[51]

हनुमान को पता चलता है कि यह रावण की पत्नी मंदोदरी ही है । उस समय वह रावण से कहती है कि हे नाथ ! आज मुजे एक स्वप्न आया, जिसमें मैंने देखा कि एक वानर ने पूरा उद्यान नष्ट कर दिया है, अक्षयकुमार की हत्या कर दी है । लंका नगरी को जला दिया है । बाद में राम दल बल के साथ आये हैं । उन्होंने आपकी सपरिवार हत्या कर दी है । अतः आपसे मेरी विनंती है कि सीता को लेकर आप जारुण, राम को लौटा दीजिए । आपने सब पर विजय प्राप्त कर ली है मगर राम तो पूर्ण ब्रह्म है । अतः आप उनकी शरण में जाइए । रावण अहंकारवश मंदोदरी की बात नहीं मानता । यह सब वृतांत हनुमान सुनते हैं । रावण एक दासी को सूचना देता है कि तुम अभी जाओ और देखो कि सीता क्या कर रही हैं ? दासी के पीछे पीछे हनुमान अशोक वाटिका जाते हैं । सीता को देखते हैं । हनुमान मुद्रिका सीता की ओर फेंकते हैं । सीता मुद्रिका लेकर विलाप करने लगती है । हनुमान वृक्ष पर बैठकर राम कथा सुनाते हैं । सीता के सामने हनुमान खड़े होते हैं । सीता कहती है कि मैं कैसे विश्वास करुं कि 'तुम राम दूत हो' ? राम और मेरे बीच में कोई ऐसी बात हुई हो, जिसका हम दोनों के

सिवा अन्य किसीको पता न हो । ऐसी किसी बातका तुम्हें पता है ? हनुमान कहते हैं कि –

“हनुमंत कहें मुजने कह्युं, एकांत रघुवीर;
केकै तणे मंदिर तमो, धरता हतां वनचीर,
त्यारे नेत्र समस्याअें करी, उतराविया वनकूण;
सीता कहे हनुमंतजी, खरी बात ए अनुफूण ।।[52]

सीता को विश्वास हो जाता है कि हनुमान राम–दूत ही हैं । सीताको आज्ञासे हनुमान अपनी क्षुधा तृप्त करते हैं । रावण का बाग उजाड़ते हैं । रावणपुत्र अक्षय का नाश करते हैं । इन्द्रजित ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कर हनुमान को रावण के सम्मुख ले जाता है । हनुमान रावण का संवाद होता है । हनुमान की पूंछ जलाई जाती है । पूंछ के द्वारा लंकादहन होता है । हनुमान रावण की इष्ट देवी के मंदिर को भी नष्ट कर देते हैं । हनुमान ब्रह्मा के पास जाते हैं । कहते हैं कि मैं अपने पराक्रमों का वर्णन राम के समक्ष कैसे कर सकता हूँ ? अतः आप ही राम पर पत्र लिखिए कि मैंने यहाँ क्या किया है ? अतः ब्रह्मा स्वयं राम पर पत्र लिखते हैं । सीता चूडामणि के साथ अपनी एक निजी घटना का उल्लेख करके हनुमान को बिदा करती हैं । हनुमान राम के पास आते हैं । सीता के विषय में कहते हैं । ब्रह्मा का पत्र लक्ष्मण पढ़ते हैं । जाम्बवान ब्रह्मा के पुत्र हैं । राम को लंका की उत्पत्ति की कथा सुनाते हैं । विभीषण राम की शरण में आता है । राम दल बल सहित समुद्र तट पर आते हैं । राम समुद्र का घमंड दूर करते हैं । समुद्र राम की सहायता करता है । राम नल` द्वारा सेतुबंध का निर्माण कराते हैं । राम सेतुबंध पर रामेश्वर की स्थापना करते हैं । रावण का दूत राम के सैन्य की शक्ति जानने के लिए कपिका वेश लेकर आता है । विभीषण रावण के दूत शुक सारण को पहचान लेते हैं । राम के पास लाते हैं । राम शुक सारण

को सैन्य दिखाकर बिदा करते हैं । लक्ष्मण रावण के छत्र और मुकुट को एक ही बाण से उड़ा देते हैं । यहीं पर सुन्दरकाण्ड की कथा समाप्त होती है ।

युद्धकाण्ड में अनेक प्रासंगिक कथायें हैं । इसमें 55 अध्याय है । काण्ड के नामपर से ही पता चल जाता है कि इसमें युद्ध की कथा केन्द्र में है । रावण सीता को अनेक उपायों से बस में करने का प्रयास करता है । राम का कृत्रिम शिर सीता के समक्ष लाया जाता है । सीता शोक करती है । विभीषण की पत्नी शरमा आ कर सीता को समझाती है । मंदोदरी रावण को राम के ब्रह्म के रूप में वृतांत सुनाती है । रावण कहता है कि

छे हरि ईश्वर भगवान ए, हुं जाणुं छुं साक्षातः

पण हवे शरण जवाय नहि ते सुण सती कहुं वात ।।'[52]

सुग्रीव और रावण का मल्ल युद्ध होता है । अंगद दूत के रूप में रावण के पास जाता है । फिर राम रावण के बीच युद्ध शुरु होता है । अंकपरण नामक असुर का हनुमान के हाथों वध होता है । इन्द्रजित नागपाश में राम लक्ष्मण को बाँध देता है । गरुड के द्वारा सब बंधन मुक्त होते हैं । कवि ने सुषेण वैद्य का भी उल्लेख किया है जो सुग्रीव का ससुर है । आगे चलकर कंभकर्ण रणभूमि में आता है वह वीरगति को प्राप्त होता है । रावण का पुत्र अतिकाय का रण क्षेत्र में प्रवेश, वीर गति को प्राप्त करना, इन्द्रजित का रणक्षेत्र में आना, अपनी शक्ति का परिचय देना आदि वर्णन है । कवि ने इन्द्रजित के बाणों से रामलक्ष्मण के साथ पूरी सेना को मूर्छित बताया है । हनुमान जाम्बवान के कहने से द्रोण पर्वत लाते हैं । सब की मूर्छा दूर होती है । राम कृतिका का वध करते हैं । इन्द्रजित और लक्ष्मण का युद्ध होता है । युद्धका भयानक वर्णन किया गया है । अंत में मेघनाद का लक्ष्मण के हाथों अंत होता है । इसके पूर्व लक्ष्मण निकुंभला देवी का यज्ञ पूर्ण नहीं होने देते । सुलोचना इन्द्रजित का मस्तक लेकर सती होती है । अहि रावण महिरावण की कथा आती है । हनुमान की पत्नी मकरी, पुत्र मकर–ध्वज

हनुमान और राम–लक्ष्मण की सहायता करते हैं उसका वृतांत है । राम को देखकर महिरावण की पत्नी चंद्रसेना मोहित होती है । मन ही मन राम को पति मानती है । राम चंद्रसेना को अपना एक पत्नीव्रत समझाते हैं । राम अगले जन्म की कथा कहते हैं कि

''हुं द्वापर मांहे धरीश जे वारे, कृष्ण अवतार;
त्यारे सत्यभामा तुं थईश, मुज पटराणी निरधार,
वरदान एवुं आपियुं, चंद्रसेनाने भगवान
पछे राम मूर्ति रुदे राखी, धरवा बेठी ध्यान ।।[54]

अब रावण युद्ध भूमि में पूरा सैन्य लेकर हाहाकार – आतंक मचाता हुआ सबको भयभीत करता है । लक्ष्मण को रावण मूर्छित कर देता है । हनुमान कालनेमी का वध करते हैं । हनुमान द्रोण गिरि लाते हैं । लक्ष्मण की मूर्छा दूर होती हैं । रावण मृत्युंजय का अनुष्ठान करता है । विभीषण के कहने से लक्ष्मण लंका जाते हैं । विभीषण की पत्नी शरमा से मिलने पर गुप्त यज्ञ के स्थान का हनुमान को पता लगता है । हनुमान यज्ञ ध्वंस करते हैं । रावण अपनी पूरी शक्ति से युद्ध करता है । अंत में रावण वीरगति को प्राप्त होता है । मंदोदरी विलाप करती है । विभीषण का राज्याभिषेक होता है और –

मंदोदरीए कुंड रचियो अग्नि नो तेणीवार;
तेमां पेसी शुद्ध थईने, नीकळी ते बहार
राम आज्ञाए मंदोदरीवरी विभीषण ने त्यांह;
वरतियो जयजयकार सहु, हरखी प्रजा पुरमाँहे ।।

युद्धकाण्ड, अध्या. 51

कवि ने मंदोदरी का विभीषण के साथ विवाह बताया है । सीता की अग्नि परीक्षा होती है । विभीषण कुबेर का पुष्पक विमान ले आता है । राम,

लक्ष्मण सीता और पूरा सैन्य विमान में बैठकर प्रयाण करते हैं । यहीं पर युद्धकाण्ड पूर्ण होता है ।

रामायण का उत्तरकाण्ड सबसे विस्तृत काण्ड है ।

इसमें 112 अध्याय हैं । प्रारंभ गुरु वंदना से होता है । गिरधर कवि ने रामायण के चरित्रों के आध्यात्मिक अर्थ रूपक के रूप में प्रकट किए हैं । राम, सीता लक्ष्मण अपने पूरे दल बल के साथ पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्या के लिए निकलते हैं । रास्ते में राम युद्ध क्षेत्र, राक्षसों का संहार, मलयाचल, किष्किंधा, शबरी का उद्धार, कबंध वध, पंचवटी जटायु की अंतिम क्रियास्थल, शरभंग, सुतीक्ष्ण, शृंगवेरपुर, किरातकथा धोराय (केवट) का स्थान आदि स्थान और घटनाओं का वर्णन करते हैं । आगे अगत्स्य लोपामुद्रा के आश्रम में जाते हैं । प्रयाग राज के बाद भारद्वाज का आश्रम आता है । राम वहाँ सबके साथ थोड़े समय के लिए ठहरते हैं । वहां तट पर दान पुण्य करते हैं । हनुमान को भरत के पास सब के आगमन के समाचार देने हेतु भेजते हैं । राम और भरत का मिलन होता है । राम अयोध्या में आकर सर्व प्रथम कैकेयी माता से मिलते हैं जैसे –

''चतुर शिरोमणि रघुपति प्रथमे नम्या केकई ने पायजी;
गद्‌गद थईने आशिष दीधी, मन पामी लज्जायजी ।।''[56]

राम, सीता, लक्ष्मण सब से मिलते हैं । पुरवासी प्रसन्न होते हैं । राम का राज्याभिषेक होता है । राम सबको निजधाम जाने के लिए कहते हैं । सबको उपहार देकर प्रसन्न करते हें । हनुमान मोती की अमूल्य माला को तुच्छ मानते हैं । सुग्रीव के कहने से हनुमान अपनी छाती चिरकर सीता–राम की मूर्ति दिखाते हैं । राम राज्य का वर्णन है । सब सुखी है । राम भरत को संत–असंत के लक्षण बताते हैं । रावण का भांजा मेरु देत्ये का पुत्र, जिसका नाम लवणासुर है शत्रुध्न उसका वध करके मथुरा का राजा बनाते

हैं । धोबी के वचन से राम सीता का त्याग करते हैं । लक्ष्मण सीता को वन में छोड़ आते हैं । राम ने सीता का त्याग क्यों किया ? इसके लिए गिरधर कवि अन्य कथाओं का विस्तार से उल्लेख करते हैं । सीता वाल्मीकि के आश्रम में रहती है । अन्य विप्र मुनि वाल्मीकि को मना करते हैं कि सीता को आश्रय मत दीजिए । इससे बड़ा अनर्थ हो सकता है । विप्र सब सीता से कहते हैं कि यदि आप सात्विक है, साध्वी है तो गंगा को यहाँ प्रकट कीजिए । सीता गंगा को वहाँ प्रकट करती है । उस स्थान को सीताधारा गंगा कहते हैं । लव–कुश का जन्म होता है । दोनों बारह वर्ष के होते हैं । शस्त्र–शास्त्र विद्या में निपुण होते हैं । लक्ष्मण के यहाँ अंगद, चित्रकेतु नामक दो पुत्र, भरत के यहाँ तक्ष पुष्कल, शत्रुध्न के यहाँ भी सुबाहु, श्रुतसेन नामक दो पुत्र होते हैं । राम अश्वमेघ यज्ञ करते हैं । अश्वमेघ यज्ञ का अश्व अनेक स्थानों पर जाता है । लव यज्ञ के अश्व को अपने वश में कर लेता है । लव को मालूम है कि यह अश्व मेरे पिता राम का है । बाद में शत्रुध्न, भरत, लक्ष्मण आदि से लव–कुश का युद्ध होता है । हनुमान भी लव–कुश के पास आते हैं । राम लव–कुश को समझाते हैं । युद्ध होता है । राम मूर्छित होते हैं । लव–कुश राम को कठोर वचन कहते हैं –

कोण कहे तमने धर्मी साधु सत्यवादी शूर;
तमो वाली वनार मारियो, कपट करीने भूर
वळी सीता सरखी साधवी, भागीरथी सम आप;
जेनुं नाम लेतां अधम प्राणी, थाये ते निष्पाप,
चिदरत्न जेवी ते सती, पाळती पति व्रत धर्म;
विना अपराधे तजी वनमां, एवां तमारा कर्म ।।[57]

आगे लव–कुश के हाथों राम, सेना सहित मूर्छित हो जाते हैं । फिर सब की मूर्छा दूर होती है । सीता का राम पुनः स्वीकार करके ससम्मान वापस लाते हैं । राम यज्ञ को पूर्ण करते हैं । राम पुत्रों का राज्याभिषेक

करते हैं । कैकेयी के कपट के कारण सीता धरती माँ की शरण में चली जाती है । लक्ष्मण राम के कहने से इन्द्र के साथ (स्वधाम) स्वर्ग चले जाते हैं । कौशल्या का राम के कहने से स्वधाम जाना, सुमित्रा कैकेयी का स्वधाम जाना आदि घटनाओं का संकेत है । राम वसिष्ठ को बुलाकर अपने स्वधाम की बात कहते हैं । राम पूरी अयोध्या के प्राणी मात्र के साथ सरयू तट पर आते हैं । स्वधाम–गति करते हैं । कवि ने अंतिम दो अध्यायों में पूरी रामकथा का उल्लेख किया है । अपनी विनम्रता प्रकट करने के लिए अपने आपको बार–बार अल्प मति घोषित करने का प्रयास किया है । कवि ने अपने आराध्य राम की महिमा का गान प्रस्तुत करके भक्ति की शक्ति का संकेत दिया है । कलियुग में नाम स्मरण ही सर्वश्रेष्ठ एवं अमोध अस्त्र है ऐसा उल्लेख किया है । कवि ने ग्रंथ लिखने का एवं पूर्ण करने का समय भी बताया है ।

कवि ने अंतिम अध्याय में गुरु की महिमा का गान किया है । कवि ने प्रत्येक काण्ड के प्रारंभ में मंगलाचरण में गुरु की वंदना की है । कवि गुरु के प्रति अपनी नम्रता का अर्ध्य देते हुए कहते हैं कि मैं महान ग्रंथ को पूर्ण रूप से लिख सका अथवा प्रभु के साथ मेरा संबंध तादात्म्य हुआ इसके मूल में सिर्फ मेरे गुरु पुरुषोतम ही हैं । अतः गुरु ने जो मुझे प्रदान किया है जगत के किसी मानव या पदार्थ से नहीं मिला । कवि की दृष्टि से पुरुषोतम गुरु ही सब कुछ है ।

4.5 ‘रामचरितमानस’ और ‘रामायण’ के कथा निरूपण में साम्य वैषम्य :

तुलसीदास विरचित ‘रामचरितमानस’ और गिरधर कृत ‘रामायण’ तद्‌युगीन साहित्य की अमूल्य धरोहर है । दोनों कृतियाँ राम कथा की आधारभूत रचना के रूप में स्वीकृत हैं । रामचरितमानस का प्रचार प्रसार पूरे

भारत वर्ष में ही नहीं लेकिन पूरे विश्व में है । संसार का कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं होगा कि जिसने रामकथा या राम का नाम न सुना हो । मानवीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कार का जैसे जैसे विकास और विस्तार होता जा रहा है उसी प्रकार राम कथा अधिक प्रासंगिक एवं न्यून प्रतीत होती जा रही है । प्रत्येक युग और समाज के लिए रामचरित जीवन पाथेय के रूप में स्वयं सिद्ध है । राम की गाथा एवं राम का आदर्श प्रत्येक व्यक्ति एवं समाज के लिए जीवन गीता है । पूरे विश्व में यदि भारत वर्ष को ससम्मान और आदर्श राष्ट्र के रूप में पदासीन किया गया है तो, उसके मूल में श्रीमद् भागवत, महाभारत और रामायण जैसे ग्रंथ ही हैं और कुछ नहीं ।

रामचरितमानस और रामायण का संपूर्ण अध्ययन करने के बाद ज्ञात होता है कि राम का चरित्र प्रत्येक समाज के लिए आदर्श एवं अनुकरणीय है । गिरधर के समय तुलसीकृत रामचरितमानस का प्रचार प्रसार सर्वाधिक था । अतः कवि भी प्रभावित हुए बिना कैसे रह सकते थे ? उन्होंने प्रारंभ में लिखा हे कि मैंने वाल्मीकि रामायण का भी आधार ग्रहण किया है । कवि ने अपनी कृति की शैली आख्यान रूप में प्रस्तुत की है, जिसका सीधा संबंध श्रोता–दर्शकों के साथ होता है । अतः ग्रंथ का तादात्म्य संबंध वक्ता श्रोता के साथ हों यह अत्यंत आवश्यक है । इसी कारण कवि ने अनेकानेक प्रासंगिक कथाओं का आश्रय ग्रहण करके रोचकता उत्पन्न करने का प्रयास किया है । कवि चमत्कार के साथ साथ श्रोताओं की भावना को जाग्रत करना चाहता है । अतः रोचकता के साथ साथ कहीं कहीं अत्यधिक विस्तार के कारण मूल कथा की गति मंद हो गई है । कहीं कहीं औचित्य भंग भी पाया गया है ।

4.5.1 साम्य :

रामचरितमानस और रामायण भिन्न युग की राम कथाएँ हैं । दोनों के रचयिता अलग भाषा–भाषी है । दोनों का क्षेत्र भी भिन्न भिन्न है । तुलसीदास ने रामचरितमानस के रचनाकाल के विषय में स्वयं कहा है कि

संवत सोरह सैं एकतीसा । करउँ कथा हरिपद धरि सीसा ।

नौमी भौमवार मधुमासा । अवधपुरी यह चरित प्रकासा ।।[58]

ग्रंथ की समाप्ति के विषय में कवि मौन हैं । फकीर मोहन साई ने लिखा है कि मानस सं. 1633 मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी को पुरा हुआ ।[59] गिरधर ने रामायण संवत 1893 मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष की नौमीको पूर्ण किया । अतः कहना होगा कि दोनों रचनाओं के बीच में दो सौ साठ साल और उन्नीस दिनों का अंतर है ।

तुलसीदास अपने जीवन काल में अपनी रचनाओं के कारण लोकप्रिय हो चुके थे । उनकी रचनाओं का प्रचार प्रसार पूरे भारत वर्ष में हो गया था । अतः गिरधर कवि ने भी रामचरितमानस का पठन पाठन किया होगा । वे अवश्य प्रभावित हुए होंगे । अतः रामायण की रचना करते समय रामचरितमानस को दृष्टि समक्ष रखा ही होगा । तुलसीदास ने ग्रंथ के प्रारंभ में ही 'नानापुराण निगमागम सम्मत' कहकर ग्रंथ का आधार अथवा संकेत दिया है । वास्तव में देखा जाये तो वाल्मीकि रामायण और अध्यात्म रामायण का ही तुलसीदास पर अधिक प्रभाव दिखाई देता है । तुलसी ने अनेक स्थानों पर भावानुवाद किया हो ऐसा प्रतीत होता है । पूरे रामचरितमानस में कवि ने अन्य किसी ग्रंथ का नामोल्लेख नहीं किया । गिरधर ने स्थान स्थान पर आधार ग्रंथ का नाम अवश्य लिखा है, जिसमें वाल्मीकि रामायण, हनुमन्नाटक, पद्‌मपुराण, अग्निपुराण, योगवासिष्ठ, श्रीमद् भागवत् हरिवंश, आनंद रामायण, अध्यात्म रामायण, गीतावली, महाभारत आदि हैं । इसके अलावा वसिष्ठ

रामायण, शुकदेव रामायण, ब्रह्मरामायण शिवरामायण, अगत्स्य रामायण, कूर्म रामायण, भरत रामायण, स्कंद रामायण, इत्यादि का उल्लेख बालकाण्ड के द्वितीय अध्याय में कवि ने किया है । गिरधर कवि ने कहीं भी रामचरितमानस और तुलसीदास का उल्लेख नहीं किया है । गिरधर कृत रामायण में अनेकानेक स्थान पर रामचरितमानस और रामायण में साम्य देखा जा सकता है । गिरधर बड़े विनम्र कवि हैं । सबका ऋण स्वीकार करते हैं । सबकी वंदना की है । अपने आपको अल्प मति एवं तुच्छ माना है फिर भी तुलसीदास या रामचरित का उल्लेख क्यों नहीं किया ? यही आश्चर्य की बात है । गिरधर मानस से प्रभावित नहीं थे ऐसा तो कोई कह नहीं सकता । इसके अनेकानेक प्रमाण हैं । रामचरितमानस और रामायण दोनों में कई स्थानों पर शब्दशः साम्य है ।

सुंदरकाण्ड में तुलसीदास ने कहा है कि :-

'ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी । सकल ताड़ना के अधिकारी ।।[60]

गिरधर युद्धकाण्ड में कहते हैं कि

''ढोल मूरख ने पशु वळी, दुर्मुखी जेनार;
ए दंड विण माने नहि, एने मारनो अधिकार ।।[61]

रामचरितमानस के बालकाण्ड में तुलसीदास कहते हैं कि –

''जौं बालक कह तोतरि बाता । सुनहिं मुदित मनपितु अरु माता
गिरधर कवि ने यही बात उत्तरकाण्ड के अंत में कही है ।''[62]
''ज्यम बाळक बोले बोबडुं, मा बाप हरखे मन ।।''[63]

दोनों में प्रारंभ में रावण के जन्म की कथा में साम्य है । तीनों भाई कठिन तप करने के लिए जाते हैं । तीनों को वरदान मिलते हैं । कुंभकर्ण इन्द्रासन माँगना चाहता था । अतः सरस्वती शारदा ने इसकी मति फेर दी । ऐसा उल्लेख दोनों रचनाओं में है ।

सारद प्रेरि तासु मति फेरी । मागेसि नींद मास षट केरी ।।[64]

निद्रासन मांग्युं तेणी वेळा, भारतीए भुलाव्योजी[65]

रावण का मंदोदरी के साथ विवाह होता है । मंदोदरी मय नामक राजा की पुत्री है । दोनों में समान उल्लेख है ।

मय तनुजा मंदोदरी नामा । परम सुंदरी नारि ललामा ।

सोइ मयँ दीन्हि रावनहि आनी । होइहि जातुधान पतिजानी ।।[66]

गिरधर अपनी रामायण में कहते हैं कि –

मय नामानि कन्या सुंदर मंदोदरी तेनं नाम जी,

ते रावणने परणाणी प्रीते, साधवी पूरण काम जी ।।[67]

इसके अलावा कुबेर की लंका, कुबेर का पुष्पक विमान और रावण की कौतूक में कैलाश को उठा लेना आदि प्रसंग दोनों रचनाओं में समान रूप से पाये जाते हैं ।

दोनों कृतिओं में राम शीघ्र ही अवतार लेकर दुष्टों का संहार करें इसलिए पृथ्वी गाय का स्वरूप लेकर प्रार्थना करती है । मानस में कहा है कि –

धेनुरूपधरि हृदयँ विचारी । गई तहाँ जहाँ सुर मुनि झारी ।।'[68]

गि. रा में –

वसुधा गौरूपे थइ । ते प्रजापति ने शरणे गई ।।[69]

राम, दशरण कौशल्या के यहाँ पैदा होंगे । इस प्रकार का वरदान भगवान कश्यप और अदिति को देते हैं ।

राम का जन्म नौम तिथि मधुमास पुनिता दोनों में जन्म के समय राम बड़े (आकार) में होते हैं । कौशल्या की विनंति से छोटे बनकर बाललीला करते हैं । यह सब प्रसंग दोनों में समान रूप से हैं, फिर भी एक दृष्टांत देखें –

कीजे सिसु लीला अतिप्रियसीला यह सुख परम अनूपा ।

सुनि वचन सुजाना रोदन ढाना होइ बालक सुर भूपा ।।[70]

गिरधर कृत रामायण में –

शिशुरूप थई शय्या माँहे करवाने लाग्या रुदन जी ।[71]

दशरथ के चारो पुत्र राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुध्न धीरे धीरे बड़े होते हैं । रामचरितमानस और रामायण दोनों में राम के बाल संस्कार, (जातकर्म) यज्ञ की रक्षा करने के लिए विश्वामित्र का दशरथ के पास आना, राम–लक्ष्मण को माँगना, दशरथ का पुत्र मोह, मुनि द्वारा दशरथ को समझाना, राम–लक्ष्मण की असामान्यता, ब्रह्म के अवतार के रूप में उनका निरूपण आदि कहने से राजा दशरथ विश्वामित्र के साथ राम–लक्ष्मण को भेजने के लिए तैयार हो जाते हैं । विश्वामित्र दोनों को लेकर आश्रम की ओर प्रस्थान करते हैं । ये सब प्रसंग दोनों में समान रूप से अंकित हैं । राम ताड़का का वध एक ही बाण से करते हैं । विश्वामित्र राम–लक्ष्मण को लेकर जनकपुर (मिथिला) जाते हैं । जनक राजा ने अपनी पुत्री सीता का स्वयंवर आयोजित किया है ।

धनुज यज्ञ का आरंभ हो उसके पूर्व सीता पार्वती की पूजा करने तथा राम–लक्ष्मण विश्वामित्र की पूजा हेतु पुष्प लेने जाते हैं । पुष्पवाटिका में राम सीता का मिलन होता है । रामचरितमानस ओर गिरधरकृत रामायण में पुष्पवाटिका का प्रसंग समान रूप से सविस्तार पाया जाता है । राम ने सीता को देखा तो चकित रह गये । लक्ष्मण से कहने लगे कि –

तात जनक तनया यह सोई । धनुष यज्ञ जेहि कारण होई

पूजन गौरि सखी ले आई । करत प्रकाश फिरति फुलवाई ।।[72]

गिरधरकृत रामायण में –

त्यारे बोल्या श्री रघुवीर, सुण लक्ष्मण बंधव वीर ।

एतो जानकी जनककुमारी, आवी पूजवा शैल कुमारी ।।[73]

दोनों में जनक राजा क्रोधित होकर कहते हैं कि पृथ्वी पर कोई वीर ही नहीं रहा ? जनक के वचनों से लक्ष्मण क्रोधित होकर कहने लगते हैं कि जिस सभा में रामचंद्र बैठे हों तब किसी को ऐसा कहने का कोई अधिकार नहीं है । राम की आज्ञा हों तो ब्रह्मान्ड को मैं गेंद की भांति उठा लूँ और उसे कच्चे घड़े के समान तोड़ दूँ । राम लक्ष्मण को नेत्रों के संकेत से रोकते हैं, प्रेम से अपने पास बिठाते हैं । दोनों रचनाओं में विश्वामित्र के कहने से राम धनुष चढ़ाते हैं जैसे –

"विश्वामित्र समय शुभ जानी । बोले अति सनेहमय बानी
उठहु राम भंजहु भवचापा । मेटहु तातजनक परितापा ।।"[74]

गिरधरकृत में भी

"रामे लक्ष्मण वार्यां ज्यारे, मुनि कौशिक बोल्या त्यारे;
ऊठो राम हवे करो काज, पाळो जनक तणुं पण आज ।।"[75]

राम धनुष्य के पास जब खडे रहते हैं नर–नारी, नगरजन सोचने लगते हैं । सीता देवी देवताओं का ध्यान धरने लगती हैं । सीता जनक के प्रति कटू वचन भी कहती हैं कि हे पिता ! आपने ऐसी कठोर प्रतिज्ञा क्यों ली ? दोनों रचनाओं में समान भाव पाये जाते हैं । धनुष भंग जब हो जाता है तब शेषनाग, वाराह, पृथ्वी आदि की स्थिति अत्यंत दयनीय हो जाती है । समग्र विश्व में हाहाकार हो जाता है । दोनों रचनाओं में इस प्रकार का वर्णन साम्य सहज रूप में उपलब्ध है, यथा –

भरे भुवन धोर कठोर ख रवि बाजि तजि मारगु चले ।
चिक्करहिं दिग्गजडोल महि अहि कोल कूरुम कलमले ।।
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल बिकल विचार हीं ।
को दंड खंडेउ राम तुलसी जयति वचन उचारहीं ।।[76]

गिरधरकृत रामायण में –

नाखे चीस त्रयंबक चडेडाट, पूंठे थाये फडेडाट,

पृथ्वी मंडल डोलवा लाग्युं, शेषनाग तणुं बळ भाग्युं.

कडकडया आदि वराहना दंत, जेनी उपर पृथ्वी अनंत,

दिगपाळे कर्यो चित्कार, भानुथकी थयो तेणीवार ।।[77]

सीता राम के चरण छूने में संकोच करती है । वजह यह है कि जिनके स्पर्श से पत्थर से स्त्री हुई थी । दोनों रचनाओं में समान वर्णन है जैसे –

गौतमतिय गति सुरति करि, नहिं परसति पग पानि ।।[78]

गिरधर कृत में –

पेली उपल नी स्त्री थइ रज परशी पद रघुनाथ ।[79]

दशरथ के चारों पुत्रों का विवाह हो जाता है । अयोध्याकाण्ड में वर्णन है कि राजा दशरथ एक बार दर्पण में अपना मुँह देखते हैं तब मुकुट को सीधा करने पर कान के समीप के बाल श्वेत हो गये हैं ऐसा लगा मानों ये कह रहे हों कि राम को युवराज का पद दे दीजिए । अतः राजाने वसिष्ठ को बुलाकर अपना निर्णय सुनाया । दोनों रामायणों में यह प्रसंग शत प्रतिशत समान रूप में पाया जाता है । दोनों की साम्यता देखें

रायँ सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा । बदनु बिलोकि मुकुटु सम कीन्हा ।।

श्रवन समीप भए सित केसा । मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा ।

नृप जुवराजु राम कहँ देहू । जीवन जनम लाहु किन लेहु ।

प्रेमपुलकित न मुदित मन गुरहि सुनायउ जाइ ।।[80]

गिरधरकृत रामायण में –

निज मुखने अवलोकता, आदर्श मांहे तेह ।

त्यारे करण आगळ केश शिरनो, श्वेत दीठोराय ।।

उदासी आवी अति घणी, मनमाहे थई चिंताय ।

जाण्युं जरा आवी वात कहेवा, चेतावा नरदेव ।।

एम विचारी वसिष्ठ गुरु ने तेडाव्या तत खेव ।।[81]

कैकेयी राजा दशरथ से दो वरदान माँगती है, जिससे दशरथ अत्यंत दुःखी हो जाते हैं । रामचरितमानस और रामायण के वर्णन का साम्य देखिए –

"सहमि परेउ लखि सिंघिनिहि मनहुँ वृद्ध गजराजु ।।"[82]

गिरधर कृत रामायण में –

"जाणे मगदळ पडियो कूप, पासे बेठी सिंहणी रूप ।।"[83]

राजा दशरथ की स्थिति कुछ ऐसी थी कि मानों (प्रचंड) सिंहनी को देखकर वृद्ध गजराज सहम कर भूमि पर गिर पडा हो । दोनों में राम सुमंत को रथ इस प्रकार चलाने के लिए कहते हैं कि लोग जग न जाएँ । दोनों में गंगा पार करने के उपरांत भारद्वाज मुनि के आश्रम में आते हैं । भरत और शत्रुघ्न ननिहाल से लौटते हैं । सब वृतांत सुनते हैं । दोनों में लिखा है कि भरत राजा बनना नहीं चाहते । भरत अयोध्यावासी और माताओं के साथ राम लक्ष्मण सीता से मिलने के लिए चित्रकूट आते हैं । भरत निषादराज से पूछते हैं कि मुजे वह स्थान दिखाओ जहाँ राम ने सीता और लक्ष्मण के साथ विश्राम किया था । निषाद वह शिंसिपा का पवित्र वृक्ष दिखाते हैं, जिसके नीचे तीनों ने विश्राम किया था । भरत उस स्थल को देखकर गदगद होते हैं जैसे –

"चरन रेख रज आँखिन्ह लाई । बनइ न कहत प्रीति अधिकाई ।।"[84]

गिरधरकृत रामायण में कवि कहते हैं कि

"ते रजमां आळोटयां, भर्त, धणुं रुदन कर्युं समर्थ ।।"[85]

भरत सपरिवार चित्रकूट में पांच दिन रहते हैं । दोनों में यही है ।

"देखे थल तीरथ सकल भरत पाँच दिन माझ ।
कहत सुनत हरिहर सुजसु गयउ दिवसु भइ साँझ ।।"[86]

गिरधर कृत में –

"एम पाँच दिवस परिवार रहयो चित्रकूट मोझार ।"[87]

अरण्यकाण्ड के प्रारंभ में राम लक्ष्मण और सीता अत्रि–अनसूया के आश्रम में आते हैं । अनसूया सीता को पतिव्रता नारी का धर्म समझाती है । अमूल्य वस्त्राभूषण सीता को प्रदान करती हैं । दोनों में वर्णन साम्य स्पष्ट झलकता है । कहीं कहीं तो भावानुवाद प्रतीत होता है, यथा –

"धीरज धर्म मित्र अरु नारी । आपद काल परिखिअहिं चारी ।
वृद्ध रोगबस, जड़ धनहीना । अंध बधिर क्रोधी अति दीना ।।
ऐसेहु पति कर किएँ अपमाना । नारि पाव जमपुरदुख नाना ।।
एकइ धर्म एक ब्रत नेमा । कायँ बचन मन पति पद प्रेमा ।।"[88]

आगे फिर –

दिव्यवसन भूषण पहिराए । जे नित नूतन अमल सुहाए ।

गिरधर ने ऐसा ही कहा है, जैसे –

अंध पंगु ने दरिद्री, रोगी व्यसनी पापी कामी;
पण इन्द्र समान सतीए गणवो जे पोताना स्वामी
आपत काळे दुःख वेळाए, रहिये स्वामीनी साथ,
अखंड आज्ञा पाळिये, सत्वर क्यारे न दुभिये नाथ ।।[89]

आगे फिर –

अमूल्य वस्त्र आप्यां को काळे फाटे न थाय मलिन ।।

दोनों कृतियों में राम सोचते हैं कि हम यहाँ रहेंगे तो लोग यहाँ आते रहेंगे अतः हमें यहाँ से आगे चले जाना चाहिए । अतः अत्रि अनसूया के आश्रम में जाते हैं । दोनों में विराध का वध करने के उपरांत मुनि शरभंग के आश्रम में जाते हैं – जैसे

मिला असुर विराध मग जाता । आवतहीं रघुवीर निपाता ।।
तुरतहिं रुचिर तप तेहिं पावा । देखि दुखी निज धाम पठावा ।।
पुनि आए जहँ मुनि सर भंगा । सुंदर अनुज जानकी संगा ।।[90]

गिरधर ने –

कर्यो विराधवध रघुवीर, पछे त्यांथी चाल्या रणधीर ।।

मुनि शरभंगनो आश्रम, दूर थी देखाडयो रम्य ।।''[91]

दोनों में राम शरभंग ऋषि के आश्रम के बाद सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम में जाते हैं । मुनि अगत्स्य के कहने से राम पंचवटी जाते हैं । सीता हरण के पूर्व लक्ष्मण सीताका दीर्घ संवाद वाल्मीकि रामायण में है । तुलसीदास ने एक ही शब्द के द्वारा लक्ष्मण को राम की सहायता के लिए जाने के लिए मजबूर कर दिया है । वह शब्द हैं 'मरम' 'दोनों में भाव साम्य है । गिरधर ने भी 'मरम' शब्द को उठाकर अपनी कला का परिचय दिया है । रामचरितमानस में –

''मरम बचनजब सीता बोला । हरिप्रेरित लछिमन मन डोला ।।''[92]

गिरधर कृत में –

''पण माता तमने कहेवा न घटे, एवा मरम वचन ।।''[93]

राम लक्ष्मण शबरी के आश्रम आते हैं । शबरी दंडवत प्रणाम करती है । प्रभु के चरण धोकर बैठने के लिए सुंदर आसन देती है । प्रभु बार–बार प्रशंसा करते हुए प्रेम सहित फल खाते हैं । दोनों कृतिओं में समान भाव हैं यथा –

''स्याम गौर सुन्दर दोउ भाई । सबरी परी चरनलपटाई ।।

प्रेम मगन मुख बचन न आवा । पुनिपुनि पद सरोज सिर नावा ।।

सादर जल लै चरन परवारे । पुनि सुंदर आसन बैठारे ।।

कद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि

प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि ।।[94]

गिरधर ने करी प्रणाम ते पडी दंडवत् रामना जुगपद साही जी

हरख आंसुए चरण सिंच्या, गदगद प्रेम अपारजी;

करुणा वचन कहीने रघुपतिए उठाडी तेणीवारजी,
पछे निज आश्रम तेडी लावी बेसाडया आसनजी,
पूजा करीने फळ मूक्यालावी कराव्या प्रभुने अशनजी
ते प्रभु शबरीना फळ आरोगे, वखाणे छे वारंवारजी ।।[95]

रामचरितमानस और रामायण का भाव साम्य समान ही है । रामचरितमानस के बालकाण्ड में और गिरधरकृत रामायण के अरण्यकाण्ड में शिव और दक्ष–कन्या सती का प्रसंग है । शिव सती से कहते हैं कि राम पूर्णब्रह्म है । लीला करने हेतु सीता वियग में वन में घूम रहे हैं । नदी, पर्वत, वृक्ष आदि से सीता के विषय में पूछते हैं । सती को यह बात समझ में नहीं आती । अतः प्रभु राम की परीक्षा लेने के लिए सीता का रूप लेती है । प्रभु राम पहचान जाते हैं कि यह तो सती है । अतः वंदन करते हैं । सती संकोच वश यही बात अपने पति शिव से छिपाती है । शिव जान जाते हैं कि सती जूठ बोलती है । अतः शिव सती का त्याग करते हैं । इस प्रसंग को तुलसीदास और गिरधर ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है । पहले रामचरितमानस का उदा.

“जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामु । पिता समेत लीन्ह निज नामु ।।
कहेउ बहोरि कहाँ बृषकेतू । बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतु ।।[96]

गिरधर कृत रामायण में –

रघुवर हसीने बोलिया, क्यां फरो वनमां आज ?
दाक्षायणी तजी पशुपति, कोण शुं इच्छो काज ?[97]

किष्किंधाकाण्ड के प्रारंभ में ही राम लक्ष्मण के साथ ऋष्यमूक पर्वत पर पहुँचते हैं, जहाँ मंत्री समेत सुग्रीव रहता है । दोनों में भाव साम्य है । पहले रामचरितमानस से बाद में रामायण से उदा. देखें तो–

आगे चले बहुरि रघुराया । रिष्यमूक पर्वत निअराया ।।
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देखि अतुलबल सींवा ।।”[98]

ते समें ऋषि मुख परवत उपर, बेठा वानर पंच;
नळ नील जांबुवान सुग्रीव, मारुति बळ संच ।।[99]

दोनों रचनाओं में हनुमान द्वारा राम–सुग्रीव की मैत्री होती है । वाली सुग्रीव में भयानक युद्ध होता है । राम वाली का वध करते हैं । इसके पूर्व वाली की पत्नी तारा सुग्रीव से युद्ध करने की सलाह देती है । यह भी कहती है कि राम परब्रह्म है । दोनों रचनाओं में वाली यह कहता है कि राम के हाथों यदि मेरी मृत्यु हुई तो स्वर्ग प्राप्ति होगी । जैसे –

"कह बाली सुनु भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ ।
जौं कदाचि मोहि मारहिं तो पुनि होउँ सनाथ ।।"[100]

गि.रा. में –

"हरि हाथे मरण संबंध, छुटशे जनममरणनां बंध;
ते माटे सांभळ सती एह, बंने वाते निःसंदेह ।।"[101]

राम बाली पर बाण चलाते हैं । वाली पृथ्वी पर गिर पड़ता है । वह राम से प्रश्न पूछता है कि आपने धर्म की रक्षा के लिए अवतार लिया है । आपने शिकारी की तरह छिपकर मुझे क्यों मारा ? मेरा ऐसा कौन सा दोष था जिसकी वजह से आपने बाण मारा ? दोनों कृतियों में राम समान उतर देते हैं कि –

अनुज बधू भगिनी सुतनारी । सुनु सठ कन्या सम ए चारी ।।
इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइजोई । ताहि बधे कछु पाप न होई ।।[102]

गि. कृत में –

राखी अनुज वधू तें पर्म, एथी क्योरे अधर्म ।
राम कहेसत्यव्रत छे मारुं, विना अधरम कोने न मारुं ।।[103]

राम वाली को सजीवन करना चाहते हैं । वाली जीवन नहीं चाहता । राम की भक्ति श्रेष्ठ है, ऐसा मानता है । वाली अंगद को युवराज बनाने की इच्छा प्रकट करता है । राम सुग्रीव के राज्याभिषेक पर नगर में प्रवेश नहीं

करते । वे लक्ष्मण को भेजते हैं । दोनो वर्षा ऋतु के चार माह ऋषिमूक पर्वत पर ही व्यतित करेंगे ऐसा सुग्रीव से कहते हैं । दोनों कृतियों में यह वर्णन समान रूप से वर्णित है । वर्षाऋतु का वर्णन तो शब्दशः समान लगता है जैसे –

धन घमंड नभ गरजत घोरा । प्रिया हीन डरपत मन मोरा ।।
दामिनि दमक रह न धन मांही । खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं ।।
बरषहिं जलद भूमि निअराएँ । जथा नवहिं बुध विधा पाएँ ।।
बूंद अघात सहहिं गिरि कैसें । खल के बचन संत सह जैसे ।।
छुद्र नदी भरि चली तोराई ।। जस थोरेहुँ धन खल इतराई ।।
भूमि परत भा ढाबर पानी । जनुजीवहि माया लपटानी ।।
समिटि समिटि जलभरहिं तलाबा । जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा ।।
सरिता जल जलनिधि महुँ जाई । होई अचल जिमि जिव हरि पाई ।''[104]

गिरधर ने अपनी रामायण में वर्षा का वर्णन शब्दशः लिया है जैसे –

धनमांहे दमके दामनीज्यम, खळ प्रीत स्थिर नव रहे क्यमे रे;
धन वरसे नीचो उतरी, ज्यम विद्या पामी बुध नमे रे,
अघातबुंद गिरि सहे, खळ वचन साधु जेम रे;
लपटायो कर्दम भूमि पर, जीवने माया तेमरे,
नदी क्षुद भरी उभराई चाली, जळ दशोदिश जाय रे,
ज्यम सूक्ष्म धन पामीने खळ अभिमान करी इतराय रे,
समेटी जळ ज्यां त्यां थकी ते, नीची भोम्य भराय रे,
सदगुण सरवे समेटी ज्यम, सज्जन रुदये समाय रे,
सर्व सरिताजळ मळीने जळनिधिमां जायरे,
ज्यम जीव पामी हरिपद ने, अचल निरभे थायरे ।।[105]

यह तो सिर्फ संकेत ही है । आगे के वर्णन में भी भाव साम्य शब्दशः देखने को मिलता है । ऐसा प्रतीत होता है कि गिरधर कवि ने रामचरितमानस

का वर्षाऋृतु वर्णन पढ़ा हो । पढ़कर इतने प्रभावित हुए कि शब्दशः भावानुवाद कर दिया । वर्षा के बाद शरद ऋृतु का आगमन होता है । राम लक्ष्मण से शरदऋृतु के आगमन की बात करते हैं । दोनों में शरद ऋृतु का समान वर्णन है । सुग्रीव राम कार्य को भूल गया है अतः हनुमान जी समझाने जाते हैं । सुग्रीव आकर राम की माफी माँगता है । सीता की खोज के लिए अलग–अलग दिशा में वानर सेना को भेजा जाता है । हनुमान, जाम्बवान, अंगद, नल, नील आदि को दक्षिण दिशा में जाने का आदेश दिया जाता है । राम ने हनुमान को अपने पास बुलाकर अंगूठी दी । दोनों में वर्णन साम्य है –

पाछे पवन तनय सिरु नावा । जानि काज प्रभु निकट बोलावा ।।
परसा सीस सरोरुह पानी । कर मुद्रिका दीन्हि जनजानी ।।[106]

गिरधर रामायण में –

पोतानी मुद्रिका रघुनाथ, घाली अंजनी सुतने हाथ
निश्चे आळखी सीताने जाणी, आ तुं आपजे मुज ऍधाणी ।।[107]

सुंदरकाण्ड में हनुमान के पराक्रम का वर्णन है ।

मैनाक, सिंहिका आदि हनुमान के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करते हैं । हनुमान अपनी शक्ति का परिचय देकर आगे निकल जाते हैं । सीता को अंगूठी देते हैं । अपनी पहचान देते हैं । सीता माता से विनंती करते हैं मानस में इस तरह –

''सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा । लागि देखि सुंदर फल रुखा ।''[108]

रामायण में –

''हवे माता मुजने भूख लागी । आज्ञा आपो आज ।।''[109]

हनुमान ब्रह्मास्त्र के कारण बंध जनते हैं । लंका जलाते हैं । सीता अपनी चूडामणि हनुमान को देती है । काक भुशुण्डिजी गरुड से जो कहते हैं उसमें कैसे लोगों के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया उसका ज्ञान है ।

समुद्र राम को रास्ता नहीं देता था । अतः उसे दण्ड देना ही चाहिए । ऐसा काक भुशुण्डिजी का मत है । मानसकार कहते हैं कि –

"ढोल गँवार सूद्र पशु नारी । सकल ताड़ना के अधिकारी ।"[110]

रामायण में यही बात अंगद रावण से कहता है कि –

"ढोल मूरख ने पशु वळी, दुर्मुखी जे नार
ए दंडविण माने नहि, एने मारनो अधिकार ।।"[111]

मानसकार ने सुन्दरकाण्ड के बाद के काण्ड को लंकाकाण्ड कहा है जबकि गिरधर ने युद्धकाण्ड कहा है । दोनों राम कथाओं में सीता की अग्नि परीक्षा होती है । अग्नि परीक्षा के बाद देवताओं की स्तुति में साम्य है । विभीषण पुष्पक विमान लेकर आते हैं । हनुमान आगे चलकर भरत को संदेश पहुँचाते हैं । राम का राज्याभिषेक होता है । राज्याभिषेक में मुनि वशिष्ठ राम को प्रथम तिलक करते हैं । ऐसा दोनों में स्पष्ट वर्णित है । पहले रामचरितमानस का, बाद में रामायण का उदा.

"प्रथम तिलक वसिष्ठ मुनि कीन्हा ।
पुनि सब विप्रन्ह आयसु दीन्हा ।।[112]
प्रथम तिलक क्युँ वसिष्ठे, दीधो आशीर्वाद ।।[113]

मानस के अंतिम अंश में तुलसीदास जी ने राम की जो वंदना की है गिरधर ने उसी स्तुति का अनुकरण इस प्रकार किया है ।

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ।।[114]
कामीनुं काम विषेज्यम मन, लोभीने प्रियलागे ज्यम धन;
एम जाणे मुने महारो दास, रहे सदासंसार सुखथी उदास ।।[115]

इस प्रकार रामचरितमानस और रामायण में साम्य–वैषम्य पाया जाता है । दोनों कृतियों का सर्वांगीण अध्ययन करने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि गिरधर ने यथा संभव तुलसीदास के रामचरितमानस को दृष्टि समक्ष रखा

है इसका कारण स्पष्ट है कि गिरधर के समय रामचरितमानस का प्रचार प्रसार अधिक था । लोग मानस की कथा से अच्छी तरह परिचित थे अतः सर्वथा हटकर यदि कथा लिखी जाये तो संभव है कि लोग स्वीकार भी न करें । समाज में निंदा हों और जगहँसाई हों इससे अच्छा है कि लोगों की पसंद को ही महत्त्व दिया जाये । वास्तव में देखा जाये तो तुलसीदास ने भी वाल्मीकि रामायण को दृष्टि समक्ष रखकर कृतिका सर्जन किया है । तुलसीदास ने अध्यात्म रामायण का सर्वाधिक प्रभाव ग्रहण किया है । संस्कृत के सुभाषितों का तुलसीदास ने भावानुवाद किया है । गिरधर ने उसी अंश का अपनी भाषा में प्रयोग करके लोगों को रामभक्ति के प्रति आकृष्ट करने का प्रयास किया है । रामचरितमानस और गिरधर कृत रामायण अपने अपने समय की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं, जिनके प्रति लोगों का सिर श्रद्धा के साथ नत हो जाता है । साहित्य के मध्ययुग में आम जनता में लोकप्रियता प्राप्त करना सहज नहीं माना जाता । अतः तुलसीदास और गिरधर ने रामकथा की रचना करके भक्त एवं मुमुक्षों के लिए अमूल्य उपहार प्रदान किया है । संसार में जब तक मानव सभ्यता कायम रहेगी तब तक पूरा संसार इन दोनों महापुरुषों का आजीवन ॠणी रहेगा । इसमें संदेह नहीं ।

4.5.2 वैषम्य :

गिरधर ने मूल रामायण के आधार पर काण्डों के विभाजन में षष्ठ काण्ड का नाम युद्धकाण्ड रखा है जबकि मानसकार ने लंका काण्ड नाम दिया है ।

कवि ने प्रत्येक काण्ड के प्रारंभ में मंगलाचरण में गुरु की वंदना की है । इतना ही नहीं गुरु के नाम का भी यथा संभव उल्लेख किया है । जैसे –

श्री गुरु चरणे सदा शिर नामुंजी

श्री पुरुषोतमनी कृपा फळ पामुंजी

रघुवीर लीला सुखद अपार जी

कंइ एक वातनो करुं विस्तार जी ।[116]

कवि ने अपने गुरु को सरस्वती, ब्रह्मा, शंकर, गणपति आदि से भी उच्च मानकर प्रत्येक काण्ड के प्रारंभ में वंदना की है ।

रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने उत्तरकाण्ड में राम के राज्याभिषेक के बाद रामकथा का विकास नहीं किया । कवि ने राम राज्य की स्थापना को ही इतिश्री माना है, जैसे

प्रथम तिलक वसिष्ठ मुनि कीन्हा ।

पुनि सब विप्रन्ह आयसु दीनहा ।।[117]

मानसकार ने आगे की कथा का संकेत मात्र देकर कलियुग का वर्णन किया है । गिरधर कवि ने उत्तरकाण्ड में लव–कुश का शौर्य, सीता, त्याग, कैकेयी का पुनः कपट एवं सीता का धरती में समाजाना आदि वर्णन है ।

कैकेयी के कहने से सीता अंगूठे से रावण की आकृति बनाती है । कैकेयी इसी आधार पर सीता को बदनाम करती है, जिसके फलस्वरूप सीता धरती को मार्ग देने की विनंती करती है । कवि का वर्णन है कि

त्यारे केकैयी कहे ते हतो केवो, पुष्ट प्रौढ़ अपार;

मने चित्र काढी देखाडो, अंगुष्ठनो आकार ।।[118]

दोनों में रावण कुंभकर्ण और विभीषण के तीन तीन जन्म बताये हैं । लेकिन तीनों को वरदान अलग अलग देवता देते हैं । रामचरितमानस में तीनों भाइयों को ब्रह्मा जी ही वरदान प्रदान करते हैं । रावण को वरदान देते समय ब्रह्मा के साथ शिव भी हैं । दोनों स्वीकार करते हुए कहते हैं कि –

एवमस्तु तुम बड़ तप कीन्हा । मैं ब्रह्मा मिली तेहि वर दीन्हा ।[119]

कुंभकर्ण इन्द्रासन माँगना चाहता था, ब्रह्मा ने सरस्वती की सहायता से मति पलट कर नींद्रासन दिला दिया । ब्रह्मा जी बाद में विभीषण को भी वरदान के रूप में भक्ति प्रदान करके संतुष्ट करते हैं जैसे

तिनहिं देइ वर ब्रह्म सिधाये । हरषित ते अपने गृह आये ।।[120]

गिरधर ने तीनों भाइयों को अलग अलग देवता द्वारा वरदान प्रदान करके न्यूनता दिखाई है जैसे

माग माग तुजने वरआपुं, प्रसन्न थयो छुं आजजी;
त्यारे रावण करजोडी ने बोल्यो, सांभळो शिवमहाराजजी ।[121]

कुंभकर्ण की मति फेरने के लिए इन्द्र सरस्वती को भेजते हैं अतः

(हवे) कुंभकर्ण ने जगाडयो विधिए, माग माग वरदानजी
तप मूकी बोल्यो तेणी वेळा, असुर थयो सावधानजी

इन्द्रासन अरथे तप साध्यो, फलमां कांय नव फाव्यो जी
इन्द्रासन मांग्यु तेणी वेळा, भारतीए भुलाव्यो जी ।[122]

विभीषण विष्णु की आराधना करता है । विष्णु प्रसन्न होते हैं –

विभीषणे विष्णु आराध्या प्रसन्न थयां मोरारजी;
वैकुंठ नाथे ध्यानमां आवी, दर्शन दीधुं सारजी ।।[123]

गिरधर कवि ने अहल्या उद्धार की कथा में एक ओर कथा को जोड़ने का प्रयास किया है । अहल्या और गौतम को एक पुत्र और एक पुत्री है । पुत्र का नाम शतानंद है जो जनकराजा का पुरोहित बनता है । पुत्री का नाम अंजनी है । इन्द्र गौतम ऋषि की अनुपस्थिति में अहल्या के साथ देह संबंध जोड़ते हैं । उस समय अंजनी को (पुत्री को) बाहर से कोई अंदर न आजाय इसलिए पहरा देने के लिए बिठाती हैं । गौतम ऋषि का असमय प्रवेश होता है । इन्द्र को शाप देते हैं । अहल्या को पाषाण बनने का शाप देते हैं । अंजनी को भी शाप देते हैं कि

तें जार जोयुं मातानुं क्युं करम अघटित जेह;
वानरनी पेरे ढूकती, करी कोट ऊँची तेह
ते दोष माटे सुता, तुजने देउं छुं हुं शाप,
कपिरूप थाओ ताहरुं, एम बोलिया मुनि आप ।।[124]

गिरधर कृत रामायण में राम विश्वामित्र से सीता की उत्पति के विषय में पूछते हैं । मुनि राजा पद्माक्ष का वृतांत कहते हैं । इनकी पुत्री पद्मा लक्ष्मी और विष्णु के घोर तप के उपरांत वरदान के रूप में प्राप्त होती है । पद्माक्षी की सुंदरता देखकर देव–दानव–गंधर्व किन्नर आदि मोहित होते हैं । पद्माक्षी को पाने के लिए युद्ध करते हैं । राजा पद्माक्ष की सपरिवार हत्या हो जाती है । कन्या पद्माक्षी अग्निकुण्ड में समा जाती है । एक समय रावण पुष्पक विमान में बैठकर वहाँ से निकलता है । कन्या को कुण्ड में देखता है । अतः कुण्ड के रत्नों को लंका ले जाता है । मंदोदरी को दिखाता है । कुण्ड के रत्नों के स्थान पर छः माह की कन्या दिखाई देती है । मंदोदरी रावण को चेतावनी देती है कि यह तो साक्षात् लक्ष्मी है । अग्नि की ज्वाला है । इन्हें कहीं दूर छोड़ आइए । अतः गिरधर कहते हैं कि –

''दास दाटी गयां पेटी जनकपुरनी पास;
ते क्षेत्र कृषि करवा तणुं, लक्ष्मीए पूर्यो वास ।।[125]

हनुमान के जन्म की कथा गिरधर ने अलग ढँग से कही है । अंजनी सात हजर वर्ष तक कठोर तप करती है । फलस्वरूप शिव प्रसन्न होते हैं । वरदान के रूप में ग्यारहवें रुद्र के रूप में संतान प्राप्ति होगी ऐसा कहते हैं । शिव यह भी कहते हैं कि पवन (वायु) तुम्हें प्रसाद देगें । उसी प्रसाद को ग्रहण करना । थोड़े समय के बाद राजा दशरथ ने पुत्र–कामेष्टि यज्ञ किया । यज्ञ का पायस (प्रसाद) अग्नि ने शृंगी ऋषि को दिया । शृंगी ने वसिष्ठ को दिया । वसिष्ठ ने तीन हिस्से किए । बड़ा हिस्सा कौशल्या को दिया । दूसरा सुमित्रा को और तीसरा, जो छोटा था उसे कैकेयी को दिया । कैकेयी प्रसाद

थोड़ा पाकर रुठ गई । उसी समय आसमान से एक चील उड़ती हुई आई । प्रसाद झपटकर ले गई । अतः कौशल्या और सुमित्रा ने अपने प्रसाद से थोड़ा थोड़ा निकालकर कैकेयी को दिया । चील उड़ती हुई अंजनी जहाँ बैठी थी वहाँ आती है । उसकी चोंच से प्रसाद गिर जाता है । अंजनी के हाथों में आता है । वह प्रसाद ग्रहण करती है ।

चर चंचुमांथी पडयो तत्क्षण, क्युँ कारज सार;
वायु ए लावी मूकियो, अंजनी कर मोझार ।।[126]

कवि ने चील को स्वर्ग की सुवर्चसा नामक ब्रह्मा की सभा में नृत्य करने वाली शापित अप्सरा कहा है ।

दशरथ राजा के देहावसान के बाद कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी को छोड़कर सात सौ रानियाँ सती होती हैं ऐसा उल्लेख है । जैसे –

त्यारे सातसें राणी ओ सती थई जे, पतिव्रता कहेवाय;
भूपनी साथे तेह बळी, ज्यम सूर्यमां किरण समाय; ।।[69]

राम, लक्ष्मण और सीता जब वनगमन के लिए तैयार होते हैं तब कैकेयी वस्त्र आभूषण को उतारकर वनकूल पहनने के लिए कहती है । तब वसिष्ठ मर्यादा का लोप करके कहते हैं कि

वनकूल पहेराव्यां सुंदरी, त्यारे वसिष्ठ बोल्या क्रोध करी;
अरे राणी तुं निरदे घणी, राज बुडाडयुं तें पापणी; ।।[128]

राजा दशरथ भी कैकेयी को कटू वचन यों कहते हैं –

"अरे ऊठ अहींथी तुंजा पापणी, बळी जाओ बुद्धितुजतणी
मंदभाग्यणी निरदे घणी, तारी जननीए शुं करवाजणी ? ।"[129]

गिरधर कवि ने बालकाण्ड में एक प्रसंग में थोड़ा अलग कहा है । राम विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा हेतु जाते हैं । राक्षसों का संहार करते हैं । उसी क्रम में रामचरितमानस में तुलसीदास ने मारीच को बिना फर (गाँसी) वाले

बाण से चारसौ जोजन दूर फेंक दिया ऐसा कहा है । गिरधर कुछ यों कहते हैं –

तेणे छेद्युं सुबाहु नुं शीश, पामी मरण पडयो ते दिश,
लागी झपट ते शरनो पवन, तेणे मारीच ऊडयो गगन; ।।[130]

यह भी देखें –

सुनि मारीच निसाचर क्रोही । लै सहाय धावा मुनिद्रोही ।।
बिनु फर बान राम ते हि मारा । सत जोजनगा सागर पारा ।।[131]

रामचरितमानस में राम के चरण स्पर्श से अहल्या का उद्धार होता है । गिरधर कवि कुछ अलग ही कहते हैं कि –

कोई कहे छे रामे चरणनो, स्पर्श कर्यो साक्षात्
ए तो जूठुं जाणजो, घटे नहि ए वात ।
अन्य क्षत्री एवुं नव करे, आ तो धरम अवतार;
चरणस्पर्श ते क्यम करे ? ब्राह्मणी ने निरधार ।।[132]

जबकि रामचरितमानस में –

परसत पदपावन शोक नशावन प्रगट भई तप पुंजसही ।।[133]

रामचरितमानस में धनुष भंग होते ही परशुराम आते हैं जबकि गिरधर कृत रामायण में परशुराम स्वयं नहीं आते । नारद के कहने से परशुराम आते हैं ।

"नारद कहे, ब्राह्मण थई गया, शो रहयो महिमा तमारोजी;
किंचित क्रोध जो नहि राखे तो थशे मृत्यु तमारुं वहेलुंजी ।।[134]

परशुराम नगर के बाहर राम से मिलते हैं । लक्ष्मण–परशुराम संवाद इसमें है ही नहीं ।

राम, सीता और लक्ष्मण वन में जाते हैं । भरत और शत्रुध्न ननिहाल से वापस आते हैं । पिता की अंत्येष्टि क्रिया करते हैं । तीनों माता और

अयोध्यावसियों के साथ भरत शत्रुध्न चित्रकूट आते हैं । तब राम तीनों माताओं में से सर्व प्रथम कैकेयी से मिलते हैं ।

"प्रथम राम भेंटी कैकेई । सरल सुभावँ भगति मति भेई ।।"[135]

गिरधरकृत रामायण –

गिरधर ने कैकेइ रही घेर सर्वथी भरत तेनुं मुखजोता नथी ।।[136]

रामचरितमानस के अरण्यकाण्ड के प्रारंभ में इन्द्रपुत्र जयंत का कौए के रूप में सीता पर चंचू प्रहार करता बताया गया है । नारद जयंत पुत्र को बचाते हैं । गिरधर कृत रामायण में भी नारद जी ही रक्षा करते हैं लेकिन यहाँ इन्द्र पुत्र के स्थान पर सुदर्शन नामक गंधर्व कौआ बनकर आता है । यह प्रसंग गिरधर कृत रामायण के अयोध्याकाण्ड में है ।

"आ जुओने माराज मुजने, चांच मारे काग;
ते सांभळीने जोयुं रामे कोपिया महाभाग
कुशनी सळी करमांहे लेईने नाखी श्री रघुराय;
ते बाण थईने काग पूंठळ, धायुं विद्युत प्राय ।।"[137]

रामचरितमानस में वाली वध के बाद राम तारा को आश्वासन देते हैं । अतः तारा राम से परम भक्ति का वरदान माँगती है । गिरधर ने तारा का सुग्रीव से पुनर्विवाह करा दिया है जैसे – मानस में

उपजा ज्ञान चरन तब लागी । लीन्हेसि परम् भगति बर माँगी ।[138]

रामायण में –

कोईए नहि करे निंदा तारी माटे वचन मुज पाळ ।
पछे सुग्रीव ने ते तारा सोंपी, नंखावी छे वरमाळ ।।[139]

सुंदरकाण्ड में हनुमान विभीषण को विप्र रूप में मिलते हैं । विभीषण अपनी स्थिति का हनुमान से इस प्रकार उल्लेख करते हैं कि –

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी ।
जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी ।[140]

गिरधर कवि ने दोनों का मिलन बताया ही नहीं । यथा –

“लंकामां राम आवशे त्यारे करशे एनुं काज;
रावणने मारीने निश्चे, आपशे एने राज
एवुं कही नमस्कार करी त्यांथी चाल्या वायुकुमार ।।[141]

लंका में हनुमान की पूंछ पर कपडें लपेट कर आग लगाई जाती है । मानस में स्पष्ट लिखा है कि तुरंत आग लगा दी गई । जैसे

बाजहिं ढोल देहिं सब तारी । नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ।।[142]

कवि गिरधर ने यह कहा है कि हनुमान की पूँछ में किसी से लगाने पर भी आग नहीं लगती । तब रावण आग लगाने का प्रयास करता है । फलस्वरूप उसकी दाढ़ी और मूँछे दोनों जल जाते हैं जैसे –

पछे अग्नि चेतावा लाग्या सर्वे नव चेते ते ठाम;
अनेक उपाय करीने थाक्या, स्पर्श करे नहि नाम
त्यारे रावण कहे लावो हुं चेतावुं बेठो जईने पास
त्यारे वेदजात वायुनी, प्रार्थना करी हनुमंत प्रकाश
थयो ओचिंतो भडको ज्यारे, फूंक मारी दशानन
तव दाढ़ी मूछ बळी रावणनी, वरवुं थयुं छे वदन ।[143]

आगे हनुमान की पूँछ जलाई जाती है । हनुमान विभीषण के घर को छोड़कर सारी लंका में आग लगा देते हैं । हनुमान पूँछ में लगी आग को बुझाने के लिए समुद्र तट पर जाते हैं । मानसकार ने कहा है कि –

उलटि पलटि लंका सब जारी । कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ।।[144]

गिरधर ने थोड़ी नवीनता दिखाई है । समुद्र स्वयं कहता है कि ‘तेरी जलती हुई पूँछ से मेरे जलचर जलने लगेंगे । अतः पूँछ बाहर ही रखों । मैं पानी डालकर बूझा दूंगा ।

जळ जंतु बळवा लाग्या त्यारे जळ निधि बोल्या वाणी,
राखो बारणे पूंछ तमारुं हुं छोळे छांटु पाणी ।।[145]

हनुमान ने लंका जलाई । सीता की खोज की । रावण के वन बाग उजाड़ दिए । अपनी शक्ति का परिचय दिया । अतः हनुमान ब्रह्मा के पास जाकर कहते हैं कि मैं यदि अपने मुख से राम को उतने पराक्रम कहूँगा तो आत्माश्लाधा होगी । अतः आप एक पत्र लिखें, जिसमें यह बात बतायी जाए । मैं यही पत्र राम को दूँगा । अतः ब्रह्मा पत्र लिखकर हनुमान को देते हैं । हनुमान राम को वही पत्र देते हैं । यह गिरधर की मौलिकता है जैसे –

''सुणी ब्रह्मपत्र पावन, पाम्या आश्चर्य सर्वे जन;
त्यारे हरख्यां धणुं रघुनाथ, चांप्यो मारुति रुदया साथ ।।[146]

राम लंका पर आक्रमण करने के दल बल सहित तैयार होते हैं । राम हनुमान की पीठ पर और लक्ष्मण अंगद की पीठ पर बैठ जाते हैं । जैसे –

हनुमंत स्कंधे राम चढ़िया चाप शर ग्रही हाथ;
अंगद केरे स्कंध बेठा, लक्ष्मण जी तेणीवार ।।[147]

रावण की सभा में विभीषण के संवाद में कविने थोड़ा परिवर्तन किया है । मूल कथा में रावण स्वयं विभीषण पर क्रोध करता है जबकि गिरधर ने विभीषण पर रावण का मुख्य प्रधान क्रोध करता दिखाया है ।

रावण ने कहे जुओ तम बंधु केवळ कहे छे कूडुं
शत्रुनो पक्ष करीने बोले, आपणुं इच्छे भूंडुं ।।[148]

गिरधर ने यह भी कहा है कि रावण के कहने से ही विभीषण राम की शरण में जाता है । राम समुद्र जल से विभीषण का राज्याभिषेक करते हैं । लंकापति कहकर विभीषण को संबोधन करते हैं । तब गिरधर कवि ने मौलिकता का परिचय दिया हे । सुग्रीव राम से कहता है कि यदि रावण आपकी शरण में आ जाए तो उसे क्या दोगे ? विभीषण को तो आपने लंका का राज्य दे दिया है । राम कहते हैं कि

"त्यारे मारी अयोध्या आपीश एने, वैभव राज समेत;

हुं करीश तप वनमां जइ, राज करशे रावण राय ।।[149]

राम अपने दल बल के साथ सेतूबंध का निर्माण करते हैं । रावण के साथ युद्ध हो इसके पूर्व किसी को दूत बनाकर भेजना चाहिए । अतः सबसे पूछते हैं कि किसे दूत बनाकर भेजें ? मूल कथा में जामवंत राम को कहते हैं कि – वाली पुत्र अंगद को दूत बनाकर भेजें । गिरधर ने यही बात विभीषण से कही है ।

तेने जोइने विभीषण बोल्या, सांभळीए श्रीरंग

अंगद ने मोकलो सर्वथा शिष्टाई करवा त्यांहे; ।।"[150]

मेघनाद लक्ष्मण का युद्ध मूल कथा में संक्षेप में है । गिरधर ने विस्तार से युद्धका वर्णन किया है । मेघनाद का वध होता है । लक्ष्मण को अत्यंत दुःख होता है । इसका कारण यह है कि मेघनाद की पत्नी सुलोचना शेष नाग की कन्या थी । लक्ष्मण शेष नाग के अवतार थे । अतः अपने हाथों ही अपने दामाद की हत्या हुई । राम कहते हैं कि दूसरी स्वर्ण की लंका उत्पन्न करके मेघनाद को जीवित कर दूँ । राजा बना दूँ । सुलोचना कहती है कि एक बार प्रभु आपके दर्शन हो गये । जीवन धन्य हो गया । आपके दर्शन पाकर कोई संसार में रहे तो उसे धिक्कार है । अतः मैं भी सती होना चाहती हूँ । कवि स्वीकार करते हैं कि –

"इन्द्रजितनी ए गति थइ । सतीतणुं सत्यप्रकाश ।।

ए कथा अग्निपुराणमां कही सत्यवती सुत व्यास ।।"[151]

कविने आगे अग्निपुराण की कथा का ही प्रश्रय ग्रहण करके अहि रावण महिरावण की कथा का सविस्तर उल्लेख किया है जो मूल कथा से अलग है । राम रावण के युद्ध के समय रावण को रामके बाण अवश्य लगते थे, मगर मृत्यु नहीं होती थी । मूल कथा के अनुसार विभीषण राम को रावण की नाभि

में बाण चलाने का संकेत करता है जब कि गिरधर ने यही बात सारथि मातलि के द्वारा कही है –

त्यारे मातलि सारथिजेह, बोल्यो रामनी साथेतेह
अमृतकुंपी एना हृदे मांहे, फोडो बाण मूकीने त्यांहे ।।''[152]

रावण वध के बाद राम, लक्ष्मण और सीता दल बल सहित अगत्स्य के आश्रम में आते हैं । सीता अगत्स्य की पत्नी लोपामुद्रा से मिलते हैं । दोनों में संवाद होता है । लोपामुद्रा सीता से मजाक करती हुई कहती है कि आपके पति (राम) ने समुद्र पर बाँध बनाकर बड़ा पराक्रम नहीं किया । मेरे पति ने तो पूरा समुद्र पी लिया था । ऐसा क्यों नहीं किया ? अथवा एक बाण से ही समुद्र को सूखा क्यों नहीं दिया ? तब सीता प्रत्युतर में कहती है कि ऐसा करना ठीक नहीं था । राम के पास अनेक शक्तिशाली वानर है ।
आपके पति ने समुद्र को शोषने के बाद पुनः निकाला था । अतः

''पण मूत्र तमारा स्वामी केरुं, जाणी मनमां त्यम;
ते छूवे नहि कोई वानर एतो, पान करे वळी क्यम ?''[153]

उत्तरकाण्ड में राम का रज्याभिषेक होता है । उसमें 'प्रथम तिलक वशिष्ट मुनि कीन्हा' के बाद राम कथा पूर्ण होती है । आगे अधिक विस्तार नहीं है । कलियुग का वर्णन है । गरुड भुशुष्डि संवाद काक भुशुष्डि और लोमश संवाद तथा ज्ञान भक्ति का ही उल्लेख है । कहीं कहीं इस पंक्ति को ध्यान में रखकर 'कोटिन्ह वाजिमेघ प्रभु कीन्हे । दान अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हे ।।' राम कथा को पूर्ण मान लिया जाता है । गिरधर ने उत्तरकाण्ड मे 112 अध्यायों का समावेश करके प्रासंगिक कथाओं का अधिक उल्लेख किया है, जिनमें धोबी के कटू वचन से राम सीता का त्याग करते हैं, सीता वाल्मीकि के आश्रम में लव–कुश नामक दो पुत्रों को जन्म देती हैं, लक्ष्मण, भरत शत्रुध्न के वहाँ भी दो–दो पुत्र होते हैं, राम अश्वमेघ यज्ञ करते हैं, लव–कुश से युद्ध होता है । राम मूर्छित होते हैं । ऐसी अनेक घटनाओं का गिरधर ने

उल्लेख किया है । इस प्रकार विषमता होते हुए भी हमने उल्लेख नहीं किया क्योंकि ऐसी घटनाएँ समाज में प्रचलित नहीं थीं । कवि ने अपने आख्यान में चमत्कृति हेतु ही इसका प्रयोग किया है ऐसा लगता है ।

4.6 'रामचरितमानस' ओर 'रामायण' : चरित्र सृष्टि :

भारतीय साहित्य परंपरा में राम कथा का अपना एक विशिष्ट स्थान है । भारत एक विशाल राष्ट्र है । इसके ज्ञान का विस्तार तो असीम है ही साथ ही भौगोलिक विस्तार भी कम नहीं है । इसी प्रकार रामभक्तिधारा ने संपूर्ण भारत को सदियों से एकता के सूत्र में बाँधे रखा है । हम चाहे कहीं भी रहें हमारा मन व हमारी आत्मा एक ही है । इसका कारण यही है कि रामकथा ने हमारे मानस को इतना प्रभावित किया है कि हम जहाँ भी रहें ऐसा प्रतीत होता है कि हम अपने समाज, परिवार या निवासस्थान में ही हैं । हम भारतीय कोई भी भाषा क्यों न बोले परंतु हम सब एक हैं, हमारा चिंतन एक है । वाल्मीकि रामायण को आदि रामायण कहा जाता है । प्रत्येक रामकथा के साहित्यकारों ने इससे प्रेरणा ग्रहण की है । वाल्मीकि के बाद तुलसीदास का नाम सगर्व लिया जा सकता है । इन्होंने रामचरितमानस की रचना करके राम कथा को विश्व के सभी देशों में पहुँचाने का भगीरथ कार्य किया है । रामकाव्य परंपरा में रामचरितमानस 'अमूल्य देन है ।' तुलसी ने आलोच्य कृति में चरित्रों की सृष्टि के द्वारा तदयुगीन समाज का यथातथ्य चित्रण प्रस्तुत किया है । रचनाकार के विचारों के संवाहक के रूप में चरित्र ही होते हैं । अब हम तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' और गिरधरकृत 'रामायण' के चरित्रों का उल्लेख करेंगे ।

4.6.1 रामचरितमानस में राम का चरित्र

राम का चरित्र लोक ख्यात्त है । संसार का शायद कोई ऐसा मानव होगा, जिसने राम का नाम न सुना हो । राम विश्व व्याप्त हैं । तुलसी की

चरित्रांकन कला के विषय में डॉ. सरगू कृष्णमूर्ति कहते हैं कि 'तुलसी के पात्र जीवंत नर–नारी समूह हैं । महाकाव्योचित चरित्र चित्रण विधान इसमें है । नर–मुनि, सिद्ध, यक्ष, साध्य, उरग, किन्नर, किंपुरुष, सुर–असुर, गंधर्व पशु–पक्षी आदि समस्त पात्रों का वैभवपूर्ण समागम मानस में है । ब्रह्मांड भर के चरित्रों में राम भक्ति की दीप्ति दिखाकर तुलसीदास लोक एवं काव्यलोक में नया आलोक फैलाते हैं । तुलसी के समस्त पात्र युग–युग में परिचित हिन्दु धर्मग्रंथों में आये हुए चरित्र है । स्वयं तापस रूप में कवि भी एक चरित्र बने हुए हैं ।[154] तुलसी ने रामचरितमानस में राम को मर्यादा पुरुषोतम के रूप में अंकित करने का प्रयास किया है । राम सर्वगुण–सम्पन्न हैं । डॉ. रामचंद्र स्वामी कहते हैं कि 'मानस के राम में रामायण के राम के सारे गुण पाये जाते हैं । अध्यात्म रामायण से प्रेरणा ग्रहण कर तुलसीदास जी ने उनमें से कुछ गुणों को मौलिक रूप से विकसित भी किया है ।"[155] तुलसी ने अपने कवि कर्म में लोक मंगल की पुनित कामना को अग्र स्थान दिया है । महान आदर्शों की प्रतिष्ठा के द्वारा ही समाज उद्धार संभव है ऐसा तुलसी का मत है । अतः महान आदर्शों की खान राम ही है ऐसा कवि का स्पष्ट विश्वास है । तुलसी ने राम में ही अनंत, सौंदर्य, शील व शक्ति से समन्वित मर्यादा पुरुषोतम की अपूर्व झाँकी देखी है ।आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं कि साधारण से साधारण व्यक्ति का भी राम के शील तक पहुँचने के लिए तुलसीदास जी ने राम में अनंत सौंदर्य और अनंत शक्ति के आयोजन का सुगम और मनोहर मार्ग निकाला, सौंदर्य के प्रभाव से हृदय को वशीभूत करके शक्ति के अलौकिक प्रदर्शन से उसे चकित करते हुए अंत में उसे 'शील' या ' धर्म' के रमणीय रूप की ओर आप से आप आकर्षित होने के लिए छोड़ देते हैं ।[156] राम का चरित्र एक ऐसे मानव का चरित्र है जिसमें सर्वतोन्मुखी, बहुआयामी व्यक्ति की सहज झाँकी प्राप्त होती है । कल्याण के विशेषांक श्री राम वचनामृतांक के सातसो पृष्ठो में राम के चरित्र पर ही विद्वानों ने अपने

मत प्रकट किए हैं जिसमें सर्वत्र राम ही राम है । 'राम का प्रत्येक कार्य परमपवित्र मनोमुग्धकारी और अनुकरण योग्य है । रामचंद्र जी के समान मर्यादा रक्षक आजतक कोई दूसरा नहीं हुआ । राम सर्वगुणाधार, सत्य, सहृदयता, गंभीरता क्षमा, दया, मृदुता, शूरता, धीरता, निर्भयता, विनय, शांति, तितिक्षा, नीतिज्ञता, तेज, प्रेम, मर्यादा संरक्षता, एक पत्नीव्रत, प्रजा रंजकता, ब्रह्मण्यता, मातृ–पितृ भक्ति, गुरुभक्ति, भ्रातृप्रेम, सरलता, व्यवहार कुशलता, प्रतिज्ञा तत्परता, शरणागत–वत्सलता, त्याग, साधु संरक्षण, दुष्ट विनाश, निर्वैरता, सख्य एवं लोकप्रियता आदि सभी गुणों का राम में विलक्षण विकास पाया जाता है ।[157]

राम की शरणागत वत्सलता, भक्तवत्सलता, कृतज्ञता, राम का ऐश्वर्य, राम का शौर्य, अप्रमाद, कर्तव्यपरायणता, विविध विद्या नैपुण्य, सरलता, संयम, आत्मविश्वास, जन्मभूमि प्रेम, नियम–निष्ठा, प्रकृति प्रेम, कलाप्रेम, शील, नीति उपदेश, भक्ति उपदेश, वैराग्यवर्णन, राजनीति का उपदेश इत्यादि राम के चरित्र के महिमा मंडित आधार हैं । तुलसी के मानस में चित्रित असंख्य चरित्रों में से राम के चरित्र को सर्वश्रेष्ठ माना जा सकता है । डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र कहते हैं कि "गोस्वामी तुलसीदास जी के राम न केवल ब्रह्म हैं,... निर्गुण ब्रह्म तथा सगुण अशरीरी परमात्मा है । न केवल महाविष्णु है । सगुण शरीरी परमात्मा है । न केवल मर्यादा पुरुषोतम हैं । आदर्श मनुष्य है । वरन् तीनों के सामंजस्य से पूर्ण परम्आराध्य हैं ।[158] हम यहाँ राम के व्यक्ति के कुछ पहलुओं का विवेचन करेंगे ।

निर्गुण, ब्रह्म के रूप में राम :

राम दशरथ नंदन और कौशल्या सुत है । पृथ्वी, ब्राह्मण, गौ, देवता, और दुःखी लोगों के उद्धार हेतु इन्होंने जन्म लिया है । राम सर्व व्यापक है । अतः निर्गुण, ब्रह्म भी है । देवताओं ने अपनी स्तुति में कहा है कि –

अज व्यापक मेक मनादि सदा । करुनाकर राम नमामि मुदा ।[159]

इसके अलावा एक स्थान पर यह कहा गया कि राम पर ब्रह्म ऐसे हैं कि केवल एक इच्छा रहित, आकार रहित, नाम रहित, जन्म रहित सच्चिदानंद बैकुंठनिवासी, घटघटवासी, ऐश्वर्यशाली परब्रह्म हैं जैसे –

एक अनीह अरूप अनामा, अज सच्चिदानंद पर धामा ।।[160]

भक्तों क हित हेतु ब्रह्म निर्गुण से सगुण होता है । तुलसी कहते हैं कि निर्गुण और सगुण में कोई भेद नहीं होता । श्रद्धा और भक्ति के आधार पर अगोचर ब्रह्म को अनुभव गम्य बनाया जा सकता है ।

बालकाण्ड में कवि ने कहा ही है कि :

सगुनहिं अगुनहिं नहिं कछु भेदा । गावहिं मुनि पुरानबुध वेदा ।

तुलसी ने राम को विष्णु का ही अवतार माना है । उत्तरकाण्ड में वे कहते हैं कि विष्णु कोटि सम पालन कर्ता, रुद्र, कोटि सत सम संहर्ता ।।

सर्वगुण सम्पन्न राम :

रामचरितमानस में तुलसी ने राम के चरित्र में अनेकानेक गुणों की स्थापना की है । रचनाकार एक आदर्श मानव का उल्लेख करके आनेवाली पीढ़ियों में उत्तम गुणों का परिपाक देखना चाहते थे ।

अतः राम मर्यादा पुरुषोतम के साथ ही विनम्र, उदार, स्नेहशील नीतिमान, धार्मिक संकोचशील, द्वेष हीन सत्यप्रिय, कर्तव्य परायण, निष्ठावान और क्षमाशील है । कैकेयी राम को वन भेजना चाहती है मगर उसके मन में राम के प्रति अहोभाव है । वह कहती है कि –

“तुम्ह अपराधजोगु नहिं ताता । जननी जनक बंधु सुखदाता ।।
राम सत्य सबु जो कछु कहहु । तुम्ह पितु मातु वचन रत अहहू ।।[161]

परिवार प्रेमी राम :

मानस में राम का चरित्र उच्च मानव का चरित्र है । राम ने माता–पिता गुरु, बंधु, मित्र, पत्नी, शत्रु, प्रजा, सेवक सबके साथ मृदुता के साथ व्यवहार किया है । इनका चरित्र औरों के लिए आदर्श एवं अनुकरणीय है । राम की मैत्री का उतम उदाहरण सुग्रीव के साथ किए गये संवाद में हैं यथा

"जेन मित्र दुःख होहिं दुखारी । तिन्हहि बिलोकत पातक भारी ।।
निज दुःख गिरि समरज करिजाना । मित्रक दुःख रज मेरु समाना ।।"[162]

शील सौंदर्य की अप्रतिम मूर्ति राम :

राम अप्रतिम सौंदर्य के भण्डार है । राम की ऐसी अनुपम, आकर्षक और अवर्णनीय मूर्ति है कि जिस पर करोडो कामदेव भी आकर्षित हो जाए । राम के सौंदर्य की चर्चा मानस में उनेक स्थानो पर पाई जाती है । मनु शतरूपा, अयोध्या–मिथिला नगरवासी, सीता स्वयंवर का समग्र जन समुदाय, राजाजनक, परशुराम, शिवजी, पार्वती, सुग्रीव, जटायु, हनुमान आदि आदि । राम सीता स्वयंवर में धनुष उठाने के लिए जब जाते हैं तब तुलसी कहते हैं कि –

"सहजहिं चले सकल जगस्वामी । मतमंजु वर कुंजरगामी ।।"
चलत राम सब पुर नर नारी । पलक पूरि तन भए सुखारी ।।"[163]

यहाँ ऐसा कहा गया है कि जनकपुर के सब नर–नारी रोमांचित हो गये है ।

अतुलित बल धाम राम :

राम बचपन से ही शक्ति और शौर्य के लिए प्रसिद्ध है । विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करते हैं । ताड़का–सुबाहु का वध करते हैं । परशुराम जैसे

शक्तिशाली वीर को अपने वश में कर लेते हैं । खर–दूषण, विराध, मारीच, कबंध, कुंभकर्ण रावण इत्यादि को अपनी शक्ति का परिचय राम देते हैं । राम राक्षसों से अकेले युद्ध करते हुए अपनी शक्ति का परिचय देते हैं यथा –

"राम राम कहि तनु तजहिं पावहिं पद निर्बान ।।
करि उपाय रिपु, मारे धन महुँ कृपानिधान ।।"[164]

राम क्षण भर में भयानक युद्ध करते हुए राक्षसों को मार डालते हैं ।

आदर्श प्रेमी, आदर्शपति राम :

तुलसी मर्यादा के कवि हैं । उन्होंने अपने समय के टूटते और बिखरते हुए समाज को एकता और मर्यादा में बाँधने के लिए ही राम का चरित्र गाया । यहाँ मर्यादा का अर्थ मानवीय भावनाओं को दबाना या अस्वीकार करना नहीं, अपितु उसे एक सुंदर स्वरूप देना है । राम आदर्श प्रेमी, आदर्शपति एवं एक पत्नीव्रत पति हैं । राम को सीता से पुष्पवाटिका में ही प्रथम दृष्टि का प्रेम हो जाता है । राम अपने हृदय की बात लक्ष्मण को कहते हैं । राम सरल स्वभाव के हैं अतः सभी बातें विश्वामित्र को भी कहते हैं । राम सीता से अनन्य प्रेम करते हैं । सीता का हरण हो जाने से राम अत्यंत दुःखी हो जाते हैं । हनुमान आदि को सीता की खोज के लिए भेजते हैं । हनुमान जब सीता की खोज करके आते हैं, उस वक्त राम की स्थिति बड़ी दयनीय है । राम की आँखों से अश्रु बहने लगते हैं । यथा –

"सुनि सीता दुःख प्रभु सुख अयना । भरि आए जल राजिवनयवा
बचन कार्यं मनममगतिजाही । सपनेहुँ बूजिअ बिपति कि तादीं हे ।।[165]

राम सीता से अनन्य प्रेम करते हैं । एक – पत्नी व्रत का पालन करते हैं । यही राम के चरित्र की उज्जवल पहचान है ।

क्षमावान, उदारचरित्र एवं अन्यहितकारी राम :

तुलसी के राम करुणा मूर्ति हैं । दुश्मनों के प्रति भी अपने मृदु व्यवहार से उनके हृदय में अपना स्थान बना लेते हैं । इन्होंने बाली, मारीच, कबंध, विराध, कुंभकर्ण, रावण आदि के प्रति क्षमा प्रकट करते हुए अपनी, उदारता का परिचय दिया है । इन्द्र पुत्र जयंत कौआ बनकर सीत के पैर में चंचू–प्रहार करता है । सीता के पैर से रक्त बहने लगता है । राम क्षुब्ध होते हैं, पर क्षोभ के क्षणों में भी वे अपना विवेक नहीं गँवाते । उनके पास एक से एक अच्छे बाणों की कमी नहीं थी । वे चाहते तो उसी समय जयंत का वध कर सकते थे, मगर ऐसा उन्होंने नहीं किया । यथा –

चला रुधिर रघुनायक जाना । सींक धनुष सायक संधाना ।।”[166]

राम ने सीकं का बाण ही छोड़ा, कोई बड़ा बाण चलाकर राम अपनी शक्ति का प्रदर्शन नहीं करना चाहते थे । राम का चरित्र स्वयं केन्द्रित नहीं है । उन्होंने निरंतर अन्य के हित के लिए ही सोचा है । राम सीता और लक्ष्मण को चौदह वर्ष के लिए वन में न आने के लिए बार–बार समझाते हैं । राम के साथ अयोध्या के नर नारी भी वन में आने के लिए तैयार होते हैं । सब लोग (पुर बासी) राम के साथ चल देते हैं । सब यही सोच रहे हैं कि राम–लक्ष्मण सीता के बिना सुख नहीं है । जहाँ राम होंगे वहीं सभी समाज रहेगा । राम के बिना अयोध्या में काम नहीं है । राम प्रेमपूर्वक मृदु वचनों से नाना भाँति समझाते हैं, धर्म का उपदेश देते हैं । किन्तु प्रेम विवश लोग लौटाने से लौटते ही नहीं । राम विवश होकर रात को दो प्रहर बीत जाने के बाद सचिव से कहते हैं कि रथ इस प्रकार से चलाओ कि चक्रादि के चिन्ह प्रकट न हों । यथा –

“जबहिं जाम जुग जामिनिबीती । राम सचिव सन कहेउ सप्रीती
खोज मारि रथ हाँकहुताता । आन उपायँ बनिहिं नहिं बाता ।।”[167]

राम लोगों का कितना खयाल रखते हैं । यहाँ इस बात की प्रतीति होती है । अतः लोगों सारतः कहना चाहिए कि राम का चरित्र अनेक गुणों से युक्त हैं । राम ब्रह्म स्वरूप होते हुए भी मर्यादा पुरुष है । आम मानव की तरह जीवन व्यतीत करते हुए अनेक आदर्शों की उन्हें स्थापना की है । तुलसी ने राम के चरित्र में पग–पग पर मर्यादा के फूल खिलाये हैं । राम भूलकर भी ऐसा कोई आचरण नहीं करते हैं, जो समाज की परिवार भावना में कोई टूटन या कोई दरार पैदा करें । राम का दिव्य जीवन कभी वासी नहीं होनेलवाला है, क्योंकि आदमी अपने जीवन में जिन आदर्शों, मूल्यों और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कोशिश करता रहता है, उन्हें राम ने अपने जीवन में उतारकर व्यवहार में दिखा दिया है । राम का वही व्यवहार विश्व के हर व्यक्ति के जीवन को स्पर्श करे, मानवता की सनातन एवं चिर प्रतीक्षित यही माँग है ।

4.6.1.2 गिरधर कृत 'रामायण' में राम का चरित्र :

गिरधर ने अपनी रामायण में राम के चरित्र का सर्वाधिक विकास किया है । इन्होंने प्रत्येक अध्याय के अंत में 'इति श्री राम चरित्र वाल्मकि संमत नाटक धारायां' लिखा है । कवि स्वीकार करते हैं कि वाल्मीकि का आधार लिया है । वास्तविकता यह है कि वाल्मीकि रामायण के अलावा अनेक संस्कृत ग्रंथों का एवं तुलसीदास कृत रामचरितमानस का भी आधार लिया है । कहीं कहीं तो रामचरितमानस का भावानुवाद भी प्राप्त होता है । कवि ने राम के चरित्र में सर्वगुण सम्पन्न मानव के गुण आरोपित किए हैं । राम मर्यादा पुरुषोतम हैं । राम लीलावतारी है । राम ब्रह्म स्वरूप हैं । सीता हरण से राम अत्यंत व्यथित हो जाते हैं । वृक्षों, लताओं, पर्वतों, नदियों से सीता के विषय में पृच्छा करते हैं । गिरधर ने राम के चरित्र में अनेकानेक विशेषताओं

का उल्लेख किया है । हम यहाँ राम के चरित्र के महत्त्वपूर्ण पहलूओं पर प्रकाश डालेंगे ।

जनरक्षक ब्रह्म अवतारी राम :

ब्रह्म, नारायण या राम अपने लिए नहीं, बल्कि अन्य के लिए ही अवतार लेते हैं । श्रीमद् भगवत् गीता में कहा गया है कि

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।
परित्रायाण साधूनाम विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे–युगे ।।

भगवान से भक्तों का दुःख देखा नहीं जाता । भगवान अपने सारे काम–धाम छोड़कर भक्तों की सहायता हेतु दौड़ पड़ते हैं । भक्त की जरा सी आह पर नारायण शताधिक करुणा से कराह उठते हैं । पृथ्वी पर असूरों का आतंक बढ़ जाता है । अनेक ॠषिओं की हत्या हो जाती है । कहीं होम यज्ञ का आयोजन ही नहीं होता । राक्षस लोग यज्ञ पूर्ण होने ही नहीं देते । गौ और ब्राह्मणों को पीड़ित किया जाता है । देवताओं को बंदी बनाकर उनसे सेवा ली जाती है । पृथ्वी पर अन्याय का बोझ बढ़ गया है अतः पृथ्वी गाय का स्वरूप लेकर ब्रह्मा की शरण में जाती है । यहीं पर सब देवताओं के साथ शंकर भी आते हैं । सब लोग क्षीर सागर के तट पर खड़े रहकर, कष्ट से उबारने के लिए ब्रह्म को प्रार्थना करते हैं तब नारायण प्रकट होकर सबको आश्वासन देते हुए कहते हैं कि –

“एवी स्तुति सुरनी सांभळी बोल्या श्रीपति देव;
गंभीर वाणी सागरमांथी, धुनी थई तत खेच ।
हे देव चिंत न करशो, हुं धरुं छुं अवतार,
अमो चार रूपे प्रकट थइशुं, अवधपुरी मोझार ।।”[168]

यहाँ ब्रह्म अवतार लेने की बात कहते हैं । अतः गिरधर कवि ने एक स्थान पर उल्लेख किया है कि कौशल्या ने पुत्र को जन्म अवश्य दिया लेकिन प्रसव की पीड़ा का एहसास नहीं हुआ । इसका अर्थ यही है कि राम अवतारी पुरुष हैं, ब्रह्म स्वरूप हैं, अयोनिज हैं । कवि ने कहा है कि –

"प्रसव पीडा नव जाणी जे क्यारे प्रगटयो तनजी ।।"[169]

प्राक्टय के समय शंख, चक्र, गदा, पद्म, धारी श्री राम अठारह वर्ष के लगते थे । बार–बार अपने आराध्य का दर्शन करते हुए भक्तगण धन्यता के अनुभव करते हैं । कौशल्या की प्रार्थना से बाल स्वरूप धारण करते हैं ।

सौंदर्य की अप्रतिम मूर्ति राम :

भक्त अपने आराध्य के बार बार दर्शन करके अपने को धन्य मानता है ।

आराध्य के रूप की झाँकी करते करते भक्त को संतोष ही नहीं होता । अपने आराध्य के दर्शन में भक्त को प्रत्येक बार न्यून अनुभूति होती है । राम बाल स्वरूप में, किशोरावस्था में, युवावस्था में अर्थात् सब अवस्थाओं में अत्यंत सुंदर एवं प्रभावोत्पादक लगते हैं । एक उदाहरण दृष्टव्य है कि राम मिथिला में सीता स्वयंवर के समय जब धनुष के समीप जाते हैं उस समय वहाँ उपस्थित समग्र समुदाय इनकी एक झाँकी से प्रभावित हो जाता हैं, यथा –

"श्याम सुंदर तन सुकुमार, पहेर्यु पीत वसन चळकार
मणि जडित मुगट शिर शोभे, जेना तेज थी दिनकर थोभे
काने कुंडळ मच्छाकार उर मुक्ताफणना हार;
मणिमाळ हीरा गळुबंध, कर कंकण बाजु बंध
शोभे वस्त्राभूषण सार एम चाल्या विशवाधार,
पाम्या विस्मे सरवे भूप जोई रघुवर केरुं रूप ।।"[170]

राम मिथिला में स्वयंवर के पूर्व नगर देखने जाते है तब नगर के नर नारी इनके रूप से प्रभावित होते हैं । वनवास के समय राम लक्ष्मण सीता गाँव के पास से गुजरते हैं तब सब लोग आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकते । ऐसे सौंदर्य धाम हैं राम ।

मानवोपम गुणों के आगार राम :

राम का बाह्यरूप जितना आकर्षक और मनोहारी है उतना ही आंतरिक रूप प्रभावोत्पादक है । राम शील और सामर्थ्य के पूर्ण भण्डार हैं । राम के गुण, कथा और रूप सभी अपार, अगणित और असीम हैं । राम में शील है, करुणा है, मर्यादा पालन है, त्याग है, शालीनता है, धैर्य है । राम के चरित्र में समुद्र के समान गहराई तथा पर्वत के समान ऊँचाई है । राम कठोर, मर्यादा रक्षक, लोक नायक, शरणागत वत्सल, भक्त वत्सल, कृतज्ञ, अप्रमादी, नियमनिष्ठ, जन्मभूमि प्रेमी, सरल, संयमी और आत्मविश्वासी हैं । राम का चरित्र अलौकिक, मर्यादाशील और पूजनीय है । अतः गिरधर कवि अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए राम के गुणों का सिर्फ संकेत करते हैं कि –

“आकाश केरो तागलेवा, मशक गरुड समान;
एम अल्प बुद्धि महानथी, नव थाय हरिगुण मान;

बे सहस्त्र जीभ्या शेषने, ते नवीन गुण नित्य गाय;
एक कल्प सुधी वर्णवे, पण पूरण नव कहेवाय ।।”[171]

गिरधर राम के गुणों का वर्णन करने में अपने आपको असमर्थ घोषित करते हैं ।

परिवार, समाज और जन–जन में प्रिय राम :

राम अपने व्यवहार से प्रत्येक व्यक्ति का मन मोह लेते हैं । नम्रता, विनय, संयम अन्य के प्रति आदर की भावना राम के चरित्र की पहचान है । राम आदर्शपुत्र, आदर्श शिष्य, आदर्श प्रेमी, आदर्श पति, आदर्श मित्र, आदर्श शत्रु, आदर्श स्वामी, आदर्श शिवभक्त, आदर्श प्रजायवत्सल राजा और आदर्श पिता भी हैं । उनके चरित्र में मर्यादा, नीति–निपुणता, सौम्यता एवं संयम का भाव सर्वत्र पाया जाता है । पुष्प वाटिका में राम–लक्ष्मण सीता को देखते हैं । राम लक्ष्मण को अपने स्वभाव का परिचय एवं मानव धर्म की बात समझाते हुए कहते हैं कि–

"आपणे रघुकुळनां तन, राखीए दृढ निर्मळ मन;
परनारीथी रहीए विरक्त, जोई नव थई ए आसक्त,
कुदृष्टि ए ना करीए प्रीत, धर्मशास्त्रनी एवी रीत,
परनारीने परवित्त, स्वपने नव दीजे चित्त ।।"[172]

चौदह वर्ष के वनवास के बाद राम अयोध्या आते हैं । कौशल्या, सुमित्रा और कैकेई तीनों मातायें साथ हैं । राम सर्वप्रथम कैकेयी को वंदन करते हैं । यही राम के चरित्र की विशेषता है । सच्ची मातृ वंदना यही है ।

चतुर शिरोमणि रघुपति प्रथमे, नम्या केकई ने पाय जी;
गद गद थईने आशिष दीधी, मन पामी लज्जायजी ।।[173]

राम में मातृ भक्ति, क्षमाशीलता और परिवार के प्रति प्रेम अनन्य है ।

श्रेष्ठ प्रजावत्सल राम :

राम, लक्ष्मण सीता सहित अयोध्या में आ गये हैं । राम अयोध्या के राजा बन गये हैं । राम जन जन के कंठहार बन गए हैं । गुरु की आज्ञा और तीनों भाइयों से पूछ कर राज चलाते हैं । राम राज्य में किसी को असंतोष न हो, दुःख न हों इसका ध्यान रखा जाता है । गिरधर कवि ने

राम राज्य का विस्तार से वर्णन किया है । राम ने किस प्रकार की व्यवस्था की थी । यह देखने योग्य है – यथा

“देशमां तस्करजार दुष्टनहि, हिंसा रहित सहु जन;
वर्णाश्रम निज धर्म ज पाळे, वरते निरमळ मन ।
रोग दरिद्र वियोग न पीडे, नहि विरोध ने वेर;
चिंता शोक नहि मन कोने, सहु ने लीला लहेर ।।”[174]

इस प्रकार राम अयोध्या में प्रजा का ध्यान रखते हैं ।

दीर्घदृष्टा और परिवर्तनवादी राम :

कवि गिरधर ने राम के चरित्र में अनेकानेक विशेषताओं का आयोजन किया है । राम दीर्घदृष्टा हैं, आनेवाले समाज की झाँकी मानों इनके दिमाग में हैं । अतः समाज में विधवा की स्थिति भविष्य में किस प्रकार की हो सकती है इसमें मानों परिचित है । अतः राम ने तारा का सुग्रीव से और मंदोदरी का विभीषण से पुनर्विवाह कराया है ।

यथा –

कोईए नहि करे निंदातारी, माटे वचन मुज पाळ,
पछी सुग्रीवने ते तारा सोंपी, नंखावी छे वरमाळ ।।

और

“राम आज्ञा ए मंदोदरी वरी, विभीषण ने त्यांहे
वरतियो जय जयकार सहु, हरखी प्रजा पुरमांहे ।।”[175]

यहाँ राम ने तारा और मंदोदरी का पुनर्लग्न कराके विधवा विवाह को समर्थन किया है । समाज में नारी का विधवा बनकर रहना असहय होता है । अतः कवि ने राम के चरित्र में एक आधुनिक विचार की फलश्रुति दिखाकर एक नये आदर्श की स्थापना की है ।

सारत : राम का चरित्र एक बहुमुखी प्रतिभा का परिचायक है ।

4.6.2.1 'रामचरितमानस' के लक्ष्मण :

समग्र राम कथा में राम के साथ लक्ष्मण का चरित्र अधिक समय तक पाया गया है । लक्ष्मण राम की छाया बन कर रहे हैं ऐसा कहेंगे तो अत्युक्ति नहीं होगी । तुलसी ने लक्ष्मण के चरित्र का निरंतर विकास किया है । लक्ष्मण में श्रेष्ठ मानवोपम गुण पाये जाते हैं । लक्ष्मण का त्याग प्रत्येक मानव के लिए एक आदर्श बन सकता है । लक्ष्मण के त्याग, सेवा शौर्य, विनम्रता, उदारता, सहिष्णुता इत्यादि गुणों के कारण ही आज भी हमारे समाज मे राम लक्ष्मण की जोड़ी कहा जाता है । राम के साथ लक्ष्मण का ही नाम सगर्व लिया जाता है । लक्ष्मण के चरित्र में अनेकानेक विशेषतायें पायी जाती हैं । महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय विशेषताओं का ही उल्लेख किया गया है –

शेषावतार लक्ष्मण :

पृथ्वी पर जब अन्यायी और आततताइयों का दमन बढ़ गया तो पृथ्वी, गाय, ब्राह्मण देवता आदि ने मिलकर नारायण की वंदना की । भगवान ने सबका दुःख मिटाने के लिए अवतार लेने का निश्चय किया । अतः शेषनाग ने लक्ष्मण बनकर पृथ्वी पर आने का निर्णय लिया । राम के कीर्तिरूपी पवित्र झंडे के फहराने के लिए लक्ष्मण का यश दंड के समान है । तुलसी कहते हैं कि –

''सेस सहस्त्र सीस जग कारन । जो अवतरेउ भूमि भय टारन ।
सदा सो सानुकूल रह मो पर । कृपा सिंधु सौमित्रि गुनाकर ।।''[176]

यहाँ स्पष्ट है कि शेषनाग जी पृथ्वी का भार उतारने के लिए संसार में अवतरित हुए हैं । सौमित्र का अर्थ उत्तम हित करनेवाला होता है । लक्ष्मण आज्ञाकारी अनुयायी भ्राता ही नहीं अपितु सेवक, भक्त एवं कर्तव्य परायण मूक सेवक भी है । लक्ष्मण का वैराग्य अनुकरणीय है । लक्ष्मण के व्यक्तित्व में स्थायी भाव के रूप में उग्र प्रकृति की स्थापना विशेष रूप से ध्यानाकर्षक है ।

कुपित परशुराम के प्रति लक्ष्मण का व्यवहार इनके स्वभाव का परिचायक है । लक्ष्मण परशुराम से कहते हैं कि –

"शूर समर करनी करहिं, कहि न जनाव हिं आप ।
विद्यमान रिपु पाइ रण, कायर करहिं प्रलाप ।।"[177]

योद्धा लोग लड़ाई में बहादुरी दिखाते हैं, अपनी बड़ाई नहीं बताते । कायर संग्राम में शत्रु को देखकर केवल बकवाद करते हैं । लक्ष्मण को तुरंत क्रोध आ जाता है । सेतु बंध के पूर्व समुद्र जब रास्ता नहीं देता तब लक्ष्मण को क्रोध आ जाता है । भरत पंचवटी में राम से मिलने के लिए सेना सहित जब आते हैं तब लक्ष्मण को गुस्सा आ जाता है ।

लक्ष्मण : एक आकर्षक व्यक्तित्व

राम घनश्याम है तो लक्ष्मण गोरे हैं । इनका चरित्र आकर्षण है । कोई भी इन्हें एक बार देख लेता है, आकर्षित हुए बिना नहीं रहता । जनकराजा राम लक्ष्मण को प्रथम बार देखते हैं तब अत्यंत प्रभावित हो जाते हैं । वे विश्वामित्र जी से प्रश्न पूछते हैं कि ये दोनों कौन हैं ? विश्वामित्र जी कहते हैं कि ये दोनों अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र राम और लक्ष्मण है, यथा

"स्याम गौर मृदु बयस किसारा । लोचन सुखदबिस्व चित चोरा ।।
उठे सकल जब रघुपति आए । विश्वामित्र निकट बैठाए ।।"[178]

यहाँ राम लक्ष्मण को संसार के चित्त को चुरानेवाले बताया गया है ।

मिथिलावासी जब दोनों को देखते हैं तो उनके रोम रोम खड़े हो जाते हैं । नेत्रों में प्रेम के आँसू भर आते हैं । जनक राजा दोनों को देखकर यथार्थ में देह की सुध भूल जाते हैं । लक्ष्मण का त्याग अनन्य है । कैकेयी ने राम को ही वन में जाने के लिए कहा था लक्ष्मण को नहीं । लक्ष्मण स्वयं राम को वन में ले जाने के लिए विनंती करते हैं । लक्ष्मण का उर्मिला के साथ थोड़े समय पूर्व ही विवाह हुआ है, फिर भी राज महल का सुख छोड़कर

वनवासी जीवन व्यतीत करते हैं । चौदह वर्ष तक ब्रह्मचारी रहते हैं, इतना ही नहीं निंद्रा का भी त्याग करते हैं । माता सुमित्रा स्वयं लक्ष्मण को राम के साथ वन में जाने के लिए कहती है । पुत्र को सेवा, भक्ति, त्याग, वैराग्य, नीति, उदारता आदि की शिक्षा देती हुई कहती है कि,

तात तुम्हारि मातु वैदेही, पिता रामु सब भाँति सनेही ।।
अवध तहाँ जहाँ राम निवासू । तहँइँ दिवसुजहँ भानु प्रकासू ।।
जौ पै सीय रामु बन जाहीं । अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं ।।[179]

सुमित्रा लक्ष्मण को राम ही तुम्हारे सर्वस्व है ऐसा बार बार समझाती है । राम लक्ष्मण से अनन्य प्रेम करते हैं । मानस में अनेक स्थानों पर इसका उल्लेख मिलता है । मेघनाद से युद्ध करते समय लक्ष्मण मूर्छित हो जाते हैं तब राम की स्थिति अत्यंत दयनीय हो जाती है । लक्ष्मण की ओर देखकर कहते हैं कि –

सकहु न दुखित देखि मोि काऊ ।
बंधु सदा तव मृदुल सभाऊ ।।
मम हितलागि तजे हु पितु माता ।
सहेहु विपिन हिम आतप बाता ।।[180]

हे लक्ष्मण ! तुम मुझे कभी दुःखित नहीं देख सके । तुम्हारा स्वभाव सदा से ही कोमल है । तुमने मेरे लिए माता–पिता को छोड़ा और वन में आकर हिमपात, आतप, बात, झंझावात आदि सहन किया । मुझे तुम्हारा सा भाई कहाँ मिलेगा ? तुम मुझे परम दुर्लभ हो । लक्ष्मण का सेवा भाव अनन्य है । वन मार्ग मैं चलते हुए लक्ष्मण राम और सीता के पद चिन्हों पर पैर नहीं रखते । सीता को लक्ष्मण माता के समान आदर देते हैं । अरण्यकाण्ड में मारीच स्वर्ण मृग बनकर आता है । राम इस के पीछे जाकर मार देते हैं । मरते समय मारीच 'हा लक्ष्मण' कहता है । अतः सीता लक्ष्मण को राम की सहतया के लिए जाने के लिए कहती है । लक्ष्मण समझाते हैं कि जिन के

भ्रकुटि विलास से सारी सृष्टि का लय हो जाता है, वे राम क्या स्वप्न में भी संकट में पड़ सकते हैं ? फिर भी सीता लक्ष्मण को काठोर बचन कहती है । लक्ष्मण सीता के कठोर बचन सहन कर लेते हैं । प्रतिरोध नहीं करते । यही लक्ष्मण की विशेषता है । लक्ष्मण अपूर्व शक्ति के पूंज है । मेघनाद से युद्ध करते समय लक्ष्मण की वीरता देखने को मिलती है । संक्षेप में लक्ष्मण में अनेक विशेषतायें देखने को मिलती है । मानस में तुलसी ने लक्ष्मण को द्वितीय नायक का स्थान दिया है जो सर्वथा उचित ही है ।

4.6.2.2 'रामायण' में लक्ष्मण का चरित्र :

गिरधर कवि ने लक्ष्मण के चरित्र को एक गरिमा प्रदान की है । लक्ष्मण का चरित्र श्रेष्ठ है । राम के बाद तुरंत लक्ष्मण का नाम उच्चरित किया जाता है । राम लक्ष्मण की जोड़ी कही जाती है । कैकेयी ने राम को चौदह वर्ष का वनवास दिया था लक्ष्मण को नहीं । लक्ष्मण विवाहित होते हुए भी उर्मिला (पत्नी) को छोड़कर ब्रह्मचारी सा जीवन व्यतीत किया । चौदह साल तक निंद्रा का त्याग किया । वास्तव में लक्ष्मण जैसा वैरागी, त्यागी, निस्पृही सेवक रामायण में ओरे कोई नहीं है । राम के पीछे साये के समान रहनेवाले लक्ष्मण ही है । लक्ष्मण के चरित्र में अनेकानेक आदर्श विद्यमान हैं । विनम्रता, विवेक, संयम, उदारता, मितभाषी संतोष, प्रसन्नता इत्यादि लक्ष्मण के चरित्र के उज्जवल पहलू है । गिरधर ने लक्ष्मण के चरित्र की अनेक विशेषतायेँ आलेखित की हैं । लक्ष्मण राम के परम अनुरागी भक्त एवं सेवक है । लक्ष्मण सत्यवादी हैं । इनसे झूठ सहा नहीं जाता । अतः शीघ्र क्रोधित हो जाता है । इनके चरित्र की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख करें तो –

अन्यहितकारी, सौंदर्यशील शेषवतारी लक्ष्मण :

लक्ष्मण ने अपने जीवन का अधिकांश समय राम की सेवा में ही व्यतीत किया है । इनके लिए अपना व्यक्तिगत जीवन कुछ भी नहीं है । लक्ष्मण

परोपकारी हैं । दया, उदारता, सहिष्ता, संयम इनके चरित्र के आधार स्तंभ हैं । लक्ष्मण गौरववर्ण है । प्रथम दृष्टि में ही अन्य को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं । जनक राजा के यहाँ सीता स्वयंवर में राम लक्ष्मण जाते हैं तब उपस्थित सब राजा मोहित हो जाते हैं । पृथ्वी पर जब दानवों का आतंक बढ़ जाता है तब सब देवता लोग क्षीर सागर में शेष शय्या पर सोये हुए नारायण को विनंती करते हैं । श्रीपति देव प्रसन्न होकर देवताओं को कहते हैं कि –

"दशरथ कौशल्या थकी हुं, धरीश राम स्वरूप;
आ शेष ते लक्ष्मण थशे, मुज बंधु धर्म अनुप ।।"[181]

लक्ष्मण को वन में राम के साथ जाने के लिए माता सुमित्रा ही कहती है । लक्ष्मण का राम के सथ व्यवहार पूर्णतः विनयी, संयमी एवं मृदु ही रहा है । लक्ष्मण का स्वभाव थोड़ा क्रोधी अवश्य है । इन्होंने अपने स्वार्थ के लिए कभी नहीं सोचा । भरत और शत्रुध्न बार बार लक्ष्मण के भाग्य की सराहना करते हैं कि ये कितने भाग्यशाली हैं जो निरंतर राम के साथ रहते हैं ।

लक्ष्मण पराक्रमी, सत्यवादी, अनन्य सेवक और उत्तम भाई है :

लक्ष्मण उत्तम योद्धा है । शक्ति का अपार भण्डार लक्ष्मण में हैं । लक्ष्मण स्पष्ट रूप से ऐसा मानते हैं कि शत्रु के साथ कठोरता का ही व्यवहार करना चाहिए । जो अन्यायी है, दुष्ट है सज्जनों को पीड़ित करता है उसका नाश ही करना चाहिए । सुग्रीव जब किष्किंधा का राज्य प्राप्त कर लेता है तो वह प्रमादी हो जाता है । राम लक्ष्मण को भेजकर सुग्रीव को अनके कार्य की याद दिलाते हैं । तब

कर्यो धनुष तणो टंकार थयो नगरमां हाहाकार;
नाठा वानर पामी त्रास, आव्या सर्व सुग्रीवनी पास ।।"[182]

रावण के साथ युद्ध के समय लक्ष्मण का शौर्य, चपलता, युद्ध व्यूह एवं शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता ध्यानाकर्षक है । लक्ष्मण सत्यवादी, आदर्श, भाई, आदर्श देवर, आदर्श पति, आदर्श मित्र, आदर्श पुत्र, इत्यादि है । लक्ष्मण ने

कभी भी रामाज्ञा या सीताज्ञा का अनादर नहीं किया है । हमारे धार्मिक ग्रंथ ऐसे ही उज्जवल चरित्रों के कारण महान हैं ।

4.6.3.1 'रामचरितमानस' के भरत :

मानस में राम के चरित्र के बाद भरत का चरित्र श्रेष्ठ है । भरत राम प्रेम की प्रतिमूर्ति है । इन्होंने स्वेच्छा से वनवासी की दारुण वेदना को सहा है । भोग विलास से इन्हें नफरत है । नन्दीग्राम में रहकर साधु जैसा जीवन व्यतीत करते हैं । कहीं विरोध नहीं, कहीं दुर्बलता नहीं । जीवन जीने की सपाट परिपाटी भरत के जीवन का परिचय है । भरत ने संघर्षों को आत्मसात् किया है । भरत के चरित्र में अदम्य साहस, धैर्य, संयम, सहिष्णुता, उदारता, क्षमा, धार्मिकता, निर्लोभता, भातृ–प्रेम इत्यादि कई मानवोंपम गुण हैं । रामचरितमानसकार ने भरत के चरित्र को यथावकाश श्रेष्ठता प्रदान करने का प्रयास किया है, जिसमें तुलसी को पूर्णतया सफलता मिली है । भरत विश्व का भरण पोषण करते हैं ऐसा तुलसी ने नामकरण के समय कहा है । भरत के चरित्र की अनेकानेक विशेषताएँ हैं । भरत ने राजमहल का सुख नहीं भोगा । नन्दीग्राम में कुटी बनाकर साधु का जीवन व्यतीत किया है । विवाहित होते हुए भी चौदह साल तक ब्रह्मचारी बने रहें । वैभव विलास सहज सुलभ होते हुए भी सदैव दूर ही रहे । भरत का चरित्र समग्र मानवजाति के लिए आदर्श है । भरत के चरित्र की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ देखें तो –

धर्म, मर्यादा के श्रेष्ठ पालक, त्यागी निर्मोही अनन्य भातृप्रेमी भरत

भरत जैसा भाई संसार में दुर्लभ है । भरत ने अपना पूरा जीवन रामाज्ञा और राम हित हेतु ही व्यतीत किया । माता कैकेयी भरत को अयोध्या का राजा बनाना चाहती थी । अतः राम को चौदह साल का वनवास दिया । वास्तव में चौदह साल का कष्ट भरत ने ही उठाया है ऐसा कहेंगे तो अत्युक्ति नहीं होगी कि भरत सौम्य प्रकृति के विनयी, संयमी, मृदुभाषी जप, तप नियम

में आस्था रखनेवाले, निष्कपटी व्यक्ति हैं । मानसकार भी भरत के चरित्र को यथा संभव गरिमा प्रदान करते हैं । राम के बाद भरत को ही याद करते हुए मानसकार कहते हैं कि –

"प्रनवउँ प्रथम भरत के चरना जासु नेमव्रत जाइ न बरना ।
राम चरन पंकज मन जासू । लु बुध मधुप इव तजइ न पासू ।।"[183]

भरत जी के नियम और व्रत की समता किसी में नहीं है । राम भी भरत के प्रति प्रेम रखते हैं । भरत सदैव राम के लिए ही सोचते हैं । राम के प्रति भरत के प्रेम की थाह लेना कठिन है । भरत ननिहाल से जब लौटते हैं तब राम–वनवास और पिता की मृत्यु के समाचार प्राप्त होते हैं । भरत का कोमल हृदय द्रवित हो जाता है । कैकेयी को खरी खोटी सुनाते हैं । यथा शीघ्र राम से मिलने के लिए निकल पड़ते हें । चित्रकूट जाते समय भरत गंगा जी में स्नान करते हैं । तट पर खड़े रहकर प्रार्थना करते हैं कि –

"अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरवान ।
जनम जनम रति राम पद यह वरदानु न आन ।।"[184]

भरत कहते हैं कि मैं क्षत्रिय हूँ । अपने क्षत्रिय धर्म का परित्याग करते हुए हे, तीर्थराज ! मैं भीख माँगता हूँ । आप सभी कामनाओं को पूर्ण करनेवाले हैं । मैं धर्म, अर्थ, काम और न निर्वाण चाहता हूँ । प्रत्येक जन्म में राम के चरणों में आसक्ति रहे । राम भरत के लिए कहते है कि भरत का यदि संसार में जन्म न होता तो पृथ्वी पर समस्त धर्म की धुरी कौन धारण करता ? भरत के गुणों का वर्णन कवि समुदाय के लिए भी कठिन है । राम भरत के विषय में यहाँ तक कहते हैं कि ब्रह्मा विष्णु और शिव के पद को प्राप्त करने पर भी भरत में कभी राजमद नहीं हो सकता । लक्ष्मण सदैव राम के साथ रहते हैं । सेवा करते हैं फिर भी राम के हृदय में भरत का स्थान अनन्य है । राम भरत को सर्व श्रेष्ठ एवं साधू चरित ही मानते हैं ।

अनन्य राम भक्त, बैरागी, आज्ञापालक मूकसेवक निस्पृही भरत :

भरत के लिए राम ही सब कुछ है । राजा दशरथ भी यही मानते थे कि भरत अयोध्या के राज सिंहासन पर नहीं बैठेगा । यदि बैठा तो मेरा अंतिम संस्कार नहीं करेगा । अयोध्याकाण्ड में भरत का चरित्र ही सर्वश्रेष्ठ है । भरत को राम सहोदर ही मानते हैं । भरत को यही अफसोस है कि जन्म देनेवाली माता ही मेरे स्वभाव को पहचान नहीं पायी । इसी कारण भरत माता को खरी–खोटी सुनाते हैं । उनके हदय मे राम के प्रति अनन्य भाव है अतः माता कैकेयी से कहते हैं कि वरदान माँगते समय तुम्हारे मन में पीड़ा क्यों नहीं हुयी ? तुम्हारी जीभ गली क्यों नहीं ? मुँह में कीड़े क्यों नहीं पड़े ? ऐसे कटू वचन भरत माता के प्रति कहते हैं । यही भरत कौशल्या माता के पास जाते हैं तो फफफ फफफ कर रोते हैं । माता से कहते हैं कि राम वनवास से मैं बिलकुल अनभिज्ञ हूँ । अपनी निर्दोषता हेतु भरत माता कौशल्या से कहते हैं कि –

जे अध मातु पिता सुत मारें । गाइ गोठ महिसुर पुरजारें ।।
जे अध तिय बालक बध कीन्हें । मीत महीपति माहुर दीन्हें ।।

जे पातक उपपातक अहहीं । करम बचन मन भव कबि कहहीं ।।
ते पातक मोहि होहुँ बिधाता । जौ यहु होइ मोर मत माता ।।[185]

भरत कहते हैं कि संसार के जितने भी बड़े बड़े पाप हैं सब मुझे लगे यदि राम वनवास में मेरा अभिमत हों । मैं सर्वथा अनभिज्ञ हूँ । माता कौशल्या भरत को निर्दोष का प्रमाणपत्र देती हुई कहती है कि हे भरत ! तुम सदा मेरे लिए मन वचन एवं शरीर से राम की भाँति प्रिय हो । कौशल्या भरत की निष्कलुषता स्वीकार कर लेती है । आ. रामचंद्र शुक्ल भरत की सफाई के विषय में कहते हैं कि ''इस सफाई के सामने हजारों वकीलों की सफाई कुछ नहीं है, इन कसमों के सामने लाखों कसम कुछ नहीं । यहाँ वह

हृदय खोलकर रख दिया है जिस की पवित्रता को देख जो चाहे अपना हृदय निर्मल कर ले ।[186]

भरत का चरित्र एक आदर्श चरित्र है । भरत की निःस्वार्थता, कर्तव्य परायणता भातृ–भक्ति, विनय शीलता, धार्मिकता, विवेकशीलता, नैतिकता, निस्पृहीता इत्यादि गुण ध्यानाकर्षण है । भरत के जीवन का श्रेष्ठ और एक मात्र आदर्श राम की सेवा और आज्ञा पालन ही है । संसार का कोई भी पदार्थ भरत को राम सेवा से च्यूत नहीं कर सकता । भरत अर्थात् भरत ही है ।

4.6.3.2 'रामायण' के भरत :

गिरधर कवि ने यथा संभव भरत के चरित्र को न्याय देने का प्रयास किया है । राम के चरित्र के बाद श्रेष्ठ चरित्र के रूप में निःसंदेह भरत का ही स्थान है । भरत स्वेच्छा से महलों का सुख–वैभव ठुकराकर कुटी में जीवन व्यतीत करते है । भरत के पास राज वैभव और सता होते हुए भी वैरागी सात्विक साधु जैसा जीवन जीते हैं । गिरधर भरत और शत्रुध्न के जन्म के संबंध में कहते हैं कि –

कैकेई ना बे पुत्र ते हरिना शंख चक्र अवतारजी;
भरत शत्रुध्न नाम ज पाडया, गुण बळ तेज अपारजी ।।[187]

भरत की दास्य भक्ति राम के प्रति आदरभाव अन्य के लिए आदर्श है । भरत को सबकुछ सहज सुलभ होते हुए भी सदैव दूर रहे । वैरागी का सा जीवन व्यतीत किया । अपने आपको दोषी मानते रहे कि मेरे कारण ही राम सीता लक्ष्मण को कष्ट झेलने पड़े । भरत में सहिष्णुता, विनय, विवेक मर्यादा पालन, बड़ों के प्रति आदर, निस्पृहता इत्यादि विशेषताएँ ध्यानाकर्षक हैं ।

श्रेष्ठ भक्त, उत्तम सेवक, महान त्यागी भातृ प्रेमी भरत :

भरत जैसा राम भक्त और कोई नहीं है । भरत प्रत्येक पल राम के हित हेतु ही सोचते रहते हैं । भरत अपने आप को बड़ा दुर्भागी मानते हुए पश्चाताप करते हैं कि राम की सेवा का मुझे अधिक लाभ नहीं मिला । मेरे कारण ही माता कैकेयी ने वरदान माँगा कि राम को चौदह वर्ष का वनवास और भरत को अयोध्या का राज सिंहासन । भरत बार–बार यही मंथन करते हैं कि कैकेयी ने ऐसा अपयश क्यों पाया ? अपनी शंका के समाधान हेतु भरत वशिष्ठ से प्रश्न पूछते हैं । वशिष्ठ कहते हैं कि कैकेयी ने बचपन में एक पाप किया था जिसका यह परिणाम भुगतना पड़ा है । कैकेयी ने बचपन में इनके यहाँ चातुर्मास विश्राम करने के लिए आये हुए मुनि के मुख पर मजाक में काजल लगाया था । मुनि बहुत ही क्रोधित हुए । मुनि ने शाप दिया था कि हे कैकेयी तुम्हे कलंक लगेगा । सारा संसार तेरी उपेक्षा करेगा । कवि कहते हैं कि

वरदान मांग्यु राय पासे, राम ने मोकल्या वन रे;
ए कलंक कालुं रह्युं जुगोजुग सुणो भरत वचन रे ।।[188]

गिरधर ने आनंद रामायण का आधार ग्रहण करके कैकेयी का वृतांत प्रस्तुत किया है । राजा दशरथ राम और भरत में कोई भेद नहीं मानते थे उसी प्रकार गिरधर कवि ने भी एक स्थान पर लिखा है कि कैकेयी भी राम और भरत में कोई भेद नहीं मानती । इनके लिए दोनों समान हैं, यथा

''मारे भरत जेवा राम छे, बे पुत्र ते समतोल ।।[189]

रामायणकार ने कहा है कि कलि के कारण ही कैकेयी ने ऐसा किया है । मंथरा कैकेयी को आलिंगन देती है अतः कलि कैकेयी के शरीर में प्रवेश करता है । ऐसा गिरधर का मत है ।

परिवार प्रेमी, आज्ञापालक, धर्मनिष्ठ, निर्दोष भरत :

भरत गुणों की खान है । इन्होंने माता पिता की आज्ञा का कभी भी निरादर नहीं किया । भरत को जब पता चलता है कि राम लक्ष्मण सीता वन में गये हैं । तब भरत यथा शीघ्र राम से मिलने के लिए निकल पड़ते हैं । भरत को वशिष्ट मुनि रथ में बैठने के लिए कहते हैं तब भरत कहते हैं कि मेरे स्वामी राम चलकर ही बन में गये हैं । मैं तो राम का सेवक हूँ । अतः मुझे तो सर के बल चल कर जाता चाहिए । भरत कहते हैं कि –

"भरत कहे नव कहेशो तमो, गुरु आज्ञा जो बेसुं अमो;
रघुपति चर्ण चालीने गया, तेथी अमो शुं कोमळ थया ।
स्वामी राम हुं सेवक वटे, तो माथाभेर चालवुं घटे;
हुं अपराधी रघुवीर तणो, शुं देखाडीश मुख दामणो ।।"[190]

भरत बार बार अपने को ही कोसते रहते हैं । गिरधर कवि ने यह भी कहा है कि राम से मिलने के लिए जब सब जाते हैं तब भरत कैकेयी को चित्रकूट नहीं ले जाते । कैकेयी अकेली अयोध्या में रहती है । राम भी भरत से अनन्य प्रेम करते हैं । राम भरत का प्रेम देखकर गद् गद् हो जाते हैं । राम जानते हैं कि भरत निर्दोष है । भरत जैसा सहिष्णु, विनयी, विवेकी, धर्म मर्यादा पालक, परिवार प्रेमी, त्यागी, निस्पृही और कोई नहीं । राम ऐसा स्पष्ट रूप से मानते हैं । राम स्वयं कहते हैं कि–

"भरतनी भक्ति भावलोक नो मातानो शोक अपार
ते संभारी थया गदगद रघुपति कहेता वारंवार ।।[191]

इस प्रकार गिरधर ने भरत में दास्य भक्ति का सुंदर निरूपण किया है । भरत बार बार अपने अवगुणों का उल्लेख करते हुए पश्चाताप करते हैं । अपने स्वामी राम को दुःख न हों इसके लिए सदैव चिंतित रहते हैं ।

नन्दी ग्राम की कुटी में रहकर निरंतर राम का स्मरण करते रहते हैं । धन्य हैं भरत ।

4.6.4.1 तुलसीास रचित 'रामचरितमानस' का रावण :

तुलसी ने मानस के चरित्रों में रावण के चरित्र को अधिक महत्त्व दिया है । रावण प्रति नायक अथवा खलनायक है । रावण दुष्ट प्रकृति का है इसलिए ही राम के चरित्र का मूल्य है । रावण असत् प्रवृत्तियों का भण्डार है । यह अत्याचार एवं अनाचार की साक्षात् मूर्ति है । रावण क्रोधी, कुटिल राजनीतिज्ञ, वाक्पटु, हठीले स्वभाववाला, अभिमानी, राजसी, तामसी वृत्तियोंवाला राक्षस है । रावण ब्राह्मण भी है और राक्षस भी है । राक्षस इसलिए है कि सुमाली नामक दैत्य ने अपनी पुत्री कैकसी को ब्राह्मण प्रवर विश्रवा से संबंध जोड़ने के लिए भेजा था । कैकसी और विश्रवा से रावण, कुंभकर्ण, शूर्पणखा और विभीषण उत्पन्न हुए । पिता ब्राह्मण मगर माता राक्षसी होने के कारण रावण को राक्षस कहा जाता है । कहते हैं रावण ने दश हजार वर्षों तक निराहार रहकर घोर तपस्या की थी । एक हजार वर्ष बीतने पर एक सिर काटकर आग में होम कर देता था । दश हजार वर्ष के अंत में अंतिम दसवाँ सिर काटकर जब होम करना चाहा तो ब्रह्मा ने वर माँगने को कहा । रावण ने अमरत्व मागा । ब्रह्मा ने कहा यह नहीं होगा । अतः रावण कहता है कि "मैं गरुड़ नाग, यज्ञ, दैत्य, दानव राक्षस देवतादि द्वारा न मारा जाऊँ ।" ब्रह्मा तथास्तु कहते हैं । मानसकार ने जय विजय द्वारपाल, हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष से रावण कुंभकर्ण की उत्पति बताई है । नारद का शिव के दो गणों को शाप देना कि 'छली पापी राक्षस हो जाओ' । नारद शीलानिधि राजा की पुत्री विश्वमोहिनी से ब्याह करना चाहते थे । भगवान ने ऐसा नहीं होने दिया अतः नारद ने भगवान को भी शाप दिया है । रावण के जन्म के पीछे यह

भी एक कारण है । रावण शक्ति का पुंज है । रावण ने सभी देवताओं को परास्त कर दिया था ।

अपूर्व योद्धा भयंकर क्रोधी, शक्ति का भण्डार रावण :

रावण ने पृथ्वी, पाताल और स्वर्ग तक हाहाकार मचा रखा था । वह किसी से परास्त नहीं होता था । मन में एक बार जो ठान लेता था उसे किसी भी हालात में पूर्ण करके ही छोड़ता था । रावण ने देवता, यक्ष किन्नरों, मनुष्यों, नाग आदि की सुन्दर सुन्दर कन्यायों एवं स्त्रियों को अपने पराक्रम से जीत कर ब्याह ली थी । मानसकार रावण की शक्ति और पराक्रम के विषय में कहते हैं कि –

ब्रह्म सृष्टि जहँ लगी तनुधारी । दशमुख वशवर्तीनर नारी ।
आयसु करहिं सकल भयभीता । नवहिं आयनित चरण विनीता ।।[192]

रावण के आतंक से सत्कार्य कहीं नहीं होता था । लोग देवता ब्राह्मण, और गुरु को सम्मान नहीं देते थे । कहीं ईश्वर की भक्ति, होम हवन यज्ञ जाप, दान धर्म भी दिखाई नहीं देता था । रावण उच्चकुलोत्पन्न होते हुए भी शाप वश बुरे कर्म करता है । रावण के संदर्भ में रमेशकुंतल मेघ कहते हैं कि "रावण केवल खलनायक ही नहीं, मूर्ख भी अंकित किया गया है । वह तपस्वी नहीं, शूर तथा भोगी है । वह उतम कुल का भी है और राक्षस भी है । वह पूर्णतः निडर और अपनी विजयों को बारंबार बखाननेवाला घमण्डी है ।"[193]

रावण उत्तम राजा, दीर्घ दृष्टिवाला मायावी है :

रावण खलनायक है । राम के चरित्र को अधिक उज्जवल बनाने के लिए रचनाकारों ने रावण के चरित्र को दुष्ट अंकित किया है । रावण को जब पता चलता है कि खर–दूषण और त्रिशिरा का राम ने वध कर दिया है तब वह सोचता है कि खर–दूषण तो मेरे समान ही बलवान थे । उन्हें भगवान के

सिवा कौन मार सकता है । अतः मैं हठपूर्वक भगवान से बैर करूँगा और प्रभु के हाथों मर कर भवसागर तर जाऊँगा ।

यथा –

सुर रंजन भंजन महि भारा । जौ भगवंत लीन्ह अवतारा ।
तो मैं जाई बैरु हठि करऊँ । प्रभु सर प्रान तजें भव तरऊँ ।।[194]

अतः रावण राम से बैर करके मोक्ष प्राप्त करता है । तुलसी ने परंपरा का निर्वाह करते हुए लोक मान्यता को ही आधार बनाकर रावण को दुष्ट प्रकृति का अंकित किया है ।

4.6.4.2 गिरधर कृत 'रामायण' का रावण :

गिरधर ने रामायण में रावण के चरित्र यथोचित विकास किया है । रावण की उत्पत्ति के विषय में गिरधर ने तुलसी का अनुकरण किया है । जय विजय द्वारपाल, हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष का कवि ने उल्लेख किया है । कवि ने सुमाली की पुत्री कैकेसी का उल्लेख किया है जो विश्वश्रवा के साथ ब्याही जाती है मगर रावण और कुंभकर्ण की उत्पत्ति आसुरी शक्ति के द्वारा बतायी गई है – जैसे

''पछे पूरे दिवसे प्रगट थया, बे पुत्र महाबळवान;
आसुरी उदरथकी तेवा, ब्रह्म राक्षस प्रेत समान ।
प्रथ में प्रसव हतो ते पुत्रनुं, रावण धरियुं नाम;
कुंभकर्ण ते पूंठे आव्यो, पापी अर्धनुं नाम ।।''[195]

गिरधर यहाँ रावण और कुंभकर्ण की माता आसुरी कहकर छोड़ देते हैं । कवि ने यह भी कहा है कि बाद में शूर्पनखा और ताड़का का जन्म हुआ । कैकेसी की विनंती पर विश्वश्रवा ने सात्विक पुत्र विभीषण का ऋतुदान दिया । ऐसा गिरधर कवि ने कहा है । गिरधर ने रावण को हिरण्यकशिपु के कान का कुंडल उठाने में असमर्थ बताया है । बलि राजा की पत्नी विंध्यावळी

जो द्यूत (जूआ) खेल रही थी । उसके खेलने का पासा भी रावण नहीं उठा पाया । बाली ने रावण को अपनी बगल में लम्बे समय तक रखा । बाद में इनके पुत्र अंगद का पलने के साथ बाँध कर उलटा लटकाया था । रावण ने कुबेर की पुत्र वधू के प्रति अभद्र व्यवहार किया अतः उसने शाप दिया था । रावण ने ब्रह्मा से पूछा था कि मेरी मौत कैसे होगी ? ब्रह्मा जी ने उत्तर दिया था कि अवधपुर के अजपाल नरेश के पुत्र दशरथ के यहाँ राम का जन्म होगा । वही तुम्हारा काल बनेगा । अतः रावण दशरथ राजा के विवाह में बाधा डालने का प्रयास करता है । नारद की युक्ति से दशरथ और कौशल्या बच जाते हैं । नारद विवाह सम्पन्न कराते हैं । रावण अपनी मनमानी नहीं कर पाता । रामायणकार ने रावण के चरित्र का अधिक विस्तार किया है ।

अभिमानी, क्रोधी पराक्रमी युद्ध कुशल रावण :

रावण ने दीर्घकाल तप करके ब्रह्मा से वरदान प्राप्त किया था । रावण के लिए कोई भी वस्तु असंभव नहीं थी । रावण ने अनेक कन्याओं के साथ विवाह किए थे । गिरधर कवि कहते हैं कि

"लंकापुरीमां राज करे छे रावण बलियो जहेजी;
अनेक कन्या लाव्यो दशानन, हरण करी निरधारजी
देव दानवी मानव पन्नगी, यक्ष गांधर्वी नारजी
लक्षपुत्र थयां रावण ने लक्ष तेहना तन जी
सर्व दिशा जीती वश कीधी, एवो बकियो शूर जी
असुर बळियो दशाननते कोण जीत्यो नव जाय रे ।।"[196]

यहाँ गिरधर ने रावण के लाख पुत्रों का उल्लेख किया है । सभी दिशाओं में रावण की ही जय जय कार होती है । इससे रावण का पराक्रम और युद्ध कुशलता का परिचय प्राप्त होता है । देवदत्त जोशी भी रावण के पराक्रम के विषय में कहते हैं कि – "पात्रालेखननी दृष्टिए गिरधरनो रावण

जुदो पडे छे । श्रीधर अने शामळनो रावण गर्विष्ठ वधारे छे । प्रेमानंदनो रावण अंते ज्ञानी भक्त लागे छे ज्यारे गिरधरना रावणमां पराक्रम आगळ पडतुं छे. ।।"[197] रावण ने अपने पराक्रम के आधार पर ही सूर्य, चंद्र, अग्नि, देवता, नाग इत्यादि पर विजय प्राप्त कर ली है । रावण के यहाँ इन्द्र, वरुण कुबेर, ब्रह्मा, नारद, बृहस्पति आदि रावण के यहाँ निम्न कार्य करते हुए दिखाये गये हैं ।

रावण किसी को कुछ भी नहीं मानता । रावण का अभिमान चरमसीमा पर है । वह आये दिन गौ–ब्राह्मण की हत्या करता रहता है । कवि ने रावण का आतंक विस्तार से बताया हे ।

कूटनीनिज्ञ, कपटी, अहंकारी, अप्रतिम शक्तिशाली रावण :

रावण ने दीर्घावधि तक तप करके अपूर्व सिद्धियाँ प्राप्त की थीं । इसका तप, भक्ति, श्रद्धा भी कम नहीं है । ब्रह्मा, शंकर आदि ने प्रसन्न होकर वरदान दिए हैं रावण में अपार शक्ति के कारण ही अभिमान आ गया है । वह कूटनीतिज्ञ भी है । सीता के समक्ष राम का नकली सिर भेज कर सीता को अपनी ओर आकर्षित करना चाहता है । रावण शार्दुल नामक अपने गुप्तचर को राम की सेना में भेद जानने के लिए भेजता है । गुप्तचर कहता है कि राम ने विभीषण को राजतिलक करके लंका का राज्य दे दिया है । रावण अपने अन्य दूत शुक्र को सुग्रीव के पास भेजकर उसे अपने पक्ष में लेने का प्रलोभन देता है । वह दूत पकड़ा जाता है । राम के कहने से दूत को छोड़ देते हैं । रावण में नैतिकता की कमी है । अनाचार अधिक है । यहाँ यह भी कहना चाहिए कि रचनाकार ने राम के चरित्र को उज्जवल बनाने के लिए रावण को दुष्ट प्रकृति का बताया है । यदि रावण दुष्ट हों, अनाचारी हों तब ही राम का मूल्य लोगों को समझ में आ सकता है । वास्तव में देखा जाय तो रावण उच्च्य कुलोत्पन्न, ब्राह्मण पुत्र था । संस्कृत का प्रकाण्ड पंडित

था । इतना ही नहीं इनके इष्टदेव शंकर थे । रावण अपनी भुजाओं से पूरा कैलाश पर्वत उठा लेता था । यह आम बात नहीं है । रावण ने ऐसा क्यों किया ? सीता को क्यों उठा कर ले आया ? क्या उसके यहाँ सुंदर स्त्रियों की कमी थी ? वास्तव में देखा जाय तो रावण महान बुद्धिशाली व्यक्ति था । वह चाहता था कि मुझे मोक्ष प्राप्त हो । भगवान राम के यश के साथ लोग मुजे भी याद करें । अतः उसने राम से बैर बाँधा । सीता को उठा लाया । वह मंदोदरी से कहता है कि –

''माटे सुंदरी सुण निश्चे करवुं युद्ध रघुवर साथ;
पामीश रुडी गति जो थशे मरण हरिने हाथ
ए अमारा युद्ध तणो यश, विस्तार थाशे ज्यांहे
मारा गुण पण राम साथे गवाशे जग मांहे ।।[198]

इस प्रकार रावण ने स्वयं मृत्यु का वरण चाहा है । अतः कहना होगा कि रामायण में रावण का चरित्र एक विशिष्ट व्यक्ति का चरित्र है ।

4.6.5.1 'रामचरितमानस' के हनुमान :

रामचरितमानस में हनुमान का चरित्र अतुलित बलधाम, रामभक्त बुद्धि, चपलता, आलस्य हीनता, विवेकी, विनयी, दीर्घदृष्टा एवं अनन्य सेवक का है । हनुमान के जीवन का उद्देश्य राम सेवा ही है । तुलसीदास ने भी हनुमान के चरित्र को यथा संभव उतरोतर श्रेष्ठ बनाने का प्रयास किया है । कवि हनुमान की वंदना करते हुए कहते हैं कि –

''अतुलित बलधामं हेशमैलाभदेहं, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् सकल गुण निधानं वानराणामधीशं, रघुपति प्रियभक्त वातजातं नमामि ।।''[199]

कवि कहते हैं कि अतुल बल के धाम, सोने के पर्वत के समान, कान्ति युक्त शरीरवाले, दैत्यरूपी वन के लिए अग्नि रूप, ज्ञानियों में अग्रगण्य संपूर्ण गुणों के निधान, वानरों के स्वामी श्री रघुनाथ जी के प्रिय भक्त पवनपुत्र श्री

हनुमान जी को मैं प्रणाम करता हूँ । इस वंदना में कवि ने शक्ति, युक्ति, भक्ति समन्वित व्यक्तित्व की एक रूपरेखा प्रस्तुत की है । कवि ने किष्किंधाकाण्ड से लेकर उत्तरकाण्ड तक हनुमान का विशद् चरित्र प्रस्तुत किया है । हनुमान का चरित्र सुन्दरकाण्ड में नायक के रूप में पाया जाता है । हनुमान का चरित्र आदर्श सेवक का चरित्र है ।

शौर्य, धैर्य, निराभिमानी, नीडर बहुमुखी प्रतिभा संपन्न हनुमान :

हनुमान के चरित्र में अनेकानेक विशेषताएँ पायी जाती हैं । हनुमान असंभव को संभव कर सकते हैं । हनुमान में धैर्य, सहिष्णुता विशेष रूप से दर्शनीय है । तुलसी हनुमान के बल की सराहना करते हैं । हनुमान वनरूपी दुष्टों को दावानल के समान जलाने वाले हैं । ज्ञान से परिपूर्ण हैं तभी तो उनके हृदय रूपी घर में श्री रामचंद्र जी धनुषबाण लिये हुए निवास करते हैं ।

महावीर बिनवउँ हनुमाना रामजासुजस आप बखाना ।।
प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान धन ।।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ।।[200]

कवि ने हनुमान का वीर भक्त के रूप में वर्णन किया है । हनुमान लौकिक रूप में वानर राज केसरी के पुत्र हैं, किन्तु पवन तयन और शंकरावतार के रूप में ये अलौकिक हो जाते हैं । आचार्य रा.शु कहते हैं कि ''हनुमान के संबंध में इतना समझ रखना आवश्यक है कि ये सेवक के आदर्श हैं । सेव्य सेवक भाव का पूर्ण स्फुरण उनमें दिखाई पड़ता है ।''[201] दास्य भक्ति का परमोज्जवल स्वरूप प्रकाश में आता है । हनुमान काया, वाचा मनसा राम के एकनिष्ठ सेवक हैं । हनुमान सुग्रीव के विश्वास भाजन मंत्री हैं । राम सुग्रीव की मैत्री का मूलाधार हनुमान ही है । हनुमान नीडर और निराभिमानी है ।

ज्ञानी, अनन्यसेवक, पराक्रमी, निस्पृही, दूरंदेशी हनुमान :

हनुमान का चरित्र उज्जवल उतम सेवक का चरित्र है । ये राम के अनन्य सेवक हैं । राम स्वयं हनुमान की सराहना करते हुए कहते हैं कि हे हनुमान ! तेरे समान मेरा उपकारी देवता, मनुष्य अथवा मुनि कोई भी शरीरधारी नहीं है । मैंने मन में खूब विचार करके देख लिया है कि मैं तुझसे उऋृण नहीं हो सकता । यथा –

सुनुकपि तोहि समान उपकारी । नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ।
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं । देखेउँ करि विचार मन मांही ।।[202]

हनुमान ने मैनाक, सुरसा, सिंहिका, लंकिनी इत्यादि व्यवधानों को कैसे पार किया ? समुद्रोलंधन कैसे किया ? अशोक वाटिका कैसे तहस नहस की ? रावण के पुत्र अक्षयकुमार का वध कैसे किया ? हजारों राक्षसों की हत्या कैसे की ? राम हनुमान से पूछते हैं तब उत्तर में वे इतना ही कहते हैं कि –

सो सब तव प्रताप रघुराई । नाथ न कछू मोरि प्रभुताई ।।[203]

हे प्रभु ! यह सब तो आपही का प्रताप है । हे नाथ ! इसमें मेरी बड़ाई कुछ भी नहीं है । कितनी विनम्रता और निस्पृहीता हनुमान में हैं !

राम के हृदय में हनुमान का क्या स्थान है इसका उत्तर देते हुए राम कहते हैं कि हे हनुमान !

''सुनु कपि जियँ मानसिजनिऊना । तैं मम प्रिय लदिमन ते दूना ।।[204]

राम को हनुमान लक्ष्मण से दुगुने प्रिय हैं । लक्ष्मण मेघनाद के बाण से मूर्छित हो जाते हैं तब हनुमान ही लंका स्थित सुषेण वैद्य को घर सहित उठा लाते हैं । हनुमान दीर्घदृष्टा हैं । सुषेण को ऐसे ही लाते तो संभव है कि वह कहता कि दवा तो घर पर ही रह गयी है । हनुमान औषधि के लिए पूरा पर्वत ही उठा लाते हैं । रास्ते में मकरी और कालनेमिको स्वधाम पहुँचाते हैं । भरत से पहचान भी होती है । इन सब में हनुमान का पराक्रम ही

प्रकट होता है । जाम्बवान हनुमान की शक्ति का परिचय देते हुए कहते हैं कि –

पवन तनय बल पवन समाना । बुद्धि बिबेक बिग्यान बिधाना ।
कवन सो काज कठिन जग मांही, जो नहिं होरु तात तुम्ह पाहीं ।।[205]

हे हनुमान ! तुम पवन के पुत्र हो । बल में पवन के समान हो । तुम बुद्धि, विवेक और विज्ञान की खान हो । जगत में ऐसा कौन सा कार्य है जो तुमसे न हो सके । राम कार्य के लिए ही तुम्हारा जन्म हुआ है । हनुमान जैसा अनन्य राम सेवक ओर कोई नहीं । हनुमान के चरित्र में दास्य और सख्य दोनों भावों का सुन्दर समन्वय पाया गया है । इनमें अनेकानेक विशेषतायें देखने को मिलती है । हनुमान में धैर्य, बल, सहिष्णुता, विनय, विवेक, आलस्यहीनता, निस्पृहीता, निराभिमान, वाक्चातुर्य, निःस्वार्थता, नीडरता, दूरदर्शिता, असंभव को संभव बनाने की क्षमता, अपने को तुच्छ मानना, रामकृपा को श्रेष्ठ मानना, राम कार्य ही जीवन का उद्देश्य, मित भाषी कुशल राजनीतिज्ञ इत्यादि अनेक गुण पाये जाते हैं ।

4.6.5.2 गिरधर कृत 'रामायण' के हनुमान :

गिरधर ने अपनी कृति में हनुमान के चरित्र को यथा संभव श्रेष्ठता प्रदान करने का प्रयास किया है । कवि ने दास्य, सेवक, अनन्य भक्त के रूप में हनुमान के चरित्र का विकास किया है । कवि ने बालकाण्ड से ही हनुमान के चरित्र को विकसित करने का प्रयास किया है । कवि ने कहा है कि हनुमान की माता अजनी ने सात हजार वर्ष तक तप किया । शंकर भगवान ने प्रसन्न होकर अंजनी को वरदान दिया कि –

"शंकर कहे धन्य अंजनी, तुज पुत्र थाशे नेट;
रुद्र जे अगियारमा, ते प्रगटशे तुज पेट ।।[206]

दशरथ ने जो पुत्र कामेष्टि यज्ञ किया था । उस यज्ञ का प्रसाद अग्नि देव ने स्वयं दशरथ को दिया था । वही प्रसाद कैकेयी के हाथ से चील लेकर अंजनी को दे गई थी । यह चील स्वर्गलोग की शापित अप्सरा थी । हनुमान छोटे थे । भूख लगी थी । सूर्य को लाल पक्का फल मानकर निगल गये । सृष्टि में अंधकार छा गया । इन्द्र ने वज्र प्रहार कर के सूर्य को मुक्त किया । हनुमान को वज्र लगा था अतः ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि ने अनेक वरदान देकर अमरत्व प्रदान किया । इन्द्र, कुबेर वरुण, यमराजा, विश्वामित्र आदि ने भी अनेक वरदान दिये । कवि हनुमान कथा श्रवण का लाभ बताते हुए कहते हैं कि –

"ग्रह पीडा थाये नहि तेने, विजय सदा ते पामे;
भूत प्रेत पिशाच न पीडे, विघ्न सकल ते पामे,
जंत्र मंत्र ने तंत्रनी विद्या नाटक चेटक जदे;
हनुमंतनी कथा सांभळतां, बाध न करेतेह ।।"[207]

हनुमान में अपार शक्ति का स्त्रोत है । हनुमान जी अपनी निराभिमानता के कारण कभी अपने गुणों का उल्लेख नहीं करते । वे निरंतर मौन रहकर आज्ञानुसार ही कार्य करने में मानते हैं । हनुमान के चरित्र की मुख्य विशेषताएँ देखें तो –

श्रेष्ठ पराक्रमी, असंभव को संभव बनोवाले, निराभिमानी, अप्रमादी उज्जवल चरित्र वाले हनुमान :

हनुमान का चरित्र एक ऐसा चरित्र है जिसमें शक्ति का अखूट भण्डार है । बल, बुद्धि और विद्या में भी हनुमान सर्वश्रेष्ठ हैं । अशोक वाटिका में हनुमान ने अपने पराक्रम का परिचय दिया । सीता की खोज करने के पूर्व अनेक व्यवधान आये । सबका युक्तिपूर्वक निराकरण किया । उनके मत है कि शास्त्रों में लिखा है कि अपना पराक्रम, बल, तीर्थ, यश, धर्म, विद्या, पुरुषार्थ, भजन, दान तथा अपनी संपत्ति आदि के विषय में स्वयं ही कहना

चाहिए । अन्य के द्वारा ही कहलाना चाहिए । अतः हनुमान ब्रह्मा के पास जाते हैं और कहते हैं कि मैंने जो पराक्रम किया है उसे आप एक पत्र में लिख दीजिए ताकि मैं उस पत्र को राम को दूँगा । उनको सारी बातें मालुम हो जाएगी । ब्रह्मा पत्र लिख देते हैं । राम पत्र पढ़ते हैं । अति प्रसन्न होते हैं और –

''भुज भरीने आलिंगन दीधुं, चांप्या रुदिया साथ,
अरे धन्य धन्य मारुत सुत बळिया तुं करी आव्यो काज ।।

ब्रह्मा ने पत्र में लिखा है कि –

ए हनुमंतने छे धन्य, सेवक स्वामी भक्त अनन्य,
स्वामी तणुं एवुं काज, बीजे थाय नहि महाराज ।।[208]

हनुमान अपने स्कंध पर राम लक्ष्मण को बिठाकर ले जाते हैं । यही उनकी शक्ति का श्रेष्ठ उदाहरण है । राम, लक्ष्मण और वानर सेना को मेघनाद की शक्ति लगती है । सब मूर्छित हो जाते हैं, तब हनुमान द्रोणाचल पर्वत लाकर सबको स्वस्थ करते हैं । राम हनुमान को 'सबके प्राणदातार तुम हो' ऐसा कहते हैं तब निराभिमानी पवनतनय कहते हैं कि

''त्यारे कर जोडी ने कहे अंजनीसुत, समर्थ श्री रघुराय;
ते सर्वे तमारी कृपानुं बळ छे, मुज थी कंइ नव थाय ।।''[209]

हनुमान राम की कृपा ही सब कुछ है ऐसा मानते हैं ।

नीति निपुण, दीर्घदृष्टा,अभिन्न मित्र,उत्तम सेवक श्रेष्ठ भक्त हनुमान :

हनुमान के चरित्र में अनेकानेक विशेषताएँ विद्यमान हैं । हनुमान रावण को बार बार समझाते हैं फिर भी अभिमान वश अहंकारी रावण मानता ही नहीं । हनुमान राम लक्ष्मण को अहि और महि रावण की कैद से बचाते हैं । राम को अपने इष्टदेव का स्मरण करने के लिए अहि रावण और महि रावण कहते हैं, बाद में माता भद्रकाली को भोग चढ़ाना था तब,

“पण प्राण सखा हनुमंत मारो वज्रदेही सूर;
जेनुं नाम लेतां विघ्न कोटी थाय क्षणमां दूर ।।[210]

राम हनुमान को प्राण सखा कहते हैं, इतना ही नहीं इनके नाम स्मरण मात्र से करोड़ों कष्ट दूर हो जाते हैं । ऐसा प्रमाण पत्र भी देते हैं । राम जी के एक कथन के मुताबिक उन्होंने स्वीकार किया है कि वे कभी हनुमान के ऋृण से अऋृण नहीं हो सकते । राम लक्ष्मण राक्षसों का वध करके लंका का राज्य विभीषण को सौंपकर अयोध्या आ जाते हैं । राम का राज्याभिषेक हो जाता है । अयोध्या में सब लोग लम्बे समय तक निवास करके स्वगृह जाते हैं । राम सबका आभार मानते हुए बिदा करते हैं । सीता द्वारा हनुमान को अमूल्य मोती का एक हार दिया जाता है । हनुमान दाँतों से मोती की माला तोड़ देते हैं । सुग्रीव के पूछने पर हनुमान उतर देते हैं कि इसमें मेरे प्राणाधार नहीं है । मोती की माला राम के बिना एक पाषाण ही है । राम तो मेरे हृदय में हैं । ऐसा कहते हुए अपने नाखुनों से सीना चिर डाला । हनुमान के सीने में सबने सीता राम की झाँकी देखी । उपस्थित सारा समाज हनुमान की भक्ति की सराहना करने लगा । राम हनुमान से कहते हैं कि हे पवन तनय ! आज कुछ मन वांछित माँग लो । हनुमन दोनों कर जोड़कर विनीत स्वर में राम से कहते हैं कि –

“सुणीए करुणासिंधु भगवंत, जो प्रसन्न थयां मुने त्रिभुवन धणी
तो आपो भक्ति तम चरणज तणी, अन्य इच्छा कशी मारे नथी ।।[211]

हनुमान को चौदह भुवनों में कोई मारनेवाला नहीं है । इनके जीवन का एक मात्र ही उद्देश्य राम सेवा ही है ओर कुछ नहीं । इन्होंने कभी भी स्वयं अपने मुख से अपनी शक्ति की सराहना नहीं की है । नल, नील, जाम्बवान, सुग्रीव आदि इनकी शक्ति से सुपरिचित हैं । पूरा द्रोणाचल पर्वत उठा लाना, लंका में आग लगाना चारसो योजन का समंदर लांधना, अहि रावण और महि रावण की गुफा में प्रवेश करना, मैनाक, सुरसा, लंकिनी सिंहिका, क्रोंचा आदि

व्यवधानों को पार करना आम बात नहीं है । हनुमान ने अपनी बुद्धि, बल और धैर्य से यथाशीघ्र, राम कार्य को पूर्ण करके अपनी दास्य भक्ति का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया है ।

4.6.6 'रामचरितमानस' और 'रामाणय' में सीता का चरित्र चित्रणः

भारतीय समाज में सीता एक देवी शक्ति के रूप में पूज्य है । सीता में भारतीय काव्य की आदर्श नायिका के सभी गुण विद्यमान हैं । सीता स्वकीया नायिका है । स्वकीया नायिका शीलवती, पतिव्रता कुटिलता रहित, लज्जावती और पति परायण होती है । सीता में शोभा, कांति, दीप्ति, माधुर्य, सुकुमारता, सुशीलता, विनय, पतिपरायणता सेवाभाव, उदारता, धैर्य, साहस आदि सभी गुण विद्यमान हैं । राम जिस प्रकार पर ब्रह्म हैं, सीता उसी प्रकार आद्यशक्ति जगदंबा है । दोनों रचनाकारों ने सीता के चरित्र का यथोचित विकास किया हे ।

4.6.6.1 'रामचरितमानस' में सीता का चरित्र चित्रण :

तुलसी ने सीता को उदात्त, पतिव्रता, वीरतापूर्ण एवं महान मर्यादा पालक लोकोत्तर चरित्र के रूप में चित्रित किया है । सीता तुलसी के लिए वंदनीय और जगत जननी है । अतः इन्होंने कहीं भी मर्यादा का लोप होने नहीं दिया । सीता में भारतीय नारी का पूर्ण आदर्श पाया जाता है । सीता का चरित्र अनेकानेक गुणों की खान है । रामचरितमानस के समस्त स्त्री चरित्रों में सीता का स्थान सर्वोत्तम है ।

लज्जाशीलता, सुशीलता, आतिथ्य प्रेम, सरलता, सेवापरायणता :

विनयशीलता, सुकुमारता सीता के उज्जवल चरित्र की पहचान है । सीता ने प्रारंभ से लेकर अंत तक अपने उज्जवल चरित्र की रक्षा की है । राजा जनक की पोषिता पुत्री और युवराज राम की पत्नी होते हुए भी कहीं भी

मर्यादा या विवेक का उल्लंघन नहीं किया । सीता का सौंदर्य अप्रतिम है । सीता जगत् माता है । कवि संकेत में ही सब कुछ कहते हैं कि –

जनु बिरंचि सब निज निपुणाई । बिरंचि विश्व कहँ प्रगटि देखाई
सुंदरता कहुँ सुंदर करई । छबिगृहँ दीप सिखा जनु बरई ।।
सब उपमा कवि रहे जुठारी । केहिं पटतरौं विदेह कुमारी ।।[212]

ब्रह्मा ने अपनी सब चतुराई से सीता को रूप दिया है । सीता की सरलता विनयशीलता, सुशीलता आदि के लिए जितना कहा जाय कम है । सीता की परवरिश महलों में हुई है । इनका ब्याह राज घराने में हुआ । संयोग से वन जाना पड़ा फिर भी सीता के चरित्र में कहीं भी अभाव, असंतोष, उदासीनता, क्रोध किसी के प्रति उपेक्षा आदि का लेश मात्र संकेत भी नहीं है । वह लक्ष्मण और राम के साथ चित्रकूट में अत्यंत प्रसन्न है । वह पर्णकुटी में भी सुखपूर्वक रह रही है । चित्रकूट में सीता को अवर्णनीय सुख का एहसास हो रहा है । इससे सीता की सांसारिक भोगों के प्रति अनासक्ति प्रकट होती है । कहा गया है कि –

''सिय मनु राम चरन अनुरागा । अवध सहस सम बनु प्रिय लागा ।।
परन कुटी प्रिय प्रियतम संगा । प्रिय परिवारु कुरंग बिहंगा ।।
सास ससुर सम मुनितिय मुनिवर । असनु अमिअ राम कंद मूलकर ।।
नाथ साथ साँथरी सुहाई । मयन सयन सय सम सुख्दाई ।।
लोकप होहिं बिलोकत जासू । तेहि कि माहि सक विषय बिलासू ।।[213]

प्रियतम का साथ होने पर पर्णकुटी भी प्रिय लगती है । वन के मृग तथा पक्षी परिवार की भाँति प्रिय लगते हैं । मुनि–पत्नियाँ सास के समान और श्रेष्ठ मुनिगण ससुर की भाँति तथा कन्दमूल फल अमृत तुल्य खाद्य की भाँति हैं । पति के साथ (कुश किसलय की) साँथरी कामदेव की शत शैया की भाँति सुखद तथा शोभित है । जिस सीता को देखकर सामान्य व्यक्ति लोकपाल हो जाता है, क्या उसे विषय – विलास मुग्ध कर सकता है ! यहाँ सीता की

स्वभावगत चारित्रिक निष्ठा तथा उनके अधिदैवत् व्यक्तित्व दोनों का समन्वयन है । सीता के लिए पति की इच्छा ही सर्वोपरि है । राम माता कैकेयी की आज्ञा से बन में जा रहे हैं । वे चाहते हैं कि सीता साथ न आये । वन के कष्टों को सीता न सह सकेगी । अतः राम सीता को अयोध्या में ही रहने के लिए समझाते हैं । सीता किसी भी स्थिति में राम के साथ ही जाना चाहती है । राम बार बार समझाते हैं । सीता अपने स्वभाव के कारण राम के तर्को को अपने अनुकूल बनाने का प्रयास करती हुई कहती है कि –

प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माँहीं । मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं ।
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी । तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी ।।[214]

सीता के लिए राम ही सब कुछ है । वह अनुनय विनय करती हुई कहती है कि हे प्राणनाथ ! संसार में आपके बिना कहीं कुछ भी मेरे लिए सुखद नहीं है । आत्मा के बिना शरीर तथा जल के बिना नदी ! हे नाथ उसी प्रकार पुरुष (पति) के बिना नारी (पत्नी) है । सीता के लिए पति (राम) ही परमेश्वर है ।

मर्यादा सहिष्णुता, आत्मविश्वास, अनन्य सेवाभाव :

चारित्र की दृढ़ता, दीर्घदृष्टि, नीडरता सीता के श्रेष्ठ चरित्र के परिचायक है । सीता ने अपने उज्जवल चरित्र के द्वारा एक आदर्श की स्थापना की है । सीता ने अपने व्यवहार और व्यक्तित्व से ही अन्य के जीवन को स्वर्ग सा बनाने का प्रयास किया है । आचार्य रामचंद्र शुक्ल सीता के चरित्र की विशेषताओं का स्वीकार करते हुए कहते हैं कि “कैकेयी ने एक बार दशरथ के साथ युद्ध स्थल जाकर पहिए में उँगली लगाई थी और उसके बदले में दो वरदान लिए थे । सीता चौदह वर्ष राम के साथ जंगल पहाड़ में मारी मारी फिरी और उसके मारे मारे फिरने ही को उन्होंने अपने लिए बड़ा भारी वरदान समझा ।[215]

सीता वन के कष्टों को सहन करती है । अतः वह सहिष्णु है । रावण के बल, अपार वैभव और प्रलोभन के आगे सीता पिघलती नहीं । वह रावण को प्रत्युत्तर देकर अपनी नीडरता का परिचय देती है । रावण से कहती है कि –

सुनुदसमुख खद्यांत प्रकासा । कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासी ।।

सीता राम को सूर्य और रावण को जुगनू कहती है । वह मृत्यु के भय से भी भयभीत नहीं होती । वह नीडर है । अपने पति राम के शौर्य पर आत्मविश्वास है कि वे अवश्य मेरा उद्धार करेंगे । सीता ने कहीं भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया । सीता ने कहीं भी विरोध नहीं किया । परिवार के सभी सदस्यों के साथ यथोचित व्यवहार किया है । हनुमान के प्रति सीता वात्सल्य, कृतज्ञता और स्नेह का भाव प्रकट करती है । इतना ही नहीं हनुमान को राम का कृपा चरित्र, अजर, अमर गुणनिधि होने का आर्शीवाद भी देती है । रावण के प्रलोभनों के मध्य सीता अविचल है, जो इनकी दृढ़ पति भक्ति का प्रमाण है । रावण अपनी संपूर्ण संपत्ति सीता की एक स्नेह दृष्टि पर न्यौछावर करने के लिए उधत था । किन्तु शत्रु के घर में रहकर दहाडना और विरोध करना आम बात नहीं । सीता के अपहरण से लेकर अग्नि परीक्षा तक का जीवन सर्वश्रेष्ठ माना जाएगा । सीता अपहरण के समय अपने बल का प्रयोग नहीं करती लेकिन अपहरण कर ले जाते समय राम लक्ष्मण को मार्ग दिखाने के लिए अपने वस्त्र में आभूषण लपेटकर गिरा देती है । इससे सीता की दीर्घ दृष्टि और सूझ–बूझ का परिचय मिलता है । सीता वस्तुतः विद्या माया है, जो जीव को कल्याण की ओर अग्रसर करती है अतः विश्ववन्द्या है, यही तुलसी का आदर्श है । डॉ. माताप्रसाद गुप्त कहते हैं कि ' 'उसकी स्वाभाविक लज्जा, विनम्रता, विनयशीलता और गुरुजनों के प्रति सेवा भावना तथा गृहस्थी के छोटे से छोटे कार्य को करने की चेष्टा एक पाश्चात्य समालोचक को हिन्दु स्त्री को अद्योगति के द्योतक लग सकते हैं, परंतु एक

सामान्य भारतीय के लिए इनका संबंध परिवार के वास्तविक सुख शांति और आदर्श जीवन से हैं ।[217]

4.6.6.2 गिरधरकृत 'रामायण' में सीता का चरित्र :

मानस की सीता और 'रामायण' की सीता में थोड़ा बहुत परिवर्तन पाया जाता है । तुलसी की सीता आदर्श धरातल पर विराजित नारी है जबकि गिरधर की सीता में यथार्थ का विशेष रूप दर्शनीय है । मानस ने यथा संभव मर्यादा का पालन किया है । गिरधर ने कृति को रोचक बनाने की लालच में कहीं कहीं मर्यादा का भंग भी किया है । गिरधर ने सीता के चरित्र को थोड़ा विस्तार देकर लेखनी की न्यूनता प्रकट की है । गिरधर की दृष्टि में सीता राम की पत्नी है । सीता के चरित्र में गिरधर कवि ने अनेकानेक विशेषताओं का उल्लेख किया है । सीता के चरित्र में सेवाभाव, दृढ़ चरित्र, नीडरता सहिष्णुता, परिवार प्रेम, आत्मविश्वास, एक पतिव्रता, दूरंदेशिता, विनय, विवेक, लज्जा, मर्यादा इत्यादि अनेक विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं । सीता के चरित्र की प्रधान विशेषताएँ निम्नांकित हैं –

एक पतिव्रता, आतिथ्य प्रेम युक्त, विनयी विवेकी मितभाषी, अनन्य सेविका, आज्ञाकारी सीता :

प्रत्येक रचनाकार ने सीता के जन्म संबंधी इस तथ्य को सही माना है कि जनक राजा की पोषिता पुत्री जानकी है । राम की पत्नी एवं जगत माता भी है । गिरधर कवि ने भी रामायण के बालकाण्ड में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि –

''वळी पृथ्वीनो अवतार कहावे, जनक राजा जेह;
तेनी पुत्री जानकी, लक्ष्मी ते धरशे देह ।।[218]

धरती गाय का स्वरूप लेकर ब्रह्मा, शंकर और सभी देवताओं को क्षीर सागर में सोये हुए नारायण के पास ले कर गई, तब भगवान ने यही वरदान

दिया था । गिरधर ने सीता के जन्म की एक कथा यह भी कही है कि पद्‌माक्ष राजा ने कठोर तप के पश्चात्‌ पद्‌मा को प्रकट करके वर माँगा कि आप मेरे यहाँ पुत्री के रूप में जन्म लें । राजा वैकुंठ पति को भी प्रसन्न करते हैं । वरदान मिलता है । कन्या का नाम लक्ष्मी रखा जाता है । कन्या का अपार सौंदर्य देखकर भीषण युद्ध होता है । राजा की मृत्यु हो जाती है । लक्ष्मी अग्नि कुंड में समा जाती है । थोड़े समय बाद कन्या कुंड से बाहर आती है । रावण वहाँ से निकलता है । कन्या को ले जाना चाहता है । कन्या कुंड में चली जाती है । रावण कुंड में कन्या को खोजता है । तब कन्या के बदले पाँच रत्न हाथ में आते हैं । रावण एक घड़े में रत्न डालकर ले जाता है । मंदोदरी को दिखाता है । मंदोदरी देखती है तो रत्न के स्थान पर छः मास की कन्या दिखाई देती है । मंदोदरी कहती है कि यह आद्य शक्ति है । यह ईश्वर की पटरानी है । इसी ने अपने पिता पद्‌माक्ष राजा का वध कराया था । अतः यथा शीघ्र दूर दूर संदूक में डालकर भेज दीजिए । वह संदूक मिथिला प्रदेश की भूमि में छिपाई गई । कालांतर में जनक राजा को मिली । जनक निःसंतान थे । अतः कन्या प्राप्त करके आनंदित हुए । शतानंद ने सीतानाम रखा । जनक तनया होने से जानकी कहलाई । जानकी जगदंबा है । छोटी थी तब परशुराम के त्रयंबक नामक धनुष से खेला करती थी । यह धनुष शिव जी का था । बड़ा भारी था । परशुराम जनक राजा के साथ भोजन करके बाहर आये तो अपना त्रयंबक धनुष नहीं देखा । सीता उस धनुष का घोडा बनकर खेल रही थी । परशुराम आश्चर्य चकित होकर जनक से कहते हैं कि –

“अरे राय त्रयंबक शिव तणुं, महा कठन गौरवजेह;
एक सहस्त्र वारण थकी सायक, न हाले वळी तेह,
तेने करग्रही कन्या रमे, फेरवे चोक मोझार;
ए कन्या कारण रूप जाणो, लक्ष्मीनो अवतार ।।”[219]

अतः सीता शक्ति का अवतार है । एक पतिव्रता है । सदैव पति की आज्ञा का पालन करती है । सीता के लिए पति ही सबकुछ है, परमेश्वर है । कैकेयी जब राम को वन में जाने के लिए कहती है तब सीता भी राम के साथ जाने के लिए तैयार हो जाती है । राम वन के कष्टों का, अभावों का, प्रतिकूलताओं का वर्णन करके अयोध्या में ही रहने की बात कहते हैं । सीता राम के साथ वन मे ही जाना चाहती है । वह पतिव्रता है । अतः कहती है कि –

"मन मारु मधुकर छे ते तम चरण कमण अनुराग;
जो स्वामी साथे नहि तेडो तो, हुं करीश देह नो त्याग ।।"[220]

सीता राजमहल के सुखों को ठुकराकर चित्रकूट की पर्णकुटी में पति सेवा करती हुई अपने आपको धन्य मानती है । गिरधर कवि सीता के सेवा धर्म के विषय में कहते हैं कि –

"निज कुळ केरो धर्म पाळतां, धर्म धोरिंधर धीर;
परिचर्या सहु सीता करे, फळ लावे लक्ष्मण वीर ।।"[221]

सीता पतिपरायणा और आज्ञाकारी, विनयी और प्रसन्नचित्ता नारी है । सांसारिक सुखों को भूल कर पति के साहचर्य को ही अपने जीवन का उद्देश्य मानती है । कभी भी असंतोष, अभाव, दुःख या प्रतिकूलता का अंश भी अपने चहरे पर प्रकट होने नहीं दिया । ऐसी सीता धन्य है !

सहिष्णुता, नीडरता, प्रत्येक परिस्थिति में प्रसन्न रहनेवाली चारित्र्य में दृढ़ता, वात्सल्यमूर्ति, आत्मविश्वासी सीता :

सृष्टि पर जब तक मानव सभ्यता कायम है तब तक सीता का चरित्र प्रत्येक युग में नारी के लिए एक आदर्श चरित्र सिद्ध हो सकता है । सीता पृथ्वी तनया है । अतः पृथ्वी से अधिक किसी में सहिष्णुता हो ही नहीं सकती । सीता पति के साथ चौदह वर्ष का वनवास सहन करती है । एक सामान्य रजक के कटाक्ष से प्रसुता सीता का परित्याग किया जाता है । यह

भी यदि कम है तो माता कैकेयी लवकुश के जन्म के बाद अश्वमेघ यज्ञ की पूर्णाहूति के पश्चात् पुनः सीता पर आरोप लगाती है । कैकेयी सीता से पूछती है कि तुम अशोकवाटिका अर्थात् लंका में कई दिनों तक रही थी, रावण का रूप कैसा था ? सीता कहती है कि मैंने रावण को प्रत्यक्ष तो नहीं देखा । एक बार रावण खड़ा था तो मैंने उसके पैर के अंगूठे को देखा था । कैकेयी पैर के अंगूठे का चित्र बनाने के लिए कहती है । सीता अंगूठे का चित्र बनाती है । कैकेयी अंगूठे पर से पूरे रावण का चित्र दीवार पर बनाती है । कैकेयी सबको बुलाकर सीता को बदनाम करती है कि सीता रावण का चित्र बनाती है । सीता को बहुत बुरा लगता है । अतः धरती में समा जाती है जैसे –

''एवुं कहेतामां धरा फाटी, थयो शब्द अपार;
धरी रूप पृथ्वी नीकळयां, महा तेजनो अंबार
करमां सिंहासन कनकनुं, ग्रही रहयां ऊभा त्यांहे
मांहे सीताने पधरावियां, थयां गुप्त पृथ्वी मांहे ।।''[222]

गिरधर कवि ने यह परिवर्तन आनंद रामायण और भावार्थ रामायण के आधार पर किया है । ऐसा देवदत्त जोशी का मत है ।[223]

इस प्रकार सीता के चरित्र में अनेकानेक विशेषताओं का भण्डार देखने को मिलता है । सीता में लज्जा, विनय, विवेक, आतिथ्यभाव, सहिष्णुता, एकपतिव्रत, निराभिमान, सरल स्वभाव, प्रत्येक परिस्थिति में प्रसन्न रहने का स्वभाव, आज्ञाकारी, नीति–निपुणता, निस्वार्थता, वात्सल्य, निस्पृहीता इत्यादि अनेकानेक मानवोपम गुणों का समावेश सहजता से प्राप्य हैं । सीता जगत जननी और विश्ववंद्या है । भारतीय नारी में जितने उत्तमगुण अपेक्षित हैं सब जानकी में पाये जाते हैं । इसी कारण सीता का चरित्र सर्वश्रेष्ठ माना जाता है । 'रामचरितमानस' ओर 'रामायण' में इन चरित्रों के अलावा अन्य चरित्रों का चित्रण किया गया है जैसे शत्रुध्न, अंगद, कुभकर्ण, अगत्स्य, जटायु, जनक,

जाम्बवान, नल–नील, मारीच, मेघनाद, वशिष्ठ, विश्वामित्र, वाली, वाल्मीकि, कौशल्या, कैकेयी, अनसूया, अहल्या, मंथरा, शबरी, शूर्पणखा इत्यादि । इतना स्पष्ट है कि मानसकार तुलसी ने राम को परब्रह्म एवं अवतारी पुरुष के रूप में स्वीकार किया हे । रामायणकार ने वाल्मीकि के मतानुसार राम को राजा और दशरथपुत्र के रूप में ही स्वीकार किया है । तुलसी ने समाज, संस्कृति, परिवार आदि के चित्रण में यथा संभव मर्यादा का पालन किया है । गिरधर ने कहीं कहीं अधिक वर्णन करने के मोह में मर्यादा का लोप कर दिया है । दोनों रचनाकारों के बीच दो सौ साल के ऊपर समयावधि का अंतर है । अतः परिवर्तन सहज है । दोनों कृतियों का काव्य रूप भी थोड़ा भिन्न है । रामचरितमानस महाकाव्य है जब कि रामायण आख्यान है चरित्रों के परिवर्तन में थोड़ी न्यूनता आम बात हो सकती है । सारतः दोनों रचनाकारों ने पात्रों के चरित्र चित्रण में यथा संभव चरित्रानुकूल चित्रण प्रस्तुत किया है । इसी कारण तो आजतक दोनों रचनाओं के चरित्रों को लोग आज भी अपनी स्मृति पट पर स्थान दिए हुए हैं । चरित्र योजना की दृष्टि से दोनों कृतियाँ सफल मानी जाएँगी ।

अब हम रामचरितमानस और रामायण के शिल्प पक्ष की बात करेंगे –

’रामचरितमानस’ और ‘रामायण’की भाषा :

4.7.1 ‘रामचरितमानस’ की भाषा :

भाषा भावों की वाहक है । भाषा ही मनुष्य की परिभाषा है । भाषा की विशेषता से ही कवि या साहित्यकार लोकप्रिय हो सकता है । भाषा वास्तव में मनुष्य को मनुष्य द्वारा दी गई एक अद्वितीय देन है । भाषा ही ऐसी चीज है, जो मनुष्य और पशु में विभेद उत्पन्न करती है । डॉ. भगीरथ मिश्र भाषा को कविता का शरीर मानते हुए कहते हैं कि “भाषा कविता का शरीर है ।

बिन भाषा के भाव निराकार हैं और उसका व्यापक प्रभाव नहीं है । कविता का प्राण भाव है अवश्य, पर उसकी देह भाषा ही है । यह उसका प्रमुख उपकरण है और अंग भी ।"[224] काव्य रचना भाषा के माध्यम से ही संभव है और भाषा स्वयं सर्जक की व्यक्तिगत अनुभूति की देन है । भाषा के अभाव में सक्षम अनुभूति संभव नहीं । रस सिद्ध कवि अपनी अनुभूति को भाषाभिव्यक्ति द्वारा सुलभ बनाता है । उसकी वाणी में युग सत्य साकार हो उठता है । ऐसी वाणी देश काल की सीमा लांधकर युग–युगीन हो शाश्वत रूप में मानवीय आस्थाओं को उत्प्रेरित करती हुई देवत्व भाव की प्रतिष्ठा करती है । यह भी सत्य है कि भाषा की उपस्थिति में ही मनुष्य इतना सभ्य हो सका है, अन्यथा वह आज वह नहीं रहता, जो वह है । रामचरितमानस के रचयिता तुलसी काव्य की भाषा के संबंध में दोहावली में कहते हैं कि

"का भाषा का संस्कृत प्रेम चाहिए साँच ।
काम जो आवे कामरी, कालै करे कुमाच ।।"[225]

तुलसी ने संस्कृत देवभाषा (कुमाच) से कामरी 'जनभाषा' को श्रेयस्कर माना है । तुलसी भाषा के संबंध में अत्यंत उदार, असंप्रदायिक और व्यापक दृष्टिकोण वाले रहे हैं । उनके मतानुसार भाषा में प्रेम की प्रतिष्ठापना का अर्थ यहाँ और कुछ न होकर उसकी लोकहृदयानुंरंजनकारिणी संवेदना से है जो निश्चय ही अपनी पूर्णता के लिए ओज, माधुर्य एवं प्रसादगुण संबंधी संपूर्ण उपादानों को भी आत्मसात् कर लेती है । भाषा के संबंध में मानस में तुलसी कहते हैं कि

भाषा भनिति भोरि मति मोरी । हँसिबे जोग हँसे नहिं खोरी ।।
भनित मोरि सब गुन रहित, विश्व विदित गुन एक ।
सो विचारि सुनिहहिं सुमति, जिनके विमल विवेक ।।
भनित बिचित्र सुकवि कृत जोऊ । रामनाम बिन सोह न सोऊ
जदपि कबित रस एकउ नाहीं । रामप्रताप प्रकट इहि मांही ।।

भनित भदेस वस्तु भलि बरनी रामकथा जगमंगल करनी ।।[226]

तुलसी ने भाषा विज्ञान के प्रतिमान से भाषा को कहीं भी नापने की चेष्टा नहीं की है । अपनी भाषा को भणिति की संज्ञा दी है । ग्राम्य गिरा भी कहा है । कवि विनम्रता से कहते हैं कि मुझ में कवित्व की स्फूर्ति तो है ही नहीं । वाणी भी मेरी ग्राम्य एवं असंस्कृत है । इन्होंने अपने समय में पहली बार सुसंस्कृत जन भाषा का उपयोग कर इस क्षेत्र में अपने महान समन्वयवादी होने का ज्वलंत प्रमाण प्रस्तुत किया है । तुलसी ने मानस की रचना अवधी भाषा में की है । पाश्चात्य विद्वान लु.पी. डगलस हिल उसे "प्राचीन वैसवारी अथवा अवधी भाषा में लिखित महाकाव्य मानते हैं । इसके अतिरिक्त उसमें ब्रज, बुंदेल खंडी एवं भोजपुरी रूपों तथा अरबी एवं फारसी के शब्दों की प्रयुक्ति भी बताई है ।"[227] हिन्दी के विद्वान आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल कहते हैं कि 'मानस की भाषा पूर्वी एवं पश्चिमी अवधी का संमिश्रण है ।"[228] डॉ. केशरी नारायण शुक्ल का कथन है कि "तुलसीदास कवि ही नहीं वे सर्वश्रेष्ठ कवि थे । वे भाषा की आवश्यकता और शब्दों की आत्मा को पहचानते थे । अपने काव्य को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए वे जहाँ जिस शब्द को ठीक समझते थे, वहाँ उसका प्रयोग करते थे और उन शब्दों में देशी या विदेशी का भेदभाव नहीं रखते थे उनके लिए कोई शब्द अछूत या त्याज्य नहीं था ।[229] तुलसी के गुरु नरहरिदास थे । प्रारंभिक शिक्षा के उपरांत नरहरिदास ने तुलसी को गुरु शेष सनातन जी को सुपुर्द कर दिया था । पंद्रह वर्ष तक तुलसी ने वेद वेदांत, दर्शन, इतिहास, पुराण, काव्यशास्त्र आदि की शिक्षा प्राप्त की । शास्त्रीय ग्रंथों के अध्ययन के उपरांत जनभाषा को अपनाया । तुलसी भाषा को साधन मानते थे, साध्य नहीं । संस्कृत भाषा जन सामान्य तक पहुँच नहीं सकी थी । पंडित वर्ग वाल्मीकि रामायण का अध्ययन कर सकते थे । अतः जन सामान्य के लिए सुलभ बनाने के उद्देश्य से ही उन्होंने जन भाषा में मानस की रचना की । तत्कालीन लोक भाषा पर तुलसी

का असाधारण अधिकार था इसके साथ ही, ब्रज भाषा पर भी प्रभुत्व रखते थे । तुलसी की भाषा की व्यापकता का जहाँ तक प्रश्न है वह केवल पूर्वी एवं पश्चिमी अवधी के विभिन्न रूपों तक सीमित नहीं है बल्कि संस्कृत की प्रसादपूर्ण शब्दावली के संघटन के साथ राजस्थानी, बुंदेलखंडी, मराठी, गुजराती तथा पंजाबी आदि स्थानिय भाषा की परिधि को भी लांधकर फारसी, अरबी के शब्दों का भी व्यापक रूप समेटे हुए है । रामचरितमानस की भाषा में अनेकानेक विशेषताएँ हैं । महत्त्वपूर्ण विशेषताओं का उल्लेख करें तो –

मानस की भाषा में सरसता और प्रवाहमयता है :

तुलसी की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता सरसता और प्रवाहमयता है । कथानक की निरंतर विकासशील धारा एवं महाकाव्य की उतरोतर पुष्ट परिष्कृत होनेवाली रस सरिता में अवगाहन करते हुए कहीं भी गत्यावरोध नहीं होता । अपनी भाषा में संस्कृत पदावली को अपनाते हुए भी सर्वजन सुलभता के सिद्धांत को अक्षुण्ण बनाये रखा । संस्कृत बहुल भाषा के स्वरूप को कहीं भी विलष्ट नहीं होने दिया । समन्वय, सामंजस्य अथवा मध्यमवर्ती मार्ग की योजना कवि की सबसे बड़ी विशेषता है । यहाँ यह अवश्य कहना होगा कि भाषा के आडंबर से एवं पांडित्य प्रदर्शन से सदैव दूर ही रहते थे । इसी कारण मानस की भाषा में अस्पष्टता या दुर्बोधता कहीं भी नहीं है । सामान्य जन के लिए सर्वत्र सुबोध एवं सुगम ही है । प्रेम में छल के प्रवेश से क्या होता है इस संबंध में कवि कहते है –

‘‘जल पय सरिस बिकाइ देखहु प्रीति किब रीति भलि ।
बिलग होइ रसु जाइ कपट खटाई परत पुनि ।।’’[230]

कवि कहते हैं कि प्रीति की रीति है कि पानी भी (दूध के साथ मिलकर) दूध ही के भाव बिकता है । दूध में खटाई के पड़ने से दूध का स्वाद जाता रहता है । ऐसे ही कपट के कारण प्रीति बे स्वाद नीरस हो जाती है ।

मानस की भाषा चरित्रानुकूल एवं प्रसंगानुकूल हे :

कवि ने प्रत्येक स्तुति संस्कृत पदावली में ही प्रस्तुत की है । देवोचित वातावरण के लिए यथोचित ही है । भाव, विचार, चरित्र, घटना, वर्ण तथा संदर्भ के अनुकूल इनकी भाषा नाना प्रकार रूप धारण करती हुई कवि के आदेश पर नाचती हुई दिखाई पड़ती है । प्रत्येक चरित्र की शिक्षा दीक्षा, जातीय संस्कार, उसकी मनोवृत्ति, मानसिक विकास आदि के आधार पर भाषा का रूप पाया गया है । कैकेयी के साथ गुप्त मंत्रणा में संलग्न मंथरा की भाषा में राजकुल की कूटनीति, कुशल परिचारिकाओं की प्रवृत्ति और सरल हृदया कैकेयी की भाषा में राजकुल की मर्यादा का सम्यक् सुरुचिपूर्ण निर्वाह दिखाई देता है । राम, लक्ष्मण और भरत की शब्दावली में उनका व्यक्तित्व पार्थक्य सर्वत्र स्पष्ट है । रावण, विभीषण, बालि–सुग्रीव, दशरथ, जनक, सीता–अनसूया, कौशल्या–कैकेयी, अंगद–हनुमान आदि की भावाभिव्यक्तियाँ उनके व्यक्तित्व को प्रकट करती है । एक उदाहरण देखें तो इसमें सीता अपनी सास की उपस्थिति में पति (राम) से कहती है कि

दीन्हि प्रानपति मोहि सिख सोई । जेहि विधि मोर परम हित होई ।
मैं पुनि समुझि दीखि मन मांही । पिय वियोग समदुःखजग नाहीं ।।
प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुखद सुजान ।
तुम्ह बिनु रघुकूल कुमुद विधु सुरपुर नरक समान ।।'[231]

सीता कहती है कि संसार में नारी के लिए पति वियोग से बड़ा और कोई कष्ट नही है । आपके बिना स्वर्ग भी नरक सदृश है । तब राम सीता को वन में – आने के लिए संमति दे देते हैं ।

मानस की भाषा में सजीवता और स्वाभाविकता पायी जाती है :

गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस में सजीवता और स्वाभाविकता के लिए अपने समय में प्रचलित मुहावरें, कहावतें और सूक्तियों का सरलता से प्रयोग किया है । इनके प्रयोगों से भाषा सौंदर्य बढ़ जाता है । साथ साथ भाषा में

प्रवाहमयता और तरलता भी आ जाती है । राम कथा जैसा आद्यायात्मिक ग्रंथ अपनी ही भाषा में आम लोगों को मिलें तो लोग सहज रूप से ही आकृष्ट हो सकते हैं । इन्हीं मनोहारी नैसर्गिक गुणों के कारण उतर भारत के शिक्षित और अशिक्षित नागरिक और ग्रामीण, सभी श्रेणियों के लोग उनका प्रयोग सर्वत्र साधारण बोलचाल में किया करते हैं और आप्तवचनों के रूप में उन पर अपनी अगाध आस्था और विश्वास व्यक्त करते हैं । मानस मुहावरों, कहावतों और सूक्तिओं का अक्षय कोष है । जैसे
सुक्तियाँ देखें तो –

"परहित सरिस धर्म नहिं भाई । पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ।।
निर्नय सकल पुरान वेद कर । कहेउँ तात जानहिं कोबिद नर ।।

राम कहते हैं कि सब पुराण और वेदों का निर्णय है कि सब धर्मों से बड़ा धर्म है परोपकार । परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ।[232]

मानस में स्थान स्थान पर सूक्तियाँ देखने को मिलती हैं । इनका भावार्थ इतना सरल होता है कि आगे पीछे का संदर्भ भी नहीं देखना पड़ता । भाषा भी अति सरल है जैसे –

बिनु सतसंग बिवेकन होई । रामकृपाबिनु सुलभ न सोई ।।
सत संगत मुद मंगल मूला । सोइ फल सिधि सब साधन फूला ।।[233]

यहाँ सत्संग का महत्त्व दिखाया गया है । थोड़ा पढ़ा लिखा भी आसानी से समझ सकता है ।

मानस में मुहावरों का व्यापक प्रयोग पाया जाता है । यह सत्य है कि मुहावरों के प्रयोग से भाषा की शक्तिमत्ता और प्रभविष्णुता द्विगुणित हो जाती है । रुढ़ लक्षणा की मार्मिकता और नैसर्गिकता जीवन की प्राणवत्ता भाषा शक्ति का बोध होता है । एक दो उदाहरण देखें तो –

एक हिं बार अस सब पूजी । अब कछु कहत जीभ करि दूजी ।।
2/16/1/210

भले भवन अब बायन दीन्हा । पावहुगे फल आपन कीन्हा ।।
1/137/5/89

रेख खँचाइ कहउँ बलु भाषी । भामिनि भइहु दूध कइ माखी ।।
21/19/7/212

भयउ कौसिलहि बिधि अति दाहिन । देखत गरब रहत उर नाहिन ।।
2/14/3/209

हँसि कह रानि गालु बड़ तोरें । दीन्ह लखन सिख अस मन मोरें ।।
2/13/7/209

तुलसी ने मानस में कहावतों का प्रसंगानुकूल प्रयोग किया है । कहावतों में व्यंजना और सादृश्य विधान का चमत्कार सन्निहित रहता है । कहावतों के युक्ति–युक्त विन्यास से भाषा की व्यंजनात्मकता और मनोहरता उत्कर्ष पर पहुँची है । एक दो उदाहरण देखें तो –

पर धर धालक लाज न भीरा । बाँझ कि जान प्रसव के पीरा ।। 1/97/4/69

तुम जो कहहु करहु सबु साँचा । जस काछिअतस चाहिअनाचा ।।
2/127/8/262

कोउ नृप होउ हमहि कहानी । चेरि छाडिअब होब कि रानी ।।
2/16/6/210

दूइ कि होइ एक समय भुआला । हँसबठठाइ फुलाउब गाला ।।
21/35/5/219

इस प्रकार हम निःसंदेह कह सकते हैं कि सुक्तियों, मुहावरों और कहावतों के सम्यक् प्रयोग से भाषा में सजीवता और स्वाभाविकता सहज दर्शनीय है । डॉ. देवकीनंदन श्रीवास्तव कहते हैं कि ''भाषा को संभवतः सांस्कृतिक उपयोगिता प्रदान करने के लिए अपने देश के सामाजिक जीवन के वातावरण में बहुलता से व्यवहृद होनेवाले लोक सांस्कृतिक शब्दो मुहावरों एवं

लोकोक्तियों को उन्होंने अपनी शब्दावली में स्थान दिया है और उनके द्वारा बड़े मार्मिक संकेत उपस्थित करने में सफल हुए हैं ।[234]

मानस की भाषा में विशुद्धता और श्रेष्ठता है :

तुलसी संस्कृत भाषा के विद्वान थे । अपार ज्ञाता थे । इसी कारण इन्होंने महाकाव्य का उपक्रम और उपसंहार संस्कृत में ही किया है । यह उनकी संस्कृत–निष्ठा का ज्वलंत प्रमाण है । प्रत्येक काण्ड के प्रारंभ में संस्कृत श्लोक दर्शनीय है । बीच में मुनियों द्वारा प्रभु की की गई स्तुतियाँ भी देवभाषा में ही है । इन्होंने आवश्यकतानुसार शुद्ध भाषा का प्रयोग करके अपनी लेखनी का परिचय दिया है । मानस में तत्सम, अर्धतत्म, तद्भव, देशज एवं प्रांतीय भाषाओं के शब्द जैसे राजस्थानी, गुजराती, बंगाली, मराठी आदि का प्रयोग किया है । हिन्दी की बोलियाँ और उपबोलियाँ जैसे अवधी, ब्रज, भोजपुरी, खड़ीबोली आदि का उपयोग किया है । इसके अलावा विदेशी भाषाओं के शब्दों में अरबी, फारसी आदि का स्वाभाविक प्रयोग किया है । भाषा प्रयोग की दृष्टि सी तुलसी उदार हैं ।

संस्कृत भाषा के तत्सम् शब्द :

मानस में संस्कृत के अनेक श्लोक पाये जाते हैं । यथा

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकल गुण निधानं वानराणामधीशं, रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ।।
5/3/414

एक ओर उदाहरण देखें तो –

चंद्रहास हरु मम परितापं, । रघुपति बिरह अनल संजातं ।। 5/10/5/419

तुलसी ने संस्कृत श्लोकों और स्तोत्रों में प्रयुक्त शब्दों के अतिरिक्त कटि, गज, चाप, पद, सरोज, गिरा, कोटि पावक, कपि, रिपु जैसे अनेकानेक शब्दों का प्रयोग किया है ।

अर्द्ध तत्सम् शब्दों में सयन, बलकन असन आदि शब्दों का प्रयोग किया है ।

तद्भव शब्दों का तुलसी ने प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है । दो चार शब्दों का उदाहरण देखें तो – आहे (आखेट), बाँझ (वंध्या), भीख (भिक्षा), भूख (बुभुक्षा), बूढ़ा (वृद्ध), बीछी (वृश्चिक) आदि । तुलसी ने मानस में प्रांतीय भाषाओं के शब्दों का सहज रूप से प्रयोग किया है, यथा –

राजस्थानी : मेला – तुरत विभीषन पाछे मेला ।। 5/54/15/441
मेली – सियजय माल राम उर मेली ।। 1/264/8/151
पूजिहि – एकहि बार आस सब पूजी ।। 1/16/1/28

बंगला : वैसा – जाइ कपिन्ह सो देखा वैसा ।। 6/16/7/656
पारा – शोक विवस कछु कहै न पारा ।। 2/44/5/223

ब्रज भाषा का प्रयोग अधिक है – जैसे बेरो, तिहारी, हमारो चाकी, हुते, हुतो, रघुवरको, हरिहरको आदि ।

मराठी भाषा के शब्दों में पर्वारी, आवकलत आदि ।

गुजराती भाषा के शब्दों में लाधे, मुकिए, माँगी आदि ।

*बुन्देली का उदाहरण देखें तो – सुभग, सुरभि, पयफेन, समाना, कोमल कलित सुपेती नाना ।। **356/2/198***

भोजपुरी : करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ ।
वन अशोक सीता रह जहवाँ ।। 5/8/6/418
यहाँ तहवाँ और जहवाँ शब्द भोजपुरी के हैं ।

खड़ी बोली : कवि ने विशेष प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया है । जैसे –

यह तनय मम सम विनय बल कल्याणप्रद प्रभु लीजिए ।
गहि बाँह सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिए ।। 5/10/12/13/400

यहाँ लीजिए और कीजिए खड़ीकोली का प्रयोग है ।

विदेशी भाषाओं के शब्द :

कवि ने विदेशी भाषाओं के शब्दों को अवधी प्रकृति में इस प्रकार ढल दिए हैं कि वे अपने प्राकृत रूप से सर्वथा पृथक अवधी के से शब्द प्रतीत होते हैं । ये शब्द अधिकतर बोलचाल में प्रचलित शब्द हैं, यथा –

गई बहोर गरीब नेवाजू ।। 1/13/7/26 गरीबनेवाजू फारसी का शब्द है ।

संगम करहिं तबाल तलाई ।। 1/85/2/62 तालाब शब्द फारसी का है ।

जनु बिनु पंख बिहंग बेहालू ।। 2/37/1/220 बेहालू अरबी का शब्द है ।

जस दूलहु तसि बनी बराता ।। 1/94/1/67 दूल्हा अरबी शब्द है ।

अवधीः पूरा मानस ग्रंथ अवधी में है ।

संक्षेप में कहना चाहिए कि तुलसी द्वारा प्रयुक्त अनेक भाषाओं तथा बोलियों के शब्द उनके अनन्य भाषाधिकार के प्रमाण हैं । इनकी भाषा में अतुलनीय गंभीरता विद्यमान है । शब्दों के स्वाभाविक प्रयोग के कारण वाक्य रचना इतनी सरल और सुस्पष्ट है कि उसको समझने के लिए किसी प्रकार के अन्वय की आवश्यकता नहीं पड़ती । प्रत्येक शब्द अपने स्थान पर आवश्यक प्रतीत होता है । तुलसी ने भावानुकूल अभिव्यक्ति कौशल का श्रेष्ठ परिचय दिया है । पुष्पवाटिका जैसे प्रसंगों में इनकी भाषा श्रुति मधुर है तो धनुषभंग जैसे प्रसंग में गंभीर और कठोर है । आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र तो यह मानते हैं कि ''तुलसीदास ने अवधी भाषा का बड़ा परिष्कार किया है तथा मानस की भाषा उन्होंने गढ़ी है ।[235] पंडित रामनरेश त्रिपाठी तुलसी के विशाल शब्द भण्डार के संबंध में कहते हैं कि ''अन्य कवियों की अपेक्षा तुलसी का शब्द भण्डार विशाल है । गणना करके हिसाब लगाया जाता है कि उन्होंने लगभग 1,26,821 (एक लाख छब्बीस हजार आठसो इक्कीस) शब्दों का प्रयोग किया है ।[236] अतः कहना होगा कि मानस की भाषा श्रेष्ठ है ।

4.7.2 गिरधर कृत 'रामायण' की भाषा :

कवि गिरधर की 'रामायण' का काव्य रूप आख्यान का है । इस कृति में समसामयिक युग का प्रभाव परिलक्षित होता है । गिरधर ने मध्यकालीन काव्य परंपरा को पूर्ण रूप से आत्मसात करने का प्रयास किया है । कवि की दृष्टि से काव्य साधन है, साध्य तो है भक्ति । अतः अन्य को भक्ति की ओर प्रेरित करना ही कवि अपना लक्ष्य मानते हैं । गुजराती भाषा के प्रतिनिधि काव्य के रूप में गिरधरकृत 'रामायण' का स्थान निर्विवाद है । अतः आज भी गुजरात के प्रत्येक घर में रामायण का पाठ होता है । कवि भक्ति के प्रति जितने साभिमुख हैं उतने काव्य के प्रति नहीं । कवि तो भक्त के रूप में ही अभीहित किए जाते हैं । इन्होंने अक्षरों के द्वारा अक्षरातीत की आराधना की है । यह भी संकेत करना पर्याप्त होगा कि कवि कलाकृति की अपेक्षा कथाकृति के प्रति अधिक जागरुक हैं । 'रामायण' की भाषा प्रत्येक वर्ग के लोगों को ध्यान में रखकर गढ़ी गई है ।

'रामायण' की भाषा उपदेशात्मक और प्रौढ़ है :

गिरधर कवि विद्वान या संस्कृत के ज्ञाता नहीं थे । थोड़ा बहुत संस्कृत जानते थे । अतः इन्होंने पुराण, महाभारत हरिवंश आदि का अध्ययन किया था । कवि ने अपने गुरु पुरुषोतम जी महाराज से काव्यशास्त्र की शिक्षा प्राप्त करके वेदांत का अभ्यास किया था । कवि अपने ही ग्रंथों को राग–ताल के माध्यम से भाव भक्ति के साथ लोगों को सुनाते थे । लोग सुनकर भाव प्रवाह में बह जाते थे । इससे कवि को बहुत ही प्रसन्नता होती थी । कहा जाता है कि पाटण (गुजरात) के वैकुंठराय नामक नागर गृहस्थ ने कवि को अपने यहाँ बुलाकर दो साल तक ससम्मान आश्रय देकर काव्य का आस्वाद लिया था । गिरधर कृत रामायण के प्रारंभ में जहां कवि का संक्षेप में परिचय है उसमें कहा है कि 'कवि गिरधरदासनी कवितामांथी नीतिबोध घणो मळी आवे छे. एवा नीति बोधना प्रास्ताविक छप्पा, कुंडलिया, सवैया वगेरे परचुरण एमणे घणां

बनावेला छे. कवि भक्त होवाथी निवृत्ति मार्ग प्रिय हतो अने तेथी ठेकाणे ठेकाणे भक्तिनो ने निवृत्तिनो ज बोध तेमणे करेलो छे. कविनुं हृदय पवित्र हतुं ने चारित्रय शुद्ध हतुं तेनुं प्रतिबिंब तेमनी कवितामां स्पष्ट जणाइ आवे छे. ।[237]
एक उदाहरण देखें । प्रसंग राम वनगमन पूर्व का है । लक्ष्मण की माता सुमित्रा राम से कहती है कि मेरा पुत्र (लक्ष्मण) आप के साथ आएगा ।

ते माटे एने साथ तेडो; कहुं साची वाण
एकठा बे बांधव रहो, तो धीरज आवे प्राण ।
बाळपणमां मात राखे, वृद्ध पणे सुत धीर 2/27/28/159
तनवेदना जाणे त्रिया, रणमां संभाले वीर ।।

इसमें विचारों की प्रौढ़ता और उपदेश स्पष्ट झलकते है ।

संस्कृत और हिन्दी का प्रभाव विशेष है :

गिरधर कवि ने प्रत्येक अध्याय के अंत में प्रायः यह लिखा है कि इति श्री रामचरित्र वाल्मीकि संमत नाटक धारायां... इसका अर्थ यह है कि कवि ने वाल्मीकि रामायण को अपनी दृष्टि समक्ष रखकर ही 'रामायण' का सृजन किया है । अतः संस्कृत का प्रभाव स्वाभाविक है । कवि ने हनुमन्नाटक, अग्निपुराण, पद्‌मपुराण आदि का भी आश्रय ग्रहण किया है । अतः भाषा में सामासिकता एवं प्रवाहमयता का परिचय प्राप्त होता है । अनेकानेक स्थानों पर स्तुति और श्लोक संस्कृत में ही है । देवता नारायण की स्तुति करते हैं ।

जयजय अनेक ब्रह्मांड नायक, पूरणब्रह्म अनुप;
देववंदितदेव पाळक, अगम वेद स्वरूप,
जय विश्वंभर विश्व पाळक, विश्वरूप अनंत,
वनमाळी व्यापक विश्वपति सर्वात्म कमळाकंत ।। 1/8/7/8/22

कहीं कहीं हिन्दी समान प्रयोग पाया जाता है । तुलसीदास ने कहा हैं कि ढोलगंवार सूद्र पसु नारी । सकल पाडना के अधिकारी 5/59/6/444 गिरधर कवि कहते हैं कि ढोल मूरख ने पशु वळी दुर्मुखी जे नार

ए दंड विण माने नहि एने मारेनो अधिकार 6/10/12/388

लोक साहित्य अथवा चारणी भाषा जैसा प्रयोग दर्शनीय है :

रामायण में कवि ने सामासिक शब्दों के प्रयोग में व्याकरण के नियमों को भूलाकर अपने ढंग से भाषा का प्रयोग किया है । इससे भाषा में अशुद्धि आ गयी है । कवि गुजराती के अलावा हिन्दी, ब्रज आदि भाषा भी जानते हैं । अतः इन भाषाओं के शब्दों का स्वाभाविक रूप से प्रयोग किया है । कवि के समय भाट और चारणों की शैली विशेष रूप से प्रचलित थी । अतः कवि ने चारणी शैली का प्रयोग भी किया है । भाषा में अनुस्वार की अनावश्यकता होते हुए भी अनुस्वारों का घडल्ले से प्रयोग किया गया है । शायद कवि का ऐसा मत हों कि अनुस्वरों के अधिक प्रयोग से लय उत्पन्न होती है अथवा चारणी शैली जैसी लगे तो प्रभावोत्पादक बन सकती है । जैसे

नमामि ब्रह्मभावनं अखिललोकपावनं, दनुज दुष्ट दावनं, नराकृति सोहावनं ।

त्रिलोक लोक भूषणं, विशोकहारी दूषणं अधर्मवारि शोषणं, सुवेदकर्मपोषणं ।। 7/103/1/746

शंकर राम की स्तुति करते हैं । इसमें अनुस्वारों का प्रयोग विशेष है ।

कवि भाषा के प्रयोग में उदार मतवादी हैं :

रामायण में गिरधर कवि ने संस्कृत के अलावा हिन्दी ब्रज की लोक भाषा के शब्दों का स्वाभाविक प्रयोग किया है । किसी भाषा के पूर्ण अधिकार के बिना यदि शब्द प्रयोग किया जाय तो संभवतः दोष आ जाते हैं । अतः रामायण में अनेक स्थानों पर गलत शब्दों का प्रयोग पाया गया है । जैसे

कामदुधा के स्थान पर कामदुर्गा, स्त्री के स्थान पर अस्त्री, भरत के लिए 'भरथ, भर्थ, अस्थि के स्थान पर अस्थिर, बृहस्पति के स्थान पर 'ब्रेस्पति' । इसके अलावा स्तवते' 'दशस्यंदन', 'गणंति', 'अप्रमेनु', 'गोतीतं', 'रिपुबलधायक' द्रवीवंत 'त्रइतापशूलं', 'शत्रुधन' आदि हैं । कवि ने एक स्थान पर लिखा है कि 'आकर्ण पर्यन्त खेंचीने मूकियुं तेणे ठाम रे' यहाँ कान तक धनुष की डोरी खिंचने का भाव है । 'आ उपसर्ग का प्रयोग करने के बाद पर्यन्त शब्द का प्रयोग अनावश्यक है । पुनरावृत्ति दोष हो जाता है । 'आ' का अर्थ ही पर्यन्त (तक) होता है । कवि ने कहीं कहीं हिन्दी शब्दों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से किया है । कहीं पूरा पद हिन्दी में हैं यथा

भव दंड प्रचंड विखडं कियो, पन राखलियो नृपति गगन में,
पितु आयसु कानन कुबिचरे, तबही मुनि चीर धरे तन में
कहत है गिरधारी, पदरज की बलिहारी,
गौतम की नारी, वाकुं छिन्न में उद्धारी है । 7/104/1/749

कवि ने हिन्दी का प्रयोग स्वाभाविक रूप से किया है । इसका कारण है कि कवि ने वल्लभ विजय गोरजी से विधिवत हिन्दी की शिक्षा प्राप्त की थी । कवि के समय में हिन्दी और व्रज का प्रयोग विशेष रूप से होता था ।

कहना चाहिए कि रामायण की भाषा में प्रवाहमयता है । पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल भाषा है । श्रोता और पाठकों को अपनी ओर आकृष्ट करने में भाषा सक्षम है । कवि का ध्यान कथा की ओर अधिक है कला की ओर कम । अतः थोड़ा बहुत दोष देखने को मिलता है । सारतः रामायण की भाषा सरल, मधुर, कर्णप्रिय, रुचिकर और प्रसंगोचित है ।

4.8 'रामचरितमानस' और 'रामायण' की दार्शनिकता :

रामचरितमानस और रामायण दोनों में दार्शनिकता अनेक स्थानों में पायी जाती है । ये दोनों ग्रंथ भारतीय संस्कृति के परिचायक हैं ।

4.8.1 'रामचरितमानस' में दार्शनिकता :

तुलसीदास ने रामचरितमानस के द्वारा जन मानस को योग्य पथ निर्देश करने का प्रयास किया है जिससे मानव को चिर शांति प्राप्त हो । कलियुग में भक्ति और नामस्मरण ही श्रेष्ठ उपादान हैं । इसके लिए श्रेष्ठ चरित्रों की स्थापना आवश्यक है । भारतीय समाज में सहस्त्रों वर्ष पूर्व प्रामाणिक, परिपक्व तथा पवित्र व्यक्तित्व को संत की संज्ञा देकर प्रतिष्ठित किया गया है । तैत्तिरीयोपनिषद् में कहा गया है कि जो ब्रह्म का साक्षात्कार करता है, वह संत है । रामचरितमानस में संत की व्याख्या विवेचन तथा विश्लेषण महिमामय तथा महत्त्वपूर्ण है । मानस में संतों आदि के हितार्थ राम मनुष्य रूप में धरती पर प्रकट हुए हैं । 'विप्र धेनु सुर संत हितलीन्ह मनुज अवतार ।' संत सरल हृदय और जगत के हितकारी होते हैं । संतों की निन्दा शिव तथा विष्णु की निंदा के समान है । संत नीति और नियम से कभी विचलित नहीं होते । विधाता ने जड़ चेतन विश्व को गुणदोष मय रचा है । संत रूप हंस दोष रूपी जल को छोड़कर गुणरूपी दूध ही ग्रहण करते हैं । श्रेष्ठ पुरुष संत हैं, जिनके माध्यम से मानस में एक अहिंसक या आध्यात्मिक संस्कृति का प्रतिपादन किया गया है । अलौकिक चरित्रवाले शंकर नारद तथा लौकिक एवं अलौकिक चरित्रवाले अवतारी पूर्ण चरित्र राम का वर्णन मानस में है । राम के भ्राता भरत तथा लक्ष्मण, सेवक हनुमान आदि के चरित्रों ने भारतीय संस्कृति को उज्जवल बनाया है । मानस में सरल शब्दों में भक्ति और दार्शनिकता की चर्चा की गई है जिसमें ब्रह्म, मोक्ष, माया, जीव, आत्मा, निर्गुण, सगुण, ज्ञान इत्यादि विषयों पर विस्तार से कहा गया है । जैसे –

तुलसी के राम सर्वव्यापक एवं अंशावतारी है :

तुलसी के राम मानव जाति के लिए एक आदर्श चरित्र है । राम सत्यव्रती हैं, धर्म परायण हैं तथा सब से स्नेह रखनेवाले हैं । मानस के राम एक साथ ही मनुष्य और ईश्वर हैं । मनुष्य अनित्य हैं । ईश्वर नित्य हैं ।

राम शील सौंदर्य तथा शक्ति के अक्षय संचय हैं । राम मर्यादापुरुषोतम के रूप का परित्याग कभी नहीं करते हैं । राम न्यायनिष्ठ, दया, औदार्य आदि से परिपूर्ण हैं । राम का पूजनीय रूप विष्णु का अवतार है । नारद मोह के प्रसंग में जब शीलनिधि की कन्या को स्वयंवर में नहीं प्राप्त कर पाते हैं तब राम–विष्णु के रूप में नारद को उपलब्ध होते हैं । प्रभु अन्य के हित हेतु ही अवतार लेते हैं । जैसे

'एक अनीह अरूप अनामा । अज सच्चिदानंद पर धामा ।
*व्यापक बिस्वरूप भगवाना । तेहिं धरि देह चरित कृत नाना । **1/13/3/4/26***

तुलसी कहते हैं कि केवल इच्छा रहित, आकार रहित, नाम रहित, जन्म रहित, सच्चिदानंद, बैकुंठ निवासी, घट–घटवासी, विराट रूप और ऐश्वर्यशाली पर ब्रह्म है । वे ही देह धारण कर अनेक चरित्र करते हैं ।

शंकर स्वयं पार्वती से भगवान के निवास–स्थान के संदर्भ में कहते हैं कि

*''हरि व्यापक सर्वत्र समाना । प्रेमतें प्रगट होंहिं मैं जाना ।'' **1/85/5/112***

मानस के राम सहज सुलभ एवं सब के हृदय में हैं :

तुलसी समन्वयवादी है । तुलसी के राम की पहचान विशिष्ट है । तुलसी भक्त कवि हैं । उनका किसी प्रकार के दार्शनिक वितण्डावाद से कोई संबंध न था । भक्त तो अपने प्रभु में इतना तल्लीन हो जाता है कि उसके सामने केवल उसके प्रभु ही रह जाते हैं । भक्त को चाहिए कि मन रूपी दर्पण और ज्ञान रूपी नेत्र को स्वच्छ रखें । भगवान तो भक्त के अनुकूल हो जाते हैं । शंकर स्वयं पार्वती जी से कहते हैं कि

सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा । गावहिं मुनिपुरान बुधवेदा ।
अगुन अरूप अलख अजजोई । भगत प्रेम बस सगुन सो होई ।।

1/116/2/79

सगुण और निर्गुण में कुछ भेद नहीं है । ऐसा मुनिगण, पुराण और वेद ब्रह्म के विषय में कहते हैं । जो निर्गुण निराकार अदृश्य और जन्मरहित है वही भक्तों के प्रेम के कारण सगुण हो जाते हैं । इस निर्गुण ब्रह्म के सगुण होने में भक्त का हित है । साथ साथ धर्मरक्षा, असुर विनाश, विप्र, धेनु, पृण्वी सुर आदि के त्राण, सज्जन पीड़ा हरण, श्रुति रक्षा एवं स्वयश विस्तार भी है । तुलसी ने यद्यपि निर्गुण – सगुण दोनों रूपों को सामने रखा है परंतु उनकी विशेष आस्था सगुण में ही है ।

रामचरित में जीव जगत और माया की विशद् व्याख्या है :

तुलसी ने जीव जगत और माया का विस्तार से वर्णन करके आत्मा के लिए मोक्ष का मार्ग प्रशस्त किया है । कवि जीव के संबंध में समझाते हैं कि जो माया को, ईश्वर को और अपने स्वरूप को नहीं जानता उसे जीव कहना चाहिये । 6/15/9/368 जीवात्मा मन प्राणबुद्धि और इन्द्रियों से विलक्षण विशुद्ध और नित्य है । बालि बध के उपरांत राम तारा को जो उपदेश देते हैं उससे जीवात्मा का बोध होता है । जीव माया में उलझ जाने के कारण दुःख का भागी बन जाता है । इनका ब्रह्म से संबंध टूट जाता है । जीव परतंत्र है, भगवान स्वतंत्र है । जीव अनेक है परमात्मा एक है । जीव और परमात्मा में अंतर अज्ञान का है ।

जगत ब्रह्म द्वारा निर्मित है । यह स्वप्नवत है । स्वप्न में हम जो कुछ भी देखते हैं, स्वप्न काल तक हमें उसकी सत्यता की ही प्रतीति होती है । लक्ष्मण अयोध्याकाण्ड में निषाद को मिथ्या जगत के संबंध में कहते हैं कि –

जोग वियोग भोग भल मंदा । हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा ।
जनमु मरनु जहँ लगि जगजालु । संपति विपति करमु अरू कालु ।।

धरनि धामु धनु पुर परिवारू । सरगु नरकु जहँ लगि व्यवहारू ।।
देखिअ सुनिअ गुनिअ मनमांही । मोह मूल परमाथु नाहीं ।।

2/92/5/6/246

संयोग–वियोग, अच्छा–बुरा, मित्र–शत्रु सभी भ्रम के फंदे हैं । जन्म–मृत्यु एवं जहाँ तक भव बंधन व्याप्त हैं, संपति, विपत्ति कर्म तथा काल पृथ्वी, गृह धन, नगर, परिवार, स्वर्ग, नरक तथा जहाँ तक लोक व्यवहार की व्याप्ति है, देखने सुनने और मन में समझने के पश्चात् यह लगता है कि समी मोहमूलक है । परमार्थ कुछ भी नहीं है । इसीको जगत कहते हैं ।

माया के संबंध में कहते हैं कि मैं अरु मोर, तोर तैं माया ।

वस्तुतः माया अनिर्वचनीय है । ब्रह्म, जीव और माया का स्वरूप कारण रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है । अतः माया के कार्यों द्वारा यही स्पष्ट कर सकते हैं । मैं हूं और वह वस्तु मेरी है तथा तुम हो और यह वस्तु तुम्हारी है । इन भावनाओं का स्फूरण माया के द्वारा ही होता है । राम अपने मुँह से लक्ष्मण को माया के संबंध में संक्षेप में कहते हैं कि इन्द्रियों के विषयों को और जहाँ तक मन जाता है हे भाई ! उन सबको माया जानना । जो माया को, ईश्वर को और अपने स्वरूप को नहीं जानता उसे जीव कहना चाहिये । वास्तव में तुलसी दार्शनिक नहीं थे, भक्त थे । उनके लिए समस्त चराचर 'सियराममय' था अतः माया भी राम के अधीन है ।

मानस में मोक्ष का आधार भक्ति ही है :

विभिन्न दर्शनों में मोक्ष या मुक्ति की व्याख्या भिन्न भिन्न है । उपनिषदों में जन्म–मृत्यु चक्र से मुक्ति यानी अमरत्व को ही मोक्ष कहा गया है । श्रीमद् भगवत गीता में जरा मृत्युमय संसार से मुक्ति को ही मोक्ष कहा गया है । (अध्याय 6/29 9/32) जैन दर्शन कर्म नाश को ही मोक्ष मानते हैं । तुलसी माया से मुक्ति को ही मोक्ष मानते है । मोक्ष के चार प्रकार

हैं । सामीप्य मुक्ति, सायुज्य मुक्ति, सालोक्य मुक्ति और सारूप्य मुक्ति । मानस में सामीप्य को छोड़कर अन्य तीनों के उदाहरण मिलते हैं । तुलसी का स्पष्ट मत है कि राम भक्ति ही मोक्ष का साधन है । ज्ञान भी मुक्ति का साधन है । ज्ञान का बोध और सिद्धि बड़ी कठिनाई से होती है । ज्ञान मार्ग बड़ा जटिल और दुस्तर है । अंतिम मंजिल तक पहुँचने में बीच बीच में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है और जो उसमें सफल होकर निर्विध्नता के साथ उद्‌देश्य तक पहुँच जाता है वही कैवल्य (मुक्ति) पद का भागी बनता है, परंतु वही मुक्ति राम भक्ति करनेवाले को सहज ही में प्राप्त होती है । अतः तुलसी की दृष्टि में भक्ति स्वतंत्र साधन है । ज्ञान और विज्ञान तो भक्ति के अधीन रहते हैं । अत्रि मुनि राम की भक्ति के संबंध में कहते हैं कि –

कठिन काल मल कोस धर्म न ग्यान न जोग तप ।।
*परिहरि सकल भरोस रामहि भजहिं ते चतुर नर ।। **3/6/18/362***

कलियुग पापों का खजाना है । इसमें न धर्म है न ज्ञान है और न योग तथा जप ही है । इसमें तो जो लोग सब भरोसों को छोड़ कर राम की भक्ति करते हैं वे ही चतुर है । इनको ही मोक्ष मिलता है ।

4.8.2 गिरधर कृत 'रामायण' में दार्शनिकता :

कवि गिरधर ने 'रामायण' में हरिगुण गाने का ही उद्‌देश्य रखा है । अपनी असमर्थता का उल्लेख करते हुए कविने विद्धतजनों की क्षमा याचना की है । राम के अनंत गुणों का गान गुरु कृपा से ही कर पाये हैं । कवि यह भी कहते हैं कि प्रभु की आज्ञानुसार ही मैंने लिखा है । कवि की विनम्रता दर्शनीय है । कवि ने अनेक स्थलों पर राम नाम की महिमा का गान प्रस्तुत किया है । कवि का उद्‌देश्य राम नाम गुण गान के द्वारा जीव को मोक्ष की प्राप्ति होती है । कवि कहते हैं कि –

सर्वसाधनगत सार थयां, हरि नामनो अधिक प्रतापजी;
वेद पुराण शास्त्र एम कहे छे, मोटा पुरुष मुखबोलेजी ।
केशव कीर्तन कळियुग साधन, अव नहि एने तोलेजी,
*एवुं जाणी विश्वास धरी मन, गाया हरिगुण ग्रामजी ।।**7/112/17/767***

गिरधर राम की लीला को माया का नाटक मानते हैं । कवि ने यह भी कहा है कि विश्व राम का ही प्रतिरूप है । राम मायापति है । जो व्यापक और किसी से पराजित होने वाले नहीं है । राम को कभी भी मोह नहीं होता मगर मनुष्य को अवतार लीला दिखाने हेतु ये सब कार्य करते हैं । प्रभु की माया समझना आम लोगों के लिए बहुत ही कठिन है । राम मनुष्य लीला हेतु ही कहते हैं कि

हो सीता हो सीता कहेता, करतावचनआलाप ।
पशु पंखी, तरु गिरि सरिता ने पृथ्वी ने पूछे राम ।। ***3/18/11/254***

राम के इस प्रकार के व्यवहार को गिरधर कवि लीला नाटक कहते हैं । राम सच्चिदानंद स्वरूप है । पर ब्रह्म है । अंशावतारी है । पृथ्वी, ब्रह्मा, शिव और समग्र देवताओं की स्तुति के फलस्वरूप नारायण ने सच्चिदानंद भगवान ने राम के स्वरूप में जन्म लिया । सब मिलकर स्तुति करते हैं कि –

जय अपार गुण नाम रूप अदभूत चरित्र वर; ।।
त्रिविध तापहर विमळ, सुधा सम श्रवण मंगळकर ।।
करुणानिधान भगवान जय पुण्य लोक पावन कण ।
अब प्रगट होउ गिरधर प्रभु जय रघुपति अशरणशरण ।।

1/15/20/44

भगवान सच्चिदानंद ब्रह्म स्वरूप हैं । भक्तों के उद्धार हेतु प्रभु पृथ्वी पर अवतार धारण करते हैं । ऐसा कवि गिरधर का स्पष्ट मत है । उतरकाण्ड में कवि ने कहा है कि प्रभु राम ने दुष्टों का संहार किया मगर

पहले दुष्टों की दुष्टता का नाश किया है, जिसमें रावण का अहंकार, कुंभकर्ण का क्रोध, इन्द्रजित का काम, अतिकाय का लोभ, प्रहस्त का मद, देवांतक का अज्ञान, नरांतक का दंभ इत्यादि का प्रभु राम ने नाश करके पृथ्वी को दानवों के कष्टों से मुक्ति दिलायी है । यहाँ यह भी कहना चाहिए कि गिरधर कवि ने रावण के चरित्र का अधिक विकास और विस्तार किया है ।

कवि ने राम और शंकर में अभिन्नता दिखाई है । अरण्यकाण्ड में राम जटायु की अंतिमक्रिया करके आगे चलते हैं तो शिव जी की दृष्टि राम पर पड़ जाती है । अतः शिव तत्क्षण राम को –

जय सच्चिदानंद पूरण ब्रह्म, एम कही कर्या नमस्कार । 3/19/15/256

पार्वती के पूछने पर शिव उतर देते हैं कि भक्तों के हित हेतु नारायण ने सगुण अवतार लिया है । ये पूर्णब्रह्म हैं । इस प्रकार गिरधर कवि ने शिव और राम को अभिन्न एक रूप और समान दिखाने का प्रयास किया है । गिरधर ने कहीं भी दार्शनिक धरातल वाली कठिन भाषा का प्रयोग नहीं किया । सरल शब्दों में राम महिमा एवं रामनाम का आश्रय जीव को माया से छुड़ाकर मोक्ष के मार्ग की ओर अग्रसर करते हैं । ऐसा स्पष्ट कहा है कि कलियुग में नाम स्मरण ही श्रेष्ठ आधार है । ऐसा बार बार कहा है । गिरधर ने अपने विचारों और आदर्शों में भक्ति को अग्र स्थान दिया है । हनुमान, राम और भरत एक बार उपवन में बैठे थे । उस समय भरत संत और असंत के लक्षण पूछते हैं । राम विस्तार से समझाते हैं । सार यही है कि अन्य के लिए जो कार्य करता है वही संत है । उसका मैं ध्यान रखता हूँ । राम आगे यह कहते हैं कि –

एवा पुरुष जो एक क्षण मळे तो जन्म मरण ते जीवनुं टळे ।

7/16/14/549

संक्षेप में कहना होगा कि गिरधर ने रामायण के द्वारा आम मानव के लिए उपकार का कार्य किया है । कवि अधिक पढ़े लिखे नहीं थे । शास्त्रों

का विशद् ज्ञान भी नहीं था । फिर भी आवश्यकतानुसार शिक्षा प्राप्त करके रामायण के अलावा दश ओर ग्रंथों की रचना करके लोगों को भक्ति का सरल मार्ग दिखाया है । कवि अपने लिखे हुए ग्रंथों को राग ताल में गाकर लोगों को सुनाते थे । लोग भाव विभोर हो जाते थे । अतः कवि ने यह सोचा कि मैं धार्मिक ग्रंथों का सर्जन करके निर्धन आख्यानकार या कथावाचक को ग्रंथ अर्पण करुँ । इन ग्रंथों का पठन करके इनकी रोजी रोटी का प्रश्न भी हल हो जाएगा और समाज को योग्य पथ निर्देश की दिशा मिल जाएगी । गिरधर ने अपने हाथों से ग्रंथ लिखकर योग्य कथाकारों को अर्पण किए हैं । इसी लिए आज भी गिरधर कवि का नाम सगर्व लिया जाता है ।

4.9 'रामचरितमानस' और 'रामायण' में रसाभिव्यक्ति :

मानव मन की अंतर्निहित वृत्तियों का सूक्ष्मतम विधि से सम्यक् उद्घाटन जिस कौशल और पांडित्य के साथ गोस्वामी तुलसीदास ने अपने रामचरितमानस में किया है, वैसा हिन्दी का कोई कवि नहीं कर सका । तुलसी ने मानस के मार्मिक स्थलों को भली भाँति हृदयस्थ किया है और उनकी रोचक व्यंजना स्थल स्थल पर की है । तुलसी में मर्मस्पर्शी, भावुक स्थलों को पहचान नेकी दृष्टि असाधारण थी । प्रत्येक स्थिति में अपने को डालकर उसका ऐसा सुन्दर चित्रण उन्होंने किया है कि बस देखते ही बनता है ।

रस सिद्धांत भारतीय काव्यशास्त्र की विश्व को अनुपम देन है । भारतीय साहित्य शास्त्र के काव्यलोचन संबंधी विभिन्न सिद्धांतों में रस सिद्धांत सर्व प्राचीन और समृद्ध है । रस सिद्धांत के प्रवर्तक नाट्यशास्त्रकार भरतमुनि माने जाते हैं । उनके मतानुसार विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से स्थायी भाव ही सहृदय के हृदय में रसानुभूति कराता है । कवि की विशेषता यह होती है कि अपनी उदात्त स्पृहणीय भावानुभूतियों को जब सुन्दर रूप में

अभिव्यक्ति प्रदान करता है तो वह सरस भावनायें सभी की होकर स्वतः साधारणी कृत हो जाती है ।

4.9.1. 'रामचरितमानस' मैं रसाभिव्यक्तिः तुलसीदास रससिद्ध काव्य हैं

अतःमानस में सभी रसों का विस्तार से परिपाक हुआ है । स्थानाभाव के कारण हम एक रस का एक ही उदाहरण ले रहे हैं ।

4.9.1 श्रृंगार रस :

श्रृंगार का अर्थ है काम वृद्धि की प्राप्त होना । कामपूर्ण हृदय में रति स्थायी भाव इस अवस्था को प्राप्त होकर काम की वृद्धि करता है । श्रृंगार रस के दो भेद बहैं । (1) संयोग श्रृंगार, (2) वियोग श्रृंगार । संयोग श्रृंगार में नायक नायिका के पारस्परिक आलिंगन, अवलोकन, संभाषण, सामीप्य मिलन आदि का चित्रण होता है और वियोग श्रृंगार में उनेक बिछुड जाने की स्थिति का चित्रण होता है । मानस में भक्ति रस का आधिपत्य है । अतः श्रृंगार रस का वर्णन अपेक्षाकृत कम मिलता है ।

4.9.1.अ संयोग श्रृंगार :

तुलसी ने बड़ी कुशलता से श्रृंगार रस का सुमर्यादित चित्रण किया है । पुष्पवाटिका में सीता और राम का मिलन संयोग श्रृंगार का उत्कृष्ट उदाहरण है । राम और सीता के प्रथम दर्शन से उत्पन्न 'पूर्वराग' दर्शनीय है । सखी के द्वारा नायक (राम) का गुण–वर्णन सुनकर नायिका (सीता) के हृदय में उनके दर्शन की 'लालसा' उत्पन्न हुई । इसी 'लालसा' का रूपांतर 'आकुलता' में हो गया । वह अपनी सखी को आगे करके चली, जिससे मंजुल ध्वनि उत्पन्न हुई । अतः नायक (राम) में नायिका (सीता) के दर्शन का औत्सुक्य जाग उठा जैसे –

कंकन किंकिनि नुपूरधुनि सुनि । कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि ।।
मानहु मदन दुंदुभी दीन्ही । मनसा विश्व विजय कहँ कीन्ही ।।

1/230/1/134

रस निरूपण की दृष्टि से यहाँ राम आश्रय और सीता आलंबन है । नुपूरों की मधुर ध्वनि उद्दीपन विभाव तथा नेत्रों की अपलक अवस्था अनुभाव का कार्य करते हैं । राम के विमुग्ध होने का भाव संचारी भाव का कार्य करता है । इस प्रकार पूर्वराग की पृष्ठ भूमि में संयोग श्रृंगार की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है ।

4.9.1.ब. वियोग श्रृंगार :

मानस में वियोग अथवा विप्रलंभ श्रृंगार का वर्णन अत्यंत मार्मिक ढंग से हुआ है । सीता हरण के पश्चात् राम का विलाप विप्रलंभ श्रृंगार का दृष्टांत है ।

हा गुन खानि जानकी सीता । रूप सील ब्रत नेम पुनीता ।।
हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी । तुम्ह देखी सीता मृग नैनी ।।

3/30/7/9/380

यहाँ नायक (राम) आश्रय और नायिका (सीता) आलंबन है । सीता के प्रति राम का प्रगाढ़ प्रेम (रति) ही यहाँ स्थायी भाव के रूप में प्रतिष्ठित है । राम का विलाप अभाव व्यापार के पूरक है । स्मृति, उन्माद आवेग एवं जड़ता आदि संचारी भाव रति स्थायी भाव के साथ जुड़े दीख पड़ते हैं ।

4.9.1.2. करुण रस :

करुण रस को उद्रेक करनेवाले प्रसंग मानस में बहुत आये हैं । राम वन गमन के अवसर पर अयोध्यावासियों का विलाप, दशरथ मरण, सीता हरण होने पर राम का दुःखी होना, जटायु की मृत्यु, मेघनाद द्वारा शक्ति लगने पर

राम की व्याकुलता, कुंभकरण और रावण की मृत्यु पर स्त्रियों का विलाप, करूप रस के स्थल हैं । जैसे –

निज जननी के एक कुमारा । तात तासु तुम्ह प्रान अधारा ।

सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पान । सब बिधि सुखद परमहितजानी ।।

6/61/6/48

लंकाकाण्ड के अंतर्गत लक्ष्मण मूर्छा के प्रसंग में राम की मर्मान्तक पीड़ा को लेकर करुण रस की बड़ी मार्मिक व्यंजना हुई है ।

4.9.1.3. वीर रस :

वीर रस का अत्यंत सुंदर वर्णन मानस में हुआ है । बालि–सुग्रीव युद्ध, हनुमान, राक्षस युद्ध, राम–रावण सेना का युद्ध, मेघनाद–लक्ष्मण युद्ध और राम रावण युद्ध आदि में वीर रस का सुंदर चित्रण देखने को मिलता है । एक उदाहरण देखें –

तोरों छत्रक दंड जिमितवप्रताप बल नाथ ।

*जौंनकरौं, प्रभु पद सपथ कर न धरौं धनु भाथ ।।**1/253/9/10/146***

रस निरूपण की दृष्टि से यहाँ धनुष आलंबन एवं जनक की अनुचित वाणी उद्दीपन विभाव है । लक्ष्मण की आवेशपूर्ण उक्तियाँ अनुभाव हैं । आवेश, औत्सुक्य, गर्व आदि संचारी भाव हैं । इस प्रकार उत्साह संचारी भाव से वीर रस की अभिव्यक्ति हुई है ।

4.9.1.4. हास्य रस :

हास्य रस का संबंध मानसिक तथा हार्दिक विनोद की भावना से है । मानस में हास्य रस का उत्तम परिपाक शिव जी की बारात और नारद मोह के प्रसंग में विशेष रूप से हुआ है । नारद मोह प्रसंग से संबंधित पंक्तियाँ देखें –

काहुँ न लखा सो चरित बिसेषा । सो सरूप नृपकन्याँ देखा ।

मर्कट बदन भयंकर देही । देखत हृदयँ क्रोध भा तेही ।। ***1/134/7/88***

यहाँ स्थायी भाव हास्य, आलंबन नारद का बंदर सा मुँह, उद्दीपन नारद का बार बार अकुलाना, अनुभाव हरिगणों का मुस्कुराना और संचारी भाव औत्सुक्य चपलता आदि हैं । केवल बाहरी हंसी मात्र हास्य रस का प्रतिरूप नहीं है । इसके विभाव के मूल में अनौचित्य और विकृति की भावना विशेष रूप में रहती है । हास्य रस का स्थायी भाव हास, आलंबन विकृति, आकृति, अनौचित्यपूर्ण बात, उद्दीपन हास्यवर्धक सभी चेष्टाएँ अनोखी वेश–भूषा, असंगत बात आदि अनुभव, मुस्कुराहट, हँसने के कारण, नेत्रों का मुंदना पेट में बल पड़ना तथा संचारी भावों में कंपन, हर्ष, चंचलता, रोमांच, स्वेद, असूया आदि की परिगणना की जाती है ।

4.9.1.5. रौद्र रस :

रौद्र रस का प्रयोग क्रोधावेग की दशा प्रकट करने के लिए होता है । किसी दुष्ट दुराचारी प्रतिपक्षी व्यक्ति के दुराचरण से क्रोध उत्पन्न होता है । रौद्र रस का मेरुदण्ड क्रोध ही है । रौद्र एवं वीर रस के संचारी भावों के कुछ ही उभय निष्ठता के कारण कभी कभी इन दोनों रसों की पृथकता का आभास कठिन हो जता है, किन्तु क्रोध और उत्साह के स्थायी भावों की अपनी–अपनी विशेष स्थिति के कारण सूक्ष्म अंतर स्पष्ट हो जाता है । मानस के अंतर्गत रौद्र रस की व्यंजना के अनेक स्थल हैं । भरत के ससैन्य चित्रकूट आगमन के समाचार जानकर सेवाव्रती लक्ष्मण की मनोदशा रौद्र रस का सुन्दर उदाहरण है –

“आजु राम सेवक जसु लेउँ । भरतहि समर सिखावन देउँ ।।
राम निरादर कर कलु पाई । सोवहुँ समर सेज दोउ भाई ।।
तैसेहिं भरतहि सेन समेता । सानुज निदरि निपातउँ खेता ।।
जौं सहाय कर संकरु आई । तौ मारउँ रन राम दोहाई ।।

2/230/6/310

प्रस्तुत अवतरण में लक्ष्मण आश्रय, भरत आलंबन तथा उनका ससैन्य आगमन उद्दीपन है । लक्ष्मण के क्रोध युक्त वचन तथा युद्ध संबंधी ललकार आदि अनुभाव है तथा अमर्ष, उग्रता आदि संचारी भावों के संयोग से क्रोध स्थायी भाव की पुष्टि होकर रौद्र रस की निष्पति हुई है ।

4.9.1.6.भयानक रस :

भावी विपत्ति की भावना से उत्पन्न आवेगपूर्ण अथवा स्तंभ कारक मनोविकार भय है । मानस में भयानक रस के दो–चार स्थल पर उदाहरण प्राप्त होते हैं, जिनमें शिव की बारात का प्रसंग धनुर्भंग प्रसंग, लंकादहन प्रसंग, कुंभकर्ण युद्ध प्रसंग आदि हैं । भयानक रस का पूर्ण परिपाक बालकाण्ड के धनुर्भंग की विश्व ब्रह्मांड व्यापी प्रतिक्रिया के प्रदर्शन में दर्शनीय है –

भरे भुवन धोरे कठोर रव रबि बाजि तजि मारगु चले ।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले ।।
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल बिकल विचारहीं
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति वचन उचार हीं ।। ***1/261/9/149***

धनुर्भंग प्रसंग में मानसकार ने अत्यंत प्रगल्भता से भयानक रस का चिउण किया है ।

4.9.1.7. बीभत्स रस :

घृणोत्पादक वस्तुओं के श्रवण दर्शन से हृदय में एक प्रकार का जुगुप्सा का भाव उत्पन्न होता है । यही इस रस का स्थायी भाव है । दुर्गन्धपूर्ण वस्तुएँ, रुधिर, कच, हाड़ माँस आदि इसके आलंबन होते हैं । इन्ह्रीं का वर्णन विशेष रूप से इस रस के अंतर्गत किया जाता है । मानस में इस रस का वर्णन प्रमुख रूप से दो स्थलों पर हुआ है । राम खरदूषण युद्ध में और राम–रावण युद्ध में । एक उदाहरण देखें –

मज्जहिं भूत पिसाच बेताला । प्रथम महा झोटिंग कराला ।।
काक कंक लै भुजा उड़ाहीं । एक ते छीनि एक लैखाहीं ।।

एक कहहिं ऐसिउ सौंघाई । सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई ।।
कहँरत भट घायल तट गिरे । जहँ तहँ मनहु अर्धजल परे ।।

6/88/4/498

तुलसी ने बीभत्स रस का चित्रण हमेशा जुगुप्सा के पार्श्व में ही किया है ।

4.9.1.8. *अदभुत रस :*

अलौकिक्ता का आधिक्य होने के कारण मानस में कई स्थलों पर अदभूत रस का सजीव चित्रण हुआ है । किसी अभूतपूर्व, विस्मयकारी, असाधारण एवं आश्चर्यजनक घटना से उत्पन्न होनेवाला विस्मय भाव ही उसका स्थायी भाव है । सीता के मोह प्रसंग में, राम द्वारा प्रदर्शित अदभूत रूप, कौशल्या को राम का दिखाया हुआ विराट रूप और काकभुशुंडि का राम के पेट में विराट रूप देखना आदि अदभूत रस के उदाहरण हैं । आश्चर्य ही अदभूत रस का स्थायी भाव है । आश्चर्योपादक कोई वस्तु अथवा घटना का आलंबन विभाव उनकी विलक्षणता, आकस्मिकता उद्दीपन के रूप में तथा रोमांच, श्वेद, स्तंभ, प्रफुल्लता आदि अनुभाव रूप में प्रकट होते हैं । इसमें जड़ता, वितर्क, आवेग, भ्रांति आदि संचारी रूप में समाविष्ट होते हैं । एक उदाहरण देखें –

एक बार जननी अन्हवाए । करि सिंगार पलनाँ पौढ़ाए ।
निज कुल इष्टदेव भगवाना । पूजा हेतु कीन्ह अस्नाना ।
करि पूजा नैबेद्य चढ़ावा । आपु गई जहँ पाक बनावा ।।
बहुरि मातु तहवाँ चलि आई । भोजन करत देख सुतजाई ।।

1/201/4/120

इस संपूर्ण प्रसंग में अदभुत रस का सुंदर प्रयोग दर्शनीय है ।

4.9.1.9. शांत रस :

श्रृंगार, वीर एवं शांत रसों को भारतीय लक्षणाचार्यों ने प्रधान रसत्रयी माना है । निर्वेद स्थायी भाववाले इस रस में संसार की असारता एवं क्षण भंगुरता ही आलंबन विभाव का कार्य करता है । मानस में अधिकाधिक स्थलों पर शांत रस भक्ति रस के पोषक के रूप में पाया गया है । अतः वंदनाओं, स्तुतियों आदि में हमें इस रस के दर्शन होते हैं । उत्तरकाण्ड तो मानों शांत रस से ही परिपूर्ण है । कवि जहाँ संघर्षपूर्ण स्थिति का अंकन करते हैं वहाँ पर यथा शीघ्र वैराग्य का वर्णन प्रस्तुत करके शांत रस की स्थापना कर देते हैं । जैसे –

सुंदर सुजान कृपा निधान अनाथ पर कर प्रीति जो ।।
सो एक राम अकाम हित निर्बान प्रदसम आन को ।।
जाकी कृपालवलेस ते मतिमंद तुलसीदास हूँ ।।
पायो परम विश्रामु राम समान प्रभु नाहीं कहूँ ।। 7/130/606

लोक नायक तुलसीदास की दृष्टि में रामचरितमानस की रचना का प्रमुख उद्देश्य अपने आराध्य मर्यादा पुरुषोतम राम की भुवन मोहक लोक लीलाओं का भावमयी शैली में गायन रहा है । उनके लिए राम की भक्ति साध्य थी और अन्य बातें उपकरण अथवा साधन मात्र । इस प्रकार 'मानस' में आद्योपांत शांत रस की व्यंजना देखकर ही कुछ आलोचकों ने शांत रस को ही मानस का अंगी रस बतलाया है ।[238] इस प्रकार रामचरितमानस शांत रस का पर्यावसायी महाकाव्य है ।

4.9.1.10 वात्सल्य रस :

भारतीय लक्षणाचार्यों ने वात्सल्य रस को स्वतंत्र रस के रूप में न मानकर श्रृंगार रस का ही एक अंग माना है । विश्वनाथ ने अपने साहित्य दर्पण में "स्फुरं चमत्कारित यावत्सतं संचारिणो निष्टाशंकाहर्ष गर्वादयो मताः" कहकर इस रस को एक स्वतंत्र एवं पूर्ण रस माना है । पुत्र विषयक रति ही

इसका स्थायी भाव है । रामचरितमानस में प्रसंगानुकूल वात्सल्य रस की सुंदर नियोजना की गई है । बालकाण्ड से लेकर लंकाकाण्ड तक वात्सल्य रस की अक्षुण्ण धारा प्रवाहित है । यद्यपि बालकाण्ड में वात्सल्य रस का अधिक प्रवाह पाया जाता है । पार्वती, राम, लक्ष्मण, सीता, भरत आदि के प्रति उनके माता पिता का राम–सीता के प्रति उनके सास–ससुर एवं अन्य गुरुजनों तथा सामान्य नर–नारियों का वात्सल्य मानस में चित्रित किया गया है । तुलसी की वात्सल्याभिव्यक्ति का एक मार्मिक एवं उदात्त रूप भरत के प्रति कौसल्या के स्नेह का है, जो भारतीय साहित्य की एक दुर्लभ वस्तु है । कौसल्या का हृदय प्रिय पति के असामयिक निधन से व्यथित है परंतु भरत को अपने सामने ग्लानियुक्त एवं राम वियोग से विह्वल दशा में तड़पते देखकर पुत्र के प्रति माता का स्नेह उमड़ पड़ता है । वह अपने सारे शोक एवं व्यथा को भीतर ही भीतर दबाकर भरत को मीठे वचनों से सांत्वना देती है । जैसे –

माताँ भरतु गोद बैठारे । आँसु पोंछि मृदु वचन उचारे ।।
अजहु बच्छ बलि धीरज धरहू । कुसुमउ समुझि सोक परिहरहू ।।

2/165/4/280

इस प्रकार तुलसी ने वात्सल्य रस को शिशु एवं जनक जननी तक ही सीमित न रखकर अन्यान्य संबंधों में में भी उसका प्रसार किया है ।

मानस का अंगीरस :

तुलसी नव रस के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए भक्ति रस को अंगीरस मानते हैं । कवि भक्ति रस को अंगीरस के रूप में प्रतिष्ठित करके काव्य शास्त्र की रुढ़ मान्यता के विरुद्ध नया मानदण्ड स्थापित किया है । डॉ. सिंह के मतानुसार ‘‘यथार्थ यह है कि रामचरितमानस का मुख्य प्रतिपाद्य रस भक्ति रस ही है । अन्य रस गौण हैं ।[239] डॉ. छविनाथ त्रिपाठी की धारणा है कि ‘‘रामचरितमानस का अंगीरस भक्ति रस ही मानना

चाहिए ।"[240] डॉ. राजपति दीक्षित का मत है कि "इसमें शांत (भक्ति) रस ही सर्वोपरि हैं, अन्य सभी रस इसी के (भक्ति रस के) अंगभूत हैं ।[241] तुलसी ने सभी रसों का नियोजन किया है लेकिन भक्ति रस का इतना आधिपत्य है कि अन्य सभी रस अपनी पृथक् अनुभूति करते हुए भी उसी में विलीन हो जाते हैं ।

4.9.2. 'रामायण' में रस निरूपण :

'रामायण' के रचयिता कवि गिरधर अधिक पढ़े लिखे नहीं थे । काव्य कला का भी अधिक ज्ञान नहीं था । राधावल्लभ संप्रदाय के आचार्य श्री रंगीलालजी महाराज के संपर्क में आने से कवि की कव्य कला का विकास हुआ । गिरधर की भाषा सरल, मधुर कर्णप्रिय एवं रुचिकर है । कवि में किसी भी बात को सहजता से समझाने की क्षमता है । कवि ने रामायण में आवश्यकतानुसार भावों की सृष्टि की है । गिरधर कृत रामायण में सभी रसोंका प्रयोग पाया जाता है । कवि ने मुख्य रूप से करुण, शांत, वीर और शृंगार का आलेखन किया है । अन्य रसों में अद्भुत, भयानक, हास्य, बिभत्स, वात्सल्य और भक्ति का चित्रण भी सुज्ञ पाठकों का मन मोह लेता है । गिरधर को करुण रस सर्वाधिक प्रिय हो ऐसा प्रतीत होता है । करुण रस का जहाँ प्रयोग होता है कवि वहीं थोड़े समय के लिए रुक जाते हैं । एक या दो उदाहरण देकर भी कवि को आत्मतुष्टि नहीं होती । अतः दृष्टांतों की झड़ी बरसा देते हैं । करुण रस के बाद कवि को शांत रस प्रिय है । इसका कारण यह है कि कवि शांत स्वभाव के रहे हैं । अल्पाहारी, संतोषी, विनम्र, परोपकारी एवं अपने आप में लीन रहना गिरधर के स्वभाव की पहचान है । कवि ने शांत रस के चित्रण में वैराग्य बोध के स्थान पर आत्मज्ञान का संदेश सरल भाषा में दिया है जो आम आदमी भी समझ सकता है । कवि का हृदय सात्त्विक है अतः इनका वर्णन पिता-पुत्री दोनों साथ बैठकर पढ़ सकें

एसा शुद्ध पवित्र और जीवन पाथेय् सम है । रामायण में रस भाव समृद्ध है । क्रमानुसार उल्लेख अपेक्षित है यथा –

4.9.2.1. करुण रस :

गिरधर कृत रामायण में करुण रस के अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं । कैकेयी दशरथ राजा से दो वरदान माँगती है, जिसमें राम को चौदह साल का वनवास और भरत को अयोध्या का राजसिंहासन है । राम के लिए वनवास सुनकर दशरथ राजा की स्थिति अत्यंत दयनीय हो जाती है । कवि कहते हैं कि –

पडया भूपति पृथ्वीमाहय, आंखे आंसुधार चाली त्यांहय,
अंग मांडीने बेठा थाय, खोळा पाथरी रहे छे राय ।। 2/7/14/150

अयोध्या का महान शक्तिशाली राजा दशरथ अपनी ही स्त्री के समक्ष निःसहाय, लाचार एवं दीन हीन होकर अश्रुपात करे इससे बड़ी करुणता क्या हो सकती है ?

ताड़का, सुबाहु, खर, दूषण आदि भयानक असुरों का संहार करनेवाले राम सीता हरण के बाद अपने आपको असहाय एवं अत्यंत दुःखी मानते हुए आम मानव की तरह कल्पांत करते हैं । राम सीता के विरह में इतने दुःखी हैं कि मूर्छित होकर गिर जाते हैं । पंचवटी के पेड़ों से सीता के विषय में पृच्छा करते हें । राम की करुणता चरम सीमा पर है यथा –

''हो जनकनी नंदनी रे, सुंदर चंपक कळी सुकुमार,
गौरी गजगामिनीरे, प्रिय मुज प्राण तणो आधार ।।3/18/10/252

राम अपने भाग्य का दोष मानते हुए कहते हैं कि –

''अहो दैव रुढियो रे, केम थयुं आवुं विपरीत काज;
कोण ए हरी गयुं रे ? कोणे लीधी अमारी लाज ।।3/18/12/252

करुण रस का यत्र तत्र चित्रण मिलता है । राम बोधी के कथन से गर्भवती सीता का त्याग करते हैं । सीता विलाप करती है । सीता की स्थिति अवर्णनीय है । गिरधर कवि कहते हैं कि

''ज्यम मच्छ तरफड़े तापे करा, सुकाय सरोवर पाणी;
ज्यम पूरवे वनमां पडी नैषधरायनी राणी वैदेही ।।
एम वैदेही विलपे अति घणुं, मुखे करतां रुदन,
सीता रोता रोयां तरु, पशु पक्षी जन वैदेही ।। 7/31/12/584

सीता का रुदन इतना हृदय द्रावक है कि पेड़ पौधे पशु–पक्षी आदि इनके साथ कल्पांत करने लगते हैं । करुण रस के चित्रण में गिरधर कवि सिद्धहस्त हैं ।

4.9.2.2. श्रृंगार रस :

साहित्य के जितने भी रस हैं उन सब में श्रृंगार रस को प्रधान स्थान प्राप्त है । श्रृंगार को रस राज कहा गया है । श्रृंगार का आकर्षक वर्णन गिरधर कवि ने अपनी रामायण में किया है । श्रृंगार रस में रूप वर्णन एवं नख शिख वर्णन की परंपरा होती है । रामायण के बालकाण्ड में सात वर्ष की सीता अपने स्वयंवर के पूर्व पार्वती की पूजा करने के लिए सखियों के साथ निकली है । सीता का सौंदर्य अवर्णनीय है । गिरधर कवि चित्रण करते करते अधाते नहीं है यथा –

''करे हथेळी राती चोळ, ओढ़ी चूंदडी रंग झबोळ;
मुखचंद्र कलंक रहित, आंख्य अणियाळी अंजन सहित
कवि क्यम करी वरणवे रूप ? कहेतां हारे गिरान भूप ।
एवी जनकसुता शुभअंग, वाडीमां साहेली संग ।। 1/33/15/101

इन्द्र शृंगी ऋषि का तप भंग करने के लिए अप्सराओं में श्रेष्ठ रंभा को भेजते हैं । शृंगी रंभा से मोहित होकर गृहस्थी जैसा व्यवहार करने लगते हैं । गिरधर कवि ने श्रृंगार का वर्णन इन शब्दों में किया है –

रमे रति सुख आसने भेद, काम व्याप्यो टाळयो निर्वेद;
माया ईश्वरनी बळवान, भूल्या जोग समाधि ध्यान ।।
बळवान इन्द्रिनुं ग्राम मन आकर्ष्युं अभिराम ।।
त्रिया मांहे थया तदाकार, जाण्यो जगत तणो व्यवहार ।।

1/11/25/26/31

कवि ने यहाँ श्रृंगार की चरमसीमा अंकित की है । कवि ने आवश्यकतानुसार श्रृंगार रस का चित्रण किया है । पुष्पवाटिका प्रसंग में राम सीता का प्रथम साक्षात्कार होता है । राम पुरुष है फिर भी सीता के रूप दर्शन में मर्यादा का पालन करते हुए पाये गये हैं । गिरधर कवि ने स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है कि

सामा सामी बंधायो तार, चारे नेत्र थयां तदाकार;
एक एकनी मूरति जेह, रुदे मांहे ठरी छे तेह ।
निज धर्म विचारी राम, चित्त राख्यं पोतानुं ठाम;
दृष्टि आडी करी तेणी वार, कहेशे लक्ष्मण आशो विचार ।।

1/33/24/25/102

राम लक्ष्मण से बड़े हैं, फिर भी मर्यादा का पालन करते हुए दिखाये गये हैं । कवि ने श्रृंगार रस के चित्रण में ऋजुता का प्रयोग किया है जो ध्यानाकर्षक है । पंचवटी में राम सीता अकेले हैं । प्रेमालाप कर रहे हैं । कवि ने इसका आधार 'हनुमन्नाटक' से लिया है । कवि ने मर्यादा भंग या लोक लाज की सीमा का उल्लंघन कहीं नहीं किया । कवि भक्त हृदयी है अतः वर्णन भी सरल शब्दों में करते हैं यथा

''क्यारे प्रभु कळी कुसुमनी भरता केशमां जो,
क्यारे करता केसर आड कपाळजो,

एम जनक सुताने रघुपति लाड लडावता जो
सकळ विश्वमां नहि उपमा समतोलजो ।।3/8/9/225

अतः यहाँ स्पष्ट फलित होता है कि कवि मध्यकलीन वर्णन परंपरा के कवि ज्ञाता हैं । श्रृंगार रस के चित्रण में कवि सिद्धहस्त हैं ।

यहाँ देवदत्त जोशी का मंतव्य यथार्थ ही है कि ‘‘शृंगार रसनी कविने फावट छे पण एमां सभानपणे एमणे मर्यादा जाळवी छे‘‘[242]

4.9.2.3. वीर रस :

वीर रस के वर्णन से पाठक या श्रोता सजग हो जाता है । गिरधर कृत रामायणका काव्य रूप आख्यान का है अतः वक्ता और श्रोता दोनों में विशेष उत्साह देखने को मिलता है । ‘रामायण’ के अनेक स्थानों में वीर रस का आकर्षक चित्रण पाया गया है । वाली और सुग्रीव के द्वंद्व युद्ध का उदाहरण देखें तो –

कंप्या दिग्गज सळक्यो शेष, भयं पाम्या ते अमर अशेष,
जेवा मेरु ने मंद्रा चळ, एहवा छे कपि स्थळ सबळ ।। 4/6/3/278

कवि शब्दों के कुशल चितेरे हैं । इनकी वर्णन शैली तादात्म्य संबंध स्थापित कर देती है । दृष्टि समक्ष पूरा दृश्य खड़ा हो जाता है । रामायण में कुंभकर्ण, इन्द्रजित, वीरभद्र, शत्रुध्न, लव–कुश इत्यादि के युद्ध का वर्णन है । राम–रावण के युद्ध में तो कवि ने कमाल कर दिया है । जैसे –

अंधकार थयुं नभ एव, विमान मूकी नाठा सहु देव,
वरसे मेघ रुधिरनो त्याहे, नक्षत्र तूटी पडे भू माहें,
घणां पात विद्युतना थाय, त्यांहां वायु भयंकर वाय,
पृथ्वी सहित साते पाताळ, डोलायमान थयां ते काळ ।। 6/49/5/6/491

वीर रस का स्थायी भाव उत्साह है । कवि ने नायक राम में दयालुता और धार्मिकता का योग दिखाया है । राम की शक्ति अपरिमित है । वीर रस

में ओज शैली का प्रयोग स्वाभाविक रूप से पाया जाता है । युद्ध वर्णन में कविने वीररस का लयबद्ध चित्रण किया है । एक उदाहरण देखें –

छुटे नाल जंजाल ने बाण भालां
फरे चक्र मुद्‌गर त्रिशुल तेज ज्वाळा
गदा सांग फरसी तुमर खड्‌ग हाथे;
*चाले गाजतां जोद्धनां जुथ साथे ।। **7/14/10/400***

मध्यकालीन गुजराती साहित्य में वीर रस के चित्रण में प्रेमानंद को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है । इनकी कृति 'रणयज्ञ' विशेष उल्लेखनीय है । गिरधर कवि ने प्रेमानंद के समान वीर रस का चित्रण किया है । डॉ. देवदत्त जोशी का कथन है कि "युद्ध माटे तैयार थयेलां रावणनुं वीररस युक्त वर्णन तो प्रेमानंदनी वाणीनुं स्मरण करावे एटलुं सुंदर छे.[243] अतः वीररस का वर्णन अदभुत है ।

4.9.2.4. वात्सल्य रस :

माता–पिता का अपने बच्चों के प्रति जो स्नेह होता है उसे वात्सल्य कहते हैं । वात्सल्य शब्द संस्कृत के वत्स शब्द से निष्पन्न हुआ है । वत्स का अर्थ बछड़ा होता है । गाय अपने बछड़े को जिस प्रकार स्नेह करती है उसी से वात्सल्य शब्द विकसित हुआ है । वात्सल्य रस में संतान और माता–पिता का स्नेह आधार स्तंभ है । हिन्दी साहित्य में वात्सल्य रस की श्रेष्ठ उदगाता महात्मा सूरदास ही हैं ।

तुलसीदास जी ने भी राम के बाल स्वरूप का मनभावन वर्णन सरल भाषा में प्रस्तुत किया है । उनका प्रसिद्ध पद 'ठुमक चलत रामचंद्र बाजत पैजनियाँ' आज भी लोकप्रिय है । रामायण में गिरधर कवि ने अनेकानेक स्थानों पर वात्सल्य रस की प्रस्तुति की है । यथा राम–लक्ष्मण आदि दो वर्ष के हैं । दशरथ राजा चारों पुत्रों के साथ खेलते हैं कवि कहते हैं कि –

खोळामां लेईने राजा बोलवुं शिखवता;
कर चपटी वगाडी सुतने नचावता
दशरथ पुत्रने जोईने प्रेम मन आणतात
पोतानुं भाग्य सराहे विधिने वखाणता ।।1/18/44/45/54

विश्वामित्र अपने आश्रम में होनेवाले यज्ञ की रक्षा हेतु दशरथ राजा के पास आते हैं । ताड़का, सुबाहु आदि असुरों से यज्ञ की रक्षा हेतु राम–लक्ष्मण की याचना करते हैं । दशरथ राजा की स्थिति दयनीय हो जाती है । यहाँ तक कि रोने लगते हैं । इसमें एक पिता का पुत्रों के प्रति स्नेह, वात्सल्य प्रकट होता है । राजा दशरथ 'विश्वामित्र' से कहते हैं कि –

''प्राणप्रिय रघुवीर न आपुं, ए मारुं जीवन;
गदगद कंठ थया एवुं कही, आंसु आव्यालोचन ।। 1/21/23/62

राम–लक्ष्मण सीता के वन जाने के समय दशरथ राजा की स्थिति अति दयनीय है । कौशल्या माता का रुदन वात्सल्य रस की चरम सीमा है, जैसे –

''मारा लाडकवाया लालजी क्यारे देखीश तारुं मुख ?
भूख्या तरस्या, वनमां थशो, कोण पूछशे सुख–दुःख ?2/9/32/159

चित्रकूट में सीता जनक मिलन प्रसंग में वाल्मीकि के आश्रम में सीता के प्रति स्नेह में राम के राज्याभिषेक के बाद हनुमान, सुग्रीव आदि के बिदाई प्रसंग में वात्सल्य रस का वर्णन सहज रूप से दर्शनीय है ।

4.9.2.5. शांत रस :

शांत रस में अध्यात्म अथवा तात्त्विक चर्चा का विशेष रूप से वर्णन होता है । संसार, समाज, गृहस्थ धर्म, स्तुति, उपदेश, प्रार्थना आदि के चित्रण में शांत रस का परिपाक विशेष रूप से देखने को मिलता है । कवि गिरधर ने कथा क्रम में आये हुए प्रसंगों में यथा स्थान शांत रस का आलेखन किया है । राजा दशरथ और कौशल्या के यहाँ राम का जन्म होता है । उस समय

समग्र देवता अदृश्य रहकर दशरथ के यहाँ पहुँच जाते हैं । राम की स्तुति करते हुए, ब्रह्मा कहते हैं कि –

जय जय अगम अगाध बोध अविचळ अविनाशी;
आदि पुरुष अव्यक्त, हरि सचराचरवासी,
अखिल विश्व आधार अमल अज अंतरजामी,
*पूरण काम परमेश, परात्पर व्यापक स्वामी ।। **1/15/1/2/43***

यहाँ स्तुति में शांत रस का आलेखन है । भरत राम–लक्ष्मण और सीता से मिलने के लिए चित्रकूट आते हैं । भरत राम को अयोध्या आने के लिए अनुनय विनय करते हैं । राम भरत को समझाते हैं । पिता जी ने वचन पालन हेतु अपने प्राणों का बलिदान दे दिया । अतः यही रघुकूल की रीत है । राम भरत को समझाने में सफल हो जाते हैं । राम कहते हैं कि –

"ते माटे भाई जाओ तमो, हशे अवधपुर मोझार;
*रुडी रीते पाळजो सहु, प्रजाने परिवार ।।" **2/21/40/193***

रामायण में अनेक स्थल पर राम की स्तुति पाई जाती है । अहल्या, परशुराम, विभीषण, हनुमान इत्यादि राम की स्तुति करते हैं । इनमें शांत रस का चित्रण सहज रूप से प्राप्य है ।

4.9.2.6. बीभत्स रस :

बीभत्स रस का स्थायी भाव जुगुप्सा है । सामान्य–तया ऐसा माना जाता है कि यह मनोविकार दुषित वस्तु के वर्णन से पैदा होता है । पाठक या श्रोता आलोच्य रस के पठन या श्रवण से नाक और भौंहे सिकुड लेता है । ऐसे वर्णन से घृणा का भाव उत्पन्न होता है । ऐसा वर्णन आम तौर से अस्वीकार्य है । इस प्रकार का वर्णन भय का भाव उत्पन्न करता है । गिरधर कवि ने आवश्यकतानुसार बीभत्स रस का चित्रण किया है । युद्धकाण्ड में राम–रावण का भयानक युद्ध बताया गया है । युद्ध की भयानकता रोंगटें खड़े

कर देती है । युद्ध की भूमि रक्त रंजित है । राक्षसों के अंगभंग शव चारों ओर दिखाई देते हैं । रावण का पुत्र अतिकाय और लक्ष्मण के बीच भयानक युद्ध होता है । कवि कहते हैं कि

"अतिकाय ने लक्ष्मण तणुं थयुं युद्ध दारुण त्यांहे,
शोणितनी सरिता वही, थयो संगमसागर मांहे ।।"6/20/28/417

रावण पुत्र मेघनाद (इन्द्रजित) निकुंभला देवी को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ करता है । उस समय का वर्णन कुछ इस प्रकार का है –

"रक्तोदके कर्युं छे स्नान रक्त वस्त्र अंगे परिधान;
सप्त शब पाथरियां त्यांहे वज्रासन करी बेठा ते माहे
आपे आहूति विप्रनुं मांस, अस्थिमाळा कंठे अवतंस;
मृत सर्प वींटया छे माथे, द्विज दंतनो सरूवो ग्रह्यो हाथे ।।

6/25/10/11/429

इसी प्रकार रावण मृत्युंजय का अनुष्ठान करता है । इसी यज्ञ के अनुष्ठान को हनुमान पूर्ण नहीं होने देते । यज्ञ के विध्न का वर्णन बीभत्स रस युक्त है यथा –

"मळमूत्र ते मध्ये कर्या, यज्ञ पात्र फोडया संग;
फाडी नाख्यां वस्त्र करियो, नग्न ते अज्ञान ।।" 6/46/17/486

इस प्रकार रावण का अनुष्ठान अपूर्ण रह जाता है । गिरधर ने बीभत्स रस का संक्षेप में वर्णन किया है ।

4.9.2.7 भयानक रस :

भयानक रस का स्थायी भाव भय है । आत्म रक्षा के द्वारा इसका क्षेत्र विस्तृत हो जाता है । भयानक रस के वर्णन में गिरधर कवि ने अनेक सुंदर प्रसंगों का आयोजन किया है । सीता की खोज के लिए हनुमान जब सागर पार करने के लिए हुंकार करते हैं उस समय का समग्र वातावरण कंपित हो

उठता है । पृथ्वी, आकाश पाताल, दशों दिशाएँ, शेषनाग, मेरूपर्वत पूरा ब्रह्मांड आदि थरथरा उठते हैं जैसे –

“भुभुकार नाद कयो तदा, खळभळयुं सकळ भूगोळ,
धरा कंपी ते समे, थयां सिंधुजळ अंडोळ,
एम खळ भळयां पाताळसाते, नभ थयो धुनिकार,
चळया दिग्गज शेष कंप्यो, मेरु ने मंदार ।।” ***5/2/7/8/306***

यह वर्णन परंपरित है । रावण वध के बाद राम का राज्याभिषेक होता है । धोबी के वचन से राम सीता का त्याग करते हैं । सीता को वन में जहाँ छोड़ा जाता है, वहाँ का वातावरण बहुत ही भयानक है यथा –

“व्याघ्र वरुने अजगर मोटा, पक्षी बोले क्रूर
अंधकार वन परवत संकुळ, नव देखाये सूर ।। ***7/26/12/575***

भयानक रस के वर्णन में अतिश्योक्ति का प्रयोग विशेष रूप से ध्यानाकर्षक है । ताड़का के शरीर के वर्णन में कुछ ऐसा ही देखने को मिलता है यथा –

“बार गाउलगी मुख पहोळुं छे, नेत्र जाणे अंगारजी,
पंच पंच कोशनो एकेको स्तन छे, शिरगिरिशृंग आकारजी ।।

1/27/9/80

4.9.2.8. हास्य रस :

गिरधर कवि ने रामायण में यथा स्थान हास्य रस का आलेखन किया है । कवि का हास्य–रस–वर्णन लोक परंपरा से युक्त है । इसमें मर्यादा का पालन किया गया है । सीता स्वयंवर प्रसंग में अनेक महारथी राजा आये हुए हैं । शिव धनुष टससे मस नहीं होता । लंका नरेश दशानन रावण धनुष के पास आता है । धनुष को चढ़ाने का उपक्रम करता है, तब उसकी स्थिति हास्य उत्पन्न करती है यथा –

"पछी अधर पीसे दंत रीसे, रक्त लोचन क्रोध;
धनुष ने तव उपाडयुं, घणुं जोर करीने जोध,
पर स्वेद चाल्यो अंगथी, ऊंचु कर्युं बळवान ।
घणो विश्वास चढ़ियो शूरने, थयुं मन घणुं अभिमान ।।"

1/37/26/27/112

रावण दशमस्तक और बीस भुजावाला होते हुए भी धनुष को चढ़ा नहीं पाता । इससे हास्य उत्पन्न होता है । रावण का भाई कुंभकर्ण अनेकानेक प्रयत्नों के बाद भी जाग्रत नहीं होता । यथा –

"हस्तिनीहारो हृदय उपर, चलावे छे तेह;
पण कुंभकरण नथी जागतो, ते महानिद्रिंत जेह ।
अनेक तरु नाकमां घाले, सर्पनो नहि पार
*ते श्वास केरा सपाटामां, ऊडी पडे पुर बहार ।।" **6/16/30/31/406***

इसके अलावा राम के साथ लव–कुश का युद्ध होता है । उस समय लव–कुश से राम प्रश्न पूछते हैं । बच्चे जो उत्तर देते हैं उससे हास्य उत्पन्न होता है ।

4.9.2.9. अदभुत रस :

हर्ष और विषाद की मिली हुई स्थिति आश्चर्यमय होती है । किसी अभूतपूर्व अथवा असाधारण वस्तु के श्रवण दर्शन से हृदय में उत्पन्न होनेवाला उद्गार या विस्मय अदभुत रस को उत्पन्न करने का सहभागी होता है । इस रस का स्थायी भाव आश्चय है । इसी के पूर्ण परितोष से श्रोता या पाठकों को अदभुत रस की प्रतीति होती है । आश्चर्योत्पादक कोई वस्तु या घटना यहाँ आलंबन विभाव के रूप में प्रस्तुत होती है । विलक्षणता या आकस्मिकता उदीपन विभाव के रूप में तथा रोमांच, स्तंभ, स्वेद एवं प्रफुल्लादि अनुभाव रूप में प्रकट होते हैं । इसमें जड़ता, आवेग, वितर्क, भ्रांति आदि संचारी रूप में

समाविष्ट रहते हैं । भगवान राम का दिव्य स्वरूप, आकाश मार्ग में उड़नेवाले हनुमान, लक्ष्मण के लिए पूरा पर्वत उठाकर लाते हनुमान, पुष्पक में राम द्वारा विशाल बंदर सेना, आदि को बैठाना, भरत द्वारा हनुमान को बाण पर बैठा कर भेजना, कुंभकर्ण को जगाने का उपक्रम, मेघनाद के कटे हुए हाथ से खत लिखना, हनुमान की छाती में सीता राम की छबि इत्यादि अनेक अदभूत रस के उदाहरण हैं । राम स्वर्ण मृग के पीछे दौडते हैं । मृग को बाण मारते हैं तब मृग के रूप में मारीच राक्षस वहाँ गिरता है । मरते समय उसके शरीर से एक तेज प्रकट होता है जैसे –

“तेना अंगथी तेज नीकळयुं, चैतन्य आत्मा जेह;
रघुपतिना मुख माँहे प्रवेश्युं, मुक्ति पाम्यो तेह ।।” 3/14/8/242

रामायण में अनेक स्थलों पर अदभूत रस का चित्रण पाया जाता है ।

रामायण का प्रधान रस

गिरधर ने अपनी रामायण में यथायोग्य सभी रसों का परिपाक किया है । जिसमें करुण, शांत, वीर और श्रृंगार मुख्य हैं । अदभूत, भयानक, हास्य, बीभत्स, वात्सल्य और भक्ति यत्र तत्र है । कहना होगा कि कवि ने वीर और अदभुत रस के द्वारा पाठकों और श्रोताओं को अवश्य मंत्रमुग्ध किया है । इसका कारण यह है कि ‘रामायण’ एक आख्यान है अतः श्रोता और दर्शकों के साथ वक्ता का (प्रस्तोता का) तादात्म्य संबंध होता है । अतः प्रभाव तत्क्षण देखने को मिलता है । देवदत्त जोशी कहते हैं कि रामायण में कवि को करुण और शांत रस अधिक प्रिय हैं । “ए सौमां वधारेमां वधारे कवि खील्या होय तो करुण अने शांत रसनी जमावटमां”[244]

'रामचरितमानस' और 'रामायण' में छंद योजना

मनुष्य स्वभावतः अपनी अभिव्यक्ति स्वर के आरोह–अवरोह से युक्त कर ऐसा बना लेता है कि वह दूसरों को प्रभावित कर सके । छंद शब्द का अर्थ 'बंधन' अथवा 'छादन' होता है । छंदलय के गेय रूप को समय की सुनिश्चित इकाइयों में बाँधकर प्रेषणीय बना देता है । पं. रामदहिन मिश्र के अनुसार 'छंद ही काव्य का संगीत है । संगीत में जो संयम ताल से आता है, वही संयम कविता में छंद से आता है ।"[245] लय विधान के अनुसार छंदशास्त्रियों ने छंद के दो प्रकार बतलाए हैं । प्रथम मात्रिक और द्वितीय वर्णिक है । मात्रिक छंद में चरण की मात्रा गिनी जाती है, अथवा यों कह सहते हैं कि जिस छंद के चारों चरण समान मात्राओं से निर्मित हों, वह मात्रिक छंद कहलाता है । वर्णिक छंद में वर्ण को गिनकर छंद को पहचाना जाता है । मात्रिक छंद में यति का विधान है :

4.10.1 'रामचरितमानस' में छंद योजना

गोस्वामी तुलसीदास जी कलात्मक छंद योजना में सिद्धहस्त हैं । इन्होंने सर्वथा छंद सौंदर्य का ध्यान रखा है । मानस में प्रत्येक सोपान का शुभारंभ संस्कृत श्लोक से हुआ है । प्रत्येक सोपान में नव छंदो का भी समाहार है । तुलसी ने दोहा चौपाई से बढ़कर दूसरा छंद अवधी भाषा के लिए उपयुक्त नहीं समझा, इसलिये दोहा–चौपाई को रामचरितकी भाषा के लिए उपयुक्त नहीं समझा, इसलिये दोहा–चौपाई को रामचरितमानस की रचना का मेरुदंड माना है । प्रथम मात्रिक यंद देखें तो –

4.10.1.1. चौपाई :

मानस में सर्वाधिक चौपाई छंद का प्रयोग हुआ है । इस छंद के प्रत्येक चरण में सोलह (16) मात्राएँ विद्यमान रहती हैं । पहले चरण का दूसरे से

और तीसरे चरण का चौथे से तुक मिलता है । प्रत्येक चरण के अंत में यति होती है । प्रत्येक चरण के अंत में जगण रहता है । जैसे –

देखन बागु कुअँर दुइआए । बय किसोर सब भाँति सुहाए ।

स्याम गौर किमि कहौं बखानी । गिरा अनयन नयन बिनु बानी ।।

1/229/1/134

मानस में कहीं कहीं पंद्रह मात्राओं की चौपाइयों का भी उल्लेख है ।

4.10.1.2. दोहा :

चौपाई के उपरांत मानस में दोहा छंद का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है । इस छंद में चार चरण होते हैं । प्रथम और तृतीय चरण में तेरह तेरह (13) मात्राएं और द्वितीय और चतुर्थ चरण में ग्यारह ग्यारह (11) मात्राएं होती हैं, जैसे

बार बार कौसल्या, बिनय करइ कर जोरि ।
अब जनि कबहूँ व्यापै, प्रभुमोहि माया तोरि ।। ***1/202/9/10/121***

4.10.1.3. सोरठा :

दोहे की भाँति सोरठा का भी मानस में प्रमुख स्थान है । इसका आकार–प्रकार एवं कार्य व्यापार भी दोहे से अत्यंत मिलता–जुलता है । इसमें में दोहे की भाँति कुल मिलाकर अड़तालीस मात्राएँ होती है; किन्तु इसका संघटन दोहे की विपरीत दिशा में होता है । दोहे के विषम चरणों में (प्रथम और तृतीय) में तेरह–तेरह मात्राएँ एवं समचरणों में (द्वितीय एवं चतुर्थ) में ग्यारह ग्यारह मात्राएँ होती हैं; किन्तु सोरठे के विषम चरणों में (प्रथम और तृतीय) ग्यारह–ग्यारह तथा समचरणों में (द्वितीय एवं चतुर्थ) तेरह–तेरह मात्राएँ होती हैं । एक उदाहरण प्रस्तुत है –

गयउ मोर संदेह सुनेउँ, सकल रघुपति चरित ।

भयउ राम पद नेह तव प्रसाद बायस तिलक ।। ***7/68/464***

4.10.1.4. हरिगीतिका :

हरिगीतिका छंद में विशिष्ट सौंदर्य विद्यमान होता है । संगीत की उष्मा से अनुप्राणित हो जाने के कारण इस छंद में नई स्फुर्ति उत्पन्न होती है । इस छंद के प्रत्येक चरण में अठ्ठाईस (28) मात्राएँ होती हैं । सोलह (16) और बारह (12) मात्राओं पर यति और अंत में लघु–गुरु होते हैं । राम जन्म, धर्नुर्भंग, सीता विवाह, रावण युद्ध आदि प्रसंगों में कवि ने विशेष रूप से इस छंद का प्रयोग किया है । हरिगीतिका छंद के पश्चात् दोहा छंद भी इसमें जुड़ा रहता है ।

करम लिखा जौं बाउर नाहू । तौकत दोसु लगाइअ काहू ।।
तुम्हसन मिटहिं कि बिधि के अंका । मातुव्यर्थ जनिलेहु कलंका ।।
जनि लेहु मातु कलंकु करना परिहरहु अवसर नहीं ।
दुखु सुखुजो लिखा लिलार हमरें जाब जहँ पाउब तहीं ।।
सुनि उमा बचन बिनीत कोमल सफल अबला सोचहीं ।।
बहु भाँति बिधि हिलगाइदूषन नयन बारि बिमोचहीं ।।
दोहा : तेहि अवसर नारद सहित अरु रिषि सप्त समेत ।
समाचार सुनि तुहिनगिरि गवने तुरत निकेत ।। ***1/97/7 से 14/70***

4.10.1.5. त्रिभंगी :

इस छंद के प्रत्येक चरण में बत्तीस (32) मात्राएँ होती हैं । दस, आठ, आठ और फिर छः मात्राओं के बाद विश्राम होता है । आदि में जगण का निषेध होता है । अंत में गुरु का समावेश होता है । इसका प्रयोग विशेषतः स्तुति में पाया गया है । रामजन्म के समय कौशल्या की स्तुति त्रिभंगी छंद में है जैसे :–

भए प्रगट कृपाला, दीनदयाला कौसल्या हितकारी ।
हरषित महत्तारी, मुनिमनहारी, अदभुत रूप बिचारी ।।
लोचन अभिरामा, तनुधनश्यामा, निज आयुध भुज चारी ।

भूषन बन माला, नयन बिसाला, सोभासिंधु खरारी ।। 1/192/1/116

***4.10.1.6.** तोमर :*

इस छंद के प्रत्येक चरण में बारह–बारह (12) मात्राएँ होती हैं । अंत में लघु–गुरु होता है । मानस में इस छंद का प्रयोग युद्ध वर्णन में भली–भाँति हुआ है । एक युद्ध वर्णन का दृष्टांत देखें तो

हा राम हा रघुनाथ । कहि सुभट मीजहिं हाथ ।
एहि बिधि सकल बल तोरि । तेहिं कीन्ह कपट बहोरि ।।
प्रगटेसि बिपुल हनुमान । धाए गए पाषान ।
तिन्ह रामु धेरे जाइ । चहुँ दिसि बरुथ बनाइ ।।

6/101 11 से 14/508

***4.10.1.7** चोपैया :*

इस छंद के प्रत्येक चरण मे तीस (30) मात्राएँ होती हैं । प्रत्येक चरण में दस, आठ व बारह के बाद विश्राम होता है । अंत में एक सगण और एक गुरु का प्रयोग होता है । इस छंद का भी प्रयोग स्तुति में अधिक हुआ है । उदा. राम जन्म के पूर्व की यह शब्दावली द्रष्टव्य है । मानस के बालकाण्ड में ही इस छंद का उपयोग हुआ है, जैसे –

सुर मुनि गंधर्बा मिलि करि सर्बागे बिरंचि के लोका ।
सँग गोतनुधारी भूमि बिचारी परम बिकलभय सोका ।।
ब्रह्माँ सबजाना मन अनुमाना मोर कछु न बसाई ।
*जा करि तैदासी सो अबिनासी हमरेउ तोर सहाई ।। **1/184/9/112***

***4.10.1.8** अरिल्ल :*

इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक में सोलह सोलह – सोलह मात्राएँ होती हैं । प्रत्येक चरण के अंत में भगण का होना अनिवार्य होता है । यह छंद मानस के सिर्फ लंकाकाण्ड में ही है, जैसे

अगुन सगुन गुन मंदिर सुंदर । भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर ।
काम क्रोध मद गज पंचानन । बहुं निरंतर जन मन कानन ।।

6/115/3/518

यहाँ तक हमने रामचरितमानस में पाए जाने वाले मात्रिक छंदों की व्याख्या की । अब हम मानस में पाए जाने वाले वर्णिक छंदों की व्याख्या करेंगे ।

4.10.1.2.1 अनुष्टुप :

इसके प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं । प्रत्येक समचरण में सप्तमवर्ण लघु होता है तथा हर एक विषम चरण में पाँचवाँ वर्ण लघु तथा छठ्ठा वर्ण दीर्घ होता है जैसे –

वर्णानामर्थसंधानां रसानां छंद सामपि ।
मंगलानां च कर्त्तारौ, वंदे वाणी विनायकौ ।। 1/1/1/

4.10.1.2.2. इन्द्रवज्रा :

इस छंद के प्रत्येक चरण में दो तगण (SSI, SSI) एक जगण (ISI) और दो गुरु (SS) होते हैं । इस प्रकार कुल मिलाकर ग्यारह (11) वर्ण होते हैं । मानस में इसका उपयोग बहुत कम हुआ है ।

एक उदाहरण देखें, जिसमें राम की वंदना की गई है ।

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्ग सीतासमारोपितपामभागम् ।
पाणौ महासायक चारु चाप नमामि रामं रघुवंश नाथम ।। 2/1/3

4.10.1.2.3. त्रोटक :

इसके प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं । इस प्रकार यह बारह अक्षरों का वर्णित वृत्त है । तृतीय, षष्ठ, नवम् एवं द्वादश अक्षर गुरु होते हैं जैसे

जय राम रमा रमनं समनं । भवताप भयाकुल पाहिजनं ।
अवधेस सुरेस, रमेस बिभो । सरनागत मागत पाहिप्रभो ।।
7/14/1/536

4.10.1.2.4. *भुजंग प्रयात वृत :*

इसके प्रत्येक चरण में चार यगण (ISS) होते हैं । इस छंद में चार चरण होते हैं । इस प्रकार ये बारह अक्षरों का होता है । इसमें प्रथम सप्तम एवं दशम अक्षर लघु होते हैं जैसे

नमामीश मीशान निर्वाण रूपं । विभुं व्यापक, ब्रह्म बेदस्वरूपं ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाशमाकाश वासां भजोऽहं ।।
7/108/1/586

4.10.1.2.5. *मालिनी वृत्त :*

इस छंद के चारों चरण में पंद्रह (15) वर्ण होते हैं । प्रत्येक चरण में नगण (111) नगण (111) मगण (SSS) यगण (ISS) यगण (ISS) होते हैं । एक उदाहरण सुन्दरकाण्ड से देखें तो

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं,
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकल गुण निधानं वानराणामधीशं ।
*रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ।। **5/1/3/414***

4.10.1.2.6 *रथोद्धता वृत्त :*

इस छंद के प्रत्येक चार चरणों में ग्यारह (11) अक्षर होते हैं । प्रत्येक चरण में रगण (SIS) नगण (III) रगण (SIS) अंत में एक लघु (1) और एक गुरु (S) का होना निश्चित है । रामचरितमानस में इस छंद का उपयोग केवल उत्तरकाण्ड में ही हुआ है, उदा. देखें तो –

कुन्दइन्दुदर गौर सुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ।
कारुणी ककलकज्जलोचनं, नौमि शंकर मनङ्ग मोचनम् ।। 7/1/525

4.10.1.2.7 वसंतकिलका वृत्त :

इसके प्रत्येक चरण में चौदह वर्ण होते हैं । प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण (SSI) भगण (SII) दो जगण (ISI) (ISI) और दो गुरु (SS) होते हैं । पदान्त में यति होती है । एक उदाहरण दृष्टव्य है –

नानापुराण निगमागमसम्मतं यद
रामायणे निगदितंक्वचिदन्यतोऽपि ।
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा
भाषा निबंधमतिमंजुल मातनोति ।। 1/1/118

4.10.1.2.8. वंशस्थविलय वृत्त :

इस छंद के प्रत्येक चरण में बारह (12) वर्ण होते हैं । प्रत्येक चरण में क्रमशः जगत (ISI), तगण (SSI) जगण (ISI) और रगण (SIS) होते हैं । मानस के अंतर्गत यह छंद केवल अयोध्याकाण्ड में ही पाया गया है । उदाहरण देखें तो

प्रसन्नतां या नगताभिषेकतस्यथा न मम्ले वनवासदुःखतः ।
मुखाम्बुजश्री रघुनन्दनस्य मे सदास्तुसा मुंजल मंगल प्रदा ।।

2/1/2/203

4.10.1.2.9 शार्दूलविक्रीडित वृत्त :

इस छंद के प्रत्येक चरण में उन्नीस उन्नीस (19–19) अक्षर होते हैं । प्रत्येक चरण में मगण (SSS), सगण (IIS), जगण (ISI), सगण (IIS) व दो

तगण (SSI) (SSI) एवं अंत में गुरु (S) वर्ण होता है । रामचरितमानस के बालकाण्ड में यह वृत पाया गया है ।

यन्मायावशवति विश्वमखिलं ब्रह्मदिदेवासुरा ।
यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेभ्रमः ।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधे स्तितीर्षावतां,
*वन्देडहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ।। **1/1/** श्लोक **6/1***

***4.10.1.2.10.** स्त्रग्धरा वृत्त :*

इसके प्रत्येक चरण में इक्कीस वर्ण होते हैं ।

इसमे मगण (SSS), रगण (SIS), भगण (SSI), नगण (III), और तीन मगण (SSS), (SSS), (SSS) रहते हैं । रामचरितमानस के लंका काण्ड में इस छंद का प्रयोग हुआ है, जैसे :

रामं कामारि सेव्यं भवभयहरणं कालमत्ते भसिंह,
योगीन्दं ज्ञान गम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारम् ।
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं,
*वन्दे कन्दावदातं सरसिजनयनं देव मुवीर्श रूपम ।। **6/1/448***

***4.10.1.2.11** नागस्वरुपिणी वृत्त :*

इस छंद में चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में आठ आठ अक्षर होते हैं । प्रत्येक चरण में एक जगण (ISI) एक रगण (SIS) एक लघु (I) तथा एक गुरु (S) होता है । प्रत्येक चरण में द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ तथा अष्टम वर्ण का गुरु होना आवश्यक है । अरण्यकाण्ड में अत्रि मुनि द्वारा की गई स्तुति इसी छंदमें है जैसे –

नमामि भक्त वत्सलं । कृपालु शील कोमलं ।।
*भजामि ते पदांबुजं । अकामिनं स्वधामदं ।। **3/4/1/359***

सारतः कहना होगा कि रामचरितमानस में तुलसी ने हरिगीति का छंद का सर्वाधिक प्रयोग किया है । इससे कवि के लय और संगीत संबंधी ज्ञान का पता चलता है । साथ साथ कवित्व संबंधी उनकी रुढि उदघोषणा को सम्बल मिलता है । हरिगीति का छंद सरल है । कवि ने छंद के माधुर्य और सरलता को भली भाँति पहचाना है । कवि ने वर्णिक और मात्रिक दोनों छंदों का प्रसंगानुकूल प्रयोग किया है । कवि ने छंद के प्रयोग के पूर्व रस एवं प्रसंग का ध्यान रखा है । इन्होंने संगीतात्मकता, स्फुर्तिप्रवाह सुबोधता, विशदता आदि तत्त्वों को ध्यान में रखकर छंदों का प्रयोग किया है । यत्र तत्र इन्होंने अपने छंद विधान में जायसी आदि कवियों की रचना पद्धति का भी अनुसरण किया है । तुलसी ने जहाँ छंद पविरर्तन किए हैं उसमें हेमचंद्र के काव्यानुशासन को दृष्टि समक्ष रखा है । इनकी छंद योजना रसानुकूल है । संक्षेण में, मानस में छंद संघटना श्रेष्ठ है ।

4.10.2. गिरधर कृत 'रामायण' में छंद योजना :

गिरधर कृत रामायण में प्रसंगानुकूल छंदों का प्रयोग पाया जाता है । कवि अधिक पढ़े लिखे नहीं थे । कवि के पास काव्य संबंधी विशद् ज्ञान भी नहीं था । कवि ने अपने गुरु पुरुषोतम जी महाराज से काव्य संबंधी आवश्यक ज्ञान प्राप्त किया था । इन्होंने पुराणों का भी अभ्यास किया था । कवि किसी भी कृति का सृजन करने के पूर्व जिस शास्त्र या पुराण का आधार मिलता हो उसे एकाग्र चित्त होकर हृदयस्थ करते थे । बाद में उसी अंश को गद्य में लिखते थे । आगे उसी कथा को भिन्न रागों में विभाजित करके ग्रंथ या आख्यान पूर्ण करते थे । मित्रों या समाज के सन्मुख लय में प्रस्तुत करते । लोग भाव-विभोर होकर प्रेम से श्रद्धा से काव्य को लिख लेते । कवि के जीवन काल में ही इनके ग्रंथों को प्रसिद्धि मिल चुकी थी । कवि की रचना शैली पर दयाराम, प्रेमानंद और शामळ ये कवि त्रिपुटी की छाया देखने को

मिलती है । कवि ने काव्य के बाहय क्लेवर के स्थान पर आंतर क्लेवर पर अर्थात् प्रतिपाद्य विषय भक्ति और नाम स्मरण पर अधिक बल दिया है । 'रामायण' में वर्णिक और मात्रिक दोनों प्रकार के छंद पाये जाते हैं । इसका कारण यह है कि 'रामायण' का काव्य रूप आख्यान का है । देवदत्त जोशी कहते हैं कि ''कवि पोते रचेला काण्डोना कथा विभाग ने अध्याय कहे छे, पण खरेखर तो ते वलण अने ढाळमां बंधायेलां कड़वां ज छे । घणे ठेकाणे अध्यायनां प्रारंभमां मुख बंध मोढियुं छे ।[246] रामायण में प्रारंभ में मंगल स्तुति, आगे वर्णित काण्ड का कथासार, राग निर्देश, काण्ड के अंत में कथा का मूल स्त्रोत एवं फलश्रुति ये सब आख्यान के ही तत्त्व माने जाते हैं । सर्वप्रथम हम मात्रिक छंद का उल्लेख करें :

4.10.2.1. चौपाई छंद :

चौपाई छंद मात्रिक छंद है । इसके प्रत्येक चरण में सोलह सोलह (16–16) मात्राएँ रहती है । प्रत्येक चरण के अंत में गुरु की मात्रा का होना नियम है । पहले चरण का दूसरे से और तीसरे चरण का चतुर्थ चरण के अंत में तुक मिलता है । प्रत्येक चरण के अंत में यति होती है । रामायण में कहीं–कहीं एकाध मात्रा अधिक पायी जाती है । इसका कारण यह है कि भावप्रवाह में कवि बह जाते हैं तो ऐसा क्षम्यदोष हो ही जाता है । एक उदाहरण देखें, जो बालकाण्ड से लिया गया है ।

एवां वचन विधिना सुणी, रावणने थइ चिंता घणी ।
मनमां वात विचारी तदा, दशरथने मारुं सर्वदा ।। 1/6/5/16

4.10.2.2. दोहा छंद :

इस छंद में कुल मिलाकर अडतालीस मात्राएँ होती हैं । इस छंद के विषम चरणों में (प्रथम और तृतीय) में तेरह और समचरणों में (द्वितीय एवं चतुर्थ) ग्यारह मात्राओं का विधान है । द्वितीय और चतुर्थ पंक्तियों के अंत में

अन्त्यानुप्रास का नियम है । चरणों के अंत में जगण नहीं होना चाहिए । उत्तरकाण्ड से एक उदाहरण देखें तो –

भावे करीने भेटया तदा, शिव ने श्री रघुनाथ ।
आसन पर बेसाडिया, ग्रही शंकर नो हाथ ।। 7/103/12/747

कवि ने रामायण में दोहा छंद का व्यापक प्रयोग किया है ।

4.10.2.3. सोरठा छंद :

इसका आकार प्रकार एवं कार्य व्यापार दोहे से अत्यंत मिलता जुलता है । इसमें भी दोहे की भाँति अडतालीस मात्राएँ होती हैं, किन्तु इनका संघटन दोहे की विपरीत दिशा में होता है । दोहे के विषम चरणों में (प्रथम एवं तृतीय) में तेरह–तेरह मात्राएँ होती हैं एवं सम चरणों में (द्वितीय एवं चतुर्थ) ग्यारह ग्यारह मात्राएँ होती है, किन्तु सोरठे के विषय चरणों (प्रथम एवं तृतीय) में ग्यारह ग्यारह तथा समचरणों में (द्वितीय एवं चतुर्थ) तेरह तेरह मात्राएँ होती है । रामायण में सोरठे के यही विधान को स्वीकारा गया है । सुन्दरकाण्ड से एक उदाहरण देखें तो –

हनुमंत केरां वचन सुणीने, हसियो रावण राय ।
पछी पूंछ बाळवा कारण सर्वे, करवा लाग्या उपाय । 15/10/1/325

4.10.2.4. छप्पय :

छप्पय छंद वातावरण को आत्मसात करने का प्रमुख गुण रखता है । श्रोता या पाठक को रसानुभूति तत्क्षण होने लगती है । उनकी दृष्टि समक्ष पूरा चित्र उपस्थित हो जाता है । पाठक या श्रोता जाने–अनजाने भाव प्रवाह में बह जाता है । गिरधर ने अनेक स्थानों पर छप्पय छंद का मनोहारी प्रयोग किया है । युद्ध प्रसंग एवं राम के धनुर्भंग प्रसंग में इस छंद का रूप विशेष दर्शनीय है । बालकाण्ड का धनुर्भंग प्रसंग ही देखें तो

धरधरा धर्क धर हरत, डर दिग्गज गयंदलर;
अरकचंद रथ खरत झरत निरझर अनीकधर ।
सरित सिंध सर डोल, गरत गिर गरज धोर कर,

चकित कच्छ अहि कोल नायकाथकित नरतकर ।।

अज इन्द्र चलिक दशकंध डर, चित्कार चंड धुन अलख
दशरथनंदन गिरधर कहै जनक नगर तोरयो धनखा ।।

1/ 38/ 37/ 38/ 116

धनुष भंग से सारी सृष्टि में हाहाकार हो गया ।

4.10.2.5. *हरिगीतिका छंद :*

इस छंद के प्रत्येक चरण में अठायीस (28) मात्राएँ होती हैं । सोलह (16) और बारह (12) मात्राओं पर यति और अंत में लघुगुरु का क्रम है । रामायण में गिरधर कवि ने अनेक स्थलों पर इस छंद का प्रयोग किया है । युद्धकाण्ड से एक उदाहरण देखें तो –

ए प्रकारे कपि रामभक्ते, असुरनी सेना हणी;
मांहे तणाया हय गज असुर, चाली सरित शोणिततणी ।।

16/48/11/490

हनुमान ने असुरों की सेना को सर्वनाश इस प्रकार किया कि रक्त की सरिता बहने लगी, जिसमें हाथी, घोड़े और राक्षस सब बह गये ।

4.10.2.6. *कवित सवैया :*

गिरधर कवि ने कवित सवैया और छप्पय छंदों के प्रयोग में यथा संभव देवी देवताओं की स्तुति की है, जिसमें तत्सम शब्दावली का प्रयोग दर्शनीय है । सर्वप्रथम कवित्त का उदाहरण लें जिसमें राम की स्तुति की गई है । काव्य रचना में एक निश्चित लय देखने को मिलता है । जैसे –

दशरथ के नंदन रावणकुल के निकंदन भारहारी जगबंधन
भानु धरमध्वज धारी है ?

जटायु की जटा देख नेनन में आयोजल पिता जैसी क्रिया कीनी ऐसे उपकारी है;

जासु भइ देव धुनि, ताको ध्यान धरत मुनि ऐसे पद पावन केवट धोय पीनो वारी हे;

कहत हे गिरधारी पदरजकी बलिहारी ।

गौतम की नारी वाकुं छिन्न में उद्धारी है ।। 7/104/1/749

अब सवैया का एक उदा. देखें

भूदेव अरि अध ज्यार दियो, पद तीरथराज कियो बनमें ।

करुणायतनं कमनीय धनं, यह मंगल रूप बसो मनमें ।। 7/104/4/749

इसके प्रत्येक चरण में तत का योग होता है ।

4.10.2.7 त्रोटक छंद :

यह वर्णिक छंद है । इसमें बारह वर्ण होते हैं । इसके प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं । (IIS, IIS, IIS, IIS) इसके तृतीय, षष्ठ, नवम एवं द्वादश अक्षर गुरु होते हैं । गिरधर कवि ने इसका भी यथा योग्य प्रयोग किया है । स्तुति वंदना में त्रोटक छंद का प्रयोग अधिक पाया गया है । राम की स्तुति में इसका प्रयोग देखें तो

अजरामर सिद्ध गति न लहे, निगमागम पूरण ब्रह्म कहे;

भक्तगोसुर साहयक सत्यव्रतं, धर्मस्थापन ए अवतार धृतं ।।

7/83/5/700

इसके अलावा कवि ने अनेक छंदों का प्रयोग किया है । जैसे लावणी, प्रबंध, भुजंग, पद्धरी छंद, परज, अथप्रबंध, भैरव, सिंधुडो, भूपाळ, मलार, बिलावल, मारु, सामेरी, बिभास, सारंग, भुजंगी, मेवाडो, देशाख, धवण धनाश्री, धनाश्री, धनाक्षरी इत्यादि का प्रयोग किया है । आख्यान प्रस्तुत करते समय प्रस्तोता और दर्शकों का (श्रोताओंका) तादात्म्य संबंध स्थापित हो जाता है ।

अतः कथा में परिवर्तन लाने हेतु और कथा में रोचका प्रदान करने हेतु आंगिक अभिनय को छंद के प्रयोग द्वारा प्रस्तुत करने में विशेष सहायता मिलती है । कवि ने स्वयं अपने लिखे हुए आख्यान या ग्रंथ को श्रोता या भक्तों पर क्या प्रभाव पड़ता है यह स्वयं देखा है । अतः समय समयानुसार इसमें आवश्यक परिवर्तन भी कवि ने किए हैं । कवि ने यथा संभव आम जनता की समझ में आए और इनकी सीमित ज्ञान परिधि के वृत में रह कर ही 'रामायण' की रचना की है । इसी कारण इस कृति को लोकप्रियता प्राप्त हुई है । देवताओं की स्तुतिओं में तत्सम् अर्थात् संस्कृत पदावली युक्त शैलीका प्रयोग दर्शनीय है । गिरधर कवि ने यथा संभव सरल सहज बानी में लोगों के लिए लोगों समक्ष अपनी लेखनी का चमत्कार प्रस्तुत किया है जिसमें कवि सफल हुए हैं ।

4.11 'रामचरितमानस' और 'रामायण' में अलंकार योजना :

4.11.1 *'रामचरितमानस' में अलंकार योजना :*

अलंकार का अर्थ होता है शोभा बढ़ाना, अलंकृत करना । अलंकार शब्द अलं + कृत के योग से बनता है । इसकी व्युत्पत्ति दो प्रकार से दी जाती है ।

अलंकारोतीति अलंकार – अर्थात् जो किसी की शोभा बढ़ाये, किसी को अलंकृत करें, वह अलंकार है ।

अलंक्रियतेडनेनेत्यलंकारः

अर्थात् जिसके द्वारा कोई पदार्थ आभूषित हो उसे अलंकार कहते हैं । हम दोनों व्युत्पत्तियों के आधार पर कह सकते हैं कि अलंकार काव्य के शोभा–विद्यायक आवश्यक तत्त्व है । काव्य में अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से हो यह परम् आवश्यक है । काव्य क्षेत्र में भावों का उत्कर्ष, वस्तु के रूप, गुण और क्रिया की तीव्र अनुभूति के लिए अलंकार आवश्यक

है । पंडित सीताराम चतुर्वेदी का कथन है कि 'अलंकार वह निश्चल योजना है, जिसके अंतर्गत काव्य का स्वरूप उसके विविध अंग, अंगों के प्रकरण, प्रकरणों के अंतर्गत कथा, वर्णन, संवाद और उन सब में व्याप्त एक विशेष उद्‌देश्य की अभिव्यक्ति सब जाते हैं और यह सब पूरी योजना जिस अनेक भाषा के विधानों से पूरी होती हैं उन सबकी समष्टि ही अलंकार है ।[247] अतः अलंकारोंका सम्यक् प्रयोग आवश्यक है । तुलसीदास अलंकारवादी कवि नहीं थे । इन्होंने कोरा वाग्जाल खड़ा करने के लिए अलंकारों का प्रयोग नहीं किया । मानस में शब्द और अर्थ से संबंध रखनेवाले अलंकारों एवं उनके विविध कलात्मक रूपों का कहीं भी अभाव नहीं है । कवि स्वयं अलंकार को सिर्फ उपकरण मात्र मानते हैं । कवि ने कहा है कि –

विधु वदनी सब भाँति सँवारी ।

सोह न बसन बिना नारी । 1/10/4/24

अर्थात् जिस प्रकार चंद्र के समान मुखवाली सब प्रकार के श्रृंगारों से सजाई हुई सौभाग्यवती स्त्री भी कपड़ों के बिना शोभा नहीं पा सकती । मानस में प्रायः सभी अलंकार पाये जाते हैं । हम सर्व प्रथम शब्दालंकार का प्रयोग देखेंगे ।

4.11.1.1. अनुप्रास :

प्रायः वर्ण साम्य को अनुप्रास कहते हैं । वर्ण में स्वर और व्यंजन दोनों आ जाते हैं । प्रायः स्वर की आवृत्ति में कोई चमत्कार नही ंहोता अतः व्यंजनों की आवृत्ति में ही अलंकार माना गया है । व्यंजनों की आवृत्ति के साथ साथ यदि स्वरों की आवृत्ति हो तो आनुप्रासिक सौंदर्य में अतीव वृद्धि हो जाती है । मानस में अनुप्रास की छटा सर्वत्र विद्यमान है । अनुप्रास का एक उदाहरण बालकाण्ड से ले रहे हैं –

बँदउँ नाम राम रघुवर को । हेतु कृसानु भानु हिमकर को ।

बिधि हरि हरमय वेद प्रान सो । सगुन अनूपम गुन निधान सो ।।

1/19/1/2/30

मानस की कोई चौपाई या छंद ऐसा नहीं है, जिसमें अंत्यानुप्रास न हों । इससे काव्य में मधुरता आ जाती है ।

4.11.1.2. यमक अलंकार :

जहाँ पंक्ति में एक शब्द की एक बार से अधिक बार पुनरावृत्ति हों और प्रत्येक बार उस शब्द का अर्थ भिन्न भिन्न हों वहाँ यमक अलंकार होता है । एक उदाहरण बालकाण्ड से :

अस मानस मानस चख चाही । भइ कवि बुद्धि विमल अवगाही ।

1/39/9/41

यहाँ मानस शब्द की दो बार आवृत्ति है । दोनों में अर्थ सार्थकता है । पहले शब्द का अर्थ मानसरोवर और द्वितीय शब्द का अर्थ मन होता है । मानस में यमक का प्रयोग अनेक स्थान पर पाया गया है ।

4.11.1.3. श्लेष अलंकार :

जहाँ एक शब्द का प्रयोग एक बार ही हों मगर प्रत्येक बार अर्थ भिन्न हों । वहां श्लेष अलंकार होता है । (एक शब्द के अधिक अर्थ जहाँ निष्पन्न हों) एक दृष्टांत लंकाकाण्ड से ले रहे हैं ।

रावन सिर सरोज बनचारी । चलि रघुबीर सिलीमुख धारी ।।

6/92/7/501

यहाँ 'सिलीमुख' शब्द में अभंग पद श्लेष है, जिसमें बाण और भ्रमर दो अर्थ छिपे हुए हैं । अतः श्लेष अलंकार है ।

4.11.1.4. वक्रोक्ति अलंकार :

किसी एक अभिप्राय से कहे गये वाक्य का श्रोता द्वारा अन्य अर्थ ग्रहण किया जाय वहाँ वक्रोक्ति अलंकार पाया जाता है । राम वन में जा रहे हैं ।

सीता राम के साथ वन में जाना चाहती हैं । राम वन के कष्टों को बताते हुए न आने के लिए समझाते हैं । सीता वक्रोक्ति में उतर देती हुयी कहती है कि –

मैं सुकुमारि नाथ बनजोगु ।
*तुम्ह हि उचित तप मो कह भोगु । **1/67/8/234***

***4.11.1.5.** वीप्सा अलंकार :*

जहाँ मनोगत भावों को व्यक्त करने के लिए एक शब्द की अनेकशः आवृत्ति हों वहाँ वीप्सा अलंकार होता है । हर्ष, आदर, घृणा आश्चर्य, शोक आदि मनोगत भाव हैं । राम वन गमन के कारण दशरथ राजा की स्थिति दयनीय हो जाती है । राम शब्द का छः बार दशरथ उच्चार करते हुए स्वर्ग गमन करते हैं ।

‘राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम ।
*तनु परिहरि रघुवर बिरहँ राउ गयउ सुरधाम ।। **2/155/9.10/275***

***4.11.1.6.** उपमा अलंकार :*

उप + मा = समीप रखकर नापना । जहाँ प्रस्तुत वस्तु या पदार्थ की अन्य अप्रस्तुत वस्तु या पदार्थ के साथ कोई विशेष गुण, क्रिया, स्वभाव आदि की समानता के आधार पर तुलना की जाय तब वहाँ उपमा अलंकार होता है । उपमा के चार अंग हैं । (1) उपमेय (2) उपमान (3) साधारण धर्म (4) समानता वाचक शब्द । इसमें सा, जैसा, समान, से, सदृश, सरीसा सम–तुल्य, भांति, तरह, प्रकार, ज्यों, इव, यथा आदि शब्दों का प्रयोग होता है । जहाँ उपमा के चारों अंग प्रस्तुत हों वहाँ पूर्णोपमा और चारों में से ऐक अंग (तत्व) अप्रस्तुत हों वहाँ लुप्तोपमा अलंकार होता है । गोस्वामी तुलसीदास ने उपमा का प्रयोग स्थान–स्थान पर किया है । डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र उपमा अलंकार के मानस में प्रयोग के विषय में कहते हैं कि – “उपमा को गोस्वामी

जी ने बहुत ऊँचा स्थान दिया है । उन्होंने उसे सलिल का मनोरम वीचि विलास कहा है । उपमा न केवल एक व्यापक अलंकार है किन्तु वर्ण्य विषय को हृदयंगम करा देने या उसके प्रत्यक्ष दर्शन करा देने का एक उत्तम साधन है, उसी तरह जैसे वीचि–विलास जल का प्रत्यक्ष दर्शन करा देता है ।[248]

पूर्णोपमा का एक उदाहरण अयोध्याकाण्ड से –

'सुनिसुरसरि सम पावनि बानि ।

*भई सनेह बिकल सबरानी ।। **2/283/8/335***

यहाँ उपमा के चारों अंग पाये जाते हैं । अतः पूर्णोपमा है । कौसल्या की गंगा के सदृश पवित्र बानी सुनकर सभी रानियाँ स्नेह से व्याकुल हो उठीं ।

4.11.1.7 **रूपक अलंकार :**

भारतीय अलंकार शास्त्र में सादृश्य मूलक अलंकारों के अंतर्गत रूपक का सर्वोपरि स्थान है । वर्णित भाव की सफल अभिव्यक्ति में रूपक योजना ही सर्वाधिक सहायक सिद्ध होती है । रूपक तुलसी का सर्वाधिक प्रिय अलंकार है । रामचरितमानस में पग–पग पर हम रूपक की विधायिनी शक्ति का चमत्कार पाते हैं । आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार 'इसमें संदेह नहीं कि तुलसी के समान रूपक का बंधान बाँधनेवाला हिन्दी में कोई कवि नहीं हुआ है ।"[249] तुलसी का रूपक अलंकार चिताकर्षक है । जैसे

संपति चकई भरतु यक मुनि आयसु खेलवार ।

*तेहि निसि आश्रम पिंजर राखे भा भिनुसार । **2/215/303***

4.11.1.8 **परिणाम अलंकार :**

जहाँ उपमान उपमेय का कार्य करता हुआ दिखायी पड़ता है वहाँ परिणाम अलंकार होता है । रूपक की योजना के साथ परिणाम अलंकार अनेक

स्थलों पर स्वाभाविक रूप से आ गया है । एक उदाहरण बालकाण्ड से देखें तो –

पानि सरोज सोह जयमाला ।
*अवचट चितए सफल भुआला ।। **1/248/6/143***

यहाँ सीता के हाथ में जयमाल सुशोभित है । सब राजा अचकचाकर देखने लगे । कवि ने सहज स्वभावानुसार अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है ।

4.11.1.9 संदेह अलंकार :

प्रकृत में अप्रकृत के संशय को संदेह कहते हैं । जब मन किसी एक विचार बिन्दु पर न टिक कर कई बिंदुओं पर प्रगतिशील रहता है तब संदेह अलंकार का सृजन होता है । दो उदाहरण किष्किंधा काण्ड से देखें –

(1) को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा । छत्री रूप फिरहु बन बीरा ।

4/1/7/10/394

(2) की तुम्ह तीनि देव महँ कोऊ । नर नारायन की तुम्ह दोऊ ।।

वनवासी राम लक्ष्मण को देखकर हनुमान की सहज संदेह भावना का चित्रण संदेह अलंकार का सुंदर उदाहरण है ।

4.11.1.10 भ्रांतिमान अलंकार :

सादृश्य के कारण एक वस्तु को दूसरी वस्तु मान लेना भ्रांतिमान है । भ्रांति का अर्थ है धोखा, इसलिए भ्रांतिमान का अर्थ है धोखे से युक्त । रामचरितमानस में अशोक वृक्ष पर बैठे हुये हनुमान द्वारा मुद्रिका गिराने पर सीता का अंगार समझना या हनुमान का संजीवनी बूटी वाले पर्वत को ले कर जाते हुए भरत द्वारा राक्षस समझने में भ्रांतिमान अलंकार का सुन्दर विनियोग हुआ है –

कपि करि हृदयँ विचार दीन्हि मुद्रिकाडारि तब ।
*जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ।। **5/12/13/14/420***

संजीवनी बूटी वाले पर्वत का उदाहरण यह है –

देखा भरत बिसाल अति निसिचर मन अनुमानि ।
बिनु फर सायक मारेउ चाप श्रवन लगि तानि ।। ***6/28/9/10/479***

4.11.1.11 *उल्लेख अलंकार :*

निमित्त भेद के कारण एक ही विषय अथवा अनुभाविता का अनेकशः ग्रहण उल्लेख अलंकार कहलाता है । इस अलंकार में एक वस्तु का अनेक प्रकार से वर्णन किया जाता है । एक साथ दो उदाहरण बालकाण्ड से देखें तो

जिन्ह के रही भावना जैसी । प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी ।।
देखहिं रूप महा रनधीरा । मनहुँ बीर रसु धरें सरीरा ।।
डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी । मनहुँ भयानक मूरति भारी ।।
रहे असुर छल छोनिप बेषा । तिन्ह प्रभु प्रगट कालसम देखा ।।

1/241/4 से 7 /140

4.11.1.12. *अपन्हुति अलंकार :*

जहाँ उपमेय का निषेधकर उपमान का आरोपण किया जाय वहाँ अपन्हुति अलंकार होता है । एक उदा. हम किष्किंधाकाण्ड से ले रहे हैं –

मैं जो कहा रघुबीर कृपाला । बंधु न होइ मोर यह काला ।।

4/8/4/398

सुग्रीव वाली के संबंध में राम से कहता है कि बाली मेरा भाई नहीं किन्तु मेरा काल है । यहाँ निषेधपूर्वक आरोप पाया गया है । अपन्हुति के सभी भेद अत्यंत कलात्मक एवं स्वाभाविक रूप से रामचरितमानस में विद्यमान हैं ।

4.11.1.13 उत्प्रेक्षा अलंकार :

उत्प्रेक्षा का अर्थ संभावना होता है । सादृश्य मूलक अलंकारों में तुलसीदास का प्रिय अलंकार उत्प्रेक्षा है । इन उत्प्रेक्षाओं में रूप, गुण, क्रिया, भाव की अलौकिक व्यंजना स्वाभाविकता, काव्य की मार्मिकता तथा विदग्धता सर्वत्र विद्यमान हैं ।

जहाँ प्रस्तुत में अप्रस्तुत की संभावना की जाये तब वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है । रामचरितमानस में उत्प्रेक्षा की बहुलता है । कवि ने वस्तुत्पेक्षा के माध्यम से सीता के सौंदर्य का चित्रण इन शब्दो में किया है –

जनु बिरंचि सब निज निपुनाई । बिरंचि विश्व कहँ प्रगटि देखाई ।

1/230/6/134

सीता का सौंदर्य कल्पनातीत है । शब्दों से परे हैं । कवि कहते हैं कि सीता का सौंदर्य ऐसा है कि मानों ब्रह्मा ने अपनी सब शक्ति को रूप दिखाने में ही लगा दिया हो ।

4.11.1.14 अतिशयोक्ति अलंकार :

अतिशयोक्ति का अर्थ है – अतिशय (बढ़ी–बढ़ी) उक्ति । जहाँ उपमेय को सर्वथा छिपाकर उपमान से उसका अभेदाध्यवसान दिखाना–अभिन्नता प्रदर्शित करना अतिशोक्ति अलंकार कहलाता है । तुलसी ने अतिशयोक्ति अलंकारों के प्रयोग में कल्पना का उत्कृष्ट रूप दिखाया है । इससे एक ओर वर्ण्य में उत्कर्ष आता है तो दूसरी ओर सहृदय भावुक के हृदय में कौतूहल उत्पन्न होता है । कवि ने रूपकातिश्योक्ति, भेदातिशयोक्ति, असंबंधातिशयोक्ति, संबंधातिशयोक्ति और पौर्वापर्य विपयत्मिका, अतिशयोक्ति ये पाँचों भेदों का भी यथायोग्य प्रयोग किया है । हम एक उदाहरण देखें जो बालकाण्ड से हैं

राम सीय सिर सेंदुर देहीं । सोभा कहिन जाति बिधि केही ।।
अरुन पराग जलजु भरि नीकें । ससिहि भूष अहिलोभ अमी कें ।।

1/325/8/9/181

यहाँ राम का हाथ = कमल, सिंदूर = अरुण पराग, सीता मुख = चंद्रमां, सौंदर्य = अमृत है । यहाँ कमल आदि उपमानों ने क्रमशः हाथ, सिंदूर, मुख और सौंदर्य आदि का अध्यवसान किया है । अतः यहाँ रूपकातिशोक्ति अलंकार है ।

4.11.1.15 दीपक अलंकार :

जहाँ प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत में एक धर्म संबंध हो अथवा अनेक क्रियाओं का एक ही कारक हों वहाँ दीपक अलंकार होता है । नीतिकथन एवं सिद्धांत निरूपण के लिए दीपक अलंकार का प्रयोग होता है । रामचरितमानस में दीपक की योजना पर्याप्त रूप से विद्यमान है । हम दो उदाहरण प्रस्तुत करते है जो सुंदरकाण्ड जो और बालकाण्ड से हैं –

ढोल गवाँर सूद्र पसुनारी । सकल ताड़ना के अधिकारी ।। 5/59/6/444

राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार ।

तुलसी भीतर बाहेरहुं जौं चाहसि उजियार ।। 1/21/9/10/31

4.11.1.16 दृष्टांत अलंकार :

जहाँ उपमेय और उपमान में बिंब प्रति बिंब भाव हो, जहाँ वास्तविक भिन्नता होते हुए भी समानता का भाव दिखाई दे । इसमें साद्यर्म्य और वैद्यर्म्य भी होता है । अयोध्याकाण्ड में भरत की निस्पृहता के लिए दृष्टांत अलंकार का प्रयोग किया है –

भरत हि होइ न राजमदु बिधि हरिहर पद पाइ ।
कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीर सिंधु बिनसाइ ।। 2/231/311

भरत के चरित्र के संबंध में कहा गया है कि विष्णु तथा शिव के पद को भी पाकर भरत को कभी राजमद नहीं हो सकता । क्या कभी काँजी के बिन्दु कणों से भी क्षीर सागर विनिष्ट हो सकता है !

4.11.1.17 निर्दशना अलंकार :

निदर्शना का अर्थ है उदाहरण या दृष्टांत । जहाँ वस्तुओं का परस्पर संबंध संभव अथवा असंभव होकर उनमें सादृश्य का आक्षेप करें वहाँ निर्दशना अलंकार होता है । रामचरितमानस में तुलसी ने निदर्शना का स्वाभाविक रूप से प्रयोग किया है । एक उदाहरण अयोध्याकाण्ड से देखें तो –

निज प्रतिबिंबु बरुकि गहिजाई । जानि न जाइ नारि गति भाई ।।

2/47/8/225

अयोध्या के नर–नारी कैकेयी को इंगित करके नारी स्वभाव की चर्चा करते हैं कि हे भाई ! अपना प्रतिबिंब संभव है पकड़ा जा सके किन्तु त्रियाचरित जाना नहीं जा सकता । अतः यहाँ निदर्शना अलंकार है ।

4.11.1.18 व्यतिरेक अलंकार :

उपमान की अपेक्षा उपमेय का उत्कर्ष वर्णन व्यतिरेक अलंकार है । व्यतिरेक अलंकार में उपमान की अपेक्षा उपमेय अधिक गुणशाली होता है । रामचरितमानस में अनेक स्थलों पर व्यतिरेक स्वाभाविक रूप से पाया जाता है । एक उदा. उत्तरकाण्ड से देखें

संत हृदय नवनीत समाना । कहा कविन्ह परि कहै न जाना ।।
निज परिताप द्रवइ नवनीता । पर दुःख प्रवहिं संत सुपुनीता ।।

7/25/6/7/603

संतों का हृदय मक्खन जैसा होता है । मक्खन अपने दुःख (परिताप) से द्रवीभूत होता है किन्तु संत तो दूसरों के दुःख से द्रवीभूत होते हैं ।

4.11.1.19 अर्थान्तरन्यास अलंकार :

जहाँ सामान्य का विशेष से और विशेष का सामान्य से समर्थन किया जाय तो वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है । इसके प्रायः चार भेद हैं । ये चारों भेद रामचरितमानस में प्राप्त होते हैं यथा –

भलो भलाइहि पैलहइ लहइ निचाइहि नीचु ।
सुधा सराहिअ अमरताँ गरल सराहिअ मीचु ।। ***1/5/21***

कत बिधि सृजी नारिजगमांही ।
पराधीन सपनेहुँ सुखु ना हीं ।। ***1/102/55/72***

अस कहि चला विभीषनु जबहीं । आयूहीन भए सब तबहीं ।
साधु अवग्या तुरत भवानी । कर कल्यान अखिल कै हानी ।।
5/42/1/2/435

बड़ अधिकार दच्छ जब पावा । अति अभिमानु हृदयँ तब आवा ।।
नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं । प्रभुता पाइजाहि मद नाहीं ।।
1/60/7/8/51

4.11.1.20 विभावना अलंकार :

जहाँ प्रसिद्ध कारण के अभाव में कार्य की उत्पत्ति का वर्णन हो अथवा जहाँ क्रिया के अभाव में फलोत्पत्ति हों, जहाँ कारण के अभाव में फलोत्पत्ति हों वहाँ विभावना अलंकार होता है । विभावना अर्थात् विशेष प्रकार की कल्पना । मानस में विभावना के प्रत्येक भेदों का उदाहरण सहज रूप से प्राप्त होता है । मर्यादा पुरुषोतम राम के महिमा मंडित व्यक्तित्व के सर्वत्र दर्शन होते हैं । एक उदा. बालकाण्ड से –

बिनु पद चलइ सुनइबिनुकाना । करबिनु करमकरइ बिधिनाना ।
आनन रहित सकल रस भोगी । बिनु बानी बकता बड़जोगी ।।
1/118/5/6/80

शंकर पार्वती को राम के पर ब्रह्म स्वरूप को समझाते हुए कहते हैं कि जो परमेश्वर बिना पाँव चलता है, बिना कान के सुनता है । बिना हाथों के

नाना प्रकार के कार्य करता है, मुख के बिना सब प्रकार के स्वादों को भोगता है बिना जीभ के बड़े वक्ता है ।

4.11.1.21 प्रतीप अलंकार :

प्रतीप का अर्थ है उल्टा – विपरीत । इसमें उपमेय उपमान का संबंध उल्टा हो जाता है अथवा जहाँ प्रसिद्ध उपमान को उपमेय बना दिया जाये वहाँ प्रतीप अलंकार होता है । तुलसी ने मानस में प्रतीप का अनेक स्थानों पर प्रयोग किया है । समीक्षकों ने प्रतीप के पाँच भेद माने हैं । एक उदाहरण अयोध्याकाण्ड से ले रहे हैं –

बिदा किए बटु विनयकरि फिरे पाइ मन काम ।।
उतरि नहाएजमुनजल जो सरीर समस्याम ।। 2/109/254

राम ने विनय करके ब्रह्मचारियों को बिदा किया । (वे) मनोकामना पूर्ण करके लौटे । (तत्पश्चात्) उन्होंने (यमुना) पार करके शरीर के सदृश श्याम यमुना जल में स्नान किया । यमुना जल को शरीर सदृश बताने की बजाय उपमान ने उपमेय के समान बताया है । राम का शरीर श्याम था । उसकी श्यामलता मोहक और प्रसिद्ध है, यहाँ उपमेयत्व का त्याग करके उपमानत्व दिखाया है ।

अतः कहना होगा कि तुलसीदास महाकवि थे । उनकी दृष्टि व्यापक थी । वे कवि प्रतिभा सम्पन्न होने के साथ साथ शास्त्र के भी प्रकाण्ड पंडित थे । मानस में जहाँ कहीं भी काव्य धर्म विशिष्ट रमणीयार्थ प्रतिपादक पंक्तियों की रचना हुई है अथवा जहाँ कहीं भी मोक्ष धर्म विशिष्ट व्यवस्थित उपस्थापन हुआ है, वहाँ प्रायः सर्वत्र ही अलंकारों का विधान किया गया है । पंडित रामचंद्र द्विवेदी 'तुलसी साहित्य रत्नाकर' में कहते हैं कि "हमारी तुच्छ बुद्धि के अनुसार स्यात ही कोई अभागा अलंकार निकल आवें जिसका प्रयोग कविराज की ललित लेखनी ने न किया हो ।"[250] अलंकार–विधान में तुलसी की विशिष्ट प्रतिभा के प्रमाण मिलते हैं । इन्होंने मानस में अद्वितीय कौशल से

अलंकारों की योजना बनाई है, जिससे हमें उनकी तीव्र एवं सारग्राहिणी मेघाशक्ति तथा व्यापक व्यावहारिक ज्ञान का परिचय मिलता है । उनकी अलंकार योजना में न तो केशव के समान काव्य शास्त्रीय ज्ञान के प्रदर्शन की प्रवृत्ति है और न ही रीतिकालीन कवियों की भाँति कविता को अनेक अलंकारों से सजाने की धुन । उनका उद्‌देश्य कलात्मक प्रदर्शन न होकर भक्ति भावना की अभिव्यति एवं जीवन दर्शन का स्पष्टीकरण करना है । रामचरितमानस में आत्म परिचय देते हुए ये काव्य कला के क्षेत्र में शालीनतापूर्वक अपनी अयोग्यता घोषित करते हैं, तथा नम्रतापूर्वक अलंकार शास्त्र के ज्ञान की हीनता भी प्रकट करते हैं, फिर भी उन्होंने अलंकार के क्षेत्र में अपनी अद्वितीय प्रतिभा का परिचय दिया है । संक्षेप में, तुलसी ने अलंकारों के प्रयोग में भी धर्म, शील एवं चरित्र की त्रिपथगा को निमज्जित करके सुज्ञ पाठकों को पवित्र करने का प्रयास किया है ।

4.11.2 गिरधर कृत 'रामायण' में अलंकार योजना :

गिरधर कृत रामायण एक प्रबंध कृति है । इसका काव्य रूप आख्यान का है । वक्ता के कथा प्रसंग का श्रोता या दर्शकों पर तत्क्षण प्रभाव पाया जाता है । अतः कवि ने अपनी कृति रामायण में यथा संभव तरलता, प्रवाहमयता और प्रभावोत्पादक बनाने का सुप्रयास किया है । गिरधर कवि के जीवनकाल में ही गुजरात में कवि प्रेमानंद का नाम सुप्रसिद्ध था । ओखाहरण एवं भागवत प्रत्येक घर में आस्थापूर्वक पढ़े जाते थे । गिरधर ने स्वयं ओखाहरण एवं भागवत का सस्वर गान करके अप्रतिम आनंद का अनुभव किया है । अतः गिरधर ने प्रेमानंद से ही प्रेरणा पाकर सरल भाषा में रामायण का सर्जन किया । कवि ने यथा संभव सात्विक रस को अपनाया है । जिसे पुत्री और पिता दोनों एक साथ ग्रंथ का अध्ययन कर सकें । कवि ने अलंकार का कला प्रदर्शन के लिए नहीं किन्तु अपनी भक्ति भावना और जीवन दर्शन को

समझाने के लिए ही आयोजन किया है । रामायण में अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से हुआ है । हम महत्त्वपूर्ण अलंकारों का उल्लेख करें तो –

4.11.2.1. अनुप्रास अलंकार :

अनु+प्रास = पीछे आकर मिलना । जहाँ एक ही वर्ण की अनेक बार आवृत्ति हों, अथवा समान वर्णों की ध्वनि की अनेक बार आवृत्ति हों । वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है । रामायण में अनुप्रास का सर्वाधिक प्रयोग पाया गया है । इसके प्रयोग से एक प्रकार की लय उत्पन्न होती है । भाषा में रोचकता आती है । एक उदा. देखें जो स्तुति रूप में है –

नमो शुद्ध चैतन्य साक्षीप्रकाशं, नमो इंदियातीत सहु क्षेत्रवासं;
नमोज्ञानगम्यं, परापार भूपं, अजं शाश्वतं ब्रह्म वेद स्वरूपं ।।

6/29/3/44

यहाँ अनुप्रास का सौंदर्य दर्शनीय है । कवि ने प्रार्थना, स्तुति आदि में अनुपास का विशेष प्रयोग किया है ।

4.11.2.2. यमक अलंकार :

जहाँ एक शब्द की एक से अधिक बार आवृत्ति हो और प्रत्येक बार भिन्न अर्थ फलित हो वहाँ यमक अलंकार होता है । एक उदाहरण अयोध्याकाण्ड से ले रहे हैं, जिसमें दशरथ राजा राम शब्द का एक से अधिक बार उच्चार करते हैं । प्रत्येक स्थान पर अलग अर्थ निष्पन्न होता है जैसे

राम राम कहेता मरण पाम्या, थया राम स्वरूप ।। 2/15/3/174

4.11.2.3. वर्णानुप्रास अलंकार :

जहाँ एक ही वर्ण की एक से अधिक बार आवृत्ति हों वहाँ वर्णानुप्रास अलंकार होता है । कवि ने अनेक स्थानों पर इसका सफल प्रयोग किया है । एक उदाहरण हम देखें जो युद्धकाण्ड से लिया गया है :

चालक चक्रमाया चपल चारुगात्रा ।

जीवन जानकी नाथ जनक जा मात्रा ।। 6/29/1/441

यहाँ च और ज की आवृत्ति अनेक बार हुई है ।

4.11.2.4. उपमा अलंकार :

प्रस्तुत वस्तु या पदार्थ की अप्रस्तुत के साथ तुलना की जाये और समानता हेतु तुलनावाचक शब्द जैसे सम तुल्य सदृश भाँति सा जैसा आदि का प्रयोग हों वहाँ उपमा अलंकार होता है । उपमा अलंकार में उपमेय, उपमान वाचक और साधारण धर्म चार अंग होते हैं । गिरधर कवि ने रामायण में अनेक स्थानों पर उपमा की जड़ी लगा दी है । एक उदाहरण किष्किंधाकाण्ड से देखें तो –

सर्व सरिता जळ मळीने जळनिधिमां जाय रे;

ज्यम जीव पामी हरिपदने, अचल निरभेथायरे ।। 4/8/7/284

यहाँ 'ज्यम' शब्द उपमा का सूचक है ।

4.11.2.5. रूपक अलंकार :

जहाँ उपमेय का उपमान में आरोप हों, दोनों अभिन्न हों एक रूप हो और उसमें समानता सूचक शब्द न हो वहाँ रूपक अलंकार होता है । गिरधर ने उपमा के बाद रूपक का सर्वाधिक प्रयोग किया है । हम एक उदाहरण उत्तरकाण्ड से ले रहे हैं, जिसमें कवि ने राम कथा को रूपक के द्वारा समझाने का प्रयास किया है जैसे –

श्रीरामचरित्र सुधारस सिंधु, पावन सुखद अपारजी;

शमन त्रिताप शीतल परिपूर्ण, अर्थरत्न मांहे सार जी,

कथा कल्पतरु पूरण कामना, शाखाकाण्ड सुजाण जी;

उपशाखा अध्याय विचित्र अति, चोपाई पत्र प्रमाण जी ।

यहाँ रूपक की अनेक स्थानों पर आवृत्ति दर्शनीय है ।

4.11.2.6. उत्प्रेक्षा अलंकार :

उत्प्रेक्षा का अर्थ संभावना होता है । जहाँ प्रस्तुत में अप्रस्तुत की संभावना की जाये तब वहां उत्प्रेक्षा अलंकार होता है । इसमें मानो, मनु, मनहुँ मानहुं, जानो, जन,, ज्यों, सा आदि शब्दों का प्रयोग होता है । गिरधर ने रामायण में अनेक स्थानों पर इसका मनोहारी प्रयोग किया है । इससे कथा प्रवाह में रोचकता आ जाती है । एक उदाहरण हम देखें, जो किष्किंधाकाण्ड से है जिसमें, कवि ने वर्षाऋ़्तु का सुंदर भाववाही चित्रण किया है –

दादूर धुनि चोदिश करे, जाणे पढ़े बटुक अनेक रे । 4/8/9/284

यहाँ 'जाणे' शब्द उत्प्रेक्षा का द्योतक है ।

4.11.2.7 दृष्टांत अलंकार :

जहाँ उपमेय एवं उपमान वाक्य में तथा उन दोनों के साधारण धर्मों के बिंब प्रतिबिंब भाव की प्रतिष्ठापना देखी जाती है वहाँ दृष्टांत अलंकार होता है । गिरधर ने रामायण में दृष्टांत का सुंदर आयोजन किया है । एक उदाहरण बालकाण्ड से देखें तो –

अयोध्यावासी नरनार तेना हरखनो नहि पार ।
उदय चंद्रनो इच्छे चकोर, धन चाहे बपैया मोर ।। 1/14/47/42

4.11.2.8. स्वभावोक्ति अलंकार :

जहाँ कलापक्ष का प्राधान्य न हो भाव पक्ष केन्द्र में हो वहाँ स्वभावोक्ति अलंकार होता है । आम तौर से स्वाभाविक वर्णन जहाँ हो वहाँ स्वभावोक्ति अलंकार पाया जाता है । गिरधर ने प्रकृति वर्णन में बाल लीलाओं में इत्यादि स्थान पर इसका प्रयोग किया है । एक उदाहरण बालकाण्ड से देखें जिसमें राम की बाल लीला स्वाभाविक रूप से बताई गई है –

भोजन समे बोलावे तो ये नथी आवता ।
नासीने बारणे जाय रडता ने रिसावता ।। 1/18/48/54

4.11.2.9. अतिशयोक्ति अलंकार :

अतिशयोक्ति का अर्थ है बढ़ा चढ़ा कर कहना । जहाँ मर्यादा का लोप हो । उपमेय का निगरण कर उपमान के साथ उसकी अभेद प्रतीति कराना अतिशयोक्ति अलंकार है । गिरधर कवि ने अनेक स्थान पर अतिशयोक्ति का सुंदर आयोजन किया है । एक उदाहरण बालकाण्ड से देख रहे हैं जिसमें ताड़का का रूप अतिशयोक्ति पूर्ण है –

बार गाउ लगी मुख पहोळुं छे, नेत्र जाणे अंगारजी;
पंच पंच कोशनी एक एक स्तन छे, शिर गिरिशृंग आकारजी ।।

1/27/9/81

4.11.2.10. अन्योक्ति अलंकार :

अन्योक्ति अर्थात् अन्य उक्ति । जहां एक पदार्थ के लिए अन्य का उल्लेख किया जाय वहाँ अन्योक्ति अलंकार पाया जाता है । गिरधर ने अनेक स्थान पर इसका प्रयोग किया है । हम एक उदाहरण अरण्यकाण्ड से ले रहे हैं, जिसमें शूर्पणखा और लक्ष्मण का संवाद है । लक्ष्मण शूर्पणखा के वचनों से चलित नहीं होते । यथा –

जेने घेर काम गोधन, ते न होय दरिद्रीजन;
जेने आंगणे सुरतरु लीख, ते शुं करवाने मागे भीख ?
नंदनवननो भ्रमर निवास, न ले अर्फपुष्पनी वास,
*आम आत्मलाभे जे संतुष्ट ते न थाय विषयथी पुष्ट ।। **3/10/10/230***

4.11.2.11 निदर्शना अलंकार :

यह सादृश्य मूलक अलंकार है । जहाँ संभव या असंभव वस्तु के साथ संबंध लेकिन बिंब प्रतिबिंब भाव का सूचक हो वहाँ पर यह निर्देशना अलंकार होता है । इनके चार भेद हैं । गिरधर कवि ने निर्देशना का प्रयोग रामायण में अनेक स्थानों पर किया है । रावण विभिषण को युद्ध भूमि में कटू वचन कहता है । दृष्टांत युद्धकाण्ड से है –

अल्या नपुंसक धिक्कार तुजने, शत्रुने शरणे गयो;
तुं असुर कुळमां अवतरीने, कुबुद्धि कायर थयो ।
अल्या अमे तारुं कर्युं पालन ते सर्व मिथ्या थयुं,
ज्यभ भस्ममां अवदान आपे, एम तुज पर ते थयुं ।।

6/39/29/29/468

4.11.2.12 अनन्वय अलंकार :

जहाँ एक ही पदार्थ को उपमेय एवं उपमान दोनों में वर्णित किया जाए वहाँ अनन्वय अलंकार होता है । गिरधर ने उत्तरकाण्ड में लोमश रामायण में इसका उदाहरण दिया है यथा –

भूमि रजकण गगन तारा, मेघबिंदु प्रमाण;
बुद्धिमान ते गणना करे, हरिगुण अपरिमित जाण ।।

7/47/65/622

4.11.2.13 अर्थान्तरन्यास अलंकार :

जहाँ किसी पदार्थ का सामान्य का विशेष से अथवा विशेष का सामान्य से समर्थन किया जाय तो वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है । इस अलंकार के चार भेद हैं । गिरधर कवि ने रामायण में अर्थान्तरन्यास का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया है । एक उदाहरण हम किष्किंधाकाण्ड से ले रहे हैं, जिसमें कवि गिरधर सत्संग की महिमा के साथ राम की स्तुति करते हैं –

स्फटिक मुक्ता श्वेतसम पण मूले मोती जणाय;
तक्र पयनुं पान करतां स्वादथी ओळखाय,
एम इतर जनने भक्तमां अंतर घणुं कहेवाय,
*विषयथी दुःख ऊपजे, सत्संगथी सुख थाय ।। **4/1/11/265***

इस प्रकार गिरधर कृत रामायण में अलंकार योजना है । कवि ने आवश्यकतानुसार अलंकारों का प्रयोग किया है । कवि के लिए अलंकार साधनमात्र है, साध्य नहीं । कवि ने कहीं भी अलंकारों के प्रयोग के लिए

कथाप्रवाह या रस में बाधा उत्पन्न नहीं की है । स्वाभाविक रूप से ही अलंकारों का प्रयोग किया है । देवदत्त जोशी गिरधर कवि के अलंकारों के प्रयोग के संबंध में स्पष्ट रूप से कहते हैं कि “गिरधरनी आ कृतिमां अलंकारों थोड़ा अने सादा छे. ज्यां ज्यां आलंकारिक वर्णन आवे छे त्यां रस क्षति करनार नीवडया नथी पण स्वाभाविकताथी कविनी वाणीमां वणाइ जइ काव्य पुरुषना देह साथे पहेलेथीज जोडाई गया छे । कवितामां ज्यां ज्यां अलंकार जणाय छे त्यां त्यां कविनी वाणीनी प्रौढ़ता ने लीधे अलंकारनुं सौंदर्य एनी मेळे झळकी ऊठेलुं जणाय छे । जो के अलंकारों रुढ़ मध्यकालीन परंपराना ज छे पण मध्यकालीन अलंकार समृद्धिना कविना अभ्यास ने परिणामे ए अलंकार वैभव स्वाभाविक स्वरूपे कृतिमां आवेलो छे एटलुं नक्की छे ।”[251]

संदर्भ सूची :

1	There can be no doubt about its general acceptance over the whole of the Gangetic Valley His great art is better known than the Bible in England. सन् 1903 के रायल एसियाटिक के जर्नल, पृ. 459, जी. ए. ग्रियर्सन
2	कवि गिरधर जीवन अने कवन – प्राच्य विद्यामंदिर, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, 1982, पृ. 1
3	डॉ. विजयपालसिंह – हिन्दी अनुसंधान दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, प्रकाशन 1978, पृ. 284
4	डॉ. एस. गुलाम रसूल – तुलनात्मक अनुसंधान एवं उसकी समस्याएँ । (लखनऊ हिन्दी साहित्य भण्डार, प्रकाशन. 1980), पृ. 35
5	दुर्थातानां श्रमार्तानां शोकालीनां तपस्विनां । विश्रान्ति जननं लोके नाट्य मेतत्दभविष्यति । नाट्यशास्त्र 1/11/12
6	धर्मार्थ काम मोक्षेषु वैवक्षणं ज्लासुच करोति कीर्तिः प्रीति च साधु काव्य निवेषणं । भामहालंकार 1/2/3
7	चतुर्वर्ग फल प्राप्तम् काव्यं सदद्दृष्टादृष्टार्थ कीर्ति प्रीति हेतुत्वात । काव्य–दर्पण 1/15
8	काव्यालंकार सूत्र वृत्ति, 1/1/2
9	वही, 1/4/6/8/13
10	काव्य यशषेडर्थ कृते व्यवहारविदे शिवैतरक्षतयै । सद्यः परिनिवृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे ।। काव्यप्रकाश 1/2
11	रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड, 34/4
12	रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड, मंगलाचरण 7
13	रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड, 14/9/15/10

14	रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड, 44
15	रामचरितमानस, तुलसीदास, अयोध्याकाण्ड 204
16	रामायण गिरधर कृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मुंबइ, उत्तरकाण्ड, अध्याय 112, 31, पृ. 768
17	रामायण गिरधर कृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. उत्तरकाण्ड अध्याय 112 – 16 767
18	रामायण गिरधर कृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. उत्तरकाण्ड अध्याय 112 – 25-26–768
19	रामायण गिरधर कृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. उत्तरकाण्ड अध्याय 112 – 19–767
20	रामायण गिरधर कृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. उत्तरकाण्ड अध्याय 112 – 21 767
21	रामायण गिरधर कृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. बालकाण्ड अध्याय 2/19, पृ. 4
22	रामायण गिरधर कृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. उत्तरकाण्ड अध्याय 112–40, 769
23	रामायण गिरधर कृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. उत्तरकाण्ड अध्याय 112–41, 769
24	रामायण गिरधर कृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. उत्तरकाण्ड अध्याय 112–12–767
25	रामचरितमानस, तुलसीदास बालकाण्ड, 190, पृ. 115
26	रामचरितमानस, तुलसीदास बालकाण्ड, 137–6.7.8, पृ. 89
27	रामचरितमानस, तुलसीदास बालकाण्ड, 15–152, पृ. 96
28	रामचरितमानस, तुलसीदास बालकाण्ड, 187–1–4, 113

29	रामचरितमानस, तुलसीदास बालकाण्ड, 211–9–12, 126
30	रामचरितमानस, तुलसीदास बालकाण्ड, 236–4–5, 137
31	रामचरितमानस, तुलसीदास बालकाण्ड, 361–4–5, 200
32	रामचरितमानस, तुलसीदास अयोध्याकाण्ड, 231, 311
33	रामचरितमानस, तुलसीदास अरण्यकाण्ड, 20, 373
34	रामचरितमानस, तुलसीदास अरण्यकाण्ड, 36–11, 384
35	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. 1977, बालकाण्ड अध्याय 2/14, पृ. 2
36	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 2/22/5
37	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 2/29/5
38	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. उत्तरकाण्ड अध्याय, 111/31/764
39	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. सुंदरकाण्ड अध्याय, 2/40/308
40	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 46/30/136
41	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अयोध्याकाण्ड अध्याय, 2/23/139
42	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अयोध्याकाण्ड अध्याय, 8/13/155

43	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अयोध्याकाण्ड अध्याय, 23/10/197
44	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अरण्यकाण्ड अध्याय, 1/5/205
45	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अरण्यकाण्ड अध्याय, 10/32/33/34/232
46	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अरण्यकाण्ड अध्याय, 14/15/242
47	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अरण्यकाण्ड अध्याय, 15/35/37/243/244
48	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. किष्किंधाकाण्ड अध्याय, 2/13/268
49	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. किष्किंधाकाण्ड अध्याय, 7/14/282
50	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. किष्किंधाकाण्ड अध्याय, 14 17–18/300
51	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. सुंदरकाण्ड अध्याय, 4/11/312
52	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. सुंदरकाण्ड अध्याय, 7/14/15/318
53	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. युद्धकाण्ड अध्याय, 5/23/372
54	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. युद्धकाण्ड अध्याय, 37/24/25/464

55	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. युद्धकाण्ड अध्याय, 51/15/16/497
56	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. उत्तरकाण्ड अध्याय, 5/25/522
57	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. उत्तरकाण्ड अध्याय, 78/24/26/691
116	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अरण्यकाण्ड अध्याय, 1/205
117	रामचरितमानस, तुलसीदास, उत्तरकाण्ड 12/5/533
118	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. उत्तरकाण्ड अध्याय, 91/14/718
119	रामचतिमानस तुलसीदास बालकाण्ड 177–01, पृ. 108
120	रामचतिमानस तुलसीदास बालकाण्ड 178–01, पृ. 108
121	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 4/2/9
122	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 4/9
123	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 4/17/10
124	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 30/49/50/93
125	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 3२/2/97

126	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 12/31/35
127	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 16/37/180
128	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 11/8/162
129	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 11/10/163
130	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 28/10/84
131	रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड 210/3/4/125
132	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 29/8/9/87
133	रामचरितमानस तुलसदास, बालकाण्ड 211/1/125
134	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 129/24/129
135	रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड 244/7/317
136	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अयोध्याकाण्ड अध्याय, 17/8/181
137	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अयोध्याकाण्ड अध्याय, 19/6/7/185
138	रामचरितमानस, तुलसीदास, किष्किंधाकाण्ड 11/6/400
139	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. किष्किंधाकाण्ड अध्याय, 7/14/282

140	रामचरितमानस, तुलसीदास, सुंदरकाण्ड, 7/1/417
141	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. सुंदरकाण्ड अध्याय, 4/28/311
142	रामचरितमानस, तुलसीदास, सुंदरकाण्ड, 25/7/427
143	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. सुंदरकाण्ड अध्याय, 10/5/6/7/327
144	रामचरितमानस, तुलसीदास, सुंदरकाण्ड, 26/8/427
145	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. सुंदरकाण्ड अध्याय, 10/18/326
146	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. सुंदरकाण्ड अध्याय, 14/1/334
147	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. सुंदरकाण्ड अध्याय, 16/2/3/338
148	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. सुंदरकाण्ड अध्याय, 18/22/342
149	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. सुंदरकाण्ड अध्याय, 20/8/348
150	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. युद्धकाण्ड अध्याय, 21/377
151	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. युद्धकाण्ड अध्याय, 30/49/447
152	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. युद्धकाण्ड अध्याय, 49/20/492

153	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. उत्तरकाण्ड अध्याय, 3/6/514
58	रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड, 34/4/5/38
59	तुलसीदास, डॉ. माताप्रसाद गुप्त, पृ. 84–85
60	रामचरितमानस, तुलसीदास, सुंदरकाण्ड, 59/6/444
61	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. युद्धकाण्ड अध्याय, 10/12/388
62	रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड, 8/9/23
63	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. उत्तरकाण्ड अध्याय, 116/40/765
64	रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड, 177/8/108
65	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 4/10/9
66	रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड, 178/2/108
67	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 4/3/11
68	रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड, 184/7/112
69	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 8/34/21
70	रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड, 192/15/116
71	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 16/9/45
72	रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड, 231/1/2/135

73	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 33/37/103
74	रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड, 254/5/6/146
75	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 38/10/114
76	रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड, 261/9–12/149
77	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 38/31/32/115
78	रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड, 265/9/151
79	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. बालकाण्ड अध्याय, 38/11/117
80	रामचरितमानस, तुलसीदास, अयोध्याकाण्ड 2/6/7/8/204,
81	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अयोध्याकाण्ड अध्याय, 3/8/9/10/142
82	रामचरितमानस, तुलसीदास, अयोध्याकाण्ड, 39/11/221
83	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अयोध्याकाण्ड अध्याय, 7/12/152
84	रामचरितमानस, तुलसीदास, अयोध्याकाण्ड, 119/2/295
85	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अयोध्याकाण्ड अध्याय, 18/17/184
86	रामचरितमानस, तुलसीदास, अयोध्याकाण्ड, 312/9–10/348
87	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अयोध्याकाण्ड अध्याय, 22/29/196
88	रामचरितमानस, तुलसीदास, अरण्यकाण्ड, 5/3/17/8/9/10/360

89	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अरण्यकाण्ड अध्याय, 2/4/5/14/208
90	रामचरितमानस, तुलसीदास, अरण्यकाण्ड, 7/6/7/8/, 362
91	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अरण्यकाण्ड अध्याय, 3/22/211
92	रामचरितमानस, तुलसीदास, अरण्यकाण्ड, 28/5/378
93	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अरण्यकाण्ड अध्याय, 14/34/243
94	रामचरितमानस, तुलसीदास, अरण्यकाण्ड, 34/7/11/12/383
95	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अरण्यकाण्ड अध्याय, 21/11/1२/13/261
96	रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड, 53/7/8/48
97	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. अरण्यकाण्ड अध्याय, 19/28/257
98	रामचरितमानस, तुलसीदास, किष्किंधाकाण्ड, 1/1/2/394
99	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. किष्किंधाकाण्ड अध्याय, 2/20/266
100	रामचरितमानस, तुलसीदास, किष्किंधाकाण्ड, 7/12/13/398
101	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. किष्किंधाकाण्ड अध्याय, 5/23/278
102	रामचरितमानस, तुलसीदास, किष्किंधाकाण्ड, 9/7/8/399
103	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. किष्किंधाकाण्ड अध्याय, 7/21/280
104	रामचरितमानस, तुलसीदास, किष्किंधाकाण्ड, 14 1 से 8/402

105	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. किष्किंधाकाण्ड अध्याय, 8/3से7/284
106	रामचरितमानस, तुलसीदास, किष्किंधाकाण्ड, 23/9/10/406
107	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. किष्किंधाकाण्ड अध्याय,9/44/289
108	रामचरितमानस, तुलसीदास, सुंदरकाण्ड, 17/7/423
109	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. सुंदरकाण्ड अध्याय, 7/24/319
110	रामचरितमानस, तुलसीदास, सुंदरकाण्ड, 59/6/888
111	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. सुंदरकाण्ड अध्याय, 10/12/388
112	रामचरितमानस, तुलसीदास, उत्तरकाण्ड, 12/5/533
113	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. सुंदरकाण्ड अध्याय, 9/18/533
114	रामचरितमानस, तुलसीदास, उत्तरकाण्ड, 130/र9/14/606
115	रामायण गिरधरकृत सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अम. मु. उत्तरकाण्ड अध्याय, 16/8/549
154	तुलसी रामायण और पंप रामायण, डॉ. सरगू कृष्णमूर्ति, पृ. 83
155	हिन्दी औक कन्नड राम काव्यों के चरित्र : एक तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. रामचंद्र स्वामी, पृ. 218
156	गोस्वामी तुलसीदास, आ.रा. शुक्ल, पृ. 56
157	कल्याण श्री रामवचनामृतांक वर्ष 41, संख्या 1, पृ. 11
158	तुलसीदर्शन, डॉ. बलदेवप्रसाद मिश्र, पृ. 133
159	श्री रामचरितमानस, तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, लंकाकाण्ड, 111/7

160	श्री रामचरितमानस, तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड, 13/3
161	श्री रामचरितमानस, तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, अयोध्याकाण्ड, 43/3/4
162	श्री रामचरितमानस, तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, किष्किंधाकाण्ड, 7/1/2
163	श्री रामचरितमानस, तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड, 255/5/6
164	श्री रामचरितमानस, तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, अरण्यकाण्ड, 20क/17/18
165	श्री रामचरितमानस, तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, सुंदरकाण्ड, 32/1/2
166	श्री रामचरितमानस, तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, अरण्यकाण्ड, 1/8
167	श्री रामचरितमानस, तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, अयोध्याकाण्ड, 85/7/8
168	श्री गिरधरकृत रामायण, स.सा.का.अ.मु., बालकाण्ड अध्याय, 8/14/15/22
169	श्री गिरधरकृत रामायण, स.सा.का.अ.मु., बालकाण्ड अध्याय, 16/10/45
170	श्री गिरधरकृत रामायण, स.सा.का.अ.मु., बालकाण्ड अध्याय, 38/16/17/18/114
171	श्री गिरधरकृत रामायण, स.सा.का.अ.मु., उत्तरकाण्ड अध्याय, 11/32/33/764
172	श्री गिरधरकृत रामायण, स.सा.का.अ.मु., बालकाण्ड अध्याय, 33/38/39/103
173	श्री गिरधरकृत रामायण, स.सा.का.अ.मु., उत्तरकाण्ड अध्याय, 5/25/522
174	श्री गिरधरकृत रामायण, स.सा.का.अ.मु., उत्तरकाण्ड अध्याय, 15/4/5/546

175	श्री गिरधरकृत रामायण, स.सा.का.अ.मु., किष्किंधाकाण्ड अध्याय, 7/14/282
176	श्री गिरधरकृत रामायण, स.सा.का.अ.मु., किष्किंधाकाण्ड अध्याय, 51/16/497
176	(अ) श्री रामचरितमानस तुलसीदास बालकाण्ड, 17/7/8/29
177	श्री गिरधरकृत रामायण, स.सा.का.अ.मु., बालकाण्ड अध्याय, 274/9/10/155
178	श्री गिरधरकृत रामायण, स.सा.का.अ.मु., बालकाण्ड अध्याय, 215/5/6/1२8
179	श्री गिरधरकृत रामायण, स.सा.का.अ.मु., बालकाण्ड अध्याय, 74/2/3/4/237
180	श्री गिरधरकृत रामायण, स.सा.का.अ.मु., लंकाकाण्ड अध्याय, 61/3/4/480
181	श्री गिरधरकृत रामायण, स.सा.का.अ.मु., बालकाण्ड अध्याय, 8/16/22
182	श्री गिरधरकृत रामायण, स.सा.का.अ.मु., किष्किंधाकाण्ड अध्याय,9/13/287
183	श्रीरामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड, 17/3/4/29
184	श्रीरामचरितमानस, तुलसीदास, अयोध्याकाण्ड, 204/18/10/298
185	श्रीरामचरितमानस, तुलसीदास, अयोध्याकाण्ड, 167/5/6/7/8/281
186	गोस्वामी तुलसीदास, आ. रामचंद्र शुक्ल, पृ. 180
187	रामायण गिरधरकृत स.सा.का. बालकाण्ड, 16/43/48
188	रामायण गिरधरकृत स.सा.का. अयोध्याकाण्ड, अध्याय 17/28/183
189	रामायण गिरधरकृत स.सा.का. अयोध्याकाण्ड, अध्याय 5/12/147
190	रामायण गिरधरकृत स.सा.का. अयोध्याकाण्ड, अध्याय 17/12/13/182

191	रामायण गिरधरकृत स.सा.का. अयोध्याकाण्ड, अध्याय 24/16/201
192	रामचरितमानस, तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड 182/12/13/110
193	तुलसीआधुनिक वातायनसे रमेशकुंतल मेघ भा.ज्ञा. प्रका. 198
194	रामचरितमानस, तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, अरण्यकाण्ड, 23/3/4/375
195	रामायण, गिरधरकृत स.सा.व.का. बालकाण्ड अध्याय, 3/26/27/8
196	रामायण, गिरधरकृत स.सा.व.का. बालकाण्ड अध्याय, 4/34/35/11
197	कवि गिधर जीवन अने कवन देवदत्त जोशी, म.स.वि.वि., वडोदरा, 112
198	रामायण, गिरधरकृत स.सा.व.का. युद्धकाण्ड अध्याय, 5/27/28/373
199	रामचरितमानस तुलसीदास, गी.गो. सुंदरकाण्ड श्लोक 3/414
200	रामचरितमानस तुलसीदास, गी.गो. बालकाण्ड 17/10/11/12/29
201	गोस्वामी तुलसीदास आ.रा. शुक्ल, पृ. 112
202	रामचरितमानस तुलसीदास, गी.गो. सुंदरकाण्ड 32/5/7/430
203	रामचरितमानस तुलसीदास, गी.गो. सुंदरकाण्ड 33/9/430
204	रामचरितमानस तुलसीदास, गी.गो. किष्किंधाकाण्ड 3/7/395
205	रामचरितमानस तुलसीदास, गी.गो. किष्किंधाकाण्ड 30/4/5/410
206	रामायण गिरधरकृत स.सा.व.का. बालकाण्ड अध्याय, 12/27/135
207	रामायण गिरधरकृत स.सा.व.का. बालकाण्ड अध्याय, 13/38/39/39
208	रामायण गिरधरकृत स.सा.व.का. सुंदरकाण्ड अध्याय, 12/13/14/19/330/333
209	रामायण गिरधरकृत स.सा.व.का. सुंदरकाण्ड अध्याय, 22/24/422
210	रामायण गिरधरकृत स.सा.व.का. युद्धकाण्ड अध्याय, 34/28/457
211	रामायण गिरधरकृत स.सा.व.का. उत्तरकाण्ड अध्याय, 13/12/540

212	श्रीरामचरितमानस, तुलसीदास गी.गो. बालकाण्ड, 230/6/7/8/135
213	श्रीरामचरितमानस, तुलसीदास गी.गो. अयोध्याकाण्ड, 140/4 से 8/268
214	श्रीरामचरितमानस, तुलसीदास गी.गो. अयोध्याकाण्ड, 65/1/7/233
215	गोस्वामी तुलसीदास आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ. 123
216	श्री रामचरितमानस तुलसीदास गी.गो. सुंदरकाण्ड, 9/7/418
217	तुलसीदास, डॉ. माताप्रसाद गुप्त, पृ. 310
218	रामायण गिरधरकृत, स.सा.व.का. बालकाण्ड, अध्याय 8/18/23
219	रामायण गिरधरकृत, स.सा.व.का. बालकाण्ड, अध्याय 32/29/30/99
220	रामायण गिरधरकृत, स.सा.व.का. अयोध्याकाण्ड, अध्याय 10/14/161
221	रामायण गिरधरकृत, स.सा.व.का. अरण्यकाण्ड, अध्याय 9/4/227
222	रामायण गिरधरकृत, स.सा.व.का. उत्तरकाण्ड, अध्याय 91/25/26/719
223	कवि गिरधर जीवन अने कवन देवदत्त जोशी, म.स.वि.वि. 139
224	हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास, डॉ. भगीरथ मिश्र, पृ. 393
225	दोहावली तुलसीदास गीताप्रेस गोरखपुर, दो.सं. 572
226	श्रीरामचरितमानस तुलसीदास गी.गो. बालकाण्ड, 9/4/23
227	दि होली लेक आफ दि एक्ट्स आफ राम पी. डगलस हिल, 1952, पृ. 19
228	गोस्वामी तुलसीदास आचार्य, रामचंद्र शुक्ल, पृ. 159
229	मानस की रुसी भूमिका अनुवाद डॉ. केशरी नारायण शुक्ल, पृ. 15
230	श्रीरामचरितमानस तुलसीदास गी.गो. बालकाण्ड, 57ख/11/12/50
231	श्रीरामचरितमानस तुलसीदास गी.गो. अयोध्याकाण्ड, 64/6से10/233
232	श्रीरामचरितमानस तुलसीदास गी.गो. उत्तरकाण्ड, 41/1/2/550
233	श्रीरामचरितमानस तुलसीदास गी.गो. बालकाण्ड, 3/7/8/20
234	तुलसीदास की भाषा, डॉ. देवकीनंदन श्रीवास्तव, पृ. 345

235	हिन्दी साहित्य का अतीत : आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पृ. 106
236	तुलसी और उनका काव्य, पं. राम नरेशत्रिपाठी, पृ. 243–166
237	रामायण श्री गिरधरकृत स.सा.व. का. अ.मुं. पृ. 15
238	तुलसी और उनका युग, डॉ. राजपति दीक्षित, पृ. 394
239	तुलसी दर्शन मीमांसा, डॉ. उदयभानुसिंह, पृ. 385
240	मध्यकालीन कवियों के काव्य सिद्धांत, डॉ. छविनाथ त्रिपाठी, पृ. 224
241	तुलसी और उनका युग, डॉ. राजपति दीक्षित, पृ. 394
242	कवि गिरधर जीवन अने कवन देवदत्त जोशी, प्रा.वि.म.स.वि.वि., वडोदरा, पृ. 152
243	कवि गिरधर जीवन अने कवन देवदत्त जोशी, प्रा.वि.म.स.वि.वि., वडोदरा, पृ. 157
244	कवि गिरधर जीवन अने कवन देवदत्त जोशी, प्रा.वि.म.स.वि.वि., वडोदरा, पृ. 146
245	काव्यदर्पण पंडित रामदहिन मिश्र, प्र. 1952 ई. सन्, पृ. 32
246	कवि गिरधर जीवन अने कवन, देवदत्त जोशी, म.स.वि.वि. 91
247	समीक्षाशास्त्र आ.पंडित सीताराम चतुर्वेदी, पृ. 1025
248	मानस माधुरी, डॉ. बलदेवप्रसाद मिश्र, पृ. 10
249	तुलसी काव्य दर्शन डॉ. रामलाल सिंह पृ. 261
250	तुलसी साहित्य रत्नाकर पं. रामचंद्र द्विवेदी, पृ. 449
251	कवि गिरधर जीवन अने कवन देवदत जोशी प्राच्य वि. म. म. स. वि. वि. वडोदरा 165

☆☆☆

उपसंहार

उपसंहार

धर्म, संस्कार, संस्कृति आदि के लिए भारत पूरे विश्व में प्रसिद्ध है । श्रीमद्‌भागवत्, वाल्मीकि रामायण और महाभारत, रामचरितमानस हजारों सालों से भारतीयों के हृदय में उच्च आदर्श, यथार्थ और अध्यात्म जीवन के बहुआयामी चित्रों को बिबिंत करते हुए श्रेष्ठ जीवंत चेतना का आलोक स्थंभ बने हुए हैं । वाल्मीकि रामायण को आधार ग्रंथ बनाकर समय–समय पर अनेक रचनाकारों ने राम कथा का सृजन किया है । भारतियों के लिए रामायण तो नित्य पारायण का ग्रंथ है । भारतीय लोक मानस पर रामायण ने जितना आदर पाया है उतना किसी भी ग्रंथ ने नहीं पाया । पारिवारिक मूलाधार रामायण ही है । रामकथा की व्यापकता और संख्या के संबंध में तुलसी कहते हैं –

रामचरित सत कोटि अपारा । श्रुति सारदा न बरनै पारा ।

7/52/2/555

अतः कहना होगा कि राम कथा का उद्‌गम और विस्तार चर्चा का विषय है । अनेक साहित्यिक रूपों में रामकथा का आलेखन हुआ है । प्रारंभ में राम कथा मौखिक रूप में ही पायी जाती थी । संस्कृत साहित्य में विस्तार से रामकथा का उल्लेख मिलता है । राम का उल्लेख ॠग्वेद, ऐतरेय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण, तैतिरियारण्यक तथा जैमिनीयोपनिषद ब्राह्मण आदि में पाया जता है । वाल्मीकि रामायण राम कथा का सीमा चिह्न है । परवर्ती राम कथा का प्रस्थान बिन्दु वाल्मीकि रामायण ही है । वाल्मीकि के पूर्व राम का उल्लेख मिलता है । इसका अर्थ यह है कि राम नाम ऐतिहासिक है, दाशरथि राम नहीं । वाल्मीकि से ही प्रेरणा ग्रहण करके तिब्बत, खेतान, हिन्देशिया और श्याम, ब्रह्मदेश आदि में रामकथा का प्रचार और प्रसार हुआ है । बौद्धों ने

जैनिओं ने आदि ने वाल्मीकि से ही प्रेरणा प्राप्त करके राम कथा का सृजन किया है । यहाँ यह भी कहना चाहिए कि इन रचनाकारों का उद्देश्य रामकथा का प्रचार प्रसार न होकर अपने धर्म के उद्देश्योंके को प्रस्तुत करना होता है ।

वाल्मीकि के राम अन्य राम कथाओं के राम से भिन्न हैं । राम मानवीय भूमि पर उतर आये हैं । राम पूर्णतया प्राकृतिक परिवेश में पाये गए हैं । सीताहरण से राम खिन्न होकर विलाप करते हैं । पशु, प्राणी, पक्षी, पर्वत, लता, पेड़ आदि से सीता के संबंध में प्रश्न पूछकर सहानुभूति प्राप्त करने का प्रयास करते हैं । राम दुःख, विपत्ति आदि का सामना करते हैं । राम अपने पुरुषार्थ, त्याग और कर्तव्यनिष्ठा आदि से रास्ता निकालते हैं । वाल्मीकि रामायण के सात काण्ड और चौबीस हजार श्लोकों में राम–युगीन अर्थव्यवस्था, समाज–व्यवस्था, शिक्षण–व्यवस्था, शासन–व्यवस्था, पारिवारिक–व्यवस्था आदि का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से चित्रण किया गया है ।

भारतीय साहित्य में वाल्मीकि रामायण के पश्चात् वेद व्यास कृत महाभारत का स्थान निर्विवाद है । देवताओं ने तराजू के एक पलडे में महाभारत को और दूसरे पलडे में चारों वेदों को रखा । महाभारत वाला पलडा भारी रहा । महाभारत को पाँचवा वेद भी कहा जाता है । महाभारत तद्‌युगीन समाज का दर्पण है । कहते हैं कि व्यास देव ने महाभारत की कथा सर्वप्रथम अपने शिष्य वैशम्पायन को सुनाई थी । सारा महाभारत वैशम्पायन और जनमेजय के संवाद के रूप में है । यह तो स्पष्ट ही है कि वाल्मीकि रामयण के पश्चात् महाभारत का सृजन हुआ है । महाभारत में वाल्मीकि रामायण का उल्लेख मिलता है । महाभारत का प्रतिपाद्य युद्ध और पराक्रम ही माना जाता है । बौद्ध साहित्य और जैन साहित्य में राम कथा का अंकन है । वाल्मीकि रामायण के बाद कालिदास के रघुवंश का सगर्व नाम लिया जा सकता है । कथावस्तु वाल्मीकि रामायण सदृश है । संस्कृत में जानकी हरण,

रावण वध, राघव पांडवीय, रघुनाथाभ्युदय आदि में राम कथा का उल्लेख मिलता है । संस्कृत नाटकों में अभिषेक, प्रतिमानाटक कुन्दमाला, उतर रामचरित, आश्चर्य चूडामणि, प्रसन्नराघव, आदि में राम के जीवन की गाथा वर्णित है । संस्कृत में राम संबंधी अनेकानेक कृतियाँ पायी जाती हैं, जिसमें आनंद रामायण, अदभूत रामायण अध्यात्म रामायण, योग–वासिष्ठ, तत्त्वसार–रामायण आदि का ऐतिहासिक मूल्य है । अतः कहना होगा कि संस्कृत की राम कथाओं का मूल आधार वाल्मीकि रामायण है । रघुवंश और उतर रामचरित को भी महत्ता प्राप्त है । वाल्मीकि रामायण का कथा प्रवाह गंगा की तरह कहीं तेज कहीं मंद गति सदृश है ।राम ने लोक स्तर से लोकोतर कार्य किए हैं । वाल्मीकि रामायण को इतनी प्रसिद्धि प्राप्त हुई कि जन–जन तक पहुँच गयी । भारत के हर एक प्रांत और हर एक गाँव में राम कथा का उल्लेख मिलता ही है । सबकी प्रेरणा धात्री वाल्मीकि रामायण ही है । राम का आदर्श प्रत्येक मानव के लिए अनुकरणीय है । राम का धैर्य, युद्ध कौशल, नीति नैपुण्य आदि अद्वितीय है । राम आलौकिक शक्ति से सम्पन्न विष्णु रूप हैं ।

हिन्दी साहित्य में राम कथा का विस्तृत प्रचार प्रसार पाया जाता है । हिन्दी साहित्य संस्कृति साहित्य का ऋृणी है । संस्कृत साहित्य में जो स्थान वाल्मीकि का है वही स्थान हिन्दी साहित्य में तुलसीदास जी का है । तुलसीदास जी का रामचरितमानस घट–घट वासी बन चुका है । रामचरितमानस पड़ोशी देशों की जन–भाषाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन गया है । हिन्दी के आदिकाल में राम कथा का थोड़ा बहुत उल्लेख मिलता है ।

हिन्दी साहित्य के मध्यकाल में राम कथा का विशेष रूप से प्रचार प्रसार पाया गया है । स्वामी रामानंद ने रामार्चन – पद्धति में गुरु–परंपरा का विस्तार से उल्लेख किया है । रामरक्षास्रोत में राम वंदना की गई है । विष्णुदास, ईश्वरदास आदि ने अधिकतर वाल्मीकि रामायण को आधार मानकर

राम के चरित्र की गाथा प्रस्तुत की है । गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने आराध्य राम की अर्चना करते हुए अनेक ग्रंथों की रचना की है । साहित्य समीक्षकों ने तुलसीदास के बारह ग्रंथ प्रामाणिक माने हैं, जिनमें (1) रामललानहछू (2) रामाज्ञा प्रश्न (3) रामचरितमानस (4) बरवै रामायण (5) जानकी मंगल (6) पार्वती मंगल (7) दोहावली (8) कवितावली (9) गीतावली (10) वैराग्य संदीपनी (11) श्री कृष्ण गीतावली (12) विनय पत्रिका है । इन रचनाओं में रामचरितमानस अत्यधिक लोकप्रिय हुआ है । परवर्ती कविओं ने मानस को ही आधार ग्रंथ मानकर अपने ढँग से राम कथा प्रस्तुत की है । विनयपत्रिका प्रपत्ति भक्ति का श्रेष्ठ ग्रंथ माना गया है । दोहावली और कवितावली भी लोकप्रिय हुए हैं । कृष्ण काव्य के अनन्य भक्त महात्मा सूरदास ने भी रामकथा के संदर्भ में अपनी भक्ति पद्धति का परिचय दिया है । इन्होंने राम के जन्म से लेकर अयोध्या में राम राज्याभिषेक तक की कथा प्रस्तुत की है । सूर और तुलसी में अंतर इतना ही है कि सूर के पदों में उपदेशों का सर्वथा अभाव है । विद्यापति और मीरा ने भी राम विषयक चार पाँच पद लिखे हैं । आ. केशवदास की रामचंद्रिका अपने आप में विस्तृत होते हुए भी रामचरितमानस सदृश नहीं बन पायी । इसमें भक्ति या धार्मिकता के स्थान पर काव्य कला चमत्कृति विशेष है ।

कबीरदास का प्रभाव जनता पर अधिक पाया जाता है । कबीर के 63 ग्रंथ प्राप्त होते हैं । इनका प्रामाणिक आधार नहीं है । लालदास, मलूकदास, गुरुगोविंदसिंह, नवलसिंह, रामप्रियाशरण कृपानिवास, गोकुलनाथ, ललकदास आदि ने राम के जीवन के एक या अधिक प्रसंगों को दृष्टि समक्ष रखकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए हैं । यहाँ यह अवश्य कहना होगा कि महात्मा तुलसीदास की अमूल्य कृति रामचरितमानस को ही प्रायः परवर्ती कवियों ने आधार मानकर अपनी लेखनी चलायी है । आधुनिक युग में भी रामकथा का सर्जन पाया जाता है । राम को ही दृष्टिसमक्ष रखकर विस्तृत महाकाव्य का

सर्वथा अभाव ही है । राम के जीवन से संबंधित फूटफल प्रसंगो पर काव्य अवश्य पाये जाते हैं । हिन्दी साहित्य में तुलसी कृत 'रामचरितमानस' सदृश कोई रचना नहीं है ।

गुजराती साहित्य का प्रारंभ नरसिंह मेहता से माना जाता है । नरसिंह मेहता के पूर्व तीन शतकों की पाण्डुलिपि उपलब्ध होती हैं, जिसमें गुजराती भाषा का अपभ्रंशोतर रूप देखा गया है । गुजरात में राम भक्ति से अधिक कृष्ण भक्ति और राम काव्य से अधिक कृष्ण काव्य का प्रचलन पाया गया है । समग्र भारत में जब भक्ति का आंदोलन हुआ तब अन्य प्रांतों की तरह गुजरात में भी सगुण भक्ति का प्रचार प्रसार हुआ । 'राम कथा उत्पति और विकास' में फादर कामिल बुल्के लिखते हैं कि ई. सन् 1370 से ई. सन 1852 तक 372 कवियों में से 50 कविओं ने रामकथा विषयक साहित्य की सृष्टि की है । (पृ. 253) यहाँ यह भी कहना होगा कि गुजराती में राम कथा संबंधी प्रबंध काव्य का अभाव ही है । कवियों ने अधिकतर पदावली या आख्यान शैली में अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । कर्मण मंत्री, भालण, भीम, कीकुवसही, श्रीधर कवि, कवि नाकर, उध्दव, वजियो, हरिराम, हरिदास, गोविंद, शामळ, काळिदास, राजाराम, रणछोड, रामैयो, दयाराम प्रीतम, रघुराम, पुरीबाई, कृष्णाबाई, गिरधर आदि कवियों ने राम संबंधित काव्य लिखकर गुजरात के लोगों को रामभक्ति के लिए आकृष्ट करने का प्रयास किया है । पूरी रामकथा या प्रबंध रूप से राम काव्य का तो सर्वथा अभाव ही है । गिरधर कवि ने गुजराती भाषा के प्रतिनिधि रामकाव्य के रूप में रामायण की रचना की है । गुजरात में रामकाव्य के रूप से सबसे अधिक लोकप्रियता इसी 'रामायण' को प्राप्त है । यह आख्यान शैली का काव्य है । इसी 'रामायण' की कथा पर अनेक कथाकार आख्यान प्रस्तुत करके अपने परिवार का निर्वाह करते हैं । इसमें सात काण्ड हैं जैसे बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड ।

गिरधरकृत 'रामायण' अपने आप में विस्तृत है । प्रत्येक काण्ड की कथा को अध्यायों में विभाजित किया गया है । बालकाण्ड में 46 अध्याय, अयोध्याकाण्ड में 25 अध्याय, अरण्यकाण्ड में 22 अध्याय, किष्किंधाकाण्ड में 15 अध्याय, सुन्दरकाण्ड में 24 अध्याय, युद्धकाण्ड में 55 अध्याय और उत्तरकाण्ड में 112 अध्याय हैं । अतः कुल मिलाकर 299 अध्याय हैं । आलोच्य कृति का काव्य रूप आख्यान शैली का होने से आंगिक अभिनय का अत्यधिक महत्त्व है । अतः कवि ने यथा संभव भिन्न भिन्न छंदों का आधार ग्रहण करके अधिकाधिक लोकप्रिय बनाने हेतु संगीत का आश्रय लिया है । आख्यान प्रस्तुत–कर्ता के समक्ष दर्शक या श्रोता बैठा हुआ होता है अतः आख्यान का तत्क्षण प्रभाव लक्षित होता है । कवि गिरधर अपने समय में अपने आख्यान का प्रभाव प्रत्यक्ष देखने के लिए मंदिर में जाते थे । कवि गिरधर ने प्रत्येक अध्याय के अंत में प्रसंग का उल्लेख किया है कि इस अध्याय में यह प्रसंग है । यहाँ यह कहना होगा कि कवि ने वाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस से हटकर अनेक स्थानों पर न्यून प्रसंगों की अवतारणा की है । इससे प्रासंगिक घटनाओं का आधिक्य विशेष है । इससे कथा में रोचकता भी आ जाती है । कवि ने प्रत्येक काण्ड के अंत में प्रस्तुत कथा का सार और कथा कितने अध्यायों में कही है उसका उल्लेख है । कवि ने कथा का मूल स्रोत कहाँ से ग्रहण किया है उसका भी उल्लेख मिलता है । नये काण्ड के प्रारंभ में कथा का विस्तार और प्रसंगो का संकेत कवि ने स्पष्ट रूप से दे दिया है । कवि ने प्रत्येक अध्याय में अंकित दोहा, चौपाई आदि की संख्या का भी उल्लेख कर दिया है । कवि ने उद्देश्य के विषय में स्पष्ट ही कहा है कि 'केशव कीर्तन कलियुग साधन' अर्थात् कलियुग में राम (केशव) की भक्ति ही मोक्षदायिनी है । कवि ने यह भी कहा है कि काव्य की रचना करना मैं जानता ही नहीं । मैंने अपनी अल्प बुद्धि अनुसार हरि के गुण गाये हैं । प्रभु की भक्ति हर प्रकार से हितकारी ही होती है । कवि ने वाल्मीकि रामायण,

हनुमनाटक, पदमपुराण, अग्निपुराण आदि ग्रंथो का आधार का ग्रहण किया है ऐसा प्रारंभ और अंत में उल्लेख है । कवि निमित्त मात्र है ऐसा भी कहा है । प्रत्येक अध्याय के अंत में 'श्रोताजन, बोलो श्री हरि' का उल्लेख करके कवि आख्यान के रूप में कृति प्रस्तुत कर रहे हों ऐसा सिद्ध होता है । कवि ने योगवासिष्ठ, श्रीमद्‌भागवत्, हरिवंशपुराण, आनंद रामायण, श्री रामचरितमानस, अध्यात्मरामायण, गीतावली महाभारत आदि ग्रंथों का आधार ग्रहण किया है । कवि ने गुजराती साहित्य के अपने पूरोगामी कवि नाकर, प्रेमानंद और दयाराम आदि की शैली का अनुकरण किया है । कवि पर प्रेमानंद का प्रभाव अधिक पाया जाता है । कवि ने रामचरितमानस के अनेक प्रसंगों का सीधा अनुवाद करके अपनी कला का परिचय दिया है, जैसे पुष्पवाटिका प्रसंग, जनक की व्यथा, अहल्या उद्धार, वालि वध आदि । वर्षाऋृतु का वर्णन तो ज्यों का त्यों ही है । रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड की पंक्ति ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी । सकल ताडना के अधिकारी ।। (5–59–6) इस पंक्ति का कविने –

ढोल मूरखने पशु वळी । दुर्मुखी जे नार ।।
ए दंड विण माने नहि । एने मारनो अधिकार ।। (6–10–12)

दोनों का भाव साम्य दृष्टव्य है ।

रामचरितमानस में तुलसी ने उत्तरकाण्ड में प्रथम तिलक वसिष्ठ मुनि कीन्हा, के बाद कथा का विस्तार नहीं किया । राम के राज्याभिषेक के उपरांत कलियुग का वर्णन है । सीता निर्वासन का उल्लेख तक नहीं । लव–कुश की संकेतात्मक कथा है । कवि गिरधर ने लव–कुश के जन्म की, वाल्मीकि आश्रम की, राम के अश्वमेघ यज्ञ की कथा आदि का अत्यधिक विस्तार किया है । धोबी के कहने से (कटू वचन से) राम गर्भवती सीता का त्याग करते हैं । सीता का विलाप सहृदयी पाठकों को अश्रु बहाने के लिए मजबूर कर देता है । लवकुश का पराक्रम और युद्ध वर्णन अलग ढंग से कवि ने प्रस्तुत किया है । सीता वाल्मीकि आश्रम से ससम्मान अयोध्या वापस लोटती है । गिरधर

ने कथा का विस्तार करते हुए आगे वर्णन किया है कि राम ने सीता के साथ बाद में तीन अश्वमेघ यज्ञ किए । राम–लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न चारों भाइयों के यहाँ दो–दो पुत्र थे सब का राज्याभिषेक किया जाता है । राम के पुत्र लव को उतरदेश का राज्य, कुश को कौशल देश का राज्य दिया जाता है । लक्ष्मण के पुत्र अंगद को गजाश्वव देश और चित्रकेतु को धनरत्न देश का राज्य दिया । भरत के पुत्र पुष्कल को पुष्करावती देश और तक्ष को तक्षशिला देश का राज्य दिया । शत्रुघ्न के पुत्र श्रुतसेन को विदिशा देश का और सुबाहु को मथुरा देश का राज्य दिया गया । कवि ने यह भी उल्लेख किया है कि मैंने इन पुत्रों के राज्याभिषेक की कथा श्रीमद्‌भागवत के नवम स्कंध से ली है । गिरधर कवि ने उत्तरकाण्ड के 91 वें अध्याय में कहा है कि 'राम सीता से कहते हैं कि अब हमारे अवतार का उद्‌देश्य पूर्ण हुआ है । हमें अब स्वधाम जाना चाहिए अतः प्रथम तुम गुप्त हो जाओ । पृथ्वी में समा जाओ ।' अतः कवि ने प्रसंग का आयोजन इस तरह किया है कि कैकेयी सीता से पुनः छल करती है । कैकेयी सीता को रावण का चित्र बनाने के लिए कहती है । सीता रावण के पैर के एक अंगूठे का चित्र बनाती है । कैकेयी अंगूठे पर से पूरे रावण का चित्र बनाकर शोर मचाती हुई कहती है कि 'सीता का चरित्र तो देखो ! घर में ही (मंदिर में) रावण का चित्र बनाया है ।' सीता से यह आरोप सहन नहीं होता । तब पृथ्वी में से स्वर्ण का सिंहासन निकलता है । सीता पृथ्वी में विलीन हो जाती है । लक्ष्मण स्वधाम जाते हैं । राम कौशल्या माता को बोध देकर मोक्ष प्रदान करते है । आगे सुग्रीव आदि वानरगण स्वर्ग की प्राप्ति करते हैं । आगे राम, भरत और शत्रुघ्न को बुलाकर कहते हैं कि आप दोनों सरयू नदी में स्नान करके शीघ्र आइए । जब दोनों आते हैं तब राम चतुर्भुज रूप धारण करे गरुड पर बैठते हैं । सीता जी भी साथ होती है । भरत शंख रूप और शत्रुघ्न सुदर्शन चक्र बनते हैं । सब लोग निज धाम जाते हैं । कवि ने राम कथा को आख्यान शैली में प्रस्तुत

करके अपनी भक्तिशक्ति का परिचय दिया है । कवि ने प्रसंगानुसार रागों का प्रयोग किया है । आख्यान में अनेक रागों का प्रयोग अपेक्षित है । अतः कवि ने भी सामेरी, धनाश्री, परजियो, काफी, वेराडी, बिभास, परज, मल्हार इत्यादि रागों का प्रयोग किया है । कवि ने उत्तरकाण्ड के अंत में अपनी नम्रता प्रकट करके अपने आपको निमित्त मात्र ही कहा है ।

आधुनिक युग में तुलना का अत्यधिक महत्त्व पाया जाता है । तुलना से भ्रम और पूर्वग्रहों से मुक्ति मिलती है । तुलनात्मक अध्ययन से भाषा और साहित्य के परस्पर संपर्क को दिशा मिलती है । व्याप बढ़ता है । भारत की सांस्कृतिक और साहित्यिक एकता की अनुभूति तुलनात्मक अध्ययन से ही संभव है । तुलनात्मक अध्ययन का अर्थ किसी रचनाकार को छोटा या बड़ा स्थापित करना नहीं किन्तु दो रचनाकारों के द्वारा लिखे गये समान काव्यों में समांतर भावों, विचारों या कल्पना के आधार पर समान बिंदुओं को पहचान कर मानव के सीमित ज्ञान के क्षेत्र को विकसित करना होता है । दो चिंतन–परंपराओं की तुलना करना ही तुलनात्मक अध्ययन का उद्देश्य होता है । तुलसीकृत रामचरितमानस और गिरधरकृत 'रामायण' की भावपक्ष और कलापक्ष के आधार पर तुलना की गई है । रामचरितमानस के प्रेरणा स्त्रोत के विषय में तुलसी कहते हैं कि 'स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथाय गाथा' साथ साथ इसमें लोक मंगल और बहुजन हिताय की भावना भी निहित है । कवि ने नानापुराण, निगमागम सम्मत भी कहा है, जिसमें वाल्मीकि रामायण, हनुमन्नाटक प्रतिमानाटक, योगवाशिष्ठ, महावीर चरित, उतररामचरित, प्रसन्न राघव, अध्यात्म रामायण, श्रीमद् भागवत, उपनिषद्, महाभारत, हितोपदेश आदि ग्रंथों का प्रभाव लक्षित होता है । उस समय हिन्दु धर्म ह्रासोन्मुख था । मुगलों के आक्रमणों से प्रजा त्रस्त और पथ भ्रष्ट हो गई थी । देश की आम जनता संस्कृत से अनभिज्ञ थी । अतः लोक नायक तुलसी ने जनता की भाषा में रामचरितमानस

की रचना की । कवि अयोध्याकाण्ड (204) में चारों पुरुषार्थों की कामना न करते हुए भक्ति का ही वरदान माँगते हैं जैसे –

अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरवान ।

जनम जनम रति राम पद यह वरदानु न आन ।।

गुजराती भाषा की प्रतिनिधि कृति रामायण के रचयिता गिरधरदास का जन्म विक्रम संवत 1843 में हुआ । तुलसी दासजी का जन्म सं. 1589 माना जाता है । गिरधर तुलसी के 254 साल बाद अवतरित हुए । कवि आख्यानकार थे । उन्होंने कलियुग में केशव कीर्तन ही जीवन का उद्देश्य बताया है । प्रेरणा स्त्रोत के संबंध में अपनी दीनता, विनम्रता और अल्पमति का उल्लेख करते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा है कि मैंने इसमें वाल्मीकि रामायण, हनुमन्नाटक, पदमपुराण, अग्निपुराण आदि ग्रंथों का आधार ग्रहण किया है । गिरधर कवि ने रामनाम की महिमा का उल्लेख करते हुए यह भी कहा है कि मैंने परमार्थ के लिए ही ग्रंथ लिखने का परिश्रम किया है, इस में मेरा स्वार्थ नहीं है । कवि ने दाणलीला, श्री कृष्ण जन्म वर्णन, राधाकृष्णनो रास, ग्रीष्म ऋृतुनी लीला, जन्माष्टमीनो सोहेलो, नृसिंह चर्तुदशीनी वधाई आदि काव्यों के अलावा प्रहलाद चरित्र, तुलसी विवाह, राज सूर्य यज्ञ, कृष्ण चरित्र आदि आख्यानों की रचना की है । कवि वैश्य (वणिक) कुल में पैदा हुए थे । कवि ने इसलिए ग्रंथों का सृजन किया है कि ये ग्रंथ ब्राह्मणों या सुचरित्रों को दान देकर उनकी या उनके परिवार की परवरिश कर सके । भारतीय संस्कृति और भक्ति का प्रचार प्रसार हो सके ।

'रामचरितमानस' और 'रामायण' की विशद् तुलना करने पर अनेक तथ्य अपने आप स्पष्ट हो जाते हैं यथा :

- 'रामचरितमानस' और 'रामायण' दोनों मध्यकालीन काव्य की दो सर्वश्रेष्ठ कृतियाँ हैं ।
- गिरधर की अपेक्षा तुलसी काव्यशास्त्र पारंगत थे ।

- गिरधर बहुश्रुत थे, बहुपठित नहीं, तुलसी बहुश्रुत और बहुपठित दोनों थे ।
- जीवन की विषम परिस्थितियों का दुःखद अनुभव दोनों को था । प्रेम, पीड़ा की मार्मिक अनुभूति दोनों में थी ।
- रामचरितमानस शास्त्रोन्मुख अधिक है तो रामायण लोकोन्मुख ।
- दोनों में सात काण्ड हैं, गिरधर कृत रामायण में युद्धकाण्ड के स्थान पर लंकाकाण्ड नाम रखा है । प्रत्येक काण्ड का विभाजन गिरधर ने अध्यायों में किया है ।
- रामचरितमानस की कथा से गिरधरकृत रामायण की कथा विस्तृत है । इसमें प्रासंगिक कथाओं का आधिक्य है ।
- तुलसी के राम मर्यादा पुरुषोतम है । गिरकर के राम मर्यादावादी अवश्य हैं साथ साथ आधुनिक विचारों से युक्त हैं । अतः तारा का सुग्रीव से और मंदोदरी का विभीषण से पुनर्विवाह कराया है ।

तुलसी ने वर्णन में कहीं भी औचित्य का भंग नहीं किया । किसी स्थान पर कुछ कहने की इच्छा हो वहाँ संकेत में कह कर उद्देश्य की पूर्ति कर लेते हैं । गिरधरकृत रामायण में दो–चार स्थान पर औचित्य भंग पाया गया है । एक स्थान पर सीता और लोपामुद्रा (अगत्स्य की पत्नी) का संवाद है, जिसमें लोपामुद्रा सीता से कहती है कि सेतुबंध बना कर रामने कोई बड़ा पराक्रम नहीं किया । मेरे पति ने तो पूरा सागर ही पी लिया था । राम ने ऐसा क्यों नहीं किया ? अतः सीता कहती है कि –

“पण मूत्र तमारा स्वामी केरुं, जाणी मनमां त्यम; (7-3-6-514)
ते छूवे नहीं कोई वानर ए तो, पान करे वळी क्यम ।।

अन्य एक स्थान पर कवि ने ऐसा ही वर्णन किया है । रावण युद्ध में विजय प्राप्त करने हेतु महामृत्युंजय का अनुष्ठान करता है ।

वहाँ विभीषण के कहने से हनुमान सहित दश–वानर यज्ञ में विध्न डालने के लिए जाते हैं । अनुष्ठान भंग के लिए यज्ञ कुंड मं

बंदर 'मळमूत्र ते मध्ये कर्या, यज्ञ पात्र फोडयां, संग;
*फाडी नाख्यां वस्त्र करियो, नग्न ते अज्ञान ।। **6,46,17,486***

इसमें आगे यह भी है कि अंगद मंदोदरी को वहाँ लाता है और उसे नग्न करने का प्रयास करता है । गिरधर कृत रामायण लोक शैली में लिखा गया आख्यान है । अतः कवि ने ऐसा वर्णन उपयुक्त माना होगा । अतः क्षम्य है ।

- रामचरितमानस की भाषा की तुलना में रामायण की भाषा थोड़ी शिथिल प्रतीत होती है । इसका कारण यह है कि किसी भी भाषा के पूर्ण अधिकार बिना शब्द प्रयोग किया जाए तो संभवतः दोष आ ही जाते हैं । गिरधर ने अनेक स्थानों पर गलत शब्दों का प्रयोग किया है । एक दो उदाहरण देखें तो – बृहस्पति के स्थान पर, बृहस्पति, कामदुधा के स्थान पर कामदुर्गा, स्त्री के स्थान पर अस्त्री, भरत के लिए भरथ, भर्थ आदि । 'आ' उपसर्ग का प्रयोग करने के पश्चात् पर्यन्त शब्द का उल्लेख अनावश्यक है । कवि ने फिर भी 'आकर्ण पर्यन्त खेंचीने मूकियुं तेणे ठाम रे' का प्रयोग किया है । अतः कहना होगा कि कवि का ध्यान कथा की और अधिक है कला की ओर कम ।
- रामचरितमानस का अंगी रस भक्ति रस है । रामायण का अंगीरस करुण और शांत प्रतीत होता है ।
- कलापक्ष की दृष्टि से रामचरितमानस श्रेष्ठ है । परवर्ती रचनाकारों के लिए प्रेरणा स्रोत है । कथ्य, चरित्र, रस, भाषा, छंद, अलंकार, दार्शनिकता, उद्देश्य आदि में तुलसी अद्वितीय हैं । तुलसी साहित्य रत्नाकर में पं. रामचंद्र द्विवेदी कहते हैं कि हमारी तुच्छ बुद्धि के

अनुसार स्यात् ही कोई अभागा अलंकार निकल आवें जिसका प्रयोग कविराज की ललित लेखनी ने न किया हो ।

- पाश्चात्य विद्वान विन्सेंट स्मिथ के अनुसार रामचरितमानस मध्यकालीन काव्योद्यान का सबसे ऊँचा वृक्ष है ।
- रामचरितमानस हिन्दुओं का कोई मजहबी ग्रंथ नहीं है, परंतु भारतीय समाज या लोक मर्यादा का श्रेष्ठ दस्तावेज है ।
- रामचरितमानस भारतीय जनजीवन की आचार संहिता और पारिवारिक जीवन का महाकाव्य है ।
- वाल्मीकि के राम महान पुरुष हैं । अध्यात्म रामायण के राम पूर्णतः ईश्वर हैं । रामचरितमानस के राम मर्यादापुरुषोतम हैं और गिरधर के राम पूर्ण, ब्रह्म होते हुए भी आधुनिकतावादी हैं ।
- रामचरितमानस का निर्माण व्यष्टि और समष्टि के कल्याण के लिए हुआ है, और इतने पर भी उसमें ललित कला के सब गुण मौजूद हैं ।
- गुजराती भाषा के कवि गिरधर के समग्र जीवन संस्कार का उपहार 'रामायण' है ।
- गिरधर कवि ने 'रामायण' की रचना के लिए वाल्मीकि रामायण, हनुमन्नाटक, पद्मपुराण, अग्निपुराण, योगवासिष्ठ, श्रीमद् भागवत, हरिवंशपुराण, आनंद रामायण, अध्यात्म रामायण, गीतावली, महाभारत, श्रीरामचरितमानस आदि का आधार ग्रहण किया है ।
- गिरधर कृत रामायण प्रबंध सदृश आख्यान शैली का ग्रंथ है । आख्यानकार श्रोता या भक्तों को 'श्रोताजन बोलो श्री हरि' कहकर सचेत करते हैं ।
- गिरधर कवि ने रामायण में कला के स्थान पर कथा को अधिक ध्यान में रखा है ।

- रामचरितमानस की समता में गुजराती साहित्य की कोई रचना हो तो गिरधर कृत रामायण है । आज भी गुजरात के कई परिवारों में गिरधरकृत रामायणका निरंतर पारायण होता है ।
- रामचरितमानस की प्रासंगिकता उतनी ही है जितनी पहले थी । हम जब तक मनुष्य बने रहने की आकांक्षा मन में रखेंगे तब तक 'मानस' का प्रभाव अक्षुण्ण रहेगा । वाल्मीकि रामायण में कहा गया है कि जब तक पर्वतों तथा नदियों का अस्तित्व रहेगा तब तक रामायण की कथा संसार में फैलती रहेगी ।

  यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले ।
  तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति ।। ***1,2,36-37***

☆☆☆

परिशिष्ट

परिशिष्ट
वर्णानुक्रमिक ग्रंथानुक्रमणिका

(अ) आधार ग्रंथ (हिन्दी) :

क्रम	लेखक / संपादक
1	कवितावली : तुलसीदास, सं. इन्द्रदेवनारायण, गीताप्रेस, गोरखपुर ।
2	कवितावली : तुलसीदास, संपादक माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ।
3	कृष्णगीतावली : तुलसीदास, संपादक हनुमानप्रसाद पोद्‌दार, गीताप्रेस, गोरखपुर ।
4	गीतावली : तुलसीदास, संपादक मुनिलाल, गीताप्रेस, गोरखपुर ।
5	जानकी मंगल : तुलसीदास, संपादक हनुमानप्रसाद पोद्‌दार, गीताप्रेस, गोरखपुर ।
6	तुलसी ग्रंथावली : संपादक पं. रामचंद्रशुक्ल नागरी–प्रचारिणीसभा काशी ।
7	दोहावली : तुलसीदास, संपादक हनुमानप्रसाद पोद्‌दार, गीताप्रेस, गोरखपुर ।
8	पार्वती मंगल : तुलसीदास, संपादक हनुमानप्रसाद पोद्‌दार, गीताप्रेस, गोरखपुर ।
9	बरवै रामायण : तुलसीदास, संपादक सुदर्शनसिंह, गीताप्रेस, गोरखपुर ।
10	रामकथा : उत्पत्ति और विकास, कादर कामिल बुल्के, हिन्दी परिषद प्रकाशन, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग ।
11	रामचरितमानस : तुलसीदास, मोतीलाल जालान गीताप्रेस, गोरखपुर ।
12	रामचरितमानस : मानस–पीयूष, सं. अंजनीनंदनशरण, गीताप्रेस गोरखपुर ।
13	रामचरितमानस : विजयाटीका सहित सं. विजयानंद त्रिपाठी, मोतीलाल बनारसीदास बनारस ।

14	रामचरितमानस : सं. विश्वनाथप्रसाद मिश्र, सर्वभारतीय काशिराजन्यास, वाराणसी ।
15	रामचरितमानस : संपादक शंभुनारायण चौबे, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।
16	रामचरितमानस सिद्धांत : तिलक सहित सं. श्रीकांत शरण, पुस्तक भंडार, पटना ।
17	रामचरितमानस : विनायकी टीका मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल ।
18	रामललानहछू : तुलसीदास – तुलसीग्रंथावली, संपा. आचार्य रामचंद्र शुक्ल नागरी, प्रचारिणी सभा काशी ।
19	रामज्ञाप्रश्न फ तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर ।
20	विनयपत्रिका : तुलसीदास संपादक हमुानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर ।
21	विनयपत्रिका : संपादक वियोगीहरि साहित्यसेवासदन, बनारस ।
22	वैराग्य संदीपनी : तुलसीदास संपादक हनुमानप्रसाद पोद्दार गीताप्रेस, गोरखपुर ।
23	हनुमान बाहुक : तुलसीदास संपादक महावीरप्रसाद मालवीय, गीताप्रेस, गोरखपुर ।

(ब) आधारग्रंथ (गुजराती) :

1	आपणां कविओ : के. का. शास्त्री, गुजरात वर्नाकुलर सोसायटी, अमदावाद ।
2	आख्यान युगनो साहित्य प्रवाह : डॉ. हंसाबहन पटेल, गुजरात विद्यापीठ, अमदावाद ।
3	आनंद रामायण : अनु. इन्दिराबहन श्रीधर काणे लक्ष्मीभुवन, भावनगर ।

4	कवि गिरधर जीवन अने कवन : ले. देवदत्तजोशी, एम.एस. युनि., वडोदरा ।
5	कवि चरित्र भाग–1 और 2 : के. का. शास्त्री, गुजरात विद्यासभा, अमदावाद ।
6	कवि लावण्य समयनी लघुकाव्यकृतिओ, संपा. डॉ. शिवलालजेसलपुरा, गुर्जर रत्न कार्यालय, अमदावाद ।
7	काव्यभावन : हीराबहन पाठक, गुर्जर रत्न कार्यालय, अमदावाद ।
8	गिरधरकृत रामायण : प्र. सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अमदावाद ।
9	गुजराती काव्य दोहन : महीपतराम नीलकंठ, गु. प्रिन्टींग प्रेस, मुंबई ।
10	गुजराती साहित्यनो इतिहास : प्र.सं. गुजराती साहित्य परिषद, अमदावाद ।
11	गुजराती साहित्य : 'मध्यकालीन', अ.म. रावल, धी मेकमिलन एण्ड कंपनी, मुंबई ।
12	गुजराती साहित्यनी रूपरेखा : श्री विजयराय वैद्य – एन.एम. त्रिपाठी प्रिन्सेस स्ट्रीट मुंबई ।
13	गुजराती साहित्यनुं रेखा दर्शन : मनसुखलाल झवेरी, आर.सी.शाह, एण्ड वोरा कंपनी अमदावाद ।
14	बृहद काव्य दोहन : सं. ई. सू. देसाई गुजराती प्रिन्टींग प्रेस, मुंबई ।
15	रणयज्ञ : सं. मं. र. मजमुदार गुर्जररत्न कार्यालय, अमदावाद ।
16	रणयज्ञ : सं. नरोतम वाणंद, राष्ट्रभाषा पुस्तकमंदिर, सुरत ।
17	रामायण दर्शन : ईश्वर पेटलीकर आर.आर. शेठनी कंपनी, मुंबई ।
18	रामायण दर्शन : योगेश्वर साहित्य संगम, गोपीपुरा, अमदावाद ।
19	रामायणनां पात्रो : नानाभाई आर.आर. शेठनी कंपनी, मुंबई ।

सहायक ग्रंथ सूची (हिन्दी) :

1	अलंकारों का ऐतिहासिक विकास : डॉ. राजवंश सहाय, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना ।
2	अलंकार मंजुषा : लाला भगवानदीन विद्या प्रचारक बुकडीपो, गया ।
3	अध्यात्म रामायण : गीताप्रेस, गोरखपुर (उ.प्र.) ।
4	अरुण रामायण : पोदार रामावतार अरुण किरण कुंज समस्तीपुर बिहार ।
5	आधुनिक हिन्दी कविता में अलंकार विधान : डॉ. जगदीश नारायण त्रिपाठी, अनुसंधान प्रकाशन कानपुर ।
6	आधुनिक हिन्दी काव्य में छंद योजना : डॉ. पुतूलाल शुक्ल लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।
7	आनंद रामायण : पंडित पुस्तकालय, वाराणसी ।
8	कम्ब रामायण और रामचरितमानस : डॉ. रामेश्वर दयालु, कल्पना प्रकाशन मेरठ ।
9	कम्ब रामायण : अनु. नि.वि. गोपालन, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना ।
10	कश्मीरी और हिन्दी रामकथा का तुलनात्मक अध्ययन : डॉ. ओंकार कौल बाहरी प्रकाशन, प्रा.लि., देहली ।
11	कृतिवासी बंगला रामायण और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन : डॉ. रमानाथ त्रिपाठी, भारत प्रकाशन मंदिर अलीगढ़ ।
12	काव्यप्रदीप : पं. रामबहोरी शुक्ल, ग्रंथमाला कार्यालय, पटना ।
13	काव्यालंकार उद्‌भट्ट सारसंग्रह : सं. नारायणदास बनहट्टी संस्कृत तथा प्राकृत सीरिज़, मुंबई ।
14	काव्यालंकार : रुद्रट : निर्णय सागर प्रेस, मुंबई ।
15	काव्यालंकार : भामह, संपादक प्रोफे. देवेन्द्रनाथ शर्मा, बिहार, राष्ट्रभाषा परिषद, पटना ।

16	काव्य निर्णय : भिखारीदास संपा. जवाहबलाल चतुर्वेदी, कल्याणदास एण्ड ब्रधर्स वाराणसी ।
17	काव्य दर्पण : रामदहिन मिश्र, ग्रंथमाला कार्यालय, पटना ।
18	काव्य के रूप : बाबू गुलाबराय आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ।
19	काव्य रूपों के मूल स्रोत और उनका विकास : शकुन्तला दूबे, हिन्दी प्रचारक, वाराणसी ।
20	क्रांतिकारी तुलसी : श्री नारायण सिंह, हिन्दी साहित्य संमेलन प्रयाग ।
21	गोस्वामी तुलसीदास : आचार्य राचमंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस ।
22	गोस्वामी तुलसीदास : डॉ. रामदत्त भारद्वाज, भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली ।
23	गोस्वामी तुलसदासजी का सामाजिक आदर्श : श्रीमती सुधारानी शुक्ल लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।
24	गोस्वामी तुलसीदास : डॉ. श्यामसुन्दरदास पीताम्बरदास बडथ्वाल हिन्दी अकादमी, इलाहाबाद ।
25	गोस्वामी तुलसीदास व्यक्तित्व दर्शन साहित्य : रामदत्त भारद्वाज भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली ।
26	गोस्वामी तुलसीदास : आचार्य सीताराम चतुर्वेदी चौखंभा विद्याभवन, काशी ।
27	गोस्वामी तुलसीदास संबंधी समीक्षाओं और शोधों का अनुशीलन : वीरेन्द्रपाल श्रीवास्तव स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद ।
28	गोस्वामी तुलसीदास की दृष्टि में नारी और मानव जीवन में उसका महत्त्व : ज्ञानवती त्रिवेदी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी ।
29	गोस्वामी तुलसीदास व्यक्ति और काव्य : संपा. रमेशचंद्र शर्मा, डॉ. रुचि बाजपेई विद्याप्रकाशन, कानपुर ।

30	चिन्तामणि : आचार्य रामचंद्र शुक्ल इंडियन प्रेस प्रयाग ।
31	तुलसीदास : डॉ. माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी परिषद, प्रयाग ।
32	तुलसीदास : आचार्य चंद्रबली पाण्डेय नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
33	तुलसी : संपा. डॉ. उदयभानुसिंह राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ।
34	तुलसीग्रंथावली : माताप्रसाद गुप्त, साहित्य कुटीर प्रयाग ।
35	तुलसी काव्यदर्शन : डॉ. रामलालसिंह लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
36	तुलसी की काव्य कला : डॉ. भाग्यवतीसिंह सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा ।
37	तुलसी की काव्य मीमांसा : डॉ. उदयभानुसिह राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
38	तुलसीदास और उनका काव्य : रामनरेश त्रिपाठी, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ।
39	तुलसी की कारयित्री प्रतिभा का अध्ययन : डॉ. श्रीधरसिंह हिन्दी प्रचारक प्रकाशन, वाराणसी ।
40	तुलसी का काव्यादर्शः डॉ. सुरेशचन्द्र गुप्त, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली ।
41	तुलसीदास और उनके काव्य : डॉ. रामदत्त भारद्वाज सूर्य प्रकाशन, दिल्ली ।
42	तुलसी काव्य नये पुराने संदर्भ : डॉ. रामबाबूशर्मा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली ।
43	तुलसी दर्शन मीमांसा : डॉ. उदयभानुसिंह लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।
44	तुलसीदास और उनका युग : राजपति दीक्षित ज्ञानमंडल लि., बनारस ।
45	तुलसीदर्शन : डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र, हिन्दी साहित्य संमेलन, प्रयाग ।
46	तुलसी की भाषा : डॉ. देवकीनंदन श्रीवास्तव, लखनऊ ।
47	तुलसी साहित्य विवेचन और मूल्यांकन : आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, डॉ. वचनदेवकुमार – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।

48	तुलसी की जीवन भूमि : चंद्रबली पाण्डेय नागरी, प्रचारिणी सभा, काशी ।
49	तुलसी साहित्य में रामराज्य की परिकल्पना : डॉ. शीलवती गुप्त, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ।
50	तुलसी चिंतन और कला : इन्द्रनाथ मदान – राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ।
51	तुलसी मानस रत्नाकर : डॉ. भाग्यवतीसिंह सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा ।
52	तुलसी का जीवन चरित : श्री शिवनंदन सहाय, बिहार स्टोर आरा ।
52	तुलसी एक अध्ययन : डॉ. रामरत्न भटनागर किताब महल, प्रयाग ।
53	तुलसीदास जीवन और विचारधारा : डॉ. राजाराम रस्तोगी अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर ।
54	तुलसीदर्शन : डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र, हिन्दी साहित्य संमेलन, प्रयाग ।
55	तुलसी मानस संदर्भ : संपा. डॉ. रामस्वरूप आर्य, डॉ. गिरीराज शरण अग्रवाल, मानस चतुश्चती आयोजन समिति, संभल । (उ. प्र.)
56	तुलसीरामायण और पंप रामायण : डॉ. सरगुकृष्णमूर्ति (उ.प्र.) हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ ।
57	तुलसी साहित्य में बिंबयोजना : डॉ. सुशीला शर्मा – कोणार्क प्रकाशन, दिल्ली ।
58	तुलसी की काव्य कला और दर्शन : संपादक डॉ. रामगोपाल शर्मा दिनेश सरस्वती संवाद कार्यालय, आगरा ।
59	तुलसी आधुनिक वातायन से : डॉ. रमेशकुन्तल मेघ भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी ।
60	तुलनात्मक साहित्य सिद्धांत और समीक्षा : डॉ. महावीरसिंह चौहान, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर ।

61	तुलनात्मक साहित्य : डॉ. नगेन्द्र नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
62	तुलनात्मक साहित्य की भूमिका : डॉ. इन्द्रनाथ चौधरी, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, दिल्ली ।
63	तुलनात्मक अनुसंधान और उसकी समस्याएँ : संपा. डॉ. गुलाम रसूल डॉ. सरगुकृष्णमूर्ति हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ ।
66	तुलनात्मक अध्ययन : भारतीय भाषाएँ और साहित्य संपा. भ. ह. राजकर राजकमल वोरा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली ।
67	पद्मावत और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन : डॉ. रामाश्रयवर्मा 'अखिलेश' अलका प्रकाशन, कानपुर ।
68	प्राकृत साहित्य का इतिहास : डॉ. जगदीशचंद्र जैन, चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी ।
69	पाणिनीय व्याकरण का अनुशीलन डॉ. रामशंकर भट्टाचार्य, इण्डोलोजिकल बुक हाउस, वाराणसी ।
70	पालि साहित्य का इतिहास : डॉ. भरतसिंह उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ।
71	भक्ति का विकास : डॉ. मुंशीराम शर्मा, चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी ।
72	भारतीय काव्यशास्त्र : संपा. डॉ. उदयभानुसिंह सामयिक प्रकाशन, दिल्ली ।
73	भारतीय काव्य शास्त्र की भूमिका : डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
74	भारतीय वाङ्मय : सं. डॉ. नगेन्द्र साहित्यसदन चिरगाँव झाँसी ।
75	भारतीय साहित्यशास्त्र : डॉ. बलदेव उपाध्याय नंदकिशोर एण्ड सन्स, वाराणसी ।
76	मध्यकालीन कवियों के काव्य सिद्धांत : डॉ. छबिनाथ त्रिपाठी, रिसर्च प्रकाशन, दिल्ली ।

77	मध्यकालीन कवियों के काव्य सिद्धांत : डॉ. सुरेशचंद्र गुप्त, नई दिल्ली ।
78	मध्ययुगीन वैष्णव संस्कृति और तुलसीदास : डॉ. रामरतन भटनागर, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली ।
79	मानस की रुसी भूमिका : अनु. डॉ. केशरीनारायण शुक्ल, विद्यामंदिर, लखनऊ ।
80	मानस की रामकथा : परशुराम चतुर्वेदी, किताब महल, इलाहाबाद ।
81	मानस अनुशीलन : शंभुनारायण चौबे नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
82	मानस मयंक : शिवलाल पाठक खड्क विलासप्रेस, बाँकीपुर ।
83	मानस का कथा शिल्प : श्रीधरसिंह प्रकाशक, संपूर्णानंद आनंद पुस्तक भवन, वाराणसी ।
84	मानस रहस्य : जयरामदास 'दीन', गीताप्रेस, गोरखपुर ।
85	रस–दोष–छंद अलंकार निरूपण : रविशंकर श्रीमती सुशीला न्यू बिल्डींग, लखनऊ ।
86	रस विमर्श : डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी, ब्रहम विद्यामंदिर वाराणसी ।
87	रस सिद्धांत : डॉ. नगेन्द्र नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
88	रस सिद्धांत स्वरूप और विश्लेषण : डॉ. आनंद प्रसाद दीक्षित, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
89	राम कथा और तुलसी : डॉ. देवदत्त शर्मा, निर्माण प्रकाशन, दिल्ली ।
90	रामकथा के जीवन मूल्य : अनिलकुमार मिश्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ।
91	रामकथा के नारी पात्र : डॉ. श्रीमती आशा भारती, शारदा प्रकाशन, दिल्ली ।
92	रामचरितमानस का काव्यशास्त्रीय अनुशीलन : डॉ. राजकुमार पाण्डेय, अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर ।
93	रामचरितमानस का सौंदर्यत्व : डॉ. कवीश्वर ठाकुर प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली ।

94	रामचरितमानस और कौशिक रामायण का तुलनात्मक अध्ययन : डॉ. मुकुन्द प्रभु अलका प्रकाशन, कानपुर ।
95	रामचरितमानस तुलनात्मक अनुशीलन, डॉ. सज्जनराम केणी पुस्तक संस्थान, कानपुर ।
96	रामचरितमानस के रचना शिल्प का विश्लेषण : डॉ. योगेन्द्र प्रतापसिंह भारतीय हिन्दी परिषद प्रयाग ।
97	रामचरितमानस : एक अध्ययन : डॉ. रामप्रसाद मिश्र, भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली ।
98	रामचरितमानस की पाश्चात्य समीक्षा सुखबीरसिंह सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली ।
99	रामचरितमानस और रामचंद्रिका का तुलनात्मक अध्ययन : डॉ. जगदीशनारायण अग्रवाल राज्यश्री, प्रकाशन मथुरा । (उ.प्र.)
100	रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन : डॉ. शिवकुमार शुक्ल, अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर ।
101	रामचरितमानस की सांस्कृतिक मीमांसा : डॉ. सोमनाथ शुक्ल मानस परिषद, प्रकाशन कानपुर ।
102	रामचरितमानस विनायकी टीका मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल ।
103	रामचरितमानस का शास्त्रीय अध्ययन : डॉ. राजकुमार पाण्डेय पुस्तक संस्थान, कानपुर ।
104	रामभक्ति में रसिक संप्रदाय : डॉ. भगवतीप्रसाद, अवध साहित्य मंदिर बलरामपुर गोण्डा । (उ.प्र.)
105	रामायण रहस्य : अभिलाषदास, कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद ।
106	वाल्मीकि रामायण और भारतीय दृष्टि : पंडित वैजनाथ द्विवेदी की टीका, अयोध्या ।
107	वाल्मीकि रामायण एवं रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन : डॉ. विद्या मिश्र विश्वविद्यालय हिन्दी प्रकाशन, लखनऊ ।

108	श्री रामचरितमानस द्वितीय सोपान अयोध्याकांड : संपा. डॉ. योगेन्द्र प्रतापसिंह लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
109	श्री रामचरितमानस विजया टीका मानस राजहंस : पं. विजयानंद त्रिपाठी, चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी ।
110	शबरी : श्री नरेश मेहता : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
111	समीक्षा शास्त्र आचार्य सीताराम चतुर्वेदी अखिल भारतीय विक्रम परिषद, वाराणसी ।
112	साहित्य एवं शोध कुछ समस्याएँ : डॉ. देवराज उपाध्याय अनुपम प्रकाशन, जयपुर ।
113	साहित्य दर्पण : विश्वनाथ सं. शालीग्राम शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ।
114	साहित्यालोचन : डॉ. श्यामसुन्दरदास इंडियन प्रेस, प्रयाग ।
115	सौमित्र श्री नरेश मेहता लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
116	संस्कृति के चार अध्याय : रामधारीसिंह दिनकर, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ।
117	संत साहित्य के प्रेरणा स्त्रोत : आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ।
118	संक्षिप्त अलंकार मंजरी : सेठ कन्हैयालाल पोदार, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ।
119	संस्कृत साहित्य की रूपरेखा : प्रो. चंद्रशेखर पाण्डेय, साहित्य निकेतन, कानपुर ।
120	हरिकथा अनन्ता : राजेन्द्र अरुण, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ।
121	हिन्दी के आधुनिक राम काव्य का अनुशीलन : डॉ. परमलाल गुप्त रचना प्रकाशन, इलाहाबाद ।

122	हिन्दी साहित्य का इतिहास : रामचंद्रशुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।
123	हिन्दी छंद प्रकाश : रघुनंदन शास्त्री, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली ।
124	हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास : डॉ. शम्भूनाथसिंह हिन्दी प्रकाशन पुस्तकाल, वाराणसी ।
125	हिन्दी साहित्य का अतीत : आचार्य विश्वनाथ प्रसादमिश्र, नया संसार प्रेस, वाराणसी ।
126	हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास : डॉ. रामकुमारवर्मा, रामनारायण एण्ड सन्स, इलाहाबाद ।
127	हिन्दी साहित्य की भूमिका : डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, मुंबई ।
128	हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास : सं. प्र. परशुराम चतुर्वेदी, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
129	हिन्दी साहित्य का इतिहास : संपा. डॉ. नगेन्द्र,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ।
130	हिन्दी साहित्य रत्नाकर : डॉ. विमलकुमार जैन : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ।
131	हिन्दी साहित्य ओर प्रवृतियाँ : डॉ. शिवकुमार शर्मा, अशोक प्रकाशन, दिल्ली ।

गुजराती सहायक ग्रंथ सूची :

1	अनुसंधान डॉ. हरिवल्लभ भायाणी : सरस्वती पुस्तक भंडार, अमदावाद ।
2	अर्वाचीन गुजराती साहित्यनी विकास रेखा : डॉ. धीरुभाई ठाकर, पोप्युलर प्रकाशन, इलाहाबाद ।
3	अर्वाचीन गुजराती साहित्यनो इतिहास : डॉ. रमेशत्रिवेदी, आदर्श प्रकाशन, अमदावाद ।
4	कवि मांडणकृत प्रबोध बत्रीसी : संशोधक म. ब. व्यास और छ.वि. रावल, फार्बस गुजराती सभा, मुंबई ।
5	कवि नाकर एध्ययन : डॉ. चिमनलाल त्रिवेदी, गुर्जर रत्न कार्यालय, अमदावाद ।
6	काव्यानुशासन : रसिकलाल परीख, शरद प्रिन्टरी, अमदावाद ।
7	काशीराम सुतशेघजी : डॉ. बेचरभाई पटेल, सरदारपटेल युनि. विद्यानगर ।
8	गुजराती साहित्य : मध्यकालीन : अनंतराय रावल : मेकमिलन मुंबई ।
9	गुजराती साहित्यनां स्वरूपो : श्री म. र. मजमुदार : आचार्य बुक डीपो, अमदावाद ।
10	गुजराती साहित्य : मध्यकालीन अने सुधारयुग : विनायक रावल, अमदावाद ।
11	जैन गुर्जर कविओ : मो.द.देसाई नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अमदावाद ।
12	जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास : मो.द. देसाई : जैन श्वेतांबर कोन्फरन्स, मुंबई ।
13	दशम स्कंध : प्रेमानंद : संपा. मनसुखलाल झवेरी, प्रका. गुर्जर ग्रंथ रत्न कार्यालय, अमदावाद ।
14	पउम चरियं : आचार्य विमलसूरि संपा. : मुनि पुण्य विजयजी, प्रा. ग. परिषद, वाराणसी ।

15	पडिलेहा : डॉ. आर. सी. शाह, गुर्जर रत्न कार्यालय, अमदावाद ।
16	प्रेमानंद नी काव्य कृतिओ : संपादक के. का. शास्त्री, स्वाति प्रिन्टींग प्रेस, अमदावाद ।
17	परिचित पद संग्रह : सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अमदावाद, मुंबई ।
18	भारतीय काव्य मीमांसा : केटलाक प्रश्नो : रमेश चु. बेटाई सौ. युनि., राजकोट ।
19	भालण : मफत ओझा : सोनल प्रकाशन, अमदावाद ।
20	भालण एक अध्ययन : के. का. शास्त्री, एम.एस. युनि. वडोदरा ।
21	मध्यकालीन गुजराती साहित्यमां तत्त्व विचार : डॉ. निपुण पंडया, नवभारत, साहित्य मंदिर, मुंबई ।
22	मधुकर : विनोबा भावे, नवजीवन प्रकाशन, अमदावाद ।
23	महाकवि कालिदास : संपादक : यशवंत शुक्ल, गुजरात विद्या सभा, अमदावाद ।
24	मीरांना पदो : संपादक भूपेन्द्र त्रिवेदी, एन.एम. त्रिपाठी, प्रिन्सेस स्ट्रीट, मुंबई ।
25	रुचिरा रामायण : जगजीवनदास व. मोदी माधवबाग, लक्ष्मीनारायण मंदिर, मुंबई ।
26	स्वामी विवेकानंद भाषणो अने लेखो : विवेकानंद रामकृष्ण आश्रम, राजकोट ।
27	संस्कृति : अनुवादक रा.व. आठवले : गुजरात युनि. अमदावाद ।
28	संस्कृति पूजन, पांडुरंग शास्त्री, सद्‌विचार ट्रस्ट, मुंबई ।
29	संशोधनननी केडी : भोगीलाल सांडेसरा : गुर्जर रत्न कार्यालय अमदावाद ।
30	श्री वाल्मीकि रामायण दर्शन : पांडुरंग शास्त्री, सद्‌विचार ट्रस्ट, मुंबई ।
31	हिन्दु जीवन दर्शन : डॉ. राधाकृष्णन् अनु. चंद्रशंकर शुक्ल, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, मुंबई ।

सहायक ग्रंथ सूची (संस्कृत) :

1	अद्भूत रामायण : संपा. खेमराज श्रीकृष्णदास आनंदाश्रम, श्री वैंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई ।
2	अध्यात्म रामायण : अनु. मुनिलाल गीताप्रेस, गोरखपुर ।
3	अनर्ध राघव श्री मुरारि तुकारामजावजी, निर्णयसागर, मुंबई ।
4	अथर्ववेद : परोपकारिणी सभा अजमेर ।
5	अथर्ववेद संहिता : डॉ. रामकृष्ण शासत्री चौखंभा ओरियन्टालिया, वाराणसी ।
6	अग्निपुराण : चौखंभा संस्कृत सीरिज़ कार्यालय, वाराणसी ।
7	अलंकार शेखर केशवमित्र, चौखंभा संस्कृत सीरिज़, कार्यालय, वाराणसी ।
8	अलंकार सर्वस्व राजनक रुप्पय निर्णयसागर प्रेस, मुंबई ।
9	ऋग्वेद संपा. दामोदर सातवलेकर स्वाध्याय मंडल, पारडी ।
10	ऋग्वेद संहिता भाष्यकार पं. जयदेव शर्मा आर्य साहित्य मंडल अजमेर ।
11	आनंद रामायण : अनु. पाण्डेय रामतेजशास्त्री पंडित, पुस्तकालय, वाराणसी ।
12	आश्चर्य चूडामणि : श्री शक्तिभद्र महाकविश्रीबाला मनोरम प्रेस, मद्रास ।
13	उत्तर रामचरित : भवभूति : निर्णयसागर प्रेस, मुंबई ।
14	उत्तर रामचरित : भवभूति : डॉ. कपिलदेव द्विवेदी साहित्य संस्थान, इलाहाबाद ।
15	उत्तर पुराण : श्री गुणभद्राचार्य बम्बई प्रिन्टींग कॉलेज, बनारस ।
16	उन्मत राघव : भास्कर भट्ट संपा. प्रका. दुर्गाप्रसाद निर्णयसागर प्रेस, मुंबई ।
17	कठोपनिषद : कीर्त्यानन्द झा संपादित, चौखंभा अमर भारतीय प्रकाशन, वाराणसी ।

18	काव्यप्रकाश : आचार्य मम्मट कृत : वामनाचार्य टीका, साहित्य भंडार मेरठ ।
19	काव्यालंकार सूत्र वामन : व्याख्याकार डॉ. बेचन झा चौखंभा, संस्कृत सीरिज़ वाराणसी ।
20	काव्यालंकार रुद्रट : व्याखयाकार डॉ. सत्यदेव चौधरी, हिन्दी साहित्य संमेलन प्रयाग ।
21	काव्यालंकार दंडी : मास्टर खेलाडीलाल एण्ड सन्स बनारस ।
22	काव्य मीमांसा : राजशेखर कृत संपा. के. एन. सारस्वत, निर्णय सागर प्रेस, मुंबई ।
23	काव्य मीमांसा : राजशेखर ओरियन्टल इन्स्टीटयूट वडोदरा ।
24	काव्यालंकार सार संग्रह : उद्‌भट्ट व्याख्याकार डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी, हिन्दी साहित्य संमेलन, प्रयाग ।
25	काव्यप्रकाश : मम्मट आनंदाश्रम प्रेस, पुना ।
26	काव्यादर्श दण्डीकृत : संपा. धर्मेन्द्रकुमार गुप्ता, चौखंभा प्रकाशन, वाराणसी ।
27	केनोपनिषद : बालकृष्ण शास्त्री संपा. चौखंभा ओरियन्टालिया, वाराणसी ।
28	यजुर्वेद संहिता : सं. सातवलेकर – चौखंभा संस्कृत सीरिज़, वाराणसी ।
29	यजुर्वेद (शुक्ल) दयानन्द भाष्य समेत दयानंद संस्थान, दिल्ली ।
30	चंद्रालोक : जयदेव चौखंभा संस्कृत सीरिज़ वाराणसी ।
31	दशरथजातक : हिन्दी साहित्य संमेलन प्रयाग ।
32	दशरूपक : धनंजय व्याख्याकार : डॉ. भोलाशंकर व्यास चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी ।
33	ध्वन्यालोक : आनंदवर्द्धन चौखंभा संस्कृत सीरिज़, वाराणसी ।
34	छन्दोनुशासन : हेमचंद्राचार्य सिंधी जैन शास्त्र, शिक्षापीठ, भारतीय विद्याभवन, मुंबई ।

35	छंदोमंदाकिनी : गुरुप्रसाद भार्गव पुस्तकालय, बनारस ।
36	नाट्यशास्त्र : भरतमुनि निर्णय सागर प्रेस, बम्बई ।
37	प्रसन्न राघव : शेष राजशर्मा शास्त्री, चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी ।
38	पुराण विमर्श : बलदेव उपाध्याय चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी ।
39	पद्मपुराण : आनंदाश्रम संस्कृत ग्रंथावली, आनंदाश्रम मुद्रणालय, मुंबई ।
40	पउम चरिउ कविराज स्वयंभूदेव अनु. देवेन्द्रकुमार जैन भारतीय ज्ञानपीठ काशी ।
41	पंचतंत्रम् विष्णुशर्मा कृत संपा. बाबूराम त्रिपाठी महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा
42	ब्रहमपुराण : आनंदाश्रम संस्कृत ग्रंथावली आनंदाश्रम, मुद्रणालय मुंबई ।
43	बृहदन्नारदीय महापुराण : खेमराजश्रीकृष्णदास श्री वेंकटेश्वर प्रेस, मुंबई ।
44	भट्टि काव्य : अनु. शेष राजशर्मा शास्त्री चौखंभा संस्कृत ग्रंथावली, विद्याभवन वाराणसी ।
45	भागवत पुराण : गीताप्रेस गोरखपुर ।
46	मनुस्मृति : चौखंभा संस्कृत सीरिज़ कार्यालय, वाराणसी ।
47	महाकवि भवभूति श्रीमती रमा पाण्डेय साहित्य रत्नभंडार आगरा ।
48	महाभारत : कृष्णाद्वैपायन व्यास गीताप्रेस, गोरखपुर ।
49	महावीरचरित : भवभूति संपा. आचार्य रामचंद्र मिश्र, चौखंभा प्रका. वाराणसी ।
50	मार्कण्डेय पुराण : संपा. पंडितजीवानन्द विद्यासागर सरस्वती प्रेस, कलकत्ता ।
51	यजुर्वेद संहिता : संपा. गोपालप्रसाद कौशिक, चौखंभा संस्कृत प्रकाशन, वाराणसी ।
52	यजुर्वेद (शुक्ल) दयानंद भाष्यसमेत् दयानंदसंस्थान दिल्ली ।
53	बृहदारण्यकोपनिषद संपा. श्री रामशर्मा संस्कृत संस्थान, बरेली ।

54	रघुवंश : कालिदास : अनु. पंडित गोविंदशास्त्री चौखंभा प्रकाशन, वाराणसी ।
55	रसगंगाधार : निर्णय सागर प्रेस, मुंबई ।
56	रस सिद्धांत : स्वरूप विश्लेषण – आनंद प्रकाश दीक्षित, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
57	वेद मीमांसा : आचार्य लक्ष्मीदत्त दीक्षित ईस्टर्न बुक, लिंकर्स, दिल्ली ।
58	वायु महापुराण अनु. : श्री रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री : हिन्दी साहित्य संमेलन, प्रयाग ।

संस्कृत सहायक ग्रन्थ सूची :

1	वाल्मीकि रामायण (दश खण्ड) वाल्मीकि अनु. द्वारिकाप्रसाद चतुर्वेदी, रामनारायणलाल, इलाहाबाद ।
2	वाल्मीकि रामायण : गीताप्रेस गोरखपुर ।
3	वाल्मीकि रामायण : संपा. जी. एम. भट्ट, चौखंभा प्रकाशन, वाराणसी ।
4	सामवेद संहिता : संस्कृत भाष्य और तद्नुकूल सान्वय भावानुवाद संपा. पंडित रामस्वरूप शर्मा गौड मुरादाबाद ।
5	सांस्कृतिक भारत : भागवतशरण उपाध्याय राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ।
6	साहित्य दर्पण विश्वनाथ संपादक : सत्यव्रतसिंह चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी ।
7	शतपथ ब्राहमण संपा. चिन्नस्वामीशास्त्री चौखंभा प्रकाशन, वाराणसी ।
8	सामवेद संहिता सं. जयदेव शमा़ चौखंभा संस्कृत प्रकाशन, वाराणसी ।
9	श्रीमदभागवत गीता प्रेस, गोरखपुर ।

अंग्रेजी सहायक ग्रन्थ सूची :

1.	A History of Sanskrit Literature, A. B. Kaith, London.
2.	History of Sanskrit Literature, S. N. Das Gupta.
3.	On the Ramayana Indian Antiquary, A Weber.
4.	Das Ramayana Tras. S. N. Ghosal, Dr. Jacobi.
5.	History of Indian Literature, M. Winternitz.
6.	The Riddle of the Ramayana, C. V. Vaidya.
7.	Was Ramayana Copied from Homer K. T. Telang.
8.	On Weber's Dissertation on the Ramayana, Prof. C. Lasse N.
9.	A History of Sanskrit Literature, A. A. MecDonell.
10.	Classical Sanskrit Literature, H. Krishmachariyar.
11.	Mahabharat - V. S. Sukthankar and other, Oriental Research Institute, Poona.
12.	A Socio-Political Study of the Valmiki Ramayana, Ramashnaya Sharma.
13.	Royal Asiatic Journole, G. A. Grierson.
14.	Srimad Ramayana D. S. Sharma Sri Ramkrishna Math, Publication, Department Chennai-4.

शब्द कोश :

1.	अमरकोश : अमरसिंह विरचित सं. सुधाकर मालवीय चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी ।
2.	अमर सूक्तिकोशः समुद्रसिंह जोधा राजस्थानी साहित्य संस्थान, जोधपुर ।
3.	कला और साहित्य कोश संपा. अमरनाथ कपुर राधा पब्लिकेशन, दिल्ली ।
4.	तुलसी शब्द सागर : हरगोविन्द तिवारी संपा. भोलानाथ तिवारी, हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद ।
5.	पौराणिक कथा कोश डाहयालाल पीताम्बरदास देशहरि, गुजरात वर्नाक्युलर

	सोसायटी, अमदावाद ।
6.	बृहद हिन्दी कोश : काली प्रसाद ज्ञान मंडल लि., वाराणसी ।
7.	मानक हिन्दी कोश संपादक रामचन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्य संमेलन प्रयाग ।
8.	वैदिक कोश सं. डॉ. सूर्यकान्त हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ।
9.	शब्द कल्पद्रुम राजा राधाकान्त देव मोतीलाल बनारसीदास, इलाहाबाद ।
10.	संस्कृत हिन्दी कोश वामन शिवराम आप्टे : मोतीलाल बनारसीदास इलाहाबाद ।
11.	हिन्दी भाषा एवं साहित्य कोश संपादक डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त एटलांटिक पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली ।
12.	हिन्दी विश्व कोश नगेन्द्रनाथ बसु विश्वकोश लेनबाग बाजार, कलकत्ता ।
13.	हिन्दी साहित्य कोश : सम्पा. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ज्ञानमंडल लि., वाराणसी ।
14.	ज्ञान कोश : डॉ. वी. बी. केतकर भार्गव ब्रधर्स बनारस ।

पत्र–पत्रिकाएँ :

1.	कल्याण मानसांक भाग–2, प्रका. घनश्यामदास जालान संपा. हनुमान प्रसाद पोदार गोरखपुर ।
2.	कल्याण श्री रामवचनामृतांक संपा. हनुमान प्रसाद पोदार प्रकाशक : मोतीलाल जालान गीता प्रेस गोरखपुर ।
3.	तुलसीदल : मानसप्रेस संपादक डॉ. बजवासी लालश्रीवास्तव भोपाल सितम्बर 1965।
4.	राष्ट्र वीणा : मानस चतुःशती विशेषांक – गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की मासिक पत्रिका, 1973।